ISSN 2349 - 137X
UGC CARE-listed, Peer Reviewed Journal

प्रतिध्वनि कला एवं
संस्कृति की

नाटक लोक

वर्ष–10, विशेषांक – राज कपूर, 2024
(जुलाई–दिसम्बर)

सत्यमेव जयते

Indian Council For Cultural Relations
भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद्

अनहद लोक

राज कपूर

शताब्दी वर्ष विशेषांक

हिन्दी सिनेमा की वैश्विक लोकप्रियता और राज कपूर

सम्पादक

डॉ० मधु रानी शुक्ला

अतिथि सम्पादक

डॉ० मनीष कुमार मिश्रा

डॉ० निलुफ़र खोजाएवा

सौजन्य से
लाल बहादुर शास्त्री भारतीय केंद्र
भारतीय दूतावास
5, बुज़ बोजोर, सेंट-2 लेन, ताशकंद, उज्बेकिस्तान

अतिथि संपादक - मनोगत

लाल बहादुर शास्त्रीय भारतीय संस्कृति केंद्र (LBSCIC), ताशकंद एवं ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज़, ताशकंद, उज़्बेकिस्तान के संयुक्त तत्त्वावधान में मंगलवार, दिनांक 17 दिसंबर 2024 को एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन **''हिन्दी सिनेमा की वैश्विक लोकप्रियता और राज कपूर''** इस विषय पर आयोजित किया गया। राज कपूर शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में यह आयोजन हमारे लिए बड़ा महत्वपूर्ण था। उज़्बेकिस्तान समेत पूरे मध्य एशिया में राज कपूर की लोकप्रियता का कोई सानी नहीं है अतः इस आयोजन की सफलता को लेकर कोई आशंका हमारे मन में नहीं थी।

इस परिसंवाद में शामिल होने वाले सभी शोध आलेखों को **''राज कपूर शताब्दी वर्ष विशेषांक''** के रूप में भारत की प्रतिष्ठित यू.जी.सी. केयर लिस्टेड शोध पत्रिका **''अनहद लोक''** के माध्यम से प्रकाशित भी किया जा रहा है। पत्रिका की संपादक डॉ. मधुरानी शुक्ला जी का हृदय से आभार जो उन्होंने इस पत्रिका के इस विशेषांक के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान की। हिन्दी, अंग्रेजी और उज़्बेकी भाषा में हमारे पास सौ से अधिक आलेख आए जिनमें से लगभग 40 आलेखों का चयन हम ने प्रकाशन हेतु किया। उज़्बेकी भाषा के चुने हुए कतिपय आलेखों को हिन्दी में अनुदित कर के प्रकाशित किया जा रहा है।

यह महत्वपूर्ण है कि प्रख्यात अभिनेता एवं निर्देशक राज कपूर के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में यह महती अकादमिक कार्य हम पूरा कर सके। हमें पूर्ण विश्वास है कि इन प्रपत्रों का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण अकादमिक दस्तावेज़ साबित होगा। राज कपूर से जुड़े शोध कार्यों के लिए भी अनहद लोक का यह अंक सहायक सिद्ध होगा।

आप सभी का हृदय से आभार।

अतिथि संपादक

डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

डॉ. निलुफ़र खोजाएवा

स्मिता पंत
Smita Pant

सत्यमेव जयते

भारत के राजदूत
AMBASSADOR OF INDIA
ताशकन्द
TASHKENT

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हुई कि लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति केंद्र, ताशकंद एवं ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज़, ताशकंद, उज़्बेकिस्तान के संयुक्त तत्त्वावधान में मंगलवार, दिनांक 17 दिसंबर 2024 को एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन **"हिन्दी सिनेमा की वैश्विक लोकप्रियता और राज कपूर"** इस विषय पर हो रहा है । साथ ही साथ इस परिसंवाद में शामिल होने वाले सभी शोध आलेखों को **"राज कपूर शताब्दी वर्ष विशेषांक"** के रूप में भारत की प्रतिष्ठित यूजीसी केयर लिसटेड शोध पत्रिका **"अनहद लोक"** के माध्यम से प्रकाशित भी किया जा रहा है ।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है की प्रख्यात अभिनेता एवं निर्देशक राज कपूर के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में यह महती अकादमिक कार्य संपन्न हो रहा है । मुझे पूर्ण विश्वास है की इस परिसंवाद में आए प्रपत्रों से निश्चित ही हमारे शोधार्थीयों एवं पाठकों के ज्ञान में वृद्धि होगी व इन प्रपत्रों का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण अकादमिक दस्तावेज़ साबित होगा ।

मैं लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति केंद्र, ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज़ एवं अनहद लोक शोध पत्रिका को उनके इस कार्य हेतु अपनी शुभ कामनाएँ प्रेषित करती हूँ ।

(स्मिता पंत)

16 Kara-Bulak Street, Mirzo Ulugbek District, Tashkent 100052, Uzbekistan
Tel: +998-55-5010381 E-mail: amb.tashkent@mea.gov.in
Website: www.eoi.gov.in/tashkent

अनुक्रम

1.	राज कपूर के सिनेमा में समसामयिक प्रासंगिक कथाएँ : भारत में सामाजिक परिवर्तन का प्रतिबिंब	*डॉ. कल्पना* *प्रो. वंदना पूनिया*	1
2.	राज कपूर की फिल्मों का वैचारिक धरातल : सामाजिक यथार्थ रोमांस और आदर्शवाद का समन्वय	*डॉ. आशुतोष वर्मा* *प्रकाश नारायण त्रिपाठी*	5
3.	श्री राज कपूर की फिल्मों में नवाचार	*डॉ. दीप्ति*	13
4.	राज कपूर की फिल्मों की वैश्विक लोकप्रियता	*डॉ. हर्षा त्रिवेदी*	19
5.	राज कपूर की फिल्मों में महिलाओं का चित्रण : सत्यम शिवम सुंदरम और राम तेरी गंगा मैली के संदर्भ में	*डॉ॰ गुलज़बीन अख़्तर*	22
6.	भारतीय सिनेमा के गीतों में व्यक्त विभिन्न भाव राज कपूर के विशेष संदर्भ में	*डॉ. उषा दुबे*	28
7.	राज कपूर : भारतीय सिनेमा के शोमैन का जीवन परिचय और योगदान	*गरिमा जोशी*	35
8.	राज कपूर और उज़्बेकिस्तान	*डॉ. विजय पाटिल*	37
9.	राज कपूर की फिल्मों में सामाजिक सरोकार (फिल्म श्री 420, अनाड़ी तथा बूट पॉलिश के विशेष संदर्भ में)	*श्रीमती सीमा तोमर* *नेहा राठी*	41
10.	राज कपूर की वैश्विक लोकप्रियता	*डॉ. नवीन कुमार*	50
11.	राज कपूर के फिल्मों के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार	*कमोला रहमतजोनोवा*	59
12.	राज कपूर की फिल्मों में नारियों का चित्रण	*प्रभात कुमार*	62
13.	राज कपूर के फिल्मों में संगीत की जादूगरी	*प्रियंका ठाकुर*	67
14.	राज कपूर की फिल्मों में महिलाओं का वस्तुकरण और विरोधाभास : 'सत्यम शिवम सुन्दरम' के सन्दर्भ में	*ज्योति शर्मा*	71
15.	राज कपूर की वैश्विक लोकप्रियता	*नूरमतोवा ज़ुबैदा दिलशाद किज़ी*	76

16.	राज कपूर का फिल्मी सफर	*सोनाली शर्मा*	80
17.	भारतीय सिनेमा और समाजीकरण में राज कपूर का योगदान; आवारा, बूट पॉलिश और श्री 420 के विशेष सन्दर्भ में	*डॉ. दानिश खान* *मोहम्मद आमिर बद्र*	86
18.	राज कपूर - फिल्मी सफर	*वन्दना त्रिवेदी*	94
19.	राज कपूर का भक्त माहिनूर जी	*प्रो. उलफ़त मोहिबोवा*	98
20.	राज कपूर और उज्बेकिस्तान	*शम्सिकामर तिलोवमुरोदोवा*	101
21.	राज कपूर के फिल्मी गीतों की प्रसिद्धी और प्रासंगिकता	*डॉ. सुधा वी. गदग* *डॉ. बी. एस. हेमलता*	103
22.	''अमर कलाकार'' राज कपूर की 100वीं जयंती	*अहमदजोन कासिमोव*	107
23.	चार्ली चैप्लिन और राज कपूर	*प्रीति उपाध्याय*	112
24.	राज कपूर : एक फ़िल्म निर्माता और निर्देशक के रूप में	*डॉ. रीना सिंह*	116
25.	डिजिटल युग में शोमैन राज कपूर की फिल्मों की प्रासंगिकता	*परमेश कुमार*	122
26.	राज कपूर की फिल्मों का संगीत	*प्रभा लोढ़ा*	127
27.	चालीस से अस्सी दशक के चलचित्रों के नायक राज कपूर पर विभिन्न समालोचकों के निजी मत	*डॉ. नवल पाल*	133
28.	राज कपूर की फिल्मों में संगीत - विविध आयाम	*गायत्री जोशी*	140
29.	भारतीय सिनेमा के जीवंत कलाकार : राज कपूर	*डॉ. मोटवानी संतोष*	144
30.	उज़्बेक लोगों के पसंदीदा अभिनेता राज कपूर	*उल्फत मुहिबोवा*	149
31.	Raj Kapoor : A timeless beacon of Indian Cinema with effervescent attitude (1924-1988)	*Dr. Avkash Jadhav*	152
32.	The Ideology in the Films of Raj Kapoor : A Cinematic Vision of Indian Society	*Dr. Swati R Joshi*	154
33.	The Art of Showmanship: Exploring Raj Kapoor's Legacy in Indian Cinema	*Dr. Anuradha Shukla* *Arawal Shukla*	157

34. Raj Kapoor : An Institution of Film Making — *Dr. Urvashi Sharma*, *Dr. Lokesh Jain* — 164

35. The Musical Legacy of Raj Kapoor's Films — *Ismatullaeva Mutabar Xushvaqt Qizi* — 168

36. Raj Kapoor as a Global Villager : Special Reference to *Teesri Kasam* — *Parveen Kumar*, *Dr. Manju Rani* — 171

37. Global Popularity of Hindi Cinema & — *Raj Kapoor*, *Vikram Singh* — 176

38. From India to The Hispanic World : The Universal Appeal of Raj Kapoor's Cinema — *Rijvan* — 185

39. Unveiling Patriarchy : The Films of Raj Kapoor — *Nutan Verma* — 190

40. Negotiating Gendered Spaces : Feminist Readings of Agency and Sacrifice in Raj Kapoor's Select Cinema — *Sweta Kumari* — 195

41. Gandhian influence on Raj Kapoor's films — *Prof. Dr. Hemali Sanghavi* — 204

42. Unmasking Existence: An Analysis of Authentic Self in Raj Kapoor's *Mera Naam Joker* — *Rajnee Devi*, *Prachi Shanti* — 207

43. Gandhian influence on Raj Kapoor's films — *Prof. Dr. Hemali Sanghavi* — 213

44. Raj Kapoor's Films as a Mirror to His Contemporary Indian Society : Aspirations and Frustrations — *Dr. Manisha Patil* — 216

45. राज कपूर शताब्दी वर्ष और मध्य एशिया — *डॉ. मनीष कुमार मिश्रा*, *डॉ. नीलूफ़र खोजाएवा* — 223

46. राज कपूर की फिल्मों में सामाजिक मुद्दों का चित्रण : भारतीय समाज के बदलते परिप्रेक्ष्य का अध्ययन — *डॉ॰ प्रतिमा* — 227

47. राजकपूर : हिंदी सिनेमा का वैश्विक चेहरा — *डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह* — 237

48. The Filmy Journey of Raj Kapoor — *Dr. Sonal V. Jariwala* — 241

राज कपूर के सिनेमा में समसामयिक प्रासंगिक कथाएँ : भारत में सामाजिक परिवर्तन का प्रतिबिंब

डॉ. कल्पना
(हिंदी विभाग) सहायक प्रोफेसर
गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

प्रो. वंदना पूनिया
शिक्षा विभाग
गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

परिचय :

यह शोध-पत्र भारतीय सिनेमा के सबसे प्रसिद्ध फिल्म निर्माताओं में से एक, राज कपूर की फिल्मों में सामाजिक रूप से प्रासंगिक कथाओं के विश्लेषण पर आधारित है।

भारतीय सिनेमा का इतिहास एक ऐसा दर्पण है, जिसमें समय के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक बदलाव साफ झलकते हैं। 20वीं सदी के मध्य में, जब भारतीय समाज स्वतंत्रता के बाद अपने पुनर्निर्माण के दौर से गुजर रहा था, उस समय राज कपूर ने अपने सिनेमा के माध्यम से इस बदलाव को संवेदनशीलता और प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया।

राज कपूर के सिनेमा को भारतीय समाज का प्रतिबिंब कहा जा सकता है। उनकी फिल्मों में मनोरंजन और सामाजिक चेतना का अनोखा संगम देखने को मिलता है। उन्होंने न केवल समकालीन समस्याओं को दर्शाया, बल्कि उनके माध्यम से समाज को जागरूक करने का प्रयास भी किया। यह शोध-पत्र उनकी फिल्मों में समसामयिक कथाओं और उनके द्वारा समाज में लाए गए परिवर्तनों पर केंद्रित है।

स्वतंत्रता के बाद के भारत की चुनौतियों और आकांक्षाओं को दर्शाते हुए, कपूर की फिल्में कला और सक्रियता के मिश्रण के रूप में गूंजती हैं। प्रतीकात्मक कल्पना, भावनात्मक गहराई और संगीतमय कहानी कहने का उनके इस प्रयास ने सिनेमाई परिदृश्य को प्रभावित किया है, जिससे उनका यह योगदान शाश्वत रहेगा।

प्रासंगिक रूपरेखा :

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद का युग अत्यधिक सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन से चिह्नित था। विभाजन ने गहरे घाव छोड़े थे और देश को गरीबी, असमानता और पहचान निर्माण की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। सिनेमा, एक जन माध्यम के रूप में इन वास्तविकताओं को बयान करने का एक शक्तिशाली उपकरण बन गया। वैश्विक सिनेमा और भारतीय परंपराओं दोनों से प्रेरित राज कपूर एक ऐसे कहानीकार के रूप में उभरे जिन्होंने आम आदमी को आवाज दी। उनकी फ़िल्में, जिन्हें अक्सर सिनेमाई कविताओं के रूप में वर्णित किया जाता है, ने इस संक्रमणकालीन अवधि के सार को पकड़ लिया, जिससे उनकी कहानियाँ सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण हो गईं।

1. वर्ग विभाजन और सामाजिक असमानता कपूर की फिल्मों में एक आवर्ती विषय अमीर और गरीब के बीच गहरा विभाजन है।

आवारा (1951) : यह फिल्म गरीबी के कारण अपराध में धकेले गए एक युवक राज के जीवन के माध्यम से भाग्य बनाम स्वतंत्र इच्छा के विचार की पड़ताल करती है। यह प्रश्न करता है कि क्या किसी व्यक्ति का नैतिक चरित्र उनकी परिस्थितियों या अंतर्निहित स्वभाव से आकार लेता है। कपूर के भावनात्मक चित्रण के साथ अदालत के दृश्य, समाज में प्रचलित प्रणालीगत असमानताओं को रेखांकित करतें हैं।

श्री 420 (1955) : कपूर भौतिक संपदा के लालच और दलितों के शोषण की आलोचना करते हैं।

नायक, एक भोला-भाला घुमक्कड़, अपने नैतिक मार्गदर्शक को फिर से खोजने से पहले शहरी लालच के प्रलोभनों का शिकार हो जाता है। 'मेरा जूता है जापानी' जैसे गाने श्रमिक वर्ग के लिए लचीलेपन और गौरव का गीत बन गए।

इन फिल्मों के माध्यम से, कपूर ने उस युग के समाजवादी आदर्शों के साथ तालमेल बिठाते हुए धन की नैतिक कीमत और श्रम की स्थायी गरिमा को रेखांकित किया।

2. लिंग और पितृसत्ता :

कपूर के बाद के कार्यों, जैसे प्रेम रोग (1982) और सत्यम शिवम सुंदरम (1978) ने गहराई से व्याप्त लैंगिक मुद्दों को उठाया। उनकी फिल्में पारिवारिक मूल्यों और रिश्तों पर भी जोड़ देता हैं। 'बूंद जो बन गई मोती' जैसी फिल्मों में पारिवारिक बंदों की मेहता को दर्शाया गया है,जहां पारिवारिक संकट के समय शहर बनता है। वहीं दूसरी और अपनी फिल्मों के माध्यम से महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकारों पर ध्यान केंद्रित किया। 'संगम' में उन्होंने महिलाओं की स्वतंत्रता और उनके निर्णय लेने की क्षमता को महत्व पूर्णता दी।

प्रेम रोग : प्रेम और स्वीकृति के लिए एक विधवा के संघर्ष की यह मार्मिक कहानी विधवा पुनर्विवाह से जुड़ी सामाजिक वर्जनाओं को चुनौती देती है। नायक के लचीलेपन और उसे मिलने वाले समर्थन को चित्रित करके, कपूर ने सामाजिक सुधार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

सत्यम शिवम सुंदरम : अपने शारीरिक घावों के कारण बहिष्कृत एक महिला की कहानी के माध्यम से, कपूर ने सामाजिक निर्णयों की सतहीता की आलोचना की। फिल्म के सौंदर्य बनाम पवित्रता के विवादास्पद लेकिन विचारोत्तेजक चित्रण ने आंतरिक बनाम बाहरी मूल्यों पर चर्चा को आमंत्रित किया। कपूर की कहानियों ने महिलाओं के अधिकारों की वकालत की और पितृसत्तात्मक पर सवाल उठाया, जिससे यह फिल्में अपने समय से आगे बनी।

3. शहरीकरण और भ्रष्टाचार :

जैसे-जैसे भारत आधुनिक हुआ, कपूर ने शहरी जीवन की नैतिक दुविधाओं को पकड़ लिया। श्री 420 : हलचल भरा शहर परिदृश्य अपने आप में एक चरित्र बन जाता है, जो अवसर और भ्रष्टाचार दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। कपूर का चरित्र शहरी परिष्कार के पीछे छिपे लालच और नैतिक पतन को उजागर करते हुए, इस द्वंद्व को उजागर करता है।

जागते रहो (1956) : यह फिल्म शहरी निवासियों के व्यामोह और पाखंड को उजागर करती है। एक आम आदमी, जिसे गलती से चोर समझ लिया जाता है, सम्मानित दिखने वाले नागरिकों के काले पक्ष को उजागर करता है। कपूर के शहरी जीवन के चित्रण ने आधुनिकता के अलगाव और पारंपरिक मूल्यों के क्षरण की आलोचना की।

4. **मानवतावाद और सार्वभौमिक मूल्य :**

कपूर के सिनेमा ने मानवीय भावना के लचीलेपन और करुणा का जश्न मनाया। राज कपूर की कहानियों में मानवता और सहानुभूति का संदेश भी महत्वपूर्ण है।'जागते रहो' जैसे फिल्मों में उन्होंने सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया और दर्शकों को मानवता और दया की भावना की याद दिलाई।

जिस देश में गंगा बहती है (1960) : एक डाकू की मुक्ति की यह कहानी सजा के बजाय क्षमा और सुधार पर जोर देती है। कपूर का सरल ग्रामीण गुणों का चित्रण शहरी अभिजात वर्ग के लालच के विपरीत है, जो मानवतावाद के महत्व को पुष्ट करता है।

बूट पॉलिश (1954) : यह फिल्म अनाथ भाई-बहनों की ईमानदारी से श्रम के माध्यम से सम्मान के लिए प्रयास करने की कहानी बताती है। उनके संघर्षों और जीत पर ध्यान केंद्रित करके, कपूर ने प्रतिकूल परिस्थितियों पर काबू पाने में आशा और लचीलेपन के महत्व पर प्रकाश डाला। यह कथाएं सांस्कृतिक सीमाओं को पार करती हैं, सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के साथ प्रतिध्वनित होती हैं।

5. **सांस्कृतिक एकता एवं राष्ट्रवाद :** कपूर की फिल्में अक्सर भारत की विविधता और एकता का जश्न मनाती थीं। जिस देश में गंगा बहती हैः नाममात्र की नदी, गंगा आदि।

भारत के सांस्कृतिक लोकाचार के लिए एक रूपक के रूप में कार्य करती है। फिल्म के गाने और दृश्य देश की विरासत पर गर्व की भावना पैदा करते हैं। पात्रों और कथाओं के माध्यम से, कपूर ने सामूहिक पहचान और एकता की भावना को बढ़ावा देते हुए, भारत की विविध संस्कृतियों के बीच सामंजस्य को चित्रित किया।

6. **सामाजिक आख्यानों में सिनेमाई तकनीकें सामाजिक रूप से प्रासंगिक :** संदेश देने में कपूर की सफलता सिनेमाई भाषा में उनकी महारत में निहित है।

प्रतीकवाद : चार्ली चैपलिन से प्रेरित आवारा व्यक्तित्व, कपूर के लिए जनता से जुड़ने का माध्यम बन गया, जो मासूमियत और लचीलेपन का प्रतीक है।

संगीत और गीत : 'प्यार हुआ इकरार हुआ' और 'मुड़ मुड़ के ना देख' जैसे गाने न केवल मनोरंजक थे बल्कि गहरा सामाजिक और भावनात्मक अर्थ रखते थें।

मेलोड्रामा : कपूर ने अपनी सामाजिक आलोचनाओं के प्रभाव को बढ़ाने के लिए तीव्र भावनाओं का उपयोग किया, जिससे उनकी कहानियाँ आकर्षक और विचारोत्तेजक दोनों बन गईं।

7. **प्रभाव और विरासत :**

कपूर की फिल्मों ने भारतीय और वैश्विक सिनेमा पर अमिट छाप छोड़ी। सामाजिक टिप्पणियों को जन अपील के साथ मिश्रित करने की उनकी क्षमता ने भविष्य के फिल्म निर्माताओं को सिनेमा को बदलाव के माध्यम के रूप में उपयोग करने के लिए प्रेरित किया। आवारा जैसी फिल्मों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा हासिल की, जिससे सार्वभौमिक विषयों को संबोधित करने की भारतीय सिनेमा की क्षमता स्थापित हुई। आज भी, कपूर के कार्यों का उनकी कलात्मक और सामाजिक प्रासंगिकता के लिए अध्ययन किया जाता है, जो उनकी दृष्टि की कालातीतता को साबित करता है।

निष्कर्ष :

राज कपूर का सिनेमा मनोरंजन से कहीं बढ़कर था यह परिवर्तनशील समाज का प्रतिबिंब था। असमानता, लिंग, शहरीकरण और मानवीय मूल्यों

के मुद्दों को संबोधित करते हुए, उनकी फिल्में स्वतंत्रता के बाद के भारत की आकांक्षाओं और संघर्षों से गूंजती थीं। सम्मोहक कहानी कहने, यादगार संगीत और सार्वभौमिक विषयों के माध्यम से, कपूर की सामाजिक रूप से प्रासंगिक कथाएँ दर्शकों और फिल्म निर्माताओं को समान रूप से प्रेरित करती रहती हैं। एक फिल्म निर्माता के रूप में उनकी विरासत, जिन्होंने आम आदमी के हितों की वकालत की, महान सिनेमाई कहानीकारों की टोली में उनकी जगह सुनिश्चित करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. ड्वायर, आर. (2005). 100 बॉलीवुड फ़िल्में। बीएफआई प्रकाशन।
2. गर्गा, बी. डी. (1996)। सिनेमा की कलाः एक अंदरूनी सूत्र का दृष्टिकोण। पेंगुइन पुस्तके।
3. राजाध्यक्ष, ए., और विलेमेन, पी. (1999)।
4. भारतीय सिनेमा का विश्वकोश।
5. ब्रिटिश फ़िल्म संस्थान. मुखर्जी, आर. (2014)।
6. राज कपूर की फ़िल्मों में सामाजिक संदेश। दक्षिण एशियाई अध्ययन जर्नल.
7. कपूर, आर. (1951-1982)। चयनित फिल्मोग्राफीः आवारा, श्री 420, प्रेम रोग, बूट पॉलिश
8. सामाजिक समस्याओं और फिल्मों पर आधारित लेख।

राजकपूर की फिल्मों का वैचारिक धरातल : सामाजिक यथार्थ रोमांस और आदर्शवाद का समन्वय

डॉ. आशुतोष वर्मा
अस्टि. प्रोफेसर
गौतम बुद्धा विश्वविद्यायल ग्रेटर नोएडा, (उत्तर प्रेदश)

प्रकाश नारायण त्रिपाठी
शोध छात्र
सैम ग्लोबल विश्वविद्यालय भोपाल,(मध्य प्रदेश)

प्रस्तावना :

राज कपूर, जिन्हें अक्सर 'भारतीय सिनेमा के शोमैन' के रूप में जाना जाता है, वह एक ऐसी शख्सियत थे, जिन्होंने एक राष्ट्र की आत्मा को एक अलग ही नजरिए से सिनेमा में दिखाने का प्रयास किया। 14 दिसंबर, 1924 को प्रतिष्ठित कपूर परिवार में जन्मे, राज कपूर की सिनेमा की दुनिया में यात्रा कलात्मक प्रतिभा की एक प्रेरक कहानी है। सिनेमा का उनका सफर एक अतृप्त जिज्ञासा और अपने शिल्प के प्रति एक अटूट प्रतिबद्धता थी, जिसने उन्हें व्यावसायिक सफलता और कलात्मक नवाचार के बीच नाजुक संतुलन को बनाए रखने में मदद की।

कपूर की फ़िल्में केवल मनोरंजन से परे थीं, उनकी फिल्मों में अक्सर स्वतंत्रता के बाद के भारत के सामाजिक-राजनीतिक ताने-बाने की झलक दिखाई देती थीं। चाहे आवारा (1951) का व्यापक आशावाद हो, मेरा नाम जोकर (1970) का आत्मनिरीक्षण हो या श्री 420 (1955) की तीखी सामाजिक आलोचना हो, कपूर के काम ने सभी पीढ़ियों के दर्शकों को गहराई से प्रभावित किया। उनकी प्रतिष्ठित भूमिकाएँ, मार्मिक, हास्य और आदर्शवाद से युक्त थीं, जो आम आदमी के संघर्षों और सपनों का पर्याय बन गई।

यह शोध राज कपूर के जीवन, अभिनय और फिल्म निर्माण के कैरियर की संक्षिप्त लेकिन गहन विश्लेषण के उपरांत उनके फिल्मों की वैचारिक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत करता है, जिन्होंने सिनेमा का उपयोग समाज के संघर्षों एवं जीत को दर्शाने के लिए एक दर्पण के रूप में किया।

इस अध्ययन में उनके मानसिक एंव वैचारिक पक्षों पर भी प्रकाश डाला गया है, जो प्रसिद्धि को व्यक्तिगत संघर्षों के साथ संतुलित करता है और आदर्शवाद को फिल्म उद्योग की वास्तविकताओं के साथ संतुलित करता है। उनकी कलात्मक पसंद, सहयोग और सामाजिक प्रभाव के दृष्टिकोण के माध्यम से उनकी विरासत की जांच करके, यह शोध यह समझाने का प्रयास करता है कि कैसे राज कपूर ने न केवल भारतीय सिनेमा को आकार दिया, बल्कि लाखों लोगों के दिलों को भी छुआ, जिससे वे एक सांस्कृतिक प्रतीक बन गए, जिनका प्रभाव आज भी देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी कायम है।

कीवर्ड :

महत्वाकांक्षा, सामाजिक परिवर्तन, मानवीय संवेदना, पीढ़ीगत संघर्ष, व्यापक गरीबी, पितृसत्तात्मक, स्त्री संवेदना, भ्रष्टाचार

सामाजिक परिवर्तन की एक ज्वलंत गाथा : आग (1948) :

राजकपूर की पहली फिल्म, सामाजिक परितर्वन की एक ज्वलंत गाथा थी, राज कपूर की बतौर निर्देशक पहली फिल्म, आग (1948) ने अपने समय के पारंपरिक सिनेमा की राह से अलग एक साहसिक कदम उठाया,उनकी यह फिल्म महत्वाकांक्षा, प्रेम और मोहभंग की एक गहरी व्यक्तिगत अभिव्यक्ति है, जो कपूर के आंतरिक संघर्षों और स्वतंत्रता के बाद के भारत के व्यापक सामाजिक परिवर्तनों को दर्शाती है। आग तात्कालिक भारत में विकसित होते सामाजिक ताने-बाने का आईना बनकर उभरी।

फिल्म आग की कहानी, 'केवल' पर जोकि फिल्म का नायक है (राज कपूर द्वारा अभिनीत) के इर्द-गिर्द घूमती है, केवल एक आदर्शवादी युवक है, जो एक ऐसी नाटकीय दुनिया बनाने का सपना देखता है जहाँ सुंदरता और कला सर्वोच्च हो। हालाँकि, उसका जीवन दिल टूटने और अस्तित्व की निराशा से भरा हुआ है। फिल्म में तीन महिलाओं के साथ उनके संबंधों को दर्शाया गया है, जिनमें से प्रत्येक ने उनकी यात्रा पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

फिल्म गहराई से आत्मकथात्मक थी, जो थिएटर के लिए राज कपूर के जुनून और अधूरे सपनों से उनके मोहभंग को दर्शाती है। आग की तीन नायिकाएँ- कामिनी कौशल (निर्मला), नरगिस (केवल की प्रेरणा) और निगार सुल्ताना (एक आकर्षक नर्तकी) नारीत्व के अलग-अलग आदर्शों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

केवल (राज कपूर) नायक, शाश्वत स्वप्नदर्शी युवक है, जिसका आदर्शवाद जीवन की कठोर वास्तविकताओं द्वारा बार-बार कुचला जाता है। उनका चरित्र स्वतंत्र भारत के युवाओं से मेल खाता है, जो सपनों से भरा हुआ है, लेकिन उपनिवेशवाद के घावों से दबा हुआ है।

केवल के पिता एक रूढ़िवादी व्यक्ति जो केवल की थियटर के प्रति उसके लगाव को अस्वीकार करता है, पिता पुत्र का यह संबंध परंपरा और आधुनिकता के बीच पीढ़ीगत संघर्ष को दर्शाता है।

आग ने भारतीय सिनेमा में महिलाओं के प्रतिनिधित्व पर बढ़ती बहस को सूक्ष्मता से छुआ। फिल्म ने महिलाओं को पुरुषों की इच्छा की वस्तु के बजाय जटिल, बहुआयामी चरित्रों के रूप में दिखाया। हालांकि, इसने कामुकता के चित्रण जैसे दृश्य तत्वों का भी इस्तेमाल किया, ताकि मजबूत भावनात्मक प्रतिक्रियाएं पैदा की जा सकें।

अभी भी रूढ़िवादी मानदंडों से बंधे समाज में, इन चित्रणों ने स्क्रीन पर महिलाओं के शरीर को उजागर करने की नैतिकता के बारे में चर्चाओं को जन्म दिया। कुछ लोगों ने इसे वॉयेरिस्टिक प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने के रूप में आलोचना की, जबकि अन्य ने इसे महिलाओं को स्वायत्त व्यक्तियों के रूप में चित्रित करने की दिशा में एक आवश्यक कदम के रूप में देखा।

फिल्म आग ने पारंपरिक सामाजिक मानदंडों में दरार को उजागर किया, पुराने और नए विचारों के बीच तनाव को भी प्रकट किया, तथा पीढ़ीगत संघर्ष और कलात्मक स्वतंत्रता की खोज ने संक्रमण कालीन भारतीय समाज के ताने बाने के साथ ही नवीन युग के आगमन को प्रतिध्वनित किया, जिससे यह एक सामाजिक-सांस्कृतिक मील का पत्थर बन गई।

पहचान, प्यार और सामाजिक न्याय की एक अमर कहानी : आवारा (1951) :

राज कपूर की फिल्म आवारा पहचान, प्यार और सामाजिक न्याय की एक अमर कहानी थी। फिल्म आवारा भारतीय सिनेमा की सबसे प्रतिष्ठित फिल्मों में से एक है, जो अपनी सशक्त पटकथा, अमर संगीत और गहन सामाजिक टिप्पणी के लिए प्रसिद्ध है। आवारा की कहानी राज (राज कपूर द्वारा अभिनीत) एक युवा व्यक्ति जिसका जीवन उसके नियंत्रण से परे परिस्थितियों के कारण दुःखद मोड़ लेता है। एक टूटे हुए परिवार में जन्मे, राज जज

रघुनाथ (पृथ्वीराज कपूर) के बेटे हैं, जो इस कठोर विश्वास को मानते हैं कि अपराध विरासत में मिलता है। राज की माँ लीला (लीला चिटनिस) और रघुनाथ के अलगाव के कारण राज गरीबी में बड़ा होता है और अंततः जग्गा (के. एन. सिंह) नामक एक स्थानीय गैंगस्टर के प्रभाव में आकर अपराध की दुनिया में चला जाता है।

राज का जीवन बचपन की दोस्त और वकील रीता (नरगिस) के साथ जुड़ जाता है, जो उसकी आशा की किरण बनती है। उनकी प्रेम कहानी फिल्म का दिल बन जाती है नायिका की भूमिका रीता (नरगिस), आधुनिक भारत की आजाद ख्यालों वाली एक महिला का प्रतिनिधित्व करती है, जो पहले के भारतीय सिनेमा में अक्सर देखी जाने वाली विनम्र और आदर्शवादी महिलाओं से बिल्कुल अलग है।

रीता का किरदार राज को मानवीय रूप देता है और उसके आपराधिक अतीत के बावजूद उसकी अच्छाई पर अटूट विश्वास दिखाता है। फिल्म आवारा का नायक, राज एक दुःखी व्यक्ति है जिसका जीवन सामाजिक अन्याय और एक छोटे अपराधी से मुक्ति चाहने वाले व्यक्ति तक की उसकी यात्रा के मानवीय लचीलेपन की एक मार्मिक खोज है।

न्यायाधीश रघुनाथ (पृथ्वीराज कपूर) राज के अलग हुए पिता, उस समय की कठोर नैतिक और न्यायिक प्रणालियों के प्रतीक हैं। लीला (लीला चिटनिस) राज की माँ, लीला, पितृसत्तात्मक समाज में अकेली माताओं के बलिदान और संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। राज के लिए उसका बिना शर्त प्यार रघुनाथ की ठंडी उदासीनता के विपरीत है। जग्गा (के. एन. सिंह) का किरदार राज की कमज़ोरियों का फायदा उठाता है और उसे जल्द अपने गिरफ्त में लेकर भ्रष्ट मार्गों पर लेजाकर समाज को अंधकार में डुबोने का काम करता है।

आवारा फिल्म ने नैतिकता के नियतात्मक दृष्टिकोण को चुनौती दी, साथ ही सहानुभूति और समझ की वकालत की।

आवारा फिल्म में रीता के किरदार ने सिनेमा में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के बारे में चर्चा को बढ़ावा दिया। फिल्म महिलाओं को एक मजबूत, स्वतंत्र महिला के रूप में चित्रित किया। कुछ दृश्यों, जैसे कि स्वप्न दृश्य 'घर आया मेरा परदेसी' में कामुक कल्पना, ने फिल्म में महिलाओं के शरीर के वस्तुकरण के बारे में सवाल उठाए।

रीता के चरित्र ने महिलाओं को पारंपरिक घरेलू भूमिकाओं से परे भविष्य की कल्पना करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनका पेशा और मुखर व्यक्तित्व आधुनिक युग की जटिलताओं को नकारात्मक करने वाली महत्वाकांक्षी युवा महिलाओं के लिए एक रोल मॉडल बन गया।

भारतीय स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण की जटिलताओं को प्रतिबिंबित करती फिल्म : जिस देश मे गंगा बहती है (1960) :

यह फिल्म एक सिनेमाई मील का पत्थर है, जिसमें देशभक्ति, रोमांस और नैतिकता को एक सम्मोहक कथा में पिरोया गया है। राधु करमाकर द्वारा निर्देशित और राज कपूर द्वारा निर्मित, यह फिल्म ग्रामीण भारत की सुंदर पृष्ठभूमि पर आधारित है। यह फिल्म देश की नैतिक और सामाजिक दुविधाओं का प्रतिबिंब बनी और समाज के सभी वर्गों के दर्शकों की कल्पना को आकर्षित किया।

कहानी राजू (राज कपूर) के इर्द-गिर्द घूमती है, जो एक सरल, नेकदिल ग्रामीण है, जो अनजाने में सरदार (प्राण) के नेतृत्व वाले डकैतों के एक गिरोह के साथ उलझ जाता है। उसकी मासूमियत और अच्छाई में अटूट विश्वास धीरे-धीरे समूह को प्रभावित करता है और उनके जीवन के तरीके को चुनौती देता है। राजू की मौजूदगी से डाकुओं में नैतिक जागृति पैदा होती है, जो अंततः उनके आत्म समर्पण और समाज में पुनः एकीकरण की ओर ले जाती है।

फिल्म व्यक्तिगत परिवर्तन और बल पर अहिंसा की विजय है। इस विचार के विषयों को आपस में

जोड़ती है कि बहिष्कृत समझे जाने वाले लोग भी प्रेम और करुणा के माध्यम से खुद को मुक्त कर सकते हैं। यह स्वतंत्रता के बाद के भारत के लिए एक मार्मिक रूपक था, जो अपने खंडित सामाजिक ताने-बाने को फिर से बसाने और हाशिए पर पड़े समुदायों के उत्थान का प्रयास कर रहा था।

कम्मो (पद्मिनी) द्वारा चित्रित किरदार, डकैत गिरोह की सदस्य के रूप में, सामाजिक परिस्थितियों और व्यक्तिगत नैतिकता के बीच आंतरिक संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। कम्मो को शुरू में राजू पर भरोसा नहीं होता, लेकिन उसकी दयालुता और मानवता में अटूट विश्वास धीरे-धीरे उसे जीत लेती है।

राजू के लिए उसका प्यार उसके परिवर्तन का उत्प्रेरक बन जाता है, जो आशा और मुक्ति का प्रतीक है। कम्मो का किरदार एक ऐसी महिला का चित्रण है जो अपने दत्तक 'परिवार' के प्रति वफ़ादारी और शांतिपूर्ण जीवन की चाहत के बीच उलझी हुई है। राजू की सहज अच्छाई और सुधार में विश्वास अहिंसा और करुणा के गांधीवादी आदर्शों का प्रतिनिधित्व करता है।

सरदार (प्राण) डकैतों के कठोर नेता के रूप में, राजू के आदर्शों के प्रति सरदार का शुरुआती प्रतिरोध जड़ जमाए हुए सामाजिक पूर्वाग्रहों का प्रतीक है। हालाँकि, उसका अंतिम परिवर्तन सबसे अधिक अपूरणीय दिखने वाले व्यक्तियों में भी बदलाव की संभावना को रेखांकित करता है।

इस फिल्म के बहाने हाशिए पर पड़े समुदायों को एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें ग्रामीण भारत में डकैतों के पुनर्वास के प्रयास भी शामिल थे और यह विषय सीधे फिल्म में परिलक्षित होता है।

फिल्म ने सामाजिक सद्भाव और समावेशिता पर निर्मित आधुनिक भारत के जवाहरलाल नेहरू के दृष्टिकोण को प्रतिध्वनित किया। इसने ग्रामीण-शहरी विभाजन को भी दर्शाया, सामाजिक अंतर को पाटने के लिए करुणा और समझ की आवश्यकता को रेखांकित किया।

राजू का किरदार, अपने साहस और आशावाद के साथ, आदर्शवादी युवाओं के लिए एक आदर्श बन गया। फिल्म ने न केवल दंडात्मक उपायों का सहारा लेने के बजाय अपराध और सामाजिक अलगाव के मूल कारणों को संबोधित किया बल्कि उनके समाज में दुबारा विलय होने के महत्व पर प्रकाश डाला। कथा मुख्यधारा के समाज में डकैतों को एकीकृत करने के समकालीन प्रयासों के साथ संरेखित है, जो पुनर्वास के नेहरूवादी आदर्शों को दर्शाती है। इसने प्रेम और अहिंसा के गांधीवादी मूल्यों को भी मजबूत किया।

जिस देश में गंगा बहती है ने भारतीय सिनेमा और समाज पर एक अमिट छाप छोड़ी। इसका भावपूर्ण संगीत, विशेष रूप से 'मेरा नाम राजू' और 'होठों पे सच्चाई' जैसे गीत, आशा और अखंडता के गान बन गए। जटिल सामाजिक मुद्दों को भावनात्मक रूप से आकर्षक कथा में पिरोने की राज कपूर की क्षमता ने एक दूरदर्शी फिल्मकार के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को मजबूत किया। यह फिल्म प्रेम की परिवर्तनकारी शक्ति और स्थायी मानवीय भावना का प्रमाण बनी हुई है।

मानवीय भावना की एक महाकाव्य की खोजः मेरा नाम जोकर (1970) :

मानवीय भावना की एक महाकाव्य खोज है, एक गहरी व्यक्तिगत और दार्शनिक फिल्म है जो एक सर्कस के जोकर के जरिए से प्यार, विरह और खुशी की शाश्वत खोज को दर्शाती है।

मेरा नाम जोकर राजू की कहानी जो कि एक सर्कस का जोकर है और जिसका जीवन भावनात्मक उथल-पुथल, अधूरे प्यार और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए आगे बढ़ रहा है। फिल्म को तीन भागों में बांटा गया है, जिनमें से प्रत्येक राजू के जीवन में एक महत्वपूर्ण रिश्ते पर केंद्रित है। ये

प्रसंग, जहाँ गहरे व्यक्तिगत हैं, वहीं रूपक भी हैं, जो मानवीय भावनात्मक विकास के चरणों को दर्शाते हैं- मासूम प्यार, भावुक इच्छा और परिपक्व समझ। राज कपूर ने राजू के चरित्र में अपनी आत्मा डाल दी, एक ऐसी कहानी गढ़ी जो व्यक्तिगत कमज़ोरियों और मनोरंजन के बीच फंसे एक कलाकार के रूप में उनके अपने अनुभवों को दर्शाती है। फिल्म में सर्कस के बहाने जीवन का एक ऐसा मंच दिखाया गया है, जहाँ खुशी और दुःख एक साथ होते हैं और जहाँ व्यक्ति अक्सर अपने दर्द को एक मुखौटे के पीछे छिपाते हैं।

मेरा नाम जोकर की नायिकाएँ जिनमें से प्रत्येक राजू के जीवन के एक अलग चरण का प्रतिनिधित्व करती हैं, फ़िल्म की भावनात्मक गहराई और विषयगत प्रतिध्वनि के केंद्र में हैं।

मैरी (सिमी ग्रेवाल) राजू का पहला प्यार है, एक शिक्षिका जिसकी दयालुता और कृपा उसके प्रभावशाली युवा दिल पर एक अमिट छाप छोड़ती है। उसका चरित्र मासूमियत और बिना किसी प्यार के कड़वे दर्द का प्रतीक है। सिमी ग्रेवाल के संयमित अभिनय ने मैरी के कोमल लेकिन अप्राप्य सार को पकड़ लिया है, जो उसे राजू की भावनात्मक यात्रा में एक मार्मिक व्यक्ति बनाता है। मेना, एक रूसी ट्रैपेज़ कलाकार, राजू के जीवन के भावुक और उथल-पुथल भरे दौर का प्रतिनिधित्व करती है। राजू के साथ उसका रिश्ता शारीरिक आकर्षण और अंतरंगता के क्षणभंगुर क्षणों से परिभाषित होता है। मेना का चरित्र, प्रेम की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देता है, इसके क्षणभंगुर और अक्सर स्वार्थी स्वभाव को उजागर करता है।

रानी (पद्मिनी) एक परिपक्व शख्सियत है जो उम्र के साथ आने वाली समझदारी और स्वीकृति का प्रतीक है। राजू के साथ उसका रिश्ता रोमांस के बारे में कम और साहचर्य और आपसी सम्मान के बारे में अधिक है।

राजू (राज कपूर) नायक एक दुःखद व्यक्ति है, जिसका जीवन दूसरों को खुशी देने के इर्द-गिर्द घूमता है, जबकि वह खुद के दर्द को दबाता है। उसकी यात्रा कलात्मक अभिव्यक्ति में निहित बलिदानों की गहन खोज है।

फिल्म ने समाज से मनोरंजन के पीछे की मानवता को पहचानने और महत्व देने का आग्रह किया। इसने प्रदर्शन-संचालित संस्कृति में मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण के महत्व को भी बढ़ावा दिया। हालाँकि 'मेरा नाम जोकर को रिलीज़ होने पर व्यावसायिक विफलता का सामना करना पड़ा, लेकिन इसकी कलात्मक और भावनात्मक गहराई ने समय के साथ इसे आलोचकों की प्रशंसा दिलाई। राज कपूर की फ़िल्म ने निर्माताओं की अगली पीढ़ियों को प्रयोगात्मक सिनेमा अपनाने के लिए प्रेरित किया।

शंकर-जयकिशन द्वारा रचित फ़िल्म का संगीत आज भी लोगों की जुबां पर बसा हुआ है, जिसमें 'जीना यहाँ, मरना यहाँ' और 'काटे ना कटे' जैसे गाने इसके विषयों के सार को पकड़ते हैं। मेरा नाम जोकर एक गहरी मानवतावादी फ़िल्म है जो प्रेम, कला और मानवीय भावना में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। अपनी समृद्ध कथा और अविस्मरणीय पात्रों के माध्यम से, इसने जीवन के सार्वभौमिक सत्यों की खोज की, जिसने भारतीय सिनेमा और संस्कृति पर एक अमिट छाप छोड़ी।

पवित्रता, भ्रष्टाचार और स्त्री संवेदना का सामाजिक प्रतिबिंब की झलक : राज कपूर की राम तेरी गंगा मैली (1985) :

राम तेरी गंगा मैली (1985) राज कपूर की अंतिम निर्देशित फिल्म थी, यह फिल्म गंगा नामक एक ग्रामीण महिला की संवेदनाओं, दुःख और संघर्ष की एक यात्रा के माध्यम से समाज की छिपी हुई कमियों, रूढ़ियों एवं नैतिकता पर सवाल खड़े करती है। एक ग्रामीण महिला जिसकी मासूमियत और ईमानदारी को शहरी समाज के नैतिक पतन द्वारा

कदम-कदम पर चुनौती दी जाती है। शानदार दृश्यों, भावपूर्ण संगीत से भरपूर इस फिल्म ने भारतीय दर्शकों पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा। फिल्म की कहानी गंगा (मंदाकिनी) पर आधारित है, जो एक सरल और शुद्ध हृदय वाली ग्रामीण लड़की है, जो पवित्र नदी गंगा का प्रतिनिधित्व करती है और उसी के अनुरूप स्वयं पवित्रता और भारतीय सभ्यता की जीवन रेखा है। गंगा को शहर के एक अमीर व्यक्ति नरेन (राजीव कपूर) से प्यार हो जाता है। उनका प्यार सामाजिक बाधाओं को पार कर जाता है, लेकिन परिस्थितियाँ गंगा को नरेन से अलग कर देती है, और सागर से मिलने को बेताब कोई नदी अपने मार्ग में आए मोड़ों और चुनौतियों को जिस तरह पार करती है, ठीक उसी तरह नायिका गंगा अपने प्रेमी से मिलने के लिए एक खतरनाक यात्रा पर निकलने के लिए मजबूर होकर जीवन में हर चुनौतियों का सामना करती है।

जब गंगा शहरी संस्कृति से गुज़रती है, तो उसे लालच, शोषण और पाखंड का सामना करना पड़ता है। उसकी यात्रा भारतीय समाज को प्रभावित करने वाले दूषित विचार और नैतिक पतन का एक रूपक है। फिल्म की कथा पारंपरिक मूल्यों के क्षरण और आधुनिकीकरण के सामने मासूमियत के शोषण की ओर ध्यान आकर्षित करती है।

फिल्म में मंदाकिनी द्वारा गंगा का चित्रण फिल्म के भावनात्मक और प्रतीकात्मक प्रभाव का केंद्र था। उनके चरित्र में पवित्रता, लचीलापन और मातृ अनुग्रह समाहित था, जिसने उन्हें भरोसेमंद और आकांक्षी दोनों बना दिया। एक लापरवाह गाँव की लड़की से लेकर सामाजिक अन्याय से लड़ने वाली एक दृढ़ माँ, तक की गंगा की यात्रा भारत में कई महिलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले संघर्षों को दर्शाती है।

फिल्म में नरेन (राजीव कपूर)एक आदर्शवादी युवक है जो गंगा के प्रति अपने प्रेम और अपने धनी, शहरी परिवार की अपेक्षाओं के बीच फंसा हुआ है। उनका चरित्र आधुनिकता और परंपरा के बीच संघर्ष का प्रतिनिधित्व करता है।

1985 में रिलीज़ हुई, फिल्म ने पितृसत्तात्मक संरचनाओं में महिलाओं की दुर्दशा को भी उजागर किया, गंगा का किरदार ग्रामीण महिलाओं की आवाज़ बन गया, जिनके संघर्ष अक्सर शहरी प्रगति की छाया में अनदेखे रह जाते थे।

महिलाओं की संवेदनशीलता और सिनेमा में महिलाओं के शरीर के प्रदर्शन जिसमें मंदाकिनी के शरीर के खुले दृश्यों, विशेष रूप से झरने के दृश्य में चित्रण के लिए काफी आलोचना का सामना करना पड़ा। राज कपूर ने इन दृश्यों को शुद्धता और भेद्यता का प्रतीक बताते हुए उनका बचाव किया, जबकि आलोचकों ने तर्क दिया कि वे ताक-झांक की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं और फिल्म के अन्यथा गहन विषयों से ध्यान भंग करते हैं।

इस विवाद ने भारतीय सिनेमा में महिलाओं के चित्रण के बारे में व्यापक बहस को जन्म दिया। प्रगतिशील प्रतिनिधित्व के पक्षधरों ने तर्क दिया कि इस तरह के चित्रण महिला पात्रों को पुरुष इच्छा की वस्तु बना देते हैं, जबकि अन्य इसे मानवीय भेद्यता और सामाजिक पाखंड की एक आवश्यक खोज के रूप में देखते हैं।

फिल्म प्रेम और सामाजिक आलोचना की एक मार्मिक कहानी है। फिल्म ने मानवीय रिश्तों की जटिलताओं और उनकी नैतिक दुविधाओं को प्रदर्शित किया है।

बाल कलाकार के रूप में राजकपूर :

भारतीय सिनेमा के महान शोमैन राज कपूर ने 1935 की फिल्म इंकलाब में एक बाल कलाकार के रूप में अपने शानदार करियर की शुरुआत की। हालाँकि फिल्म में उनकी भूमिका छोटी थी, लेकिन इसने उन्हें भारतीय सिनेमा के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक के रूप में विकसित होने के लिए मंच तैयार किया। अभिनय और कहानी कहने की

दुनिया से इस शुरुआती संपर्क ने उनकी संवेदनशीलता को आकार दिया, जो बाद में उनकी फिल्मों की बारीक कहानियों में परिलक्षित हुआ। एक बाल कलाकार से एक सिनेमाई आइकन तक का उनका सफर फिल्म के प्रति उनके जुनून की गहराई और सामाजिक और राजनीतिक विचारधाराओं को अपनी कला में पिरोने की उनकी क्षमता को रेखांकित करता है।

देबाकी बोस द्वारा निर्देशित इंकलाब, स्वतंत्रता-पूर्व भारत के सामाजिक-राजनीतिक ताने-बाने में निहित एक फिल्म थी। 'इंकलाब' शब्द, जिसका अर्थ है 'क्रांति', उस समय की उपनिवेशवाद विरोधी भावनाओं के साथ प्रतिध्वनित हुआ। कहानी ने सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता और उत्पीड़न के खिलाफ सामूहिक जागृति के विषयों की खोज की।

राज कपूर के बाद के कामों में अक्सर आशा और न्याय के विषयों पर विचार किया जाता था, आवारा (1951) और बूट पॉलिश (1954) जैसी उनकी फिल्मों ने बच्चों और हाशिए पर पड़े व्यक्तियों को असमानता से भरी दुनिया में मासूमियत और गरीबी के कुचक्र में फंसी जिंदगी के प्रतीक के रूप में चित्रित किया। उदाहरण के लिए, बूट पॉलिश जो कि दो अनाथ भाई-बहनों की एक मार्मिक कहानी है जो गरीबी की कठोर वास्तविकताओं के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं, समाजवाद और समानता के प्रति राजकपूर के वैचारिक झुकाव ने अक्सर बच्चों को बदलाव के अग्रदूत के रूप में पेश किया।

राजकपूर की सबसे प्रतिष्ठित फिल्मों में से एक 'बॉबी' है। वैसे तो यह एक रोमांटिक ड्रामा है, लेकिन यह किशोरावस्था के रिश्तों की जटिलताओं और युवाओं द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों पर भी प्रकाश डालती है।

राजकपूर की फिल्मों की वैचारिक पृष्ठभूमि का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने न केवल मनोरंजन किया, बल्कि युवा मस्तिष्क को शिक्षित और प्रेरित भी किया। उनकी फ़िल्में अक्सर ईमानदारी, करुणा और आधुनिकता के आंदोलन जैसे सकारात्मक मूल्यों को बढ़ावा देती थीं। उन्होंने गरीबी, असमानता, बाल श्रम और नारी चेतना जैसे सामाजिक मुद्दों को भी छुआ और इन समस्याओं के संबंध में जागरूकता बढ़ाई।

निष्कर्ष :

राज कपूर का जीवन और करियर भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक चमकदार अध्याय के रूप में दीप्तिमान है, यह एक ऐसा सफ़र था, जो अथक जुनून, नवाचार और मानवीय भावना के साथ गहरे जुड़ाव से चिह्नित है। अपने अभिनय और फ़िल्म निर्माण के ज़रिए, राजकपूर ने न सिर्फ़ मनोरंजन ही किया बल्कि उन्होंने समाज को आईना दिखाया और इसकी आकांक्षाओं, संघर्षों और विरोधाभासों को बेजोड़ संवेदनशीलता के साथ कैद किया।

एक अभिनेता के रूप में, राजकपूर ने स्क्रीन पर ऐसे किरदारों को निभाया जो उम्मीद से भरे हुए थे, साधारण होते हुए भी वीर थे। उनके चित्रण दर्शकों के दिलों में गूंजते थे क्योंकि वे उनके अपने सपनों और दुविधाओं को दर्शाते थे। एक फ़िल्म निर्माता के रूप में उन्होने प्यार, विरह और सादगी भरी कहानियों की संजीदगी को शानदार सिनेमाई अनुभवों में पिरोया। उनकी फ़िल्में तात्कालिक मानदंडों से परे थीं, जिन्होने उन्हें न केवल भारत में ही बल्कि दुनिया भर में प्रशंसा दिलाई।

उनका काम स्वतंत्रता के बाद के भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य से गहराई से जुड़ा हुआ था और उनके आख्यान अक्सर बदलते समय पर मार्मिक टिप्पणी के रूप में काम करते थे। आवारा और श्री 420 की मासूमियत और आदर्शवाद से लेकर मेरा नाम जोकर के जटिल आत्म निरीक्षण तक, उन्होंने कलात्मक और सामाजिक दोनों ही तरह से मानदंडों को चुनौती दी और सीमाओं को आगे बढ़ाया।

जब हम राज कपूर की विरासत पर विचार करते हैं, तब हम एक परिवर्तनशील राष्ट्र, पहचान की तलाश में लगे लोगों और उन्हें आवाज़ देने वाले एक कलाकार की कहानी देखते हैं। उनका जीवन हमें सिनेमा की प्रेरणा देने, प्रश्न करने और एकजुट करने की स्थायी शक्ति की याद दिलाता है, उनकी यह विरासत कहानीकारों, स्वप्नदर्शियों और फिल्म निर्माताओं की आगामी पीढ़ियों के लिए मार्ग को रोशन करती रहेगी।

संदर्भ सूची :

1. आग मूल फिल्म 1948
2. आवारा मूल फिल्म 1951
3. जिस देश में गंगा बहती है मूल फिल्म 1960
4. मेरा नाम जोकर मूल फिल्म 1970
5. राम तेरी गंगा मैली मूल फिल्म 1985
6. इंकलाब मूल फिल्म 1935
7. बॉबी मूल फिल्म 1973
8. Documentary on Rajkur on Simi Grewal official YouTube channel (https://youtu.be/pG44h4HDPn0?si=Cm2mPDHTYWPyboPN)
9. Air radio programme based Life and work of legendary film personality Raj Kapoor. (https://youtu.be/ET4vEn5H9cw?si=l1gU9vx0tsySXZk3)
10. Book of Raj Kapoor and Hindi Films: Catalysts of Political Socialization in India by HutokshiJall
11. Book of **Raj Kapoor: The Fabulous Showman** by Bunny Reuben.
12. **The Dialogue of Awaara: Raj Kapoor's Immortal Classic** by Khwaja Ahmad Abbas, VasantaSathe, Suhail Akhtar, and Vijay Jani.
13. राजकपूर आधी हकीकत आधा फसाना (Raj Kapoor, half real, half story) by PrahaladaAgrawala.
14. BBC documentary based on Raj kapoor

श्री राज कपूर की फिल्मों में नवाचार

डॉ॰ दीप्ति
विभागाध्यक्ष हिंदी
हिंदू कॉलेज अमृतसर, पंजाब, भारत

भारतीय सिनेमा के इतिहास में स्वर्गीय श्री राज कपूर का नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। 21वीं सदी में भी हिंदी सिने जगत से संबंधित भारत की वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों व दर्शकों के लिए महान आदर्श एवं प्रेरणा स्रोत है। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कलाकार श्री राज कपूर सिनेमा जगत के बेमिसाल कोहिनूर हीरा है, जिनकी अभिनीत व निर्देशित फिल्मों की चमक एक शताब्दी बाद भी बरकरार है। हर्ष एवं गर्व का विषय है कि वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय भारतवासी श्री राज कपूर के हिंदी सिने जगत में विलक्षण योगदान हेतु उनके शताब्दी वर्ष पर सुदूर देश में स्थित लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति केंद्र (भारतीय दूतावास, ताशकंद, उज्बेकिस्तान) एवं ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज़ (ताशकंद, उज्बेकिस्तान) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'हिन्दी सिनेमा की वैश्विक लोकप्रियता और राज कपूर' विषय पर आयोजित एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय परिसंवाद' शताब्दी वर्ष : 1924-2024 पर आयोजन लाघनीय है।

स्वर्गीय श्री राज कपूर जी के पूरे फिल्मी करियर में दर्जनों सुपरहिट फिल्मों का रिकॉर्ड रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में 14 दिसंबर 2024 को उनके जन्म शताब्दी पर उनकी कुछ सुपरहिट फिल्मों एवं उनमें पाए जाने वाले नवाचारों पर चिंतन-मनन हैं। तत्कालीन वैश्विक स्तर पर प्रख्यात श्री राज कपूर एक विलक्षण अभिनेता, निर्देशक और निर्माता थे, जिन्होंने भारतीय हिंदी सिनेमा में नवाचारों के उपयोग द्वारा अद्भुत योगदान दिया। बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी श्री राज कपूर की हिन्दी भाषा की फिल्में पूरे भारत, मध्य पूर्व सोवियत संघ, यूरोप के कई देशों और चीन में लोकप्रिय थीं। ''भारतीय सिनेमा के 'द ग्रेटेस्ट शोमैन' यानी राज कपूर को भारतीय सिनेमा के इतिहास में सबसे महान और सबसे प्रभावशाली फिल्म निर्माता और अभिनेता माना जाता है। उन्हें समीक्षकों और अपने चाहने वालों से हमेशा सराहना ही मिली। फिल्मों के इतिहासकार और सिनेमा के शौकीन लोग उन्हें हिंदी सिनेमा का चार्ली चैपलिन कहते थे।''[1]

श्री राज कपूर का फिल्मों में अभिनय का आरंभ सन् 1935 में फिल्म 'इंकलाब' में मात्र 11 वर्ष की उम्र में हुआ था। आरंभ में बॉम्बे टॉकीज स्टूडियो में सहायक का काम करते-करते श्री केदार शर्मा के साथ क्लैपर बॉय का कार्य करने लगे। निर्देशक श्री केदार शर्मा ने ही सर्वप्रथम श्री राज कपूर के भीतर की विलक्षण अभिनय प्रतिभा को पहचाना और उन्हें 1947 में 'नीलकमल' फिल्म में बतौर नायक सुनहरा अवसर प्रदान किया। बतौर नायक उन्होंने- चितौड़ विजय, दिल की रानी, अमर प्रेम इत्यादि फिल्मों में नायक की भूमिका बखूबी निभाई। 1948 में सृजनात्मकता को नयी बुलंदियों पर पहुंचाते हुये उन्होंने आगे बढ़ते हुए अभिनय के साथ-साथ निर्माता-निर्देशन के क्षेत्र में भी अपना योगदान देते हुए 'आग' फिल्म का निर्माण किया, हालांकि यह फिल्म सफलता के पायदान को नहीं छू पाई। तत्पश्चात् हिम्मत न हारते हुए श्री राज कपूर ने अभिनेता के

साथ-साथ निर्माता एवं निर्देशक के रूप में 'बरसात' फिल्म का निर्माण किया और इस फिल्म ने प्रदर्शन के बाद सफलता के शिखरों को छुआ। तत्पश्चात् इन्होंने फिल्म निर्माण का कार्य निरंतर जारी रखा। इसी बीच 1951 में 'आवारा' फिल्म ने आश्चर्यजनक सफलता के सभी रिकार्ड तोड़ते हुए श्री राज कपूर को अभिनेता और फिल्मकार के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि प्रदान की। 'आवारा' फिल्म ने तत्कालीन समय में विश्व के अनेक देशों-सोवियत संघ, पूर्वी एशिया, अफ्रीका, मध्य पूर्व और पश्चिमी यूरोप में सफल भारतीय सिनेमा का परचम लहराया। इसका गाना 'आवारा हूँ' सोवियत संघ, चीन, बुल्गारिया, तुर्की, अफगानिस्तान और रोमानिया तक सर्व प्रसिद्ध हुआ। इस फिल्म को 1953 में कांन्स फिल्म फेस्टिवल में ग्रैंड प्राइज के लिए भी नामित किया गया था। टाइम मैगजीन ने आवारा को 100 सबसे बेहतरीन फिल्मों की लिस्ट में भी शामिल किया।

लेखक-पत्रकार विनोद विप्लव के शब्दों में :

''भारत ने विश्व स्तर पर चाहे जो छवि बनायी हो और उसके जो भी नये प्रतीक हों, लेकिन इतना तय है कि चीन, पूर्व सोवियत संघ और मिस्र जैसे देशों में राजकपूर हमेशा के लिए भारत का प्रतीक बने रहेंगे। चीन के सबसे बड़े नेता माओ-त्से-तुंग ने सार्वजनिक तौर पर कहा था कि 'आवारा' उनकी सर्वाधिक पसंदीदा फिल्म थी। शायद यही कारण है कि आज भी पेइचिंग और मास्को की सड़कों पर घूमते-टहलते हुए 'आवारा हूँ' गीत सुनाई पड़ने लगते हैं। यह राज कपूर की लोकप्रियता के विशाल दायरे का एक उदाहरण मात्र है।''[2] तत्पश्चात उनकी 'अम्बर', 'अनहोनी', 'बेवफ़ा' और 'आशियाना, 'आह', 'धुन' और 'पापी'। 'सन् 1955 में आर॰ के॰ फिल्म्स की 'श्री 420' ने फिर से राज कपूर को सबसे बढ़कर बना दिया। इस फिल्म को सफलता तो मिली ही, देश-विदेश में सराहना भी हुई। और इन दोनों से बढ़कर यह कि 'श्री 420' अपने समय की सबसे अलग फिल्म थी बिल्कुल नए मिजाज की। दर्शकों को इसमें नया स्वाद मिला। उन्होंने इसकी संवेदनशील भाषा में सामाजिक जिन्दगी का नया अर्थ पहचाना।''[3] तत्पश्चात उनकी- 'जागते रहो' और 'चोरी-चोरी, 'शारदा', 'परवरिश', 'फिर सुबह होगी', 'अनाड़ी', 'दो उस्ताद', 'कन्हैया', 'मैं नशे में हूँ' तथा 'चार दिल चार राहें', 'छलिया', 'श्रीमान् सत्यवादी' तथा 'जिस देश में गंगा बहती है' नज़राना, आशिक, 'दिल ही तो है' तथा 'एक दिल सौ अफ़साने' फिल्मी दर्शकों के लिए प्रदर्शित हुई। इन फिल्मों के पश्चात प्रदर्शित '''संगम' फिल्म ने रागात्मक सम्मोहन, नयनाभिराम दृश्यांकन और मधुर संगीत ने मिलकर इसे घनघोर लोकप्रिय बना दिया। भारत में ही नहीं, यूरोप के अनेक देशों में भी 'संगम' को बहुत सफलता मिली। 'संगम' ने राज कपूर को एशिया का सबसे बड़ा शो मैन बना दिया।''[4] इसके पश्चात 'तीसरी कसम', 'अराउंड द वर्ल्ड', 'दीवाना' तथा 'सपनों का सौदागर' प्रदर्शित हुईं।' 1970 के दिसंबर में आर॰ के॰ फिल्म्स की अपने समय की सबसे महँगी फिल्म 'मेरा नाम जोकर' अखिल भारतीय स्तर पर एक साथ प्रदर्शित हुई। यह राज कपूर के जीवन की सबसे महत्त्वाकांक्षी फिल्म थी। फिल्म समालोचक प्रहलाद अग्रवाल के शब्दों में :

''... निश्चय ही राजकपूर इसके माध्यम से (बाजार) लूटने के लिए नहीं, अपने कलाकार की मुक्ति की उद्दाम आकांक्षा से उद्वेलित होकर निकले थे।... एक निर्देशक और एक कलाकार के रूप में राजकपूर ने अपनी जिन्दगी का सब-कुछ 'जोकर' को दिया। एक निर्माता के रूप में उन्होंने अंग्रेजी की 'लेफ्ट नो स्टोन अनटर्न्ड' कहावत चरितार्थ की। 'मेरा नाम जोकर' राजकपूर के सपनों का एक ऐसा तमाशा था जिसे वह एक साथ कलात्मक और व्यावसायिक ऊँचाइयों तक पहुँचाना चाहते थें।... 'जोकर' असफल हो गयी। राजकपूर की जिन्दगी का सबसे बड़ा सपना मिट्टी में मिल गया। वह सपना जिसके लिए उसने अपना पूरा अस्तित्व दाँव पर लगा दिया था। इस सब के बावजूद 'जोकर' राजकपूर की महानतम कलाकृति है जिसमें उसने अपने व्यक्तित्व, अपने रचनात्मक कौशल और कलाकार की पीड़ा

को अत्यन्त मार्मिक और सघन अभिव्यक्ति दी है।'[5] राज कपूर ने 'मेरा नाम जोकर' फिल्म के साथ ही नायक के रूप से विदा ले ली। इसके बाद उन्होंने कई फिल्मों में चरित्र अभिनेता के रूप में भूमिकाएँ निभायीं। निर्माता-निर्देशक के रूप में स्वनिर्मित सुपरहिट 'बॉबी', हिट 'सत्यम शिवम सुन्दरम, 'प्रेम रोग', अप्रत्याशित रूप से सफल 'राम तेरी गंगा मैली' का निर्माण किया। 'हिना' के निर्माण के दौरान ही वह इस नश्वर संसार से अलविदा लेकर ईश्वर के चरणों में जा विराजे। श्री राज कपूर हिंदी सिनेमा को एक से एक बेहतरीन फिल्में देने के लिए सन् 1987 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार और कला के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन 1971 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। उन्हें तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और 11 फिल्म फेयर पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें हिंदी सिने जगत में अपने विलक्षण अवदान के लिए फिल्मों के सबसे बड़े सम्मान 'दादा साहेब फाल्के' अवार्ड से भी सम्मानित किया गया।

श्री राजकुमार कपूर हिंदी सिने जगत के ऐसे महत्वपूर्ण हस्ताक्षर थे, जिन्होंने निर्भयता से भारतीय सिने जगत में नवाचार और परिवर्तन का समर्थन किया। उनकी फिल्में केवल दर्शकों के मनोरंजन के लिए ही नहीं, अपितु नव स्वतंत्रता प्राप्त भारत के सामाजिक, राजनीतिक, सामान्य जन की समस्याओं, युवा वर्ग की भावनाओं, प्रौद्योगिकी इत्यादि विभिन्न आयामों से दर्शकों को परिचित करवाती थी।

नवाचारी तत्व : श्री राज कपूर की अनगिनत प्रसिद्ध, बेजोड़ फिल्मों में निःसंदेह रूप से नवाचारी तत्व परिलक्षित होते हैं, जिन पर यहां चिंतन- मनन किया जा रहा है :

सामाजिक क्षेत्र : राज कपूर की फिल्मों में समाज के विभिन्न पहलुओं जैसे गरीबी, भ्रष्टाचार और समाज में व्याप्त अन्याय पर चिंतन मनन कर इन समस्याओं से दर्शकों को अवगत करवाया गया। 1955 में आर. के. फिल्म की 'श्री 420' ने नए-नए स्वतंत्र हुए भारतीयों को समाज के नए पहलुओं से अवगत करवाया गया। प्रस्तुत फिल्म अपने तत्कालीन समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भारतवासियों को जागरूक करती है।

''उस समय 'श्री 420' में सभ्यता और प्रगति की आड़ में पनप रही खोखली नैतिकता को पहचानने की कोशिश के साथ ही उसके संभावित खतरों से आगाह किया गया था।''[6] निर्माता-निर्देशक के रूप में उनके द्वारा निर्मित 'प्रेम रोग' फिल्म ने तत्कालीन समाज में प्रचलित विधवा विवाह की समस्या का समाधान प्रस्तुत किया। यह न केवल विधवा-विवाह की समस्या पर आधारित थी, वरन् मूलतः यह औरत के बारे में तत्कालीन सामंती सोच पर बहुत से सूक्ष्मता से प्रहार करने वाली फिल्म थी। स्त्री के अक्षत कौमार्य की रुढ़िगत महत्ता को अत्यंत कलात्मकता के साथ इसमें तोड़ा गया है।[7] इसी तरह उनकी फिल्म 'श्री 420' शिक्षित वर्ग के लिए भयावह महामारी की तरह व्याप्त बेरोजगारी की समस्या को इंगित करते हैं। 'श्री 420' (1955) में उन्होंने भौतिकवाद और भ्रष्टाचार की आलोचना की। इसी तरह आवारा और मेरा नाम जोकर (1970) जैसी फिल्मों में समाज के वर्गीय भेदभाव और व्यक्तिगत संघर्षों को भी चित्रित किया गया।

कला का क्षेत्र : सन् 1956 में श्री राज कपूर की 'चोरी-चोरी' फिल्म कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। प्रस्तुत फिल्म कि महत्व इस तथ्य से जांचा जा सकती है कि प्रस्तुत फिल्म कार्लोरीवेरी अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का 'ग्रैंड प्रीं' पुरस्कार से पुरस्कृत हुई। कलात्मक दृष्टि उनकी फिल्म 'तीसरी कसम' भी बेहद लोकप्रिय रही। मास्को में इस फिल्म ने अद्भुत कला के दम पर पुरस्कार भी प्राप्त किया। इसी तरह श्री राज कपूर की 'मेरा नाम जोकर' फिल्म की पटकथा जोकर की दर्शनिकता, करुणा से सराबोर और उदासी से परिपूर्ण कर देने में सक्षम संगीत, टेक्निकल रंग प्रस्तुति इत्यादि से परिपूर्ण कला का उत्कृष्ट नमूना थी। 'फिल्म समालोचक प्रहलाद अग्रवाल के शब्दों में : '''जोकर' राजकपूर की महानतम कलाकृति है जिसमें उसने अपने व्यक्तित्व, अपने रचनात्मक कौशल और

कलाकार की पीड़ा को अत्यन्त मार्मिक और सघन अभिव्यक्ति दी है।''[8]

राजनीति के क्षेत्र में - 1951 में आई 'आवारा' फिल्म ने सर्वप्रथम भारत के सिने जगत को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलवाते हुए सोवियत ब्लॉक, चीन, मध्य एशिया, अफ्रीकी और अरब देशों में बहुत प्रसिद्ध हुई। 'आवारा' फिल्म सोवियत संघ में अप्रत्याशित रूप से अत्यधिक प्रसिद्ध हुई। ''फ़िल्म का गाना 'आवारा हूँ' हर सोवियत की ज़ुबान पर था और वो एक तरह से वहाँ का राष्ट्रीय गीत बन गया। वर्ष 1954 में अकेले 6 करोड़ 40 लोगों ने 'आवारा' के टिकट खरीदे, जिनमें अधिक्तर युवा थे।''[9]

'आवारा' फिल्म हिंदी सिने जगत की ऐसी फिल्म थी, जिसने दो देशों को नज़दीक लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'आवारा क्रेमलिन के साथ नई दिल्ली के नवजात मेल-मिलाप के लिए एक सॉफ्ट पावर पोषक तत्व था, यह मॉस्को द्वारा इसके उत्सुक प्रचार से स्पष्ट था, जिसने इसकी कद में सहायता के रूप में, सोवियत संघ के अंदर रचनात्मकता की वापसी को प्रेरित किया और इसके साथ ही, इसके आदर्शों की बाहर व्यापक स्वीकृति का प्रतीक बना। भारत के लिए, समाजवादी आकांक्षाओं, यथार्थवादी शब्दार्थ, हठधर्मिता विरोधी साहस और उत्तेजक संगीत को समेटे हुए, आवारा ने रूस के कट्टर भारत-विरोधी लोगों को आकर्षित किया। इसने सोवियत संघ द्वारा भारतीय समाज और नेतृत्व की पुनः खोज को वैधता प्रदान की और उसे गति प्रदान की। नेहरू से पहले युद्ध के बाद के रूसियों तक पहुँचते हुए, इस फ़िल्म ने सुनिश्चित किया कि भारतीय प्रधानमंत्री को 1955 में मॉस्को की अपनी पहली आधिकारिक यात्रा पर एक शानदार स्वागत मिले - जो एक स्पष्ट रूप से भाई चारे वाले समाज के मित्र के लिए उपयुक्त था। अपने घर लौटने पर, जब नेहरू राज कपूर के पिता पृथ्वीराज से मिले, तो उन्होंने उन्हें एक तरफ़ ले जाकर कहा : ''यह कौन सी फ़िल्म है जो आपके बेटे ने बनाई है (रूसी) हर समय इसके बारे में बात कर रहे थे' (नंदा 2002, पृष्ठ 106)।[10] इसके अतिरिक्त भारत और पाकिस्तान के बंटवारे की पृष्ठभूमि पर निर्मित फिल्म 'छलिया' ने सफलतापूर्वक भारत वासियों के दिलों पर राज किया।

प्रौद्योगिकी का उपयोग : श्री राज कपूर ने अपनी फिल्मों में नवीनतम प्रौद्योगिकी का उपयोग किया। उन्होंने हिंदी साहित्य जगत को प्रथम रंगीन फिल्म 'संगम' प्रदान की, जिसमें उन्होंने बहुआयामी प्रतिभा का परिचय देते हुए निर्माता, निर्देशक, संपादक और नायक की भूमिकाओं के दायित्वों का बखूबी निर्वहन किया। प्रस्तुत फिल्म भारत के साथ-साथ यूरोप के अनेक देशों में भी बहुत लोकप्रिय हुई। इस फिल्म ने श्री राज कपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन की उपाधि प्रदान की। श्री राज कपूर ने अपनी फिल्मों में तकनीकी नवाचारों का परिचय देते हुए 'आवारा' और 'श्री 420' जैसी फिल्मों में संवाद, संगीत और दृश्यों के माध्यम से भावनाओं को अद्भुत मन मोहन एवं प्रभावी विधि से प्रदर्शित किया। 'सत्यम शिवम सुंदरम' जैसी फिल्मों में रंगों और ध्वनि का विशेष प्रयोग कर दर्शकों को सम्मोहित किया।राज कपूर ने अपनी फिल्मों में रंगों, दृश्य संयोजन और प्रकाश और कला की तकनीकी पहलुओं को बहुत ही प्रभावशाली तरीके से इस्तेमाल किया।

रोमांटिक कहानियां : उनकी फिल्में रोमांटिक कहानियों के लिए भी प्रसिद्ध थीं, जो दर्शकों को आकर्षित करती थीं। ऐसे ही फिल्मों में केवल निर्माता-निर्देशक के रूप में उन्होंने 'बॉबी' फिल्म में अपने बेटे ऋषि कपूर और डिंपल कपाड़िया जैसे नवीन कलाकारों को मुख्य भूमिका में लाकर तत्कालीन युवा वर्ग के लिए रोमांस का एक नया पहलू प्रस्तुत किया। इसी प्रकार देश की सीमाओं को लांगते हुए उन्होंने 'हिना' फिल्म में भारतीय युवक और पाकिस्तान युवती की प्रेम कहानी को प्रस्तुत किया। 'संगम' और 'मेरा नाम जोकर' भी रोमांटिक फिल्मों की श्रेणी में अपनी उत्कृष्टता को स्वयं सिद्ध करती हैं। राज कपूर

ने प्रेम कहानियों को मादक अंदाज़ में दिखाकर हिन्दी सिनेमा के लिए एक नया रास्ता तय किया।

बोल्ड और अनूठी कहानी-संरचना :

श्री राज कपूर की फिल्मों में बहुत बार परंपराओं से हटकर अनूठी कहानी संरचनाओं का प्रयोग हुआ। जैसे कि ड्रीम प्रोजेक्ट मेरा नाम जोकर (1970) में प्रदर्शित फिल्म का रनिंग टाइम 4 घंटे 43 मिनट था। 15 दिनों के पश्चात ही इसे 4 घंटे 9 मिनट के समय का कर दिया गया और बाद में काफी छोटा कर लगभग 3 घंटे की फिल्म कर दी गई, जो उस समय का एक नया प्रयोग था। उनके द्वारा निर्मित 'राम तेरी गंगा मैली' ने तो जैसे दर्शकों को सम्मोहित कर दिया था। इस फिल्म में तत्कालीन समय से परे हटकर बोल्ड सीन दिखाए गए। ''फिल्म के एक दृश्य में पहाड़ों में रहने वाली एक लड़की के निर्द्वन्द्व तथा उन्मुक्त जीवन को दर्शाने के लिए दिखलाये गये छोटे से उन्मुक्त दृश्य पर कुछ लोगों ने काफी हो हल्ला मचाया; परंतु इस फिल्म को देखने के लिए उमरी पारिवारिक दर्शकों की भारी भीड़ तथा उसमें भी महिलाओं की प्रभूत संख्या ने सबके मुंह बंद कर दिये।''[11]

संगीत और नृत्य : राज कपूर की फिल्मों का अभिन्न अंग संगीत और नृत्य भी रहा। वह संगीत और नृत्य को केवल दर्शकों के मनोरंजन हेतु ही प्रयोग नहीं करते थे, अपितु वह कथानक और कहानी की भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु इसे आकर्षक व अनिवार्य रूप भी प्रदान करते थे। 'आवारा' (1951) और 'श्री 420' (1955) जैसी फिल्मों में संगीत और कहानी का गहरा संबंध दृष्टिगोचर होता है, जिसके मधुर गीत मनोरंजन के साथ-साथ पात्रों के भीतर की यथार्थ भावनाओं से दर्शकों को परिचित करवा कर उन्हें आनंद प्रदान करते हैं।

'आवारा' फिल्म का गाना 'आवारा हूँ' सोवियत संघ, चीन, बुल्गारिया, तुर्की, अफगानिस्तान और रोमानिया तक हिट हुआ। 'श्री 420' का गाना 'मेरा जूता है जापानी' आजाद भारत में एक देशभक्ति गाने का प्रतीक माना गया। 'बरसात' का संगीत देश-काल की सीमाओं को लाँघ गया। चारों ओर मुकेश और लता के गाये हुए गीतों की धुन थी। गायिका लता मंगेशकर की पहचान भी 'बरसात' फिल्म में ही मुख्यतः बन पायी। 'बरसात' पूरी तरह एक नयी फिल्म थी जिसकी नसों में पूरा का पूरा नया खून था। इतनी ताजगी और स्वनिर्मिती के साथ जुड़कर इस तरह सफल होने का दूसरा कोई उदाहरण आजादी के बाद के हिन्दी सिनेमा के पास नहीं है।.... 'दिल ही तो है' में ही मन्ना डे की आवाज में गाया गया सुप्रसिद्ध गीत था 'लागा चुनरी में दाग छुपाऊँ कैसे।''[12]

विदेशों में शूटिंग एवं नवीन चलनों का आरंभः श्री राज कपूर ने विदेशों में शूटिंग करने का चलन शुरू किया था। 1950 में श्री राज कपूर ने चेम्बूर में चार एकड़ ज़मीन लेकर आरके स्टूडियो की स्थापना की थी। उनके फिल्मों के कथानक उनके निजी जीवन से संबंधित होते थे और लगभग अपनी फिल्मों के वे ही हीरो होते थे।

प्रभाव और विरासत :

भारतीय सिने जगत में श्री राज कपूर द्वारा निर्मित फिल्में मील का पत्थर सिद्ध हुई है। समकालीन दर्शकों के मनोरंजन हेतु तत्कालीन समय के निर्देशकों और अभिनेताओं में सर्वप्रमुख श्री राज कपूर को फिल्म इतिहासकारों ने 'हिंदी सिनेमा का चार्ली चैपलिन' की भी संज्ञा दी है। भारतीय सिनेमा के महत्वपूर्ण निर्देशकों में से एक श्री राज कपूर जी की परिगणना की जाती है। उनकी फिल्में कालातीत है और आज भी दर्शकों को सम्मोहित करने में पूरी करने से सक्षम है। अपनी दूर दृष्टि से अपने समय से कहीं आगे के समय की आवश्यकताओं के चिंतन- मनन की क्षमता रखते थे। यही कारण है कि श्री राज कपूर की फिल्मों में नवाचार के कई पहलू दृष्टिगोचर होते हैं।

निष्कर्ष : हिंदी सिने जगत के अमर हस्ताक्षर स्वर्गीय श्री राज कपूर की फिल्में आधुनिक समय में भी नितांत प्रासंगिक है। दूरदर्शी श्री राज कपूर की

फिल्मों में नवाचार अनेक रूपों में परिलक्षित है। चाहे वह तकनीकी पक्ष हो या सामाजिक, राजनीतिक, मनोविज्ञान, विशेष विचारधारा से संबंधित हो। निःसंदेह उन्होंने भारतीय सिने जगत को सशक्त एवं विशिष्ट यथार्थ की धरा पर स्थापित करते हुए उसे नवीन दिशा-निर्देशन दिया। बच्चे, युवा या वृद्ध इन सभी वर्गों के मनोरंजन के साथ-साथ इनसे संबंधित विभिन्न समस्याएं भी स्पष्ट परिलक्षित होती हैं। राज कपूर की लोकप्रियता का अंदाजा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि उज़्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में आज भी राज कपूर नाम से एक प्रसिद्ध भारतीय व्यंजनों का रेस्टोरेन्ट है।

राजकपूर की बहुआयामिता एवं सार्वकालिक महत्ता के संदर्भ में सिनेमा संबंधी अनेक पुस्तकों के लेखक डॉ॰ सी॰ भास्कर राव ने लिखा है कि :

'वे भारतीय सिनेमा के एक ऐसे कलाकार थे, जिनकी तुलना अन्य किसी कलाकार से नहीं की जा सकती है। सिनेमा का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसका ज्ञान और अनुभव उन्हें नहीं रहा हो। सिनेमा उनमें बसता था और वे खुद सिनेमा को जीते थे, यही कारण है कि वे एक मिसाल बन गए। ...उनकी कामयाबी और ऊँचाई तक कोई भी पहुँच नहीं पाया है। ...उन्हें अपने अभिनय के लिए दस सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं में एक माना गया। ...उन्हें सदी के सर्वश्रेष्ठ निर्देशक और सदी के सर्वश्रेष्ठ शो मैन का सम्मान भी प्रदान किया गया।... उन्हें सिनेमा का सबसे बड़ा शो मैन माना जाता है, लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि वे सिर्फ व्यावसायिक फिल्में ही बनाते थे। उनकी अधिकांश फिल्मों में व्यावसायिकता, कलात्मकता, साहित्यिकता और सामाजिकता का सम्मोहक सम्मिश्रण मिलता है। वास्तव में वे एक हरफनमौला सिने व्यक्तित्व थे। उनकी फिल्मों का हर पक्ष इतना सधा हुआ होता था कि हिन्दी सिनेमा का हर दर्शक उससे मुग्ध हो जाता था। वे हिन्दी और भारतीय सिनेमा के वैसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने उसे एक विश्वमंच प्रदान किया।... नायक तो सिनेमा के क्षेत्र में बहुतेरे हुए, पर राज जैसे नायक सदियों में कोई एक ही होता है।''[13]

सन्दर्भ :

1. श्री राज कपूर, https://www.google.com/amp/s/www.amarujala.com/amp/photo-gallery/entertainment/bollywood/birthday-special-top-ten-movies-and-characters-of-bollywood-legend-actor-raj-kapoor
2. वहीं, https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C_%E0%A4%95 %E0%A4%AA%E0%A5%82%E0%A4%B0
3. वहीं
4. वहीं
5. वहीं
6. वहीं
7. वहीं
8. वहीं
9. श्री राज कपूर, "https://www.bbc.com/hindi/entertainment-62422826
10. वहीं, https://www.e-ir.info/2017/01/23/raj-kapoor-and-indias-foremost-cinematic-soft-power-breakthrough/
11. वहीं, https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C_%E0%A4%95 %E0%A4%AA%E0%A5%82%E0%A4%B0
12. वहीं

राज कपूर की फिल्मों की वैश्विक लोकप्रियता

डॉ. हर्षा त्रिवेदी
सहायक आचार्य हिंदी
विवेकानंद इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज-TC, दिल्ली

राज कपूर 1940-60 के दशक में हिंदी सिनेमा के स्वर्ण युग के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। उनका नाम न केवल सिनेमा की गुणवत्ता और विषयों में सुधार को लेकर सामने आया, बल्कि भारतीय फिल्मों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलाने में भी उनकी अहम भूमिका रही। राज कपूर की फिल्मों की वैश्विक लोकप्रियता विशेष रूप से उनकी कला, मानवीय भावनाओं की गहराई और संगीत के कारण है। उनकी फिल्में भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों के बीच एक सेतु का काम करती हैं जिसने विभिन्न देशों में भारतीय सिनेमा के प्रति जनमानस की रुचि जगाई और उन्हें एक वैश्विक आइकन बना दिया।

राज कपूर की फ़िल्मों की वैश्विक लोकप्रियता :

राज कपूर ने अपनी फिल्मों में सामाजिक असमानता, गरीबी और आम आदमी के संघर्ष जैसे मुद्दों को उठाया। यह सभी मुद्दे सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि अन्य देशों के दर्शकों के लिए भी उतने ही प्रासंगिक थे। और इसी ने पश्चिमी देशों के लोगों को भारतीय सिनेमा से जोड़ा।

सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के देशों जैसे पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया और हंगरी में उनकी फिल्मों ने जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की। उनकी फिल्म आवारा (1951) और इसके गीत, विशेष रूप से 'आवारा हूँ' इन देशों में एक सांस्कृतिक प्रतीक बन गए। सोवियत दर्शकों ने राज कपूर को उनकी भावुक अभिनय शैली और आम आदमी के जीवन से जुड़ी कहानियों के लिए सराहा। इसी कारण उन्हे 'चार्ली चैपलिन ऑफ इंडिया' के रूप में प्रसिद्धि मिली; साथ ही उनकी फिल्में समाजवादी मूल्यों और संघर्ष को उजागर करती है, जो उस समय सोवियत संघ की विचारधारा थी। मध्य एशिया के कुछ देशों जैसे उज़्बेकिस्तान, कज़ाकिस्तान एवं अफ्रीकी देशों में भी राज कपूर की फिल्में एक बड़े वर्ग द्वारा पसंद की गईं। इन देशों में भारतीय संगीत और भावनात्मक कथानक के प्रति गहरी रुचि थी। श्री 420 (1955) का गाना 'मेरा जूता है जापानी'इन देशों में अत्यंत लोकप्रिय हुआ और वैश्विक स्तर पर भारतीय पहचान का प्रतीक बन गया। अपनी फिल्मों में उन्होने भारतीय परंपरा, संस्कृति और सामाजिक मुद्दों को सरल और मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया। फिल्म संगम (1964) ने पश्चिमी दर्शकों के लिए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की गहरी समझ विकसित की। फिल्म में प्रदर्शित प्रेम, समर्पण एवं मानवीय मूल्यों ने पश्चिमी देशों में भारतीय जनमानस के प्रति एक विशेष चेतना का बीजारोपण किया, जिससे विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा मिला। राज कपूर की फिल्मों के वैश्विक प्रचार-प्रसार में उनके संगीत का विशेष योगदान रहा है। मुकेश और शंकर-जयकिशन जैसे प्रसिद्ध संगीतकारों द्वारा रचित गीत और उनकी मंत्रमुग्ध कर देने वाली आवाज ने अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित किया। इन गीतों में भावनात्मक गहराई और सरलता थी, जो भाषा की बाधा को भी पार कर गई। मानवीय भावना, संघर्ष और सपनों को

इनमें इस तरह पिरोया गया कि वे सार्वभौमिक रूप से महसूस किए जा सके। राज कपूर के अभिनय ने हिंदी सिनेमा जगत में एक अनोखी शैली विकसित की। उन्होंने चार्ली चैपलिन से प्रेरित होकर एक ऐसे आम आदमी का किरदार निभाया, जो संघर्ष करता है, अनेको बार गिरता है और फिर मजबूती से अपने आदर्शों पर खड़ा होता है।

उनकी फिल्मों के पात्र गरीब, ईमानदार और संघर्षशील होते थे, जो समाज के वंचित वर्ग की आवाज़ बनते है। यह शैली 'हिंदी सिनेमा में आम आदमी' की अवधारणा को लोकप्रिय बनाने में सहायक हुई। विभिन्न वैश्विक मुद्दों को बड़े मार्मिक और सटीक तरीके से उनकी फिल्मों में प्रस्तुत किया गया। अधिकांश फिल्मों के विषय अक्सर मानवीय संघर्ष, सामाजिक न्याय और सार्वभौमिक मूल्यों पर केंद्रित रहे है। प्रमुख वैश्विक मुद्दे जो उनकी फिल्मों में दृष्टिगत होते हैं वह इस प्रकार है –

महिला सशक्तिकरण :

राज कपूर की फिल्मों में महिला पात्र स्वतंत्र और सशक्त दिखाई देती हैं, जो अपने अधिकारों और निर्णयों के लिए अकेली समाज के विरुद्ध खड़ी होती हैं। फिल्म 'सत्यम शिवम सुंदरम' (1978) ने शारीरिक सुंदरता के प्रति समाज के पूर्वाग्रहों पर सवाल उठाए और आंतरिक सुंदरता की महत्ता को रेखांकित किया। जिसने वैश्विक स्तर पर महिलाओं के प्रति केवल शारीरिक सुंदरता वाली धारणा का खंडन किया। उनकी फिल्मों में महिला पात्र सिर्फ सजावटी तत्व नहीं थीं; बल्कि कहानी का केंद्र थीं।

फिल्म 'आग'(1948) और 'बरसात' (1949)में स्वतंत्र और सशक्त महिला पात्रों का चित्रण देखने को मिलता है।

वैश्विक शांति और एकता :

राज कपूर ने अपने गीतों और कहानियों के माध्यम से वैश्विक शांति और एकता का संदेश दिया। 'मेरा जूता है जापानी' (श्री 420) का यह गीत वैश्विक नागरिकता और विविधता का जश्न मनाता हुआ प्रतीत होता है।

गरीबी और सामाजिक असमानता :

राज कपूर की कई फिल्मों ने गरीब और अमीर के बीच की खाई को उजागर किया। 'आवारा' (1951) एक गरीब युवक की कहानी है; जो परिस्थितियों से मजबूर होकर अपराध की ओर प्रवत्त होता है। यह फिल्म सामाजिक असमानता और वर्ग-विभाजन की समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। फिल्म 'श्री 420'(1955) में राज कपूर ने एक साधारण व्यक्ति के संघर्ष को दिखाया; जो समाज में अपनी जगह बनाने हेतु निरंतर संघर्षरत है। यह सभी मुद्दे न केवल भारत में, बल्कि दुनिया भर के देशों में प्रासंगिक थे; जहां आर्थिक असमानता प्रमुख सामाजिक समस्या थी। फिल्म में 'मेरा जूता है जापानी' गीत ने यह संदेश दिया कि भौतिक साधनो से अधिक महत्वपूर्ण मानवीय मूल्य एवं देशप्रेम हैं।

नैतिकता और सामाजिक न्याय :

राज कपूर की फिल्मों में सामाजिक न्याय की गहरी समझ दिखाई देती है। फिल्म 'जिस देश में गंगा बहती है' (1960) अपराधियों के पुनर्वास की कहानी पर आधारित है। इसमें दिखाया गया कि सही मार्गदर्शन और प्रेम और करुणा के माध्यम से अपराधी भी समाज का एक उपयोगी हिस्सा बन सकते हैं। मानवता और नैतिकता विश्व के किसी भी देश की प्रगति का आधार होते है।

प्रेम और बलिदान :

प्रेम और बलिदान का राज कपूर की फिल्मों में सार्वभौमिक रूप से महत्वपूर्ण रहा। फिल्म 'संगम' (1964) प्रेम, दोस्ती और बलिदान की कहानी कहती है; जो मनुष्य की भावनाओं और नैतिक मूल्यों को गहराई से समझने का प्रयास है। यह मुद्दा दुनिया के हर कोने में प्रासंगिक है; क्योंकि प्रेम और बलिदान मानवता के सार्वभौमिक मूल्य हैं। विश्व के सभी देशों के लोगों में आपसी बंधुत्व का मूल आधार यही है।

विस्थापन और शरणार्थी संकट :

राज कपूर ने अपने समय के शरणार्थी संकट और विस्थापन के मुद्दे को भी गहराई से स्पर्श किया। फिल्म 'आवारा' और 'श्री 420' जैसी फिल्मों में गरीबों और बेघर लोगों की दुर्दशा को प्रमुखता से दिखाया गया। यह समस्या वैश्विक थी, विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध और विभाजन के बाद। ये फिल्में दर्शाती हैं कि विस्थापन न केवल एक भौगोलिक एवं भौतिक समस्या है, बल्कि यह मानसिक और भावनात्मक संघर्ष का कारण भी बनता है और जिसका दुष्परिणाम कई-कई पीढ़ियों को भुगतना पड़ता है।

परंपरा और आधुनिकता का संघर्ष :

राज कपूर की फिल्मों में परंपरा और आधुनिकता के बीच संघर्ष भी दृष्टिगत होता है। 'श्री 420' फिल्म में पश्चिमी सभ्यता के आकर्षण और भारतीय परंपराओं के बीच संतुलन खोजने का संदेश दिया गया है। यह विषय उन देशों में भी प्रासंगिक था, जो उस समय तेजी से आधुनिकता और परंपरागत मूल्यों के बीच तालमेल बिठाने की कोशिश कर रहे थे।

आदर्शवाद और यथार्थवाद का संघर्ष :

राज कपूर की फिल्मों में आदर्शवादी सपनों और कठोर यथार्थ के बीच का संघर्ष देखने को मिलता है। निसंदेह आज भी यह एक वैश्विक समस्या है। विश्व के अधिकांश देशों में आदर्श और यथार्थ के बीच का संघर्ष हमेशा से मौजूद रहा है। फिल्म 'बूट पॉलिश' (1954) में अनाथ बालकों की कहानी के माध्यम से यह दिखाया गया है कि कठिन परिस्थितियों में भी अपने आदर्शों पर टिके रहना महत्वपूर्ण है।

राज कपूर की विरासत ने आने वाली भारतीय फिल्मों के लिए अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों के द्वार खोल दिए। उनकी शैली और प्रस्तुतिकरण ने यह साबित कर दिया कि भारतीय सिनेमा भी विश्व सिनेमा का अभिन्न हिस्सा बन सकता है। उनकी फिल्में तकनीकी और कलात्मक दृष्टिकोण से भी अंत्यत उत्कृष्ट थीं। उन्होने हिंदी सिनेमा में रंगीन फिल्मों की शुरुआत की। 'संगम' (1964) हिंदी सिनेमा की पहली रंगीन फिल्मों में से एक थी। उनकी निर्देशन शैली ने कहानी, संगीत और दृश्यात्मकता का अद्वितीय मिश्रण पेश किया।

इसी का परिणाम था कि राज कपूर की फिल्में कई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित की गईं और उन्हें कई पुरस्कार भी मिले। आवारा और बूट पॉलिश जैसी फिल्में कान्स फिल्म फेस्टिवल में नामांकित हुईं। राज कपूर को मॉस्को इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से भी नवाजा गया।

निश्चित ही राज कपूर हिंदी सिनेमा के इतिहास में एक ऐसा व्यक्तित्व हैं; जिन्होंने हिंदी सिनेमा जगत को केवल मनोरंजन से निकालकर विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक वैश्विक आयाम दिए। उनकी फिल्मों ने न केवल मनोरंजन किया; बल्कि विभिन्न वैश्विक समस्याओं पर समाज को सोचने पर विवश कर किया। उनकी दूरदर्शी सोच और अभिनय शैली ने हिंदी सिनेमा जगत को वैश्विक स्तर पर वह पहचान दी, जिसकी वजह से आज भारतीय सिनेमा विश्व भर में लोकप्रिय एवं सम्मानित है और रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ :

- राजकपूरः द लिजेंड - बृजमोहन चतुर्वेदी, रोली प्रकाशन, दिल्ली 2012
- राजकपूर : द लिजेंड ऑफ इंडियन सिनेमा-शेखर कपूर, harper kollins, Gurgaon, Haryana, 2018
- राजकपूर : एक जीवित किंवदंती-सत्य सरन, penguin books, Gurgaon, Haryana, 2010
- Raj Kapoor : The Master of Comedy : Simi Girewal, Roli books , Delhi ,2018
- Raj Kapoor : A Biography - Ravi Sisodiya, penguin Random House, Gurgaon, Haryana, 2018
- Raj Kapoor : The Master of Comedy - Vartika Mittal, Rupa Publication, New Delhi, 2023

राज कपूर की फिल्मों में महिलाओं का चित्रण : सत्यम शिवम सुंदरम और राम तेरी गंगा मैली के संदर्भ में

डॉ॰ गुलज़बीन अख़्तर
एसोसिएट प्रोफेसर, ऊर्दू विभाग
लाल बहादुर शास्त्र पी.जी. कॉलेज, मुगलसरांय, चंदौली, उ.प्र.

सारांश : *राज कपूर हिंदी फिल्म उद्योग के प्रमुख फिल्म निर्माताओं में से एक रहे हैं और उनका सिनेमा सामाजिक मुद्दों और मनोरंजन का मिश्रण प्रस्तुत करता है। भारतीय सिनेमा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व विभिन्न तरीकों से किया गया है। राज कपूर ने अपने सिनेमा में महिलाओं को महत्वपूर्ण भूमिकाओं में प्रस्तुत करने में अहम भूमिका निभाई है। आम तौर पर, उनके सिनेमा में महिलाओं का सशक्त चरित्र चित्रण होता है, लेकिन राज कपूर पर ताक-झांक के चित्रण के आरोप भी लगे हैं। यह शोधपत्र उनके फिल्म निर्माण में महिलाओं के प्रतिनिधित्व का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।*

मुख्य शब्द :

महिला प्रधान, पितृसत्तात्मक नजरिया, पुरुष प्रधान संस्कृति, यथार्थवादी सिनेमा, आधुनिकता, कामुकता भारतीय कला आदर्शवादी, रहस्यवादी, प्रतीकात्मक और पारलौकिक है। भारतीय कलाकार पुजारी और कवि दोनों हैं। कला, धर्म और अध्यात्म का भारतीय दर्शन एक साथ चलता है।

हिंदी फिल्में भारतीय आबादी के बहुमत के लिए मनोरंजन का सबसे प्रभावशाली माध्यम रही हैं। अपने कई दशक के इतिहास में बॉलीवुड ने महिला प्रधान किरदारों को कई तरह के चरित्रों में चित्रित किया है जिसमें आदर्श पत्नी, निस्वार्थ मां, एक असहाय स्टीरियोटाइप युवती और वो महिलाएं भी शामिल हैं जो अपने जीवन पर स्वयं नियंत्रण रखती हैं। बॉलीवुड में महिलाओं का चित्रण लंबे समय से शिक्षाविदों के बीच बहस का विषय रहा है और व्यापक तर्क पितृसत्तात्मक नजरिया की प्रधानता और महिलाओं की अधीनता पर केंद्रित रहता है जिसके परिणामस्वरूप उन्हें हाशिए पर और गौड़ भूमिका में रखा गया है। बॉलीवुड में मुख्य रूप से पुरुष प्रधान संस्कृति है और पुरुष पात्रों को तुलनात्मक रूप से महिला भूमिकाओं से अधिक महत्व दिया जाता रहा है। महिलाओं ने पारंपरिक रूप से सहायक भूमिका ही निभाई है और उन्हें अक्सर पुरुष पात्रों के अधीनस्थ या उन पर निर्भर या बहुत-ज्यादा हो तो उनके सहायक के रूप में दर्शाया गया है जो आमतौर पर तेजस्वी, प्यारी, आज्ञाकारी, सुंदर पत्नी या दयालू माता होती हैं जिनका एकमात्र उद्देश्य या तो नायक के चरित्र में परिवर्तन करना और कहानी को आगे बढ़ाने के लिए उत्प्रेरक बनना होता है या फिर उनके होने से एक सुंदर दृश्य का निर्माण करना मकसद होता है। भारतीय फिल्में लंबे समय से पुरुषो को उत्तम श्रेष्ठ और महिलाओं को दोयम दर्जे के नागरिक के रूप में चित्रित करने के माध्यम से पदानुक्रमिक अभिविन्यास और पितृसत्तात्मक वर्चस्व का विषय

रही है लेकिन संस्कृत रूढ़ियों को तोड़ने, महिला पात्रों को मुक्त करने और सकारात्मक पुरुष युक्त के आदर्शों को बदलने के नए पहलुओं को उजागर करने और वैश्विक अंतर्राष्ट्रीय मामलों के मुख्य धारा में लाने पर काम किया जा रहा है। प्रियंका चोपड़ा ने इस मुद्दे पर कहा था कि मनोरंजन उद्योग में महिलाएं लंबे समय से इन मुद्दों पर बात तो कर रही है लेकिन अब जाकर लोग वास्तव में सुन रहे हैं और ध्यान दे रहे हैं।

राज कपूर ने अपने सिनेमा में महिलाओं को महत्वपूर्ण भूमिकाओं में प्रस्तुत करने में अहम भूमिका निभाई है। हिंदी फिल्म उद्योग के सबसे लोकप्रिय अभिनेताओं निर्देशकों और निर्माता में राज कपूर यकीनन एक विवादासपद रचनात्मक व्यक्ति हैं, आवारा और श्री 420 की सफलता के बाद उन्हें एक बौद्धिक फिल्म निर्माता के रूप में देखा जाने लगा। जिन्हें भारतीय यथार्थवादी सिनेमा के उदाहरण के रूप में पेश किया गया। राज कपूर ने हमेशा खुद को एक रोमांटिक फिल्म निर्माता माना जो आम जनता के लिए फिल्में बनाना पसंद करते थे। वह अपने शब्दों में शुद्ध मनोरंजनकर्ता थे जिनकी जनता को शिक्षित करने की कोई महत्वाकांक्षा नहीं थी, वह सिनेमा के शुद्ध व्यावसायिक प्रारूप में विश्वास करते थे जिसमें वास्तविकता और सामाजिक संदेश की झलक मिलती थी। राज कपूर एक ऐसे फिल्म निर्माता हैं जिन्होंने फिल्मों में आम आदमी की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया। हमेशा मुस्कुराता हुआ आम आदमी जो अपनी कठिनाइयों के बावजूद खुश रहता है, उनकी फिल्मों का नायक रहा है। जब उनकी फिल्मों में महिलाओं को चित्रित करने का सवाल आता है तो राज कपूर पर महिला पात्रों को नग्नता में और भोग की वस्तु के रूप में चित्रित करने के लिए आलोचनाओं का सामना करना पड़ा। राज कपूर ने इस आरोप का कभी खंडन नहीं किया और इसका जवाब देते हुए कहा कि उन्होंने पाखंड को त्याग दिया है और उनका अंतिम लक्ष्य विशिष्ट राज कपूर शैली में एक मनोरंजक फ़िल्म बनाना होता है और उनकी फिल्मों में महिला पात्र को चित्रित करना उनकी फिल्म निर्माण की पद्धति का महज़ एक हिस्सा है। एक विशिष्ट फिल्म में वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए अपने महिला पात्रों का सहारा लिया है।

राज कपूर एक जटिल चरित्र रहे हैं और उनकी फिल्मों के लिए उनके द्वारा बनाए गए महिला पात्र भी जटिल रहे हैं। इन पात्रों को सरल अर्थ में परिभाषित करना मुश्किल है। खुद राज कपूर विपरीत्ताओं का मिश्रण प्रतीत होते हैं। उनकी फिल्में उन देशों में भी लोकप्रिय हुई जहां साम्यवादी विचारधारा थी। बावजूद इसके उनकी फिल्मों में भारतीय पौराणिक रूपांकनो, भारतीय परंपराओं की अपील और पौराणिक कथाओं से जुड़े नामों का भरपूर इस्तेमाल किया गया है। उनकी फिल्मों में आधुनिकता के साथ पारंपरिकता भी मौजूद है। और यह बात उनकी महिला पात्रों के लिए भी सच है। राज कपूर, की फिल्मों को आसानी से नरगिस दौर और नरगिस के बाद के दौर में रखा जा सकता है। नरगिस के किरदार किसी भी तरह से कमजोर नहीं थे। बरसात जैसी विशुद्ध रोमांटिक फिल्म में भी, जिसमें राज कपूर के पास मधुर संगीत, आकर्षक लोकेशन और रोमांस के अलावा कहने को कुछ नहीं था, निम्मी और नरगिस द्वारा निभाए गए किरदार ही इस फिल्म की सफलता की रीढ़ बनते हैं। बरसात में नायिकाओं की शर्मीली और 'सती सावित्री' वाली छवि कहीं नहीं दिखी और राज कपूर की फिल्मों के साथ यह चलन बन गया, जहाँ महिला किरदार रोमांटिक भूमिका निभाते हुए अपनी भावनाओं को नहीं छिपाती थीं।

श्री 420 में विद्या की भूमिका में नरगिस राजू की अंतरात्मा की आवाज़ बन जाती हैं, जो पैसे कमाने के लिए गलत रास्ते अपनाता है। इस फिल्म में भी विद्या के रूप में मुख्य महिला किरदार सिर्फ एक सहारा नहीं है। वह राजू का दूसरा रूप है। नादिरा द्वारा निभाई गई माया को एक पश्चिमी महिला के रूप में दिखाया गया है जिसने राजू को

भ्रष्ट और लालची दुनिया में प्रवेश कराया। विद्या और माया, ये नाम अपने आप में दुनिया के दो विपरीत छोरों का प्रतिनिधित्व करते हैं, एक दुनिया शिक्षा से भरी एक साधारण ज़िंदगी है और दूसरी लालच से भरी दुनिया है। हालांकि, नरगिस के बाद के दौर में भी उन्हें व्यावसायिक सफलता मिली, लेकिन कहीं न कहीं मासूम सुंदरता और रोमांटिकता वासना, कामुकता और नग्नता दिखाने की इच्छा में बदल गई। जिस देश में गंगा बहती है ने राज कपूर की फिल्मों में महिलाओं को पेश करने का यह चलन शुरू किया, जिसमें वासना कच्चे जुनून पर हावी हो गई, जो पहले राज कपूर के बैनर का एक अनूठा विशेष बिंदु था। मधु जैन के अनुसार, रोमांस और जुनून का काव्यात्मक फोटोग्राफर कहीं न कहीं एक तरह से झाँक-झाँक करने वाला टॉम बन गया।

दक्षिण भारत की अभिनेत्री पद्मिनी ने एक तरह से राज कपूर के लिए जिस देश में गंगा बहती है में यह सब शुरू किया। डाकुओं के रूप में समाज के हाशिए पर पड़े लोगों के पुनर्वास की एक अत्यधिक संदेशपरक फिल्म होने के बावजूद, राज कपूर ने सिनेमाई स्वतंत्रता के नाम पर पद्मिनी के शरीर को दिखाने पर सारा जोर दिया कि बीहड़ों में रहने वाले डाकू की बेटी को वैसी ही पोशाक पहनाई जाए जैसी उसने पहनी थी। प्रसिद्ध झरने का दृश्य और आधी गीली साड़ियों में लिपटी नायिकाएँ इसी फिल्म से शुरू हुईं और कम्मो का चरित्र इस प्रक्रिया में कहीं खो गया। वैजयंती माला की मुख्य भूमिका वाली संगम ने इस चलन को और बढ़ाया।

राज कपूर ने आधुनिकता से कामुकता की ओर यात्रा की थी। जिस देश में गंगा बहती है में कैमरा वॉयेरिस्टिक हो जाता है और संगम, मेरा नाम जोकर, बॉबी, सत्यम शिवम सुंदरम और राम तेरी गंगा मैली में यह चलन जारी रहा। प्रेम रोग राज कपूर के फिल्म निर्माता के रूप में इस बाद के दौर में एक अपवाद है। विषयगत रूप से उनकी अंतिम तीन फिल्में सत्यम शिवम सुंदरम, प्रेम रोग और राम तेरी गंगा मैली फिल्मों में महिला पात्रों की शैली और निर्माण ने एक नया मोड़ ले लिया था। इन फिल्मों में महिलाओं की प्रस्तुति केवल शरीर के प्रदर्शन के समान थी। अपनी फिल्मों में महिलाओं की प्रस्तुति और चरित्र चित्रण के बावजूद, खासकर बाद के दौर में, उन्हें एक ऐसे फिल्म निर्माता के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने अपनी महिला पात्रों को सौंदर्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया। अमिताभ बच्चन के आने और फिल्म उद्योग में हिंसा के चलन के साथ, नंबर एक फिल्म निर्माता की स्थिति को बनाए रखना बहुत मुश्किल हो गया था और उन्होंने इस चलन के मद्देनज़र अपनी महिला पात्रों को दिखाने का एक अलग तरीका अपनाया। यहां राज कपूर की तीन फिल्मों का महिला पात्रों के चरित्र चित्रण और महिलाओं से जुड़े सामाजिक मुद्दों के आलोक में विश्लेषण किया गया है।

सत्यम शिवम सुंदरम एक जटिल फिल्म है। राज कपूर ने इस फिल्म में जिस विषय को उठाने की कोशिश की है, उसमें पौराणिक तत्व भी बहुत हैं। यहां तक कि शीर्षक भी इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि ईश्वर ही एकमात्र सत्य है, सत्य ही प्रेम है और प्रेम ही परम है। फिल्म का मूल आधार यह है कि सुंदरता केवल सतही नहीं होती। मुख्य किरदार रूपा को फिल्म में पौराणिक चरित्र राधा के आधार पर बनाया गया है। रूपा और राजीव राधा और कृष्ण की तरह हैं। धार्मिक प्रतीक और रूपांकन तमाशे और कथा पर हावी हैं। यह राज कपूर की एकमात्र फिल्म है जिसमें उन्होंने धर्म के तत्व को कामुकता के साथ मिलाने की कोशिश की है। राज कपूर ने सत्यम शिवम सुंदरम के निर्माण को अपने रचनात्मक जीवन का सबसे बड़ा जुआ बताया था। उनके अनुसार, जैसा कि प्रहलाद अग्रवाल द्वारा लिखित पुस्तक में उद्धृत किया गया है, हिंसा और सेक्स के युग में सौंदर्य को आत्मा से जोड़कर दिखाने वाली एक स्त्री-केंद्रित फिल्म बनाना वास्तव में एक जुआ था।

रूपा का चरित्र केवल सतही स्तर पर विश्वसनीय था। रूपा के रूप में ज़ीनत अमान सिने-दर्शकों को यह विश्वास नहीं दिला सकीं कि राजीव, उनका पूरा चेहरा देखे बिना ही उनकी ओर आकर्षित हो गए थे। वह राजीव को आकर्षित करने के लिए अपने शरीर को दिखाने की भरपूर इच्छा के बीच झूलती रहती है और दूसरी ओर, वह राधा और कृष्ण जैसे प्रेम के अवतार की बात करती है। आलोचकों का कहना है कि फिल्म का सबसे कमजोर पक्ष ज़ीनत अमान थीं, जिनकी छवि फिल्म उद्योग में एक ग्लैमर गर्ल की थी और राज कपूर भी रूपा के रूप में इस ग्लैमर को दिखाकर खुद को नहीं बचा पाए थे, हिंदी फिल्मों में रची गई रूपा एक यादगार किरदार हो सकती थी, लेकिन वह निर्देशक की सनक और कल्पना का शिकार हो गई। राज कपूर ने अतीत में महिला किरदारों को बहुत ही खूबसूरती से गढ़ा था और राज कपूर की फिल्मों में महिला किरदारों को दर्शाने के लिए सौन्दर्यबोध एक अभिन्न तत्व था, लेकिन उदात्त प्रेम के विषय को प्रस्तुत करने के नाम पर यौन व्यभिचार के खराब चित्रण ने रूपा के चरित्र को खत्म कर दिया। राज कपूर ने फिल्म में जो मुद्दा उठाने की कोशिश की है, वह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है और कई लड़कियों, खासकर भारतीय समाज में, केवल उनके काले रंग या चेहरे की किसी विकृति के बहाने शादी नहीं की जा सकती। इस विषय ने सार्वभौमिक अपील हासिल की है और फिल्म और रूपा का किरदार एक क्लासिक अर्थ प्राप्त कर सकता था, अगर राज कपूर ने अपनी बात कहने के लिए सेक्स के हथकंडों और हिंदू पौराणिक कथाओं पर अत्यधिक निर्भरता का सहारा न लिया होता। फिर एक ही स्त्री के दो पक्षों के बीच अजीब विरोध का विरोधाभास है, जैसा कि फिल्म में रूपा की दो छवियों द्वारा दर्शाया गया है, एक राजीव की रखैल और प्रेमिका के रूप में और दूसरी पत्नी के रूप में। यहाँ राजीव प्रेम की एक विखंडित प्रवृत्ति रखता है और एक ही समय में एक ही स्त्री से प्रेम और घृणा कर सकता है। यहीं पर धारणा और वास्तविकता का प्रश्न आता है। अक्सर हिंदी फिल्मों में दर्शाए गए महिला पात्र वास्तविकता पर आधारित नहीं होते हैं। ये वे पात्र हैं जो फिल्मों के पुरुष पात्रों के साथ-साथ सिनेमा देखने वालों की धारणा पर आधारित हैं। रूपा का चरित्र चित्रण भी राजीव की धारणा पर आधारित है और जिस चरित्र से राजीव प्रेम करता है, वास्तव में वह अस्तित्व में नहीं है।

महिलाओं का वस्तुकरण :

रूपा के किरदार को कामुक तरीके से फ्रेम किया गया : किरदार की एक और खास बात यह है कि यह किरदार फिल्म में दिखाई नहीं देता। रूपा का किरदार जिससे राजीव प्यार करता है, उसे वह नहीं देखता। यह उन कुछ दुर्लभ उदाहरणों में से एक है, जहां मुख्य केंद्रीय महिला किरदार की भूमिका शानदार आवाज के इर्द-गिर्द गढ़ी गई है। यह आवाज ही है जिसने राजीव को मोहित किया है। रूपा का चेहरा केवल यह आभास है कि ऐसी शानदार और अलौकिक आवाज वाली महिला सुंदर होनी चाहिए। लेकिन शायद, निर्देशक यहां रूपा के विकृत चेहरे की भरपाई एक ऐसी आवाज से करना चाहते थे जो हावी हो और जगह और गति को बनाए रखे।

फिल्मों में नायिकाओं के सुंदर चेहरे दिखाने की अवधारणा के विपरीत जाकर राज कपूर ने मुख्य महिला पात्र की आवाज को नायक के लिए आकर्षण और मोह का कारण बनाने में बड़ी गलती की है। फिल्म में कहीं भी राजीव को रूपा के शरीर की ओर आकर्षित होते नहीं दिखाया गया है। वह बस रूपा का चेहरा देखना चाहता है क्योंकि वह सुंदर आवाज वाले एक सुंदर चेहरे के विचार से मोहित हो जाता है। उनका सुबह का गायन सूर्योदय को सक्षम बनाता है, सुबह को आकार देता है और समय की राह को रेखांकित करता है। रूपा के ये गुण इस कथन के आलोक में महत्वपूर्ण हो जाते हैं कि वह एक पेशेवर गायिका नहीं हैं। ऐसा लगता है कि यहाँ निर्देशक

यह कहना चाहता है कि वह कच्ची और शुद्ध है, सांसारिक आकर्षणों से अनभिज्ञ है और ये विशेषताएँ उसकी आवाज़ को उत्कृष्ट बनाती हैं। राज कपूर की फिल्मों में पवित्रता का पहलू एक अभिन्न अंग बन जाता है। रूपा के चरित्र के निर्माण में, दृश्य और अदृश्य की अवधारणा को एक साथ चलते हुए देखा जा सकता है। रूपा के चरित्र का वस्तुकरण दर्शकों की नज़र के लिए है, न कि राजीव के लिए।

प्रेम रोग के बाद, राज कपूर ने पौराणिक कथाओं, अध्यात्म और व्यावसायिक अपील के तत्वों को मिलाकर मनोरंजक फिल्में बनाने की अपनी कला को फिर से अपनाया, जिसमें उनकी नायिकाओं को दर्शकों की ताक-झांक वाली प्रवृत्ति और झुकाव को ध्यान में रखकर दिखाया गया। जैसा कि सत्यम शिवम सुंदरम में पहले किया गया था, राम तेरी गंगा मैली राज कपूर द्वारा निर्देशित आखिरी फिल्म है। यह फिल्म एक शहरी आदमी, नरेन और पहाड़ों में रहने वाली लड़की, गंगा के बीच की प्रेम कहानी है। राज कपूर ने कथा को आगे बढ़ाने के लिए धार्मिक और आध्यात्मिक रूपकों का इस्तेमाल किया है। इस फिल्म की पृष्ठभूमि में एक प्रेम कहानी है, लेकिन इसमें अत्यधिक आध्यात्मिक पहलू भी हैं। गंगा नदी को मुख्य बिंदु के रूप में चुनकर और पहाड़ियों की एक कमजोर महिला गंगा के साथ समानता को चित्रित करके, राज कपूर दर्शकों की कल्पना को सही मायने में पकड़ने में सक्षम हैं। गंगा के प्रदूषित होने और गंगा के शोषण की समानता को कथा में सही ढंग से मिलाया गया है, फिल्म की एक विशेषता यह है कि राज कपूर की पिछली फिल्मों में, आध्यात्मिकता का सिर्फ दिखावा था और यहाँ-वहाँ पौराणिक कथाओं का संदर्भ था, लेकिन राम तेरी गंगा मैली में जुनून और आध्यात्मिकता के प्रवचनों को सुसंगत बनाने के लिए एक सतत सूत्र पूरी फिल्म में दिखाई देता है। ऋषिकेश, हरिद्वार, गंगोत्री, बनारस और गंगासागर जैसे स्थानों पर फिल्म की शूटिंग इस आध्यात्मिकता को बढ़ाती है।

फिल्म पर टिप्पणी करते हुए, राज कपूर ने कहा कि वह समाज में तेजी से बदलते मूल्यों, बदलती नैतिकता, आध्यात्मिकता की हानि और सामाजिक-आर्थिक भ्रष्टाचार पर ध्यान केंद्रित करना चाहते थे। उनका मानना है कि आध्यात्मिकता में तेजी से गिरावट, जो उनके अनुसार, भारतीय संस्कृति के विघटनकारी और विघटनकारी शक्ति बनने का वास्तविक स्रोत है। फिल्म सामाजिक भ्रष्टाचार और नैतिक पतन की दोहरी बुराइयों से निपटती है। यह फिल्म सही मायने में उस पाखंड को इंगित करती है जिसे धर्म के तत्व भारतीय समाज में लाए हैं। फिल्म में पाया जाने वाला एक और पौराणिक लक्षण महाभारत के रूपांकन के रूप में आता है : एक मानव राजकुमार का नदी देवी के साथ मिलन (जैसा कि राजा शांतनु का गंगा अवतार से विवाह)। फिल्म गंगा की दिव्य उत्पत्ति और फिर विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए गंगा सागर तक पहुँचने की ओर भी इशारा करती है। रास्ते में नदी प्रदूषित हो जाती है, जिस तरह गंगोत्री से कलकत्ता तक गंगा का दोहन किया जाता है।

राम तेरी गंगा मैली हिंदी फिल्म है जो पूरी तरह से महिला प्रधान है। महिलाओं के शोषण का एक महत्वपूर्ण मुद्दा इस फिल्म का केंद्रीय विषय है। राज कपूर के शब्दों में, गंगा को भोलेपन और पवित्रता में चित्रित करने के लिए मंदाकिनी को चुना गया। राज कपूर के अनुसार, 'गंगा पवित्र है, गंगा कुंवारी है, गंगा हिमालय की सुंदरता है, गंगा वफादार है। गंगा शब्द के इतने सारे अर्थ हैं कि कोई भी लड़की जिसे पहले कभी नहीं देखा गया था और किसी और चीज़ से उसकी पहचान नहीं हो सकती थी। और इस तरह यह नई लड़की मंदाकिनी मिली, जो गंगा की तरह दिखती थी और गंगा बन गई। हालाँकि तथाकथित नग्नता और कम कपड़ों में गंगा की जबरदस्त आलोचना हुई थी, लेकिन यह गंगा (नदी) की पवित्रता में विश्वास था जिसने गंगा (फिल्म में चरित्र) की मासूमियत में विश्वास को बनाए रखा। उनके लिए नायिका की मासूमियत सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण थी क्योंकि यह

फिल्म एक मासूम लड़की की पहाड़ों से कलकत्ता तक की यात्रा है, ठीक उसी तरह जैसे गंगा नदी बहती है। यह मानवीय मूर्खता ही है जिसने नदी को प्रदूषित किया है और महिलाओं का शोषण किया है। हिंदी फिल्म उद्योग में पचास के दशक के स्वर्णिम दशक में कई महिला प्रधान फिल्में बनी हैं, लेकिन ऐसा पहली बार हो रहा था कि नदी के प्रदूषण और महिलाओं के शोषण का समानांतर तरीका दिखाया गया हो। राज कपूर की फिल्में में आकर्षक दृश्य, भावनात्मक संवाद और उनके कलाकारों के धमाकेदार अभिनय का समावेश है। इन सभी मोर्चों पर राम तेरी गंगा मैली बेहतरीन है।

आर के की विरासत समकालीन बॉलीवुड में बहुत जीवंत है। यश चोपड़ा खुद को आरके के प्रशंसकों में से एक मानते थे। वह आरके को सबसे प्रेरणादायक फिल्म निर्माताओं में से एक मानते हैं। यश चोपड़ा के अपने प्रशंसक, करण जौहर, जो फिल्म निर्माताओं की युवा पीढ़ी के सबसे महत्वपूर्ण लोगों में से एक हैं, ने अपनी पहली फिल्म, कुछ कुछ होता है में आर. के. को श्रद्धांजलि दी। राज कपूर की फिल्में अपने तरीके से राजनीतिक थीं। उन्होंने ऐसी चीज की अपील की जो आज भी महत्वपूर्ण है, कि आम आदमी को देखा जाए, उसकी आवाज हो, उसकी बात सुनी जाए। इन फिल्मों के बाद, आरके के करियर में कई उतार-चढ़ाव आए। फिर भी, उनकी सफलताओं और असफलताओं के बावजूद, आरके ने ऐसी फिल्में बनाना जारी रखा, जिन पर उन्हें वाकई भरोसा था, ऐसी फिल्में जो रोजमर्रा के मुद्दों को संबोधित करती थीं और प्यार और रोमांस के लोकप्रिय विचारों और अभिव्यक्तियों को आकार देती थीं। हिंदी फिल्म के सभी तत्वों का सम्मिश्रण और उनकी संगीतमय अभिव्यक्ति उनकी विरासत है।

सन्दर्भ सूची :

1. Aggarwal, Prahlad. (2009). *Adhi Haqeeqat Adhi Fasana.* New Delhi, India: Rajkamal Prakashan.
2. Jain, Madhu. (2005). *The Kapoors, The first family of Indian Cinema*. New Delhi: Penguin India

भारतीय सिनेमा के गीतों में व्यक्त विभिन्न भाव राजकपूर के विशेष संदर्भ में

डॉ. उषा दुबे

भारतीय सिनेमा भारत की संस्कृति, सभ्यता और भाषा को व्यक्त करने का महत्वपूर्ण साधन है। जीवन के हर पहलू को हम सिनेमा में देख सकते हैं। हमारे जीवन में कई प्रकार के रंग है, उन रंगों को निखारने का महत्वपूर्ण काम सिनेमा करता है। हर एक स्थिति में हम सिनेमा घर तक पहुँच जाते हैं। मन उदास है तब भी हम वहाँ चले जाते हैं, ताकि हमारा ध्यान और मन कहीं और लग जाये या फिर खुश है, उन स्थिति में भी खुशियों को बढ़ाने के लिए भी हम सिनेमा तक पहुँच जाते हैं। फिल्म एक ऐसा माध्यम है जो 'एक साथ समाज के विविध लोगों को बच्चे - बूढ़े, धनी-गरीब, औरत-मर्द, हिन्दू-मुस्लिम सबको एक साथ उपलब्ध होता है।' फिल्मों की सफलता और असफलता कुछ हद तक गानों पर निर्भर करती है। फिल्मी संगीत के प्रति लोगो का रुझान अब का नही है बल्कि 1931 में जब फिल्म आलमआरा प्रकाशित हुई थी। जिसका संगीत दिया था, फिरोज शाह मिस्त्री एवं बी. ईरानी ने। उनके द्वारा दिया गया संगीत तत्कालीन समय में भी लोगों के दिलों तक पहुँचने में कामयाबी हासिल की। सिनेमा भले बॉक्स ऑफिस पर ज्यादा कमाल न करे किन्तु फिल्मी गाने दशकों तक लोगों के जुबान पर रहती है। फिल्मी गाने मानवीय भावनाओं को उद्वेलित करने का कार्य करती है। हमारे बीच कई फिल्म और गानों का भंडार है। उन्हीं में से हम राजकपूर की फिल्मे और उनके गीतों पर प्रकाश डालेंगे।

राज कपूर भारतीय सिनेमा के महानतम फिल्म निर्माताओं, निर्देशकों और अभिनेताओं में से एक थे। उन्हें हिंदी सिनेमा के शोमैन के रूप में जाना जाता है। राज कपूर के फिल्मी गाने भारतीय सिनेमा के अमर और अनमोल रत्नों में से एक हैं। उनकी फिल्मों के गाने न केवल संगीत की दृष्टि से, बल्कि भावनाओं के गहरे प्रस्तुतीकरण में भी अद्वितीय हैं। राज कपूर की फिल्मों में गाने अक्सर विभिन्न प्रकार की भावनाओं को व्यक्त करते हैं, जो जीवन के हर पहलु को छूते हैं। उनकी फिल्में और गाने दोनों ही देश और विदेशों में भी ख्याति प्राप्त की है।

राजकपूर ने फिल्मी दुनिया में अपना करियर 1935 से शुरू किया। हेल्पर और क्लेपर बॉय के रूप में काम किया। 1947 में उन्होने बतौर नायक सिनेमा में काम किया। राजकपूर ने संगीतकार शंकर-जयकिशन, गीतकार हसरत जयपुरी, शैलेन्द्र , साहिर लुधियानवी, मन्ना डे, लक्ष्मीकान्त प्यारेलाल आदि कई महत्वपूर्ण संगीतकारों के साथ काम किया। राज कपूर को संगीत की बहुत अच्छी समझ थी। साथ ही साथ वे यह भी अच्छी तरह से जानते थे कि किस तरह के संगीत को लोग पसंद करते हैं।

आइए कुछ मुख्य भावनाओं का वर्णन करें जो राज कपूर के फिल्मी गानों में व्यक्त होती हैं।

राज कपूर की फिल्मों में प्रेम भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। उनके गाने अक्सर प्यार, दिल की भावनाओं और रिश्तों की सादगी और गहराई को व्यक्त करते हैं। जैसे कि फिल्म

''श्री 420' का प्रसिद्ध गाना'' कहो कि अपनी प्रीत का गीत ना बदलेगा कभी

तुम भी कहो, ''इस राह का मीत ना बदलेगा कभी''

प्यार जो टूटा, साथ जो टूटा, चाँद ना चमकेगा कभी'।

(फिल्म श्री 420, संगीतकार शंकर – जयकिशन, गायक - मन्ना डे, लता मंगेशकर)

संगीतकार इन गानों में प्रेम के आदर्श और निरंतर संघर्ष को दिखाया गया है। जहां अमीरी गरीबी की ये दिवारे प्रेम के रिश्ते में नहीं आ सकती। इस संगीत में सादगी के महत्व को भी इंगित करता है। ये गाने मासूमियत, ताजगी और दिल से दिल का जुड़ाव व्यक्त करते हैं।

राज कपूर की फिल्मों में विशेष रूप से 'आवारा' और 'श्री 420' जैसी फिल्मों में जीवन की कठिनाइयों और संघर्ष को संगीत के माध्यम से व्यक्त किया गया है। साथ ही यह संदेश है ज़िंदगी को खुश रखने के लिए किसी महल या महंगे कपड़े, गाड़ी की जरूरत नही है, बल्कि मनुष्य किसी भी परिस्थिति में खुश रह सकता है। 'मैं बन का बदनाम' या 'आवारा हूँ' जैसे गाने व्यक्ति की सामाजिक और व्यक्तिगत चुनौतियों को दिखाते हैं। यहां संघर्ष के साथ-साथ उम्मीद और आत्मविश्वास की भावना भी नज़र आती है।

अनाड़ी फिल्म के संगीत में जीवन का रस किस प्रकार लिया जा सकता है उसका मूलमंत्र है- 'किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार, किसीका दर्द मिल सके तो ले उधार

किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार, जीना इसी का नाम है'।

(फिल्म- अनाड़ी, संगीतकार शंकर – जयकिशन गायक - मुकेश)

मनुष्य यदि इस गाने पर अमल करे तो मुनष्य की लगभग तकलीफे दूर हो जाएगी। दूसरों को खुश रखने की बात कही गयी है न की स्वयं की खुशी को खोजने की।

राज कपूर के गाने कभी-कभी प्रेमी के मिलन और बिछड़ने के बीच की भावनाओं को भी व्यक्त करते हैं। ''संगम फिल्म का गाना''

'ओ मेरे सनम ओ मेरे सनम, दो जिस्म मगर एक जान हैं हम

एक दिल के दो अरमान हैं हम, ओ मेरे सनम ओ मेरे सनम'

(फिल्म - संगम, संगीतकार शंकर – जयकिशन, गायक - मुकेश-लता मंगेशकर)

उपर्युक्त गीत में एक निरंतर चाहत और अलगाव की भावना को महसूस किया जा सकता है। वियोग और विरह के गाने राज कपूर की फिल्मों में अक्सर गहरे दुःख और हृदय की पीड़ा को व्यक्त करते हैं। साथ ही गाने जीवन के सच्चे मूल्यों और रिश्तों की अहमियत को दर्शाते हैं। ये गाने मनुष्य की उच्च मानवीय संवेदनाओं को सामने लाते हैं।

इसी तरह उनकी फिल्म तीसरी कसम फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित है। जिसमे गाँव का स्वाभाविक चित्रण किया गया है। जहाँ पर मनुष्य की भावनाओं की कद्र होती है। गांव के लोग छल छद्म से दूर शहरी दिखावटी जीवन से अपने आपको दूर रखते हैं। इस फ़िल्म की एक गीत है-

'दुनिया बनाने वाले, क्या तेरे मन में समाई, काहे को दुनिया बनाई, तूने काहे को दुनिया बनाई, काहे बनाए तूने माटी के पुतले, धरती ये प्यारी प्यारी मुखड़े ये उजले काहे बनाया तूने दुनिया का खेला –

(फिल्म- तीसरी कसम , संगीतकार शंकर – जयकिशन, गायक - मुकेश)

उपर्युक्त संगीत में जीवन के संघर्ष को केंद्रीय किया गया है। यह विषय उनकी फिल्मों की कहानी और पात्रों की स्थिति को गहराई से दर्शाता है। संघर्ष, चाहे वह सामाजिक हो, व्यक्तिगत हो या आंतरिक हो, उनकी फिल्मों के गानों में एक सशक्त तरीके से व्यक्त हुआ है। राज कपूर की फिल्मों के गाने समाज के विभिन्न पहलुओं के संघर्ष को उजागर करते हैं, जैसे गरीबी, प्रेम, नैतिकता, जीवन के उद्देश्य को समझना और आत्म-समझ।

राजकपूर की फिल्मों के गानों में प्रेम, विरह, जीवन संघर्ष के अलावा देश के प्रति स्वाभिमान, आत्मभिमान, स्वदेश की भावना को मुखरित किया गया है। फिल्म श्री 420 का यह गीत –

''मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंगलिश्तानी
सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी''

(फिल्म- श्री 420, संगीतकार शंकर – जयकिशन, गायक - मुकेश)

प्रस्तुत गीत में देश के प्रति समर्पण, अपनापन की झलक साफ-साफ दिखाई पड़ती है। जो की दर्शकों के हृदय पर अमित छाप छोड़ती है। साथ ही स्वदेश की भावना की निर्मिति करवाता है।

राजकपूर की अनेकों फिल्मों में से 'जिस देश में गंगा बहती हैं।' फिल्म में बेहतरीन संगीत के साथ संगीत के भाव में भारत की संस्कृति और सभ्यता को बताया गया है। साथ ही भारत की महत्ता को स्थापित की गया है। जहां अनेकता में एकता के भाव को प्रमुखता दी गयी है।

''होठों पे सच्चाई रहती है
जहाँ दिल में सफ़ाई रहती है
हम उस देश के वासी हैं, हम उस देश के वासी हैं
जिस देश में गंगा बहती है''

(फिल्म- जिस देश में गंगा बहती हैं।, संगीतकार शंकर – जयकिशन, गायक-मुकेश)

राज कपूर की फिल्मों में गाने सिर्फ व्यक्तिगत और सामाजिक भावनाओं तक सीमित नहीं रहते, बल्कि इनमें देशभक्ति, राष्ट्रीय गौरव और समाज के लिए संघर्ष की भावना भी प्रमुख रूप से व्यक्त होती है। उनका सिनेमा भारतीय समाज और उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति को बहुत गहरे तरीके से उजागर करता था। राज कपूर के गाने अक्सर देशभक्ति, भारतीयता और अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना को प्रकट करते हैं।

राज कपूर को संगीत की बहुत अच्छी समझ थी। साथ ही साथ वे यह भी अच्छी तरह से जानते थे कि किस तरह के संगीत को लोग पसंद करते हैं। यही कारण है कि आज तक उनके फ़िल्मों के गाने लोकप्रिय हैं।

''फिल्म 'बरसात' (1949) की अपार सफलता से शुरू कर शंकर-जयकिशन की जोड़ी ने सैकड़ों उल्लेखनीय फिल्मों के लिए यादगार संगीत बनाया। एस. जे. का सगीत एक ऐसे आधुनिक संगीत की नीव रखता हुआ दिखाई देता है।'' **(भारतीय सिनेमा की विकास यात्रा संपादक मधुरानी शुक्ला कनिष्क पब्लिशिंग हाउस लेखक रीतिका पृष्ठ संख्या 581)**

राज कपूर के गाने समाज के आदर्शों और नैतिकता को उच्च स्तर तक ले जाती है। समाज के प्रति जागरूकता की भावना भी नज़र आती है। राजकपूर के फिल्मों के और भी कई गाने है जिसमें जीवन के अनुभवों और संघर्षों का मूल्यांकन करता है और यह गाना जीवन के वैचारिक पहलुओं को छूता है।

निष्कर्ष :

राज कपूर के गाने केवल संगीत या बोलों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे गहरे मानवीय भावनाओं को व्यक्त करते हैं। चाहे वह प्रेम, संघर्ष, आत्मविश्वास, या समाज के प्रति जागरूकता हो, उनके गाने हर प्रकार की भावना को बड़े सुंदर और प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करते हैं। इन गानों में प्रेम, उम्मीद,

और जीवन के सच्चे रंगों की छांव होती है, जो आज भी भारतीय सिनेमा के प्रशंसकों के दिलों में बसते हैं।

राज कपूर की फिल्मों के गानों की भाषा सरल, भावनात्मक और सार्वभौमिक होती थी, जो दर्शकों के दिलों तक सीधे पहुंचती थी। इन गानों में हिंदी की शुद्धता के साथ-साथ उर्दू, भोजपुरी, पंजाबी और अन्य भारतीय भाषाओं का भी मिश्रण होता था, जिससे गाने लोकप्रिय हो जाते थे।

उनके गाने अक्सर कविता जैसी भावनाओं से भरे होते थे, जिनमें शेरो-शायरी, गीतात्मकता और लयबद्धता होती थी। गाने सहज, मधुर और समझने में आसान होते थे। गायक अपनी परिस्थितियों और खुद की पहचान को सरल शब्दों में व्यक्त करता है।

राज कपूर की फिल्मों में गानों के माध्यम से संघर्ष केवल बाहरी परिस्थितियों से नहीं, बल्कि आंतरिक रूप से भी व्यक्त होता है। उनके गाने सामाजिक दबावों, नैतिकता, प्रेम और आत्म-विश्वास के संघर्षों को दर्शाते हैं। यह संघर्ष दर्शकों के साथ गहरे स्तर पर जुड़ता है, क्योंकि इन गानों में दर्शाए गए मुद्दे सार्वभौमिक और समय के साथ प्रासंगिक बने रहते हैं। उनकी फिल्मों के गाने जीवन के कठिन रास्तों पर चलने, समाज की अव्यक्त मांगों से जूझने और खुद को समझने की कोशिश को संगीत और शब्दों के माध्यम से खूबसूरती से पेश करते हैं।

You Said :

राजकपूर की फिल्मों के गानों में व्यक्त देशभक्ति

दूर हटो ऐ दुनियावालों' (फिल्मः श्री 420)

यह गाना राज कपूर की फिल्म श्री 420 का एक बहुत ही प्रसिद्ध गीत है, जिसे शैलेन्द्र ने लिखा और शंकर-जयकिशन ने संगीतबद्ध किया। इस गाने में राज कपूर अपने देश और समाज के लिए आदर्शों और मूल्यों का प्रचार करते हुए देशभक्ति की भावना को व्यक्त करते हैं। इसमें राज कपूर का पात्र समाज के भ्रष्टाचार और बुराई से जूझता हुआ यह संदेश देता है कि 'दूर हटो ऐ दुनियावालो, भारत का अगला कदम है!'। यह गाना यह साबित करता है कि सच्चे देशभक्त केवल अपनी मातृभूमि के लिए नहीं, बल्कि उसके आदर्शों और अच्छाई के लिए भी संघर्ष करते हैं।

भावना : इस गाने में देश के लिए नायक का संघर्ष, भ्रष्टाचार और अनैतिकता से मुक्ति के लिए उसका आह्वान है। यह देशभक्ति का गीत है, जो समाज को एकजुट होने का संदेश देता है।

2. 'जन गण मन' (फिल्म : आवारा) :

राज कपूर की फिल्म आवारा में एक गाना है 'जन गण मन' जो भारतीय राष्ट्रीय गीत के रूप में प्रस्तुत किया गया। हालांकि यह गाना मूल रूप से रविंद्रनाथ ठाकुर (रवींद्रनाथ ठाकुर) का है, लेकिन फिल्म में इसे देशभक्ति और भारतीयता का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया गया। यह गाना भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय एकता को दर्शाता है और देश के लिए नायक की श्रद्धा और आदर को दिखाता है।

भावना : राष्ट्रीय एकता और भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान और देश के लिए श्रद्धा की भावना।

3. 'मेरा जूता है जापानी' (फिल्म : श्री 420) :

यह गाना 'मेरा जूता है जापानी' भी एक तरह से देशभक्ति की भावना को व्यक्त करता है, हालांकि यह गाना भारतीय शान और आत्मनिर्भरता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें राज कपूर का पात्र आत्मविश्वास से भरपूर होकर यह संदेश देता है कि भले ही उसके पास किसी और देश की वस्तुएं हैं, लेकिन वह भारतीय है और उसे अपने देश पर गर्व है। यह गाना एक प्रतीक के रूप में भारतीय संस्कृति और आत्मनिर्भरता की बात करता है और अपने देश के प्रति वफादारी और सम्मान का प्रतीक है।

भावना : आत्मनिर्भरता, भारतीयता पर गर्व, और राष्ट्रीय पहचान की भावना।

4. 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं' (फिल्म:आवारा) :

इस गाने में राज कपूर ने बच्चों को एक प्रेरक संदेश देने की कोशिश की है, जिसमें वे भारतीय समाज के आदर्शों और संस्कृति की बात करते हैं। इस गाने के जरिए वे बच्चों को एकजुट होने, परिश्रम करने और अच्छे नागरिक बनने की प्रेरणा देते हैं। यह गाना न केवल बच्चों को प्रेरित करता है, बल्कि यह पूरे देश के लिए एक सकारात्मक संदेश देता है, जिसमें भारतीय संस्कृति की सशक्तता और आत्मविश्वास को प्रदर्शित किया गया है।

भावना : बच्चों के माध्यम से देशभक्ति, भारतीय आदर्शों का प्रचार और अच्छे नागरिक बनने की प्रेरणा।

5. 'हम होंगे कामयाब' (फिल्म : आवारा) :

यह गाना, 'हम होंगे कामयाब' राज कपूर की फिल्मों के गानों में एक बेहद प्रेरणादायक गीत है। यह गाना व्यक्ति के संघर्ष, सपनों को पूरा करने, और एक उज्ज्वल भविष्य के लिए सामूहिक रूप से कार्य करने की भावना को व्यक्त करता है। इसमें देश के भविष्य की उम्मीद और सामूहिक संघर्ष की शक्ति को व्यक्त किया गया है, जो अंततः भारत के समृद्ध और आत्मनिर्भर बनने के सपने को दर्शाता है।

भावना : संघर्ष, सकारात्मकता और सामूहिक कार्य के माध्यम से देश को प्रगति और सफलता की ओर ले जाने का उत्साह।

6. 'सुनो देश वालों' (फिल्म : संगम) :

इस गाने में राज कपूर ने एक शानदार तरीके से देशवासियों से अपने कर्तव्यों का पालन करने का आह्वान किया है। इसमें एक आदर्श भारतीय नागरिक का चित्रण है, जो देश की प्रगति और कल्याण के लिए समर्पित है। यह गाना न केवल देशभक्ति का प्रतीक है, बल्कि यह हर व्यक्ति को अपने देश के लिए कुछ करने की प्रेरणा देता है।

भावना : राष्ट्र के प्रति कर्तव्य, समर्पण और देश की सेवा का आह्वान।

निष्कर्ष :

राज कपूर के गाने न केवल व्यक्तिगत और सामाजिक संघर्ष को दर्शाते थे, बल्कि इनमें देशभक्ति की भावना भी प्रगट होती थी। उनके गाने हमें अपने देश, समाज और संस्कृति के प्रति गर्व और सम्मान का अहसास कराते थे। 'श्री 420' से लेकर 'आवारा' और 'संगम' जैसी फिल्मों तक, राज कपूर के गाने देशभक्ति, आत्मनिर्भरता, नैतिकता और राष्ट्रीय गौरव के आदर्शों को प्रकट करते थे। उनके गाने आज भी भारतीय सिनेमा के सबसे प्रेरणादायक गीतों में से एक माने जाते हैं

राजकपूर की फिल्मों की विशेषताएँ :

1. मानवीय संवेदनाएँ और सामाजिक मुद्दे :

राजकपूर की फिल्मों में हमेशा मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक मुद्दों को प्रमुखता दी जाती थी। उन्होंने अपने किरदारों के माध्यम से समाज में व्याप्त असमानता, संघर्ष, गरीबी, और प्यार जैसे विषयों पर गहरी बातें कीं। उदाहरण के तौर पर, आवारा (1951) और श्री 420 (1955) जैसी फिल्मों में सामाजिक विषमताओं और संघर्षों को दिखाया गया।

2. कला और मनोरंजन का समन्वय :

राजकपूर अपनी फिल्मों में कला और मनोरंजन का अद्भुत संयोजन करते थे। उनकी फिल्मों में मनोरंजन के साथ-साथ गहरी सोच और संदेश भी होता था। उनकी फिल्मों में नृत्य, संगीत और संवादों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता था, जिससे फिल्में न केवल दिलचस्प होती थीं, बल्कि दर्शकों को कुछ नया सोचने के लिए भी प्रेरित करती थीं।

3. कवि और गीतकार के रूप में योगदान :

राजकपूर ने अपनी फिल्मों में बहुत ही प्रभावशाली गीतों का समावेश किया। उनके द्वारा निर्देशित फिल्मों में गीत संगीत का अहम स्थान था। उनकी फिल्मों के

गीत आम जनता के दिलों में घर कर जाते थे। आवारा के गीत 'आवारा हूँ' और श्री 420 के गीत 'मोहन की मूरत' आज भी याद किए जाते हैं।

4. यथार्थवाद और सरलता :

राजकपूर की फिल्मों में यथार्थवाद को बहुत महत्व दिया गया था। उनकी फिल्मों में नायक और नायिका आम जीवन के पात्र होते थे, जो संघर्षों और जीवन की कठिनाइयों से गुजरते थे। उनकी फिल्मों में सरलता और सच्चाई की भावना होती थी, जो दर्शकों से गहरे स्तर पर जुड़ती थी।

5. दर्शकों के साथ भावनात्मक जुड़ाव :

राजकपूर के फिल्मी पात्रों का जनता के साथ गहरा भावनात्मक संबंध था। उनका हर किरदार एक आम आदमी की तरह होता था, जो अपनी समस्याओं से जूझता था, लेकिन अंत में सत्य और अच्छाई की जीत होती थी। यह उन फिल्मों को आम आदमी के जीवन से जोड़ता था।

6. निर्देशन और अभिनव प्रयोग :

राजकपूर ने निर्देशन के क्षेत्र में भी बहुत कुछ नया किया। उनके निर्देशन में फिल्में न केवल कलाकारों के बेहतरीन अभिनय के लिए प्रसिद्ध थीं, बल्कि तकनीकी दृष्टिकोण से भी उन फिल्मों का योगदान था। मेरा नाम जोकर (1970) जैसी फिल्मों में उन्होंने नये दृष्टिकोणों और प्रयोगों का परिचय दिया।

7. सार्वभौमिक विषयों की खोज :

राजकपूर की फिल्मों में सार्वभौमिक विषयों की खोज की जाती थी। प्यार, दोस्ती, संघर्ष और नैतिकता जैसे तत्व उनकी फिल्मों में प्रमुख थे, जो दुनिया भर के दर्शकों से जुड़ते थे। वे भारतीय समाज के साथ-साथ वैश्विक दृष्टिकोण से भी फिल्में बनाते थे।

8. आकर्षक और सार्थक फिल्मी चरित्र :

राजकपूर अपने फिल्मों में बहुत ही मजबूत और आकर्षक पात्र गंढ़ते थे। इन पात्रों में प्रेम, त्याग, संघर्ष और आदर्शों की गहरी भावनाएँ छुपी होती थीं, जो फिल्म को दर्शकों के दिलों में स्थायी प्रभाव छोड़ने में सफल होती थीं।

राजकपूर की फिल्मों ने भारतीय सिनेमा को न केवल कला के रूप में प्रस्तुत किया, बल्कि एक सशक्त और जागरूक समाज की स्थापना में भी योगदान दिया

राजकपूर के फिल्मों के सुपरहिट गाने :

राजकपूर की फिल्मों में सुपरहिट गाने होते थे जो न केवल फिल्म के आकर्षण का हिस्सा होते थे, बल्कि उनके अभिनय और निर्देशन के साथ मिलकर गहरे संदेश भी देते थे। उनके कई गाने आज भी लोगों के दिलों में बसे हुए हैं। यहाँ कुछ प्रमुख गानों का उल्लेख किया जा रहा है:

1. 'आवारा हूँ' (आवारा - 1951) :

इस गीत को शंकर-जयकिशन ने संगीतबद्ध किया था और मोहम्मद रफी ने गाया था। यह गाना राजकपूर के करियर का एक बहुत ही प्रसिद्ध और आइकोनिक गीत बन गया। फिल्म में राजकपूर का चरित्र समाज में एक भटके हुए व्यक्ति का था, और इस गीत के जरिए उन्होंने अपनी बेबाकी और स्वतंत्रता को व्यक्त किया।

2. 'प्यार हुआ इकरार हुआ' (श्री 420 - 1955) :

इस फिल्म का यह गाना आज भी हर प्रेमी जोड़े के दिल में बसा हुआ है। संगीत शंकर-जयकिशन और गीतकार शैलेंद्र ने दिया था। इस गीत को लता मंगेशकर और मुकेश ने गाया था। यह गाना राजकपूर और नूतन पर फिल्माया गया था और इसकी सादगी और सुंदरता ने इसे कालातीत बना दिया।

3. 'मेरा जूता है जापानी' (श्री 420 - 1955) :

यह गाना एक और सुपरहिट था जो भारतीय सिनेमा में बहुत प्रसिद्ध हुआ। इसे मुकेश ने गाया

था, और इसके संगीतकार थे शंकर-जयकिशन। गाने के बोल शैलेंद्र ने लिखे थे। यह गाना राजकपूर के चरित्र की आत्मनिर्भरता और उनकी अस्मिता को दर्शाता है।

4. 'हम तुम तुम हम' (आवारा-1951) :

यह गाना भी राजकपूर और निम्मी पर फिल्माया गया था। गीत को संगीतकार शंकर-जयकिशन और गायिका लता मंगेशकर ने मिलकर प्रस्तुत किया था। इस गाने में प्रेम और सौंदर्य का अत्यंत रोमांटिक चित्रण किया गया।

5. 'तेरा प्यार मुझे दे दे' (मेरा नाम जोकर-1970) :

यह गाना फिल्म मेरा नाम जोकर से है और इसे मुकेश ने गाया था। गाने के बोल शैलेन्द्र के थे, और संगीत शंकर-जयकिशन का था। यह गाना राजकपूर के लिए एक अभूतपूर्व प्रेमगीत साबित हुआ।

6. 'जब हम तुम' (बॉबी-1973) :

यह गाना फिल्म बॉबी से है, जिसे राजकपूर ने निर्देशित किया था। संगीत लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल ने दिया था और इसे शैलेन्द्र ने लिखा। इस गीत में प्रेम और आशा की भावना को बखूबी व्यक्त किया गया।

7. 'दीवारों से मिलकर' (मेरा नाम जोकर-1970) :

यह गाना भी मेरा नाम जोकर से था और इसे मुकेश ने गाया था। गाने में एक गहरे दर्द और प्रेम के तत्व की अभिव्यक्ति की गई थी, जो राजकपूर के किरदार की अंदरूनी कशमकश को दर्शाता था।

8. 'मेरा नाम जोकर' (मेरा नाम जोकर-1970) :

यह गाना भी फिल्म मेरा नाम जोकर से है। इसे मुकेश ने गाया था और इसके संगीतकार शंकर-जयकिशन थे। इस गाने में एक जोकर की जीवन यात्रा और उसके संघर्ष की बातें की गई थीं, जो बहुत गहरे और भावनात्मक रूप से जुड़ी हुई थी।

राजकपूर की फिल्मों में संगीत का विशेष स्थान था, और उनकी फिल्मों के गाने न केवल उस समय के दर्शकों के बीच हिट थे, बल्कि आज भी उन गानों को याद किया जाता है।

राज कपूर : भारतीय सिनेमा के शोमैन का जीवन परिचय और योगदान

गरिमा जोशी
पी.एच.डी. शोधक
श्री गोविन्द गुरु यूनिवर्सिटी, गोधरा, गुजरात, भारत

सारांश :

राज कपूर, जिन्हें भारतीय सिनेमा का 'शोमैन' कहा जाता है, न केवल एक महान अभिनेता, निर्माता, और निर्देशक थे, बल्कि वे भारतीय सिनेमा के एक ऐसे युग के प्रतीक थे जिसने समाज, संस्कृति और विचारधारा को गहराई से प्रभावित किया। यह शोध पत्र उनके जीवन, करियर और उनकी फिल्मों के सामाजिक, सांस्कृतिक और कलात्मक योगदान पर केंद्रित है।

परिचय :

राज कपूर का जन्म 14 दिसंबर 1924 को पेशावर (अब पाकिस्तान में) हुआ। वे भारत के महान रंगमंच और फिल्म अभिनेता पृथ्वीराज कपूर के बेटे थे। राज कपूर का पूरा नाम रणबीर राज कपूर था, और उनका बचपन एक सांस्कृतिक और कलात्मक माहौल में बीता। उनके परिवार ने भारतीय फिल्म और थिएटर जगत में कई ऐतिहासिक योगदान दिए।

राज कपूर ने न केवल एक अभिनेता के रूप में बल्कि एक निर्माता-निर्देशक के रूप में भी अपनी पहचान बनाई। उनकी फिल्मों ने स्वतंत्रता के बाद के भारत के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को उजागर किया।

प्रारंभिक जीवन और करियर :

राज कपूर ने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत 1935 में बाल कलाकार के रूप में फिल्म इंकलाब से की। 1947 में, उन्होंने नीलकमल फिल्म में मुख्य अभिनेता के रूप में शुरुआत की। इसके बाद 1948 में उन्होंने केवल 24 वर्ष की आयु में आर.के. फिल्म्स की स्थापना की और आग के साथ निर्देशक के रूप में अपनी यात्रा शुरू की।

हालाँकि, राज कपूर को सही मायने में पहचान 1949 की फिल्म बरसात से मिली। यह फिल्म न केवल एक व्यावसायिक सफलता थी, बल्कि इसमें राज कपूर ने अपने ट्रेडमार्क 'ट्रैम्प' (आवारा व्यक्ति) का किरदार स्थापित किया, जो बाद में उनकी कई फिल्मों का प्रमुख हिस्सा बना।

फिल्मों का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व :

1. सामाजिक मुद्दों पर आधारित फिल्में :

राज कपूर की फिल्मों में समाज के निम्न वर्ग, शहरीकरण, पूंजीवाद और आर्थिक विषमताओं को प्रमुखता दी गई।

- **आवारा (1951) :** इस फिल्म में नैतिकता और सामाजिक परिस्थितियों के बीच द्वंद्व को दर्शाया गया।

- **श्री 420 (1955) :** इस फिल्म ने स्वतंत्रता के बाद शहरीकरण और भ्रष्टाचार के मुद्दों को उजागर किया।

सेक्युलर और मानवतावादी दृष्टिकोण :

राज कपूर की फिल्मों में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को दर्शाने पर जोर दिया गया।

- जिस देश में गंगा बहती है (1960) : यह फिल्म भारत की सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक एकता का प्रतीक है।

प्रगतिशील और नारी सशक्तिकरण :

उनकी फिल्मों में महिलाओं के किरदार न केवल कहानी का केंद्र थे, बल्कि उन्होंने सामाजिक बंधनों को तोड़ने का भी प्रयास किया। संगम (1964) और आवारा जैसी फिल्मों में महिला पात्र अपने विचारों और भावनाओं को स्वतंत्रता से व्यक्त करती हैं।

राज कपूर का सिनेमा और कला :

राज कपूर की फिल्मों में संगीत और दृश्य कला का अनूठा संगम देखने को मिलता है। उनके गीत, जैसे मेरा जूता है जापानी और आवारा हूँ, केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं थे, बल्कि उनके माध्यम से उन्होंने समाज और व्यक्ति के बीच के संबंधों को भी व्यक्त किया।

उनकी फिल्मों में दृश्य प्रतीकों का उपयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बारिश, अंधकार, और उजाले के माध्यम से उन्होंने मानवीय भावनाओं और संघर्षों को गहराई से चित्रित किया।

अंतर्राष्ट्रीय पहचान :

राज कपूर ने भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आवारा और श्री 420 जैसी फिल्मों ने रूस, चीन और कई अन्य देशों में जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की। वे पहले भारतीय फिल्मकारों में से थे जिन्होंने भारतीय समाज की कहानियों को विश्व स्तर पर प्रस्तुत किया।

राज कपूर की विरासत :

राज कपूर की मृत्यु 2 जून 1988 को हुई, लेकिन उनका योगदान आज भी भारतीय सिनेमा में अमर है। उनकी फिल्मों ने न केवल मनोरंजन प्रदान किया, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरणा भी दी। उनके बेटे, ऋषि कपूर और रणधीर कपूर, और पोते रणबीर कपूर ने भी उनकी इस विरासत को आगे बढ़ाया।

निष्कर्ष :

राज कपूर का जीवन और उनकी कला भारतीय सिनेमा के विकास में मील का पत्थर है। उनकी फिल्मों ने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को न केवल समझा, बल्कि उन्हें संवेदनशीलता और करुणा के साथ चित्रित किया। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि राज कपूर भारतीय सिनेमा के पहले वैश्विक 'शोमैन' थे, जिनकी रचनाएँ आज भी दर्शकों को प्रेरित करती हैं।

संदर्भ :

1. चटर्जी, सैबल। राज कपूरः द शोमैन ऑफ इंडियन सिनेमा।
2. दत्त, भास्कर। भारतीय सिनेमा का इतिहास।
3. गोखले, मीरा। भारतीय फिल्मों का समाजशास्त्र।

राज कपूर और उज़्बेकिस्तान

डॉ. विजय पाटिल

(वरिष्ठ शिक्षक) उच्च.माध्य.विद्या.गवाड़ी, जिला बड़वानी, म.प्र.

एम.ए, डी.एड, बी.एड (विद्या वाचस्पति), (विद्या सागर)

डी.एन.वाय.एस (नेचुरुपेथी व योग)

प्रस्तावना :

लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति केंद्र ताशकंद में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद का एक प्रमुख केंद्र है। जिसकी स्थापना 1995 में की गई थी। जिसका उद्देश्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का, कार्यशालाओं का व्याख्यान, सेमिनार प्रदर्शनियों, कार्यक्रमों का आयोजन करना, भारतीय जीवन शैली संस्कृति की जानकारी प्रदान करना है.

17 दिसंबर को इसी सांस्कृतिक केंद्र में भारतीय फिल्म के महानायक राजकपूर की जन्म शताब्दी वर्ष पर एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। वर्ष 2024 भारतीय फिल्म के महान शोमैन राज कपूर का जन्म शताब्दी वर्ष है। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता पृथ्वीराज कपूर के बड़े सुपुत्र राज कपूर का जन्म वर्तमान पाकिस्तान में स्थित पेशावर में 14 दिसंबर 1924 को हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कोलकाता में हुई थी, किंतु उन्होंने मैट्रिक तक ही शिक्षा प्राप्त की थी। फिल्मों में राजकपूर का आगमन पंडित केदारनाथ शर्मा के साथ अभिनव की बारीकियां को सीखकर हुआ। वर्ष 1947 में पहली बार पंडित केदारनाथ शर्मा ने अपनी ही फिल्मों में नीलकमल में मधुबाला के साथ नायक के रूप में राज कपूर को प्रस्तुत किया था। वर्ष 1948 में राज कपूर ने स्वयं के निर्देशन और निर्माण में आग फिल्म का निर्माण किया। जिसमें प्रमुख नायक के रूप भूमिका राज कपूर ने निभाई थी। 1951 को फिल्म आवारा के माध्यम से राज कपूर वैश्विक कलाकार के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल हुए। राज कपूर को हिंदी फिल्मों का पहला शोमैन माना जाता है। राज कपूर की फिल्में केवल भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में सिने प्रेमियों को द्वारा पसंद की गई थी। रूस में, उज्बेकिस्तान में उनकी लोकप्रियता गजब थी। ताशकंद में आज भी उनके नाम से एक प्रसिद्ध भारतीय व्यंजनों का रेस्टोरेंट विद्यमान है।

राज कपूर और फिल्म का इतिहास : हिंदी सिनेमा के प्रसिद्ध अभिनेता निर्माता निर्देशक राज कपूर फिल्म उद्योग में 1924 से 1988 तक अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपनी शुरुआती फिल्मों में प्रेम कहानियों को एक मादक अंदाज में उन्होंने प्रस्तुत किया। सोवियत संघ और मध्य पूर्व में राजकपूर की लोकप्रियता दंतकथा बन चुकी है। राजकपूर ने 1951 में प्रदर्शित आवारा हिंदी सिनेमा इतिहास में मिल का पत्थर साबित हुई। जिसमें राजकपूर ने नायक के रूप में एक अलग पहचान बनाई। फिल्म आवारा ने 27 साल के नौजवान को उस ऊंचाई पर पहुंचा दिया जहां तक पहुंचने के लिए बड़े-बड़े कलाकार संघर्षरत थे। फिल्म आवारा ने राज कपूर को अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्रदान की। भारत ने विश्व

स्तर पर जो छवि बनाई, उसके जो भी नए प्रतीक हो, लेकिन इतना तय है कि चीन पूर्व सोवियत संघ, मिस्र, उज़्बेकिस्तान जैसे देशों में राज कपूर हमेशा के लिए भारत का प्रतीक बन गए हैं। आज भी पेईचिग और मास्को की सड़कों पर घूमते टहलते हुए आवारा हूँ गीत सुनाई देता है। राजकपूर के लोकप्रियता के विशाल दायरे का एक उदाहरण मात्र है। वर्ष 1951 से 1956 के बीच राजकपूर की जितने भी फिल्में आई उनमे उनकी अभिनेत्री नरगिस ही थी, यह फिल्म इतिहास में एक रिकॉर्ड था।

वर्ष 1956 राज कपूर के जीवन का महत्वपूर्ण वर्ष रहा इसी वर्ष राज कपूर कलात्मक ऊंचाइयों के चरमोत्कर्ष तक पहुंचे और दूसरी ओर लोकप्रियता के उच्चतम शिखर पर वह हिंदी सिनेमा में अपने ढंग का अलग व्यक्तित्व बन गए जिसका कोई मुकाबला नहीं था।

राज कपूर एक महान अभिनेता निर्माता निर्देशक थे जिन्होंने हिंदी सिनेमा में महत्वपूर्ण योगदान दिया उनकी कुछ प्रमुख उपलब्धियां और योगदान

1. **निर्देशन और अभिनय :** राज कपूर ने अपने करियर में कई यादगार फिल्में निर्देशित अभिनीत की जिसमें आवारा श्री 420 मेरा नाम जोकर, राम तेरी गंगा मैली, शामिल थी, उनकी कई फिल्मों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया।
2. **सामाजिक और राजनीतिक विषयों का चित्रण :** राज कपूर की फिल्में अक्सर सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर केंद्रित होती थी जैसे- गरीबी, असमानता, राजनीतिक भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आदि।
3. **आर. के. फिल्म की स्थापना :** राज कपूर ने आर फिल्म की स्थापना की जो एक प्रमुख फिल्म निर्माण कंपनी बन गई, इस कंपनी ने कई क्लासिक और यादगार फिल्में बनाई जो फिल्म इतिहास में अमर हो गई।
4. **नई प्रतिभाओं को बढ़ावा देना :** राज कपूर ने अभिनेताओं निर्देशक को तकनीशिनीयों को मौका दिया और उन्हें प्रोत्साहित किया।

राज कपूर का सिनेमा में योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और स्थाई है, उन्हें भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक महान व्यक्तित्व के रूप में याद किया जाता है। राज कपूर का वैश्विक फिल्म बड़ा योगदान है। वह एक महान अभिनेता निर्देशक निर्माता थे, जिन्होंने हिंदी सिनेमा को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई उनकी फिल्में न केवल भारत में बल्कि विश्व भर में प्रसिद्ध हुई उनकी फिल्म आवारा को विश्व की सबसे अच्छी फिल्मों में माना जाता है। राज कपूर ने अपनी फिल्मों में सामाजिक और राजनीतिक विषयों को उठाया जो समय के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे, उनकी फिल्मों में केवल मनोरंजन का साधन थी बल्कि वह सामाजिक परिवर्तन का एक माध्यम भी थी। उनका योगदान न केवल फिल्मों में है बल्कि उन्होंने भारतीय सिनेमा को एक नई दिशा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उन्होंने नए अभिनेताओं निर्देशकों को प्रोत्साहित किया राज कपूर का वैश्विक फिल्म में योगदान को कभी बुलाया नहीं जा सकता है।

राज कपूर और चार्ली चैपलिन :

राज कपूर की तुलना अनेक बार महान अभिनेता चार्ली चैपलिन से की गई है। निस्संदेह चार्ली विश्व सिनेमा का एक महान स्तंभ है और यदि राजकपूर की तुलना उनसे की जाए तो यह फिल्म भारतीय फिल्म उद्योग के लिए बहुत बड़ी बात होगी। चार्ली चैपलिन ने अपने फिल्मों में मनुष्य के भौतिक जीवन के प्रति आग्रही व्यक्तित्व के बाह्य संकट की ओर अधिक ध्यान केंद्रित किया जबकि राजकपूर का क्षेत्र अधिकांशतः आदमी का मानसिक यातना संसार है। दोनों इसी धरातल पर एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। सार्थक कलात्मक दृष्टि से दोनों में समानता है राजकपूर की फिल्मों में शिक्षित बेरोजगारी की आगत भविष्य में भयावहता की ओर संकेत करता है। भारतीय

समाज और उसके नियामकों ने उसकी शिद्दत को 1970 के बाद ही समझा। उन्होंने चार्ली की नकल नहीं की बल्कि उन्हें भारतीय ढंग से कुछ इस कदर इतने मौलिक रूप में रंग दिया कि वह विश्व के दूसरे चैपलिन बन गए हालांकि दोनों की व्यक्तित्व की तुलना नहीं की जा सकती है। राजकपूर भारतीय सिनेमा के महान कलाकार थे जिसकी तुलना किसी भी कलाकार से नहीं की जा सकती है। सिनेमा का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था जिसका ज्ञान और अनुभव उनको न रहा हो। सिनेमा उनमें बसता था और वह खुद सिनेमा को जीते थे, यही कारण है कि वे एक मिसाल बन गए। उन्हें अभिनय के लिए सदी का सर्वश्रेष्ठ निर्देशक शोमैन का सम्मान प्रदान किया गया। उनकी फिल्मों में व्यवसायिकता,कलात्मकता साहित्यिकता, सामाजिकता का सम्मोहक सम्मिश्रण मिलता है। वह हिंदी और भारतीय सिनेमा के पहले कलाकार थे जिन्होंने एक विश्व मंच प्रदान किया.राज कपूर जैसे नायक सदियों में कोई एक होता है, उनकी प्रमुख फिल्में अनाड़ी, आवारा, जिस देश में गंगा बहती है, संगम, मेरा नाम जोकर, प्रेमरोग, राम तेरी गंगा मैली तीसरी कसम, संगम, नजराना, छलिया, जागते रहो, चोरी चोरी, श्री 420, बूट पॉलिश, भंवरा, बावरे नैन बरसात, अंदाज, नीलकमल सत्यम शिवम सुंदरम, दो जासूस प्रमुख थी।

राजकपूर और उज़्बेकिस्तान : उज्बेकिस्तान में लोग बॉलीवुड के दीवाने हैं और उज़्बेकिस्तान और रूस की कई पीढ़ियां यहां तक की युवा भी राज कपूर और उनकी सिनेमा से परिचित हैं उन्हें बॉलीवुड का नंबर एक अभिनेता मानते हैं. ताशकंद के ली ग्रांडे होटल में स्थित यह रेस्टोरेंट भारत से आने वाले पर्यटक समूह के लिए एक निश्चित पड़ाव है। यह अपने बॉलीवुड नाइट्स के लिए लोकप्रिय है जहां उज्बेक लोग 90 के दशक के शीर्ष चार्ट बास्टर्स गीतों पर भी थिरकते हैं। यह रेस्टोरेंट अधिकांश भारतीयों कार्यक्रमों के लिए आधिकारिक कैटरर भी है। जब भी बाहर से कोई बॉलीवुड सेलिब्रिटी यहां आता है तो यहां काफी भीड़ होती है। समरकंद में शंघाई संगठन शिखर सम्मेलन हो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा हो या किसी भी फिल्मी कलाकार की प्रस्तुति यहां पर प्रमुख रूप से होती है। समीर खान जो मूल रूप से मुंबई के निवासी है इस संपत्ति का प्रबंध करते हैं, लेकिन रेस्तरां का विचार सबसे पहले जय अल अतास के दिमाग में आया था जो एक इंडोनेशियाई है और उन्हें देश के यात्रा के दौरान भारतीय भोजन से स्नेह हो गया था तथा वे रूस और उज्बेकिस्तान में राज कपूर के प्रति दीवानगी से बहुत प्रभावित हुए थे उन्होंने कहा बहुत सारे पर्यटक समूह नियमित रूप से यहां आते हैं, जबकि उज्बेक के लोग भी यहां के भोजन का आनंद लेते हैं। तस्वीरें खिंचवाना भी पसंद करते हैं जब भी भारत से कोई बॉलीवुड सेलिब्रिटी यहां आता है तो यहां काफी भीड़ होती है। यहां भारत के सभी प्रकार के व्यंजन उपलब्ध रहते हैं.सबसे ज्यादा बिकने वाले व्यंजन बटर चिकन बिरयानी चीज नॉन और डोसा है। राज कपूर चार्ली चैपलिन जैसी अभिनय शैली के लिए प्रसिद्ध थे जिसने न केवल भारतीय दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया बल्कि रूस उज्बेकिस्तान में भी उन्हें प्रशंसक बना दिया।

निष्कर्ष : राज कपूर ने कई फिल्मों में अभिनय और निर्माण किया। राज कपूर को कई पुरस्कारो से सम्मानित किया गया जिसमें तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 11 फिल्म फेयर पुरस्कार शामिल थे। राजकपूर की फिल्में आम तौर पर उनके जीवन से जुड़ी होती थी और अपनी ज्यादातर फिल्मों के वे ही मुख्य नायक होते थे। राजकपूर की फिल्मों ने एशिया मध्यपूर्व अफ्रीका रूस उज्बेकिस्तान में काफी प्रसिद्धि पाई। भारत सरकार ने 1971 में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया.वर्ष 1988 में भारत सरकार ने उन्हें दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया। राजकपूर फिल्मी संगीत और गीतों के चतुर निर्णायक

थे। उनके द्वारा कमीशन किए गए कई गाने सदाबहार हिट रहे, उन्हें दृश्य शैली की उनकी मजबूत समझ के लिए भी याद किया जाता है। राजकपूर का विवाह रीवा मध्य प्रदेश के निवासी कृष्णा मल्होत्रा के साथ हुआ था। राज कपूर के तीन पुत्र ऋषि कपूर रणधीर कपूर राजीव कपूर थे उनकी दो पुत्रियां भी थी। राज कपूर के चरित्र चाहे सीधे साधे गांव वाले के हो चाहे मुंबईया वाला स्मार्ट के वह एक ऐसा आम हिंदुस्तानी था कि सीधापन और अपने सामाजिक भावनात्मक मूल्य के प्रति उसका लगाव झलकता था। राजकपूर का निर्णय हमेशा आशावाद से और मानवता की जीत का होता था। राज कपूर ने हमेशा आम आदमी के लिए फिल्में बनाई और इसी आधार पर अपनी फिल्मों के चरित्र करते थे। 2 जून 1988 को महान कलाकार का देहावसान हो गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. विकिपीडिया लेख सार
2. रिया चंद्रा करमाकर 2023आलेख सार
3. मेटा सार

राज कपूर की फिल्मों में सामाजिक सरोकार
(फिल्म श्री 420, अनाड़ी तथा बूट पॉलिश के विशेष संदर्भ में)

श्रीमती सीमा तोमर **नेहा राठी**

भारतीय सिनेमा के अत्यंत प्रसिद्ध और लोकप्रिय अभिनेता, निर्माता-निर्देशक, राज कपूर साहब भारतीय फिल्मों का एक ऐसा नायाब हीरा है जिनके बिना भारतीय सिनेमा पर चर्चा अधूरी ही रह जाती है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी एक ऐसे बेजोड़ और उत्कृष्ट कलाकार थे जिन्हें अपनी इसी बेजोड़ और उत्कृष्ट कलाकारी के लिए समय समय पर कभी सर्वश्रेष्ठ अभिनेता, तो कभी सर्वश्रेष्ठ निर्माता-निर्देशक के पुरस्कार से सम्मानित किया गया जाता रहा। इतना ही नहीं उन्हें 1971 में पद्मभूषण एवं 1988 में 'दादा साहब फाल्के' पुरस्कार भी प्रदान किया गया था। ऐसा इसलिए था क्योंकि भारतीय फिल्मों के इतिहास में उनकी अनेक फिल्में मील का पत्थर साबित हुई है।

वे अपने समय के सबसे बड़े शोमैन तो थे ही किंतु भारतीय सिनेमा के प्रारंभिक दौर में तकनीकी एवं आर्थिक संसाधनों के अत्यंत अभाव के बावजूद, तत्कालीन श्वेत- श्याम फिल्मों के दौर में भी, उनकी वैचारिक परिकल्पना आश्चर्यजनक थी। जहाँ प्रारंभ में उन्होंने अपनी फिल्मों में प्रेम कथाओं का बहुत ही सुन्दर फिल्मांकन किया वहीं उनकी अधिकांश फिल्मों में नेहरूवादी व समाजवादी विचारधारा का व्यापक प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। 'अगर राज कपूर की फिल्मों का विश्लेषण करें तो राज कपूर समाजवादी दृष्टिकोण के सबसे ज्यादा करीब थे। उनकी शुरुआती सिनेमा इस बात की तसदीक भी करती है। उनकी फिल्मों में समाजवादी दृष्टिकोण का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। राज कपूर ने अपने एक इंटरव्यू में इस बात की पुष्टि यह कहते हुए की है कि प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू और मैंने औपनिवेशिक गुलामी की जंजीरें साथ-साथ तोड़ी। उन्होंने कहा कि जो काम आजाद भारत में पंडित नेहरू राजनीतिक धरातल पर कर रहे थे उसी काम को वे सांस्कृतिक धरातल पर कर रहे थे। मतलब साफ था, जो सपने नेहरू आजाद भारत की नौजवान पीढ़ी को दिखा रहे थे उन्हीं सपनों को राज कपूर अपनी फिल्मों के मार्फत उस वक्त नौजवानों को दिखा रहे थे।'[1] उन्होंने नेहरू-गांधी विचारधारा और टैगोर के यूनिवर्सल नेशनलिज्म का अपनी फिल्मों में बहुत ही सहजता एवं सुंदरता से अंकन किया है। भारतीय फिल्म उद्योग के सबसे बड़े निर्माता निर्देशकों में से एक श्री कपूर की प्रसिद्धि केवल भारत तक ही सीमित नहीं थी बल्कि अपनी फिल्मों के कथानक के बूते उन्होंने विश्व सिनेमा पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। 'उनकी फिल्मों में आज़ादी के बाद के भारत के आम आदमी के सपने, गाँव और शहर के बीच का संघर्ष और भावनात्मक कहानियां जीवंत हो उठती थीं।'[2]

राज कपूर की फिल्मों की यह खासियत रही कि वर्तमान दौर में भी उनकी अधिकांश फिल्मों को देखने पर दर्शक पाते हैं कि वे आज के दौर में भी प्रासंगिक हैं। 'राज कपूर की फिल्में अपने आप में

उन मुद्दों को समेटे हुईं थीं जो आज भी आम आदमी के लिए महत्वपूर्ण है, उन मुद्दों में आज भी आम आदमी की आवाज़ ही मुखरित होती है।'[3] वे आज भी दर्शकों को प्रेरित करती हैं। उनकी फिल्मों में दर्शकों को उस दौर की जो सामाजिक स्थिति देखने को मिलती है वह यथार्थवाद के धरातल पर नए तरह का विचार लेकर पैदा हुई प्रतीत होती है। जो यह सिद्ध करती है कि उनकी सिनेमा और मोटे तौर पर समाज तथा सूक्ष्म स्तर पर समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों, विभिन्न सामाजिक समस्याओं के बीच गहन संबंध है। उनकी फिल्में आज भी दर्शकों को यह अहसास करा देती हैं कि वे समाज से ही प्रभावित है और समाज में रहने वाले लोग भी उनसे उतना ही प्रभावित होते हैं। सामान्यतः भी सिनेमा सबके मन को छूने की क्षमता रखती है और ऐसा संभवतः इसलिए होता है चूँकि यह हमारे मन की दबी भावनाओं, इच्छाओं और आशाओं से वह अक्सर मेल खाती हैं। सिनेमा के पर्दे पर जनमानस अपनी खुशी, अपने दुःख, अपनी समस्याओं का ही प्रतिबिम्ब देखता है और जो फिल्में यह करने में सफल हो जाती हैं वे सफल फिल्मों की श्रेणी में आ जाती हैं। गौरतलब है कि राज कपूर साहब की फिल्मों का यह पक्ष बहुत उज्जवल रहा है और संभवतः यही कारण है कि उनकी फिल्में आज के दौर में भी सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात कर, उनके संबंध में जागरूकता उत्पन्न कर और अंततः उस संबंध में समाधान सुझाकर सामाजिक दृष्टिकोण से समाज पर उपकार ही करती है। राज कपूर की फिल्मों की खासयित यह रही कि उनकी अधिकांश फिल्में इन्हीं सामाजिक मुद्दों को उठाती हैं।

फिल्में कितनी भी सुखद भावाभिव्यक्ति क्यों न कर ले किंतु यदि उसमें सामाजिकता नहीं है तो वह मात्र मनोरंजन तो कर सकती है किंतु निश्चित तौर पर सार्थक नहीं हो सकती क्योंकि साहित्य की ही भाँति सिनेमा केवल मन बहलाव की ही वस्तु नहीं है अपितु मनोरंजन के इतर भी उसका कुछ उद्देश्य है। वह केवल नायक नायिका के संयोग या वियोग की कहानी ही नहीं सुनाती बल्कि जीवन की अनेक समस्याओं पर भी विचार करती है साथ ही उन समस्याओं का हल निकालने का प्रयास भी करती हैं। राज कपूर की फिल्मों की यह विशेषता है उन्हें उन प्रश्नों से दिलचस्पी है जिनसे समाज अत्यधिक प्रभावित होता है। राज कपूर का सम्पूर्ण फिल्मी कैरियर मानव और जीवन के बीच यही सामन्जस्य स्थापित करने में व्यतीत हुआ। जिस प्रकार साहित्य का पहला उद्देश्य मानवों को मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण करना और उसके परिणामस्वरूप उन्हें जीवन के संस्कार से परिपूर्ण करना होता है ठीक उसी तरह ही राज कपूर की फिल्में भी मनुष्य को मानवता और जीवन का संघर्ष सिखाती हैं। फिर चाहे वह अमीरी-गरीबी के बीच असमानता की गहरी खाई को उकेरती उनकी फिल्म आवारा हो या फिर बेरोजगारी की समस्या से जूझते एक सामान्य से भोले भाले लड़के के गलत तरीके अपनाकर धन कमाने की दौड़ में शामिल हो जाने की स्थिति को दर्शाती श्री 420 जैसी फिल्म। 'राज कपूर की आवारा और श्री 420 जैसी फिल्मों ने आजादी के बाद के भारत की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को दर्शाया और घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दर्शकों के साथ अपनी आवाज को साझा किया।'[4]

जहाँ उनकी बूट पॉलिश जैसी फिल्म बाल तस्करी जैसे अपराध और भीख माँगने, खासतौर पर छोटे छोटे बच्चों से भीख मँगवाने, जैसी सामाजिक कुरीतियों को उजागर करती है वहीं उनकी तीसरी कसम जैसी फिल्म नौटंकी में अभिनय करने वाली स्त्रियों की समाज में स्थिति भी दर्शाती है। उनकी फिल्में आम जनता से बहुत जल्दी एक संवाद पैदा कर लेती हैं। और इसी के बल पर उन्होंने अपनी फिल्मों में समसामयिक विचारधारा का बहुत ही उत्तम प्रस्तुतीकरण किया है। राज कपूर ने अपनी फिल्मों में गरीबी, बेरोजगारी, ग्रामीण और शहरी मूल्यों का अंतर, अमीरी-गरीबी के बीच की खाई, जीवन मूल्यों का संकट, नवीन एवं पुरातन परंपराओं की टकराहट

आदि विषयों को अपनी फिल्मों के माध्यम से दर्शाया है इस से वह एक सधे हुए समाजशास्त्री प्रतीत होते हैं। विविधता और मनोरंजक प्रस्तुतीकरण उनकी विशेषता रही है। इस पत्र में हम राज कपूर जी की फिल्में श्री 420, अनाड़ी और बूट पॉलिश में फिल्मांकित सामाजिक सरोकारों पर चर्चा करेंगे।

दशकों पहले प्रदर्शित हुई राज कपूर की फिल्म 'श्री 420' की कहानी सामाजिक सरोकार प्रधान एक ऐसी कहानी है जो नेहरू जी की समाजवादी विचारधारा के सटीक चित्रण का जीवन्त उदाहरण है। फिल्म में मुंबई की विशाल अट्टालिकाओं मे रहने वाले सामंतवर्ग और फुटपाथ पर निर्वाह करने वाले निर्धन वर्ग के बीच की खाई को बहुत प्रभावपूर्ण ढंग से प्रदर्शित किया गया है। दुर्भाग्यवश भारत में आज भी यह स्थिति देखने को मिल जाती है। फिल्म में राज कपूर समाज की गंभीर विसंगतियों पर बहुत सशक्त सिनेमाई प्रहार करते हैं और यही विशेषता उनकी ख्याती का मूल कारण है।

यह फिल्म एक बेरोजगार युवक एवं निर्धन शिक्षिका की कहानी भर नहीं है बल्कि, तत्कालीन समाज की सामाजिक एवं राजनीतिक संरचना का भी एक सजीव परिदृश्य चित्रित करती है। फिल्म एक औद्योगिक नगर को, वहां के सामान्य जन की आवश्यकताओं एवं उनकी भावनाओं की पृष्ठभूमि में देखने की बाध्यता उत्पन्न करती है। 'श्री 420 में, उन्होंने नए भारतीय राज्य में गरीबी, बेरोजगारी और राष्ट्रीय गौरव के मुद्दों को उठाया और साथ ही रोमांटिक कथानक में दर्शकों की रुचि बनाए रखी।'[5] इस फिल्म में राज कपूर ने मुंबई के फुटपाथ पर सोने वालों की अमानवीय जीवन को दर्शाया है, एक सामान्य व्यक्ति की निर्धनता से जन्मी विषम परिस्थितियों को भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी है साथ ही यह भी दर्शाया है कि परिस्थितियों से उत्पन्न अभाव किसी निर्धन व्यक्ति की ईमानदारी व आवश्यकताओं पर किस प्रकार भारी पड़ता है और उसे लालच, बेईमानी के षड्यंत्रों के चक्रव्यूह में फंसा कर किस प्रकार एक धोखेबाज, झूठा, और अपराधी व्यक्ति बना देता है। फिल्म का नायक अमीर बनने के शॉर्टकट तलाशने में अपनी अस्मिता ही खोता चला जाता है और समाज के प्रति सामाजिक, सांस्कृतिक अन्याय और कानूनी अपराध कर बैठता है और अंत में स्वयं अपनी ही नजरों में गिर जाता है। यद्यपि सामान्य हिंदी फिल्मों की भाँति यहां भी नायक की अंतरात्मा जागृत होती है और भारतीय जीवन मूल्यों की जीत होती है। फिल्म में हजारों लोगों के जीवन की त्रासदी और उनके जीवन की अमानवीय परिस्थितियों का जीवन्त चित्रण है, जिसे राज कपूर ने बहुत ही सशक्त अभिव्यक्ति दी है। 'श्री 420 में मुख्य रूप से गरीबों का खून चूसने वाली पोंजी योजनाओं की विपत्ति को दिखाया गया था।'[6]

फिल्म का नायक राजू एक बी. ए. पास युवक है जो, एक छोटे शहर इलाहाबाद से बड़े शहर मुंबई में कुछ करने के बड़े अवसर की खोज में वहां जाता है परंतु शीघ्र ही कठोर वास्तविकता से उसका परिचय हो जाता है। उसे ज्ञात होता है कि इस बड़े महानगर में परिश्रम, सत्यता और ईमानदारी जैसे मानवीय गुणों का कोई मूल्य नहीं है। वह परिस्थितिवश विलासी 'माया' और कुटिल 'सेठ सोनाचंद धर्मानंद' के चंगुल में फंसकर उसके साथ धोखाधड़ी और चारसौ बीसी से पैसा कमाने लग जाता है। 'फिल्म का शीर्षक ही भारतीय दंड संहिता की धारा 420 को संदर्भित करता है जो धोखाधड़ी से संबंधित है।'[7]

धर्मानंद जैसे धूर्त सेठ और माया जैसी विलासित जीवन शैली वाली नारी के साथ मिलकर नायक राज कपूर अपने परिश्रम, ईमानदारी और उच्च जीवन आदर्शों को भूलकर निर्धन लोगों को 100 में मकान बेचने का दिवास्वप्न दिखलाता है। अंत में विद्या (नरगिस) राज (राज कपूर) को सही राह पर लाकर पुनः परिश्रम एवं ईमानदारी के रास्ते पर ले आती है।

इस फिल्म में विस्मय और मासूमियत का अद्भुत मिश्रण है जिसने राज कपूर (नायक) के स्वरूप को, स्वाभाविक एवं आकर्षक बना दिया है। फिल्म के

प्रारंभ में राजू समुद्र के किनारे योगासन (शीर्षासन) करता है, तो हवलदार उसे रोकता है, तब राज का मासूमियत से भरा सरल संवाद समाज की ढोंगी वास्तविकता पर चुटीला व्यंग है, 'इस उल्टी दुनिया को सीधा देखना हो तो सर के बल खड़ा होना पड़ता है।.... जानते हैं हवलदार साहब! बड़े-बड़े नेता सवेरे उठकर शीर्षासन करते हैं तब देश को सीधा कर पाते हैं'। यह समाज एवं राजनीति की कुटिल विषम परिस्थितियों का सशक्त प्रस्तुतीकरण है। राज कपूर समाज की विषमताओं पर कटाक्ष कर बड़ी ही सहजता से जीवन की त्रासदी का जीवन्त चित्रण कर देते हैं। 'जिस दुनिया में आप रहती हैं वहाँ इंसान के दिल और दिमाग की नहीं उसके कपड़ों की इज्जत होती है' एवं 'आज गरीब गरीबों को नहीं पहचानता' जैसे संवाद समाज में अमीरी और गरीबी की गहरी खाई को व्यक्त करते हैं। यहाँ गाँव और शहर के विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों की विषमता को भी फिल्म में दर्शाया है।

नायक के रूप में राज कपूर ने इस फिल्म में एक पढ़े लिखे बेकार नौजवान की मर्मांतक पीड़ा को बहुत ही मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति दी है। नौकरी की तलाश में भटकता राजू दाने-दाने को मोहताज हो जाता है और काम ना मिलने पर अपने मैडल बेचने को मजबूर हो जाता है। 'मैं अपना ईमान बेचना चाहता हूँ!.. सच्चाई के लिए मिला इनाम!' फिल्म का यह संवाद दर्शकों को भीतर तक झकझोर डालता है। यहां एक बेरोजगार युवक की मजबूरी को राज कपूर ने बहुत ही सशक्त, भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी है। नवयुवकों के नवीन सपनों, आशाओं को उजागर करते-करते यह फिल्म उनके भीतरी द्वंद का बहुत उमदा प्रस्तुतीकरण करती हैं। 'इस शहर में मुझे कुछ करना है, कुछ बनना है.... जैसे भी, जिस ढंग और जिस रास्ते से भी..... मेरी जेब में पैसे होंगे.....।' एवं 'दुनिया में रोटी से बढ़कर प्यारी चीज कोई नहीं....' जैसे संवाद हमारे समाज के नौजवानों की इच्छाओं, सपनों और मजबूरियों के साकार दृश्य प्रस्तुत करते हैं। बेरोजगारी की समस्या आज भी भारत में वैसे ही मुँह बाए खड़ी है। फिल्म का नायक स्नातक है किंतु बेकारी के कारण, 45 रुपए की पगार पर लॉन्ड्री में धुलाई, प्रेस का काम करना स्वीकार कर लेता है। यह विडंबना आज भी हमारे समाज में व्याप्त है। आज भी भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त, पीएचडी जैसी डिग्री धारी लोगों को चतुर्थ श्रेणी की नौकरी के लिए आवेदन करते हुए देखा जा सकता है। ऐसी ही परिस्थितियों में व्यक्ति आदर्श और सकारात्मक जीवन मूल्यों से समझौता कर बैठता है और उसे अपराध की दुनिया लुभाने लगती है। 'यहां इज्जत ऐशो आराम है आज मैं तुम्हारे लिए एक नई दुनिया के दरवाजे खोलती हूँ!' माया का यह कथन किसी भी नौजवान को उसके सपने पूरे करने के लिए अपराध की दुनिया में धकेल सकता है।' और नायक विलासिता के मोह में धोखाधड़ी और 420 की ओर बढ़ जाता है। फिल्म के एक दृश्य में जहां माया (नादिरा) राजू को नकली राजकुमार की भूमिका निभाने को कहती है वहां राजू के रूप में राज कपूर अपनी सरल मुस्कान से, अपने चेहरे के हाव-भाव को एक सशक्त क्लासिक अभिव्यक्ति में परिवर्तित कर देते हैं। 'अच्छा तो चलिए! एक नकली चेहरा उतरकर दूसरा नकली चेहरा लगा लेता हूँ'! यह संवाद समाज के खोखले व दोहरे चरित्र का परिचायक है। यह अकेला दृश्य पूरी फिल्म की आत्मा का अभिव्यक्तिकरण है। एक ऐसे शिक्षित, निर्धन व्यक्ति के भावों की अभिव्यक्ति है जिसे परिस्थितियां जीविका की तलाश में, एक मुखौटा उतारकर दूसरा मुखौटा लगाने हेतु बाध्य कर देती है। यह एक बेरोजगार व्यक्ति की गहन व्यथा की वास्तविक अभिव्यक्ति है जो पतन की ओर चलता चला जा रहा है। 'काम की तलाश में यहां (मुंबई) चल कर आया हूँ!' यह संवाद एक विस्थापित बेरोजगार की मानसिकता का यथार्थवादी चित्रण है। राजू जीविका की खोज में भटकते शिक्षित युवा वर्ग का प्रतिनिधि है जो समाज में धन कमाने के गुण तथा जीवित रहने के कौशल को सीख रहा है और समृद्धि के लिए प्रयास करते-करते अनैतिकता की सीमाओं को भी लांघ जाता है।

वह समृद्धि व सफलता की चाह में शॉर्टकट का चुनाव कर लेता है। पूंजीपतियों द्वारा विद्या का अपमान, तिरस्कार, 'जाओ इसी गटर में जहां से तुम आई हो।' किसी भी निर्धन के प्रति सामाजिक अपमान और अपराध का सशक्त चित्रण है आज भी समाज में व्यक्ति को उसके रुतबे से ही नापा जाता है चरित्र और ज्ञान से नहीं।

'आज की रात तुम्हें विद्या की नहीं माया की जरूरत है' जैसे संवाद समाज में व्याप्त लालच धोखा और बरगलाने की प्रथा की सक्षम अभिव्यक्ति है। राजू के रूप में राज कपूर ने अपनी इस फिल्म में एक बेरोजगार युवक के समक्ष उत्पन्न विषम परिस्थिति और उनसे उत्पन्न आक्रोश का सजीव चित्रण किया है। उसके 420 के धंधे पर जब विद्या उसे फटकारती है तो राजू का आक्रोश उसके शब्दों में फूट पड़ता है, 'जब मैं भूखा था तो दुनिया ने मुझे खाना नहीं दिया.. जब मैं बेरोजगार था तो काम नहीं दिया.. बेघर था तो शहर में घर नहीं दिया।' इस वाक्य में एक पढ़े-लिखे नौजवान की मजबूरी, काम ना मिलने की व्यथा और प्रतिकार लेने का आक्रोश साफ झलकता है और इसी ज़िद में वह झूठ बेईमानी से भी परहेज नहीं करता है। सेठ सोनाचंद का मक्कारी भरा संवाद '1000 टन चावल नहीं तो क्या 200 टन कंकर पत्थर तो है', मुनाफा खोरी और मिलावटी कारोबार का पर कटाक्ष है। यह हमारे समाज में व्याप्त एक आम सामाजिक बुराई है। अनेक सामाजिक सरोकारों का सफल फिल्मांकन फिल्म में स्थान-स्थान पर कहीं चित्रों द्वारा, कहीं प्रतीकों द्वारा, तो कहीं संवादों द्वारा बखूबी किया गया है। राजू धन कमाने और जल्दी अमीर होने के फेर में मक्कार सेठ सोनाचंद और विलासिता में डूबी माया के चंगुल में फँस जाता है। तिब्बत गोल्ड कंपनी के नाम से एक बोगस कंपनी खोल लेता है। चारसौ बीसी से धन कमाता है। धूर्त सेठ सोनाचंद राजू के नाम से आम जनता के लिए सौ रुपए में घर का विज्ञापन छपवा देता है किंतु योजना को मूर्त रूप नहीं देना चाहता वह केवल स्वप्न दिख रहा है। 'मैं घर नहीं बेच रहा हूँ राज! घर का सपना नीलाम कर रहा हूँ!', आज भी इसी प्रकार की सामाजिक समस्याएँ हमारे समाज में व्याप्त हैं। आज भी अनेक प्रॉपर्टी डीलर मकान के नाम पर लोगों को धोखा देने से बाज नहीं आते। फिल्म में दौलत, इज्जत और शोहरत के नाम पर धोखेबाजी करते सेठ सोनाचंद धर्मानंद के रूप में धूर्त नेताओं और बेईमान व्यापारियों को चित्रित किया गया है। यद्यपि फिल्म की नायिका विद्या अपने आदर्शों के साथ समझौता नहीं करती और अपने चुटीले व्यंग्यों से समय-समय पर राजू की अंर्तरात्मा को जगाती रहती है। 'आप अपनी बेईमानी के पैसों से अपनी पसंद का स्कूल बना सकते हैं' तथा 'बेईमानी के पैसों से इमान खरीदने आएं हैं।' जैसे संवाद राजू की आत्मा को झकझोरते रहते हैं। अंत में भी वह राजू को उसका मेडल देते हुए कहती है 'आपका इमान वापस लाई हूँ'। राजू के समक्ष चमक- दमक वाली रसहीन, सुनहरी दुनिया का खोखलापन स्पष्ट होने लगता है। इस धोखे की दलदल का यथार्थ जानने के बाद बेचैन राजू मन की शांति के लिए तड़पता है। आत्म मंथन करता है। यद्यपि गरीबी की आग में राजू के सारे सिद्धांत होम हो जाते हैं किंतु उसकी आदर्श सिद्धांतों वाली शिक्षिका विद्या (नरगिस) उसे अपने सुसंस्कृत, आदर्श जीवन मूल्यों में लौटा लाती है। विपरीत परिस्थितियों में राजू लड़खड़ाता जरूर है परंतु अंत में अपने आदर्श एवं उच्च जीवन आदर्शों की स्थापना करता है। 'इस औंधी दुनिया में जिंदा रहने के लिए कभी-कभी मरना भी पड़ता है'। 'कौन कहता है, आप गरीब हैं!', जैसे संवाद जनता की आशाओं को जागृत कर उन्हें समस्या का उचित समाधान और उपाय सुझाते हैं। श्री 420 का यह चरित्र प्रत्येक व्यक्ति के भीतर उपस्थित अच्छे बुरे के मध्य चलते निरंतर संघर्ष को अभिव्यक्ति देते हुए, अंतरात्मा की सत्यता को निरंतर बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

इसी प्रकार राज कपूर की एक अन्य फिल्म अनाड़ी में प्रेम, उच्च मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों की स्थापना देखने को मिलती है। 'इस फिल्म में

शहरों में घातक जहरीली दवाइयों के भयावह परिणाम दिखाए गए थे।'[8] फिल्म की कहानी एक अमीर लड़की और गरीब लड़के के इर्द-गिर्द घूमती है। फिल्म का नायक राजू एक शिक्षित और बेरोजगार युवक है जो संयोगवश सेठ रामनाथ से मिलता है और उनका गिरा हुआ बटुआ लौटा कर आता है। राजू के निश्चल, ईमानदार चरित्र से प्रभावित हो सेठ जी उसे अपनी फर्म में नौकरी दे देते हैं और कहानी आगे बढ़ती है। फिल्म में अमीरी गरीबी की खाई को तो चित्रित किया ही गया है किंतु साथ ही जहाँ एक ओर यह फिल्म समाज में गहरी जड़ें जमा चुके झूठ, बेइमानी, लालच, मुनाफाखोरी जैसे समाज के कितने ही नकारात्मक पक्षों को रूपहले पर्दे पर उतार दर्शकों की अंतरआत्मा को झकझोरने का प्रयास करती है वहीं यह फिल्म धर्म के नाम पर समाज को बाँटने की चेष्ठा करने वाली ताकतों पर भी कुठाराघात करती है। फिल्म में चित्रित मिसेस डीसा और राजू का माता व पुत्र सरीखा प्रेम दर्शकों को यह सोचने पर विवश कर देता है कि प्रेम से बढ़कर कोई धर्म नहीं और मानवता से बढ़कर कोई रिश्ता नहीं। मिसेज डीसा केवल और केवल सहज प्रेम की अभिव्यक्ति देती है, उनके प्रेम में कहीं कोई छल कपट नहीं, कोई दुराव नहीं। मिसेज डीसा के रूप में सहज मातृ प्रेम की उत्तम अभिव्यक्ति फिल्म में एक पृथक सामाजिक चेतना एवं आदर्श प्रस्तुत करती है जो जाति धर्म के भेद को भुलाकर केवल मानवीय प्रेम की स्थापना पर बल देते हुए एक उत्कृष्ट नैतिक संदेश देती है। राजू भी उन्हें अपनी माँ जैसा ही सम्मान और प्रेम देता है, उनकी भावनाओं को समझता है। 'माँ! माँ! मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा' की दृढ़ता के साथ समाज की संकीर्ण मानसिकता एवं विसंगतियों पर व्यंग भी करता है। '....माँ एक हिंदू लड़के की क्रिश्चियन माँ! हो ही कैसे सकता है' यह संवाद नकारात्मक अलगाववादी सोच पर करारा प्रहार है। फिल्म में मिसेज डीसा और राजू के प्रेम के माध्यम से मां-बेटे का शुद्ध, स्वार्थहीन, प्रेम दर्शाया गया है।

समाज में व्याप्त उन अन्य विषम परिस्थितियों, विसंगतियों पर भी फिल्म में फोकस किया गया है, जो आज भी हमारे समाज में व्याप्त है। शिक्षित बेकारी के समय का संघर्ष फिल्म के नायक राजू के चरित्र में प्रत्यक्ष उभर कर प्रकट हुआ है किंतु, राजू ने प्रत्येक स्थान पर उच्च जीवन मूल्यों को पकड़े रखा है। अपनी ईमानदारी, स्पष्टवादिता व भोलेपन के कारण राजू होटल की नौकरी खो देता है। सभी ग्राहकों को सचेत करता है कि 'दाल मत खाना! दाल मत खाना! दाल में कॉकरोच है'। जब राजू दाल फेंकने को कहता है तो मालिक कहता है 'मैं बताता हूँ, किसे फेंकना है! देखते क्या हो! इसे बाहर फेंको।' और परिणाम क्या होगा यह स्पष्ट है। मिलावट, झूठ, गंदगी का यह कारोबार आज भी चलता है। इस प्रकार की समस्याएँ हमारे होटलों, ढाबों आदि के संदर्भ में आज भी प्रासंगिक है। दूषित एवं बासी भोजन की आपूर्ति वर्तमान में भी एक सामाजिक समस्या बनी हुई है।

धन का बल और धन के प्रति समाज के समर्पण का फिल्म में बहुत ही सफल फिल्मांकन किया गया है। जब राजू सेठ रामनाथ के बटुए को लौटाने के लिए होटल में जाता है तो फटेहाल राजू को देखकर दरबान उसे भीतर नहीं जाने देता किंतु, जैसे ही बटुए के नोटों पर निगाह पड़ती है वह उसे तुरंत भीतर भेज देता है। अंदर भी एक कर्मचारी उसे दुत्कारता है पर दूसरे ही पल पैसे पर नजर पड़ते ही उसे ससम्मान बैठने के लिए कहता है। धन के प्रति ऐसी मानसिकता, मान्यताएं एवं मानसिक समर्पण वर्तमान में भी खरा उतरता है। सर्वत्र व्यक्ति के बाहरी आवरण, वेशभूषा और भौतिक सामाजिक अवस्था के आधार पर ही उसके सम्मान के मानदंड तय होते हैं। मूल्यों, चरित्र, आदर्श की उपेक्षा आज भी हमारे समाज में एक सामान्य सी बात है।

होटल के भीतर एक दृश्य में जब सेठ रामनाथ उसे अमीरों की रंगीन दुनिया के बारे में बताते हुए कहते हैं, 'देखते हो यह रंगीन दुनिया,... हीरे जवाहरातों

से लदी हुई औरतें! भड़कीले कहकहे लगाने वाले यह मर्द! यह वह लोग हैं जिन्हें सड़कों पर बटुए मिले और उन्होंने लौटाए नहीं।' यह अकेला सीन फिल्म की आत्मा है। जिसमें समाज का यथार्थवादी चित्रण और व्यंग्य दोनों ही समाहित है। इस बेहतरीन दृश्य और उत्कृष्ट संवाद में पूरी फिल्म का सार समाहित है। फिल्म में पूँजी के पीछे का सत्य स्वयं पूँजीवादी सेठ के मुँह से ही कहलाया है। फिल्म में अमीर गरीब की खाई का वास्तविक एवं यथार्थ चित्रण किया गया है

अपने कार्य के प्रति समर्पित राजू के, मलिक को सलाम न करने की लापरवाही होने पर कार्यालय के एक कर्मचारी का यह संवाद, 'एक क्लर्क की जिंदगी में काम से ज्यादा सलाम की जरूरत है। आओ तो सलाम करो! जाओ तो सलाम करो!', चापलूसी और खुशामद के बल पर समाज में अपनी जगह बनाने और टिके रहने की चली आ रही मानसिकता पर गहरा कटाक्ष तो है ही, समाज की वास्तविकता का सटीक प्रस्तुतीकरण भी है।

हमारे समाज में व्याप्त अमीरी गरीबी की खाई का सटीक प्रस्तुतीकरण एवं मनोरंजन चित्रांकन इस फिल्म की विशेषता है और यही कहानी की मुख्य थीम भी है। सेठ रामनाथ पूंजीपतियों, उद्योगपतियों व धनी व्यवसायी वर्ग के प्रतिनिधि है जो स्वयं गरीबी से उठे हैं परंतु अब गरीबी से घृणा करते हैं। 'गरीब क्लर्क में कोई बुराई नहीं, बुराई गरीबी में है। ये बेरहम चक्की इंसान और इंसानियत दोनों को पीसकर रख देती है।' इस संवाद के द्वारा लेखक और निर्देशक ने गरीबी के साथ उसकी मजबूरी का भी सटीक चित्रण किया है जिसके कारण कभी-कभी सही व्यक्ति भी अनुचित दिशा की ओर बढ़ चलता है। 'इसी गरीबी ने तुम्हारे माता-पिता को मुझसे छीना था। आज वह वक्त मैं लाखों रुपए खर्च करके भी नहीं खरीद सकता।' यह संवाद इस तथ्य का सटीक उदाहरण है। निर्धनता से उत्पन्न विषम परिस्थितियां, दुख, क्षोभ, निराशा, व्यक्ति में आक्रोश भर देती है और वह संयम खोकर किसी भी तरीके से धन प्राप्ति में लग जाता है। इस फिल्म का उद्देश्य, फिल्म में अमीरों गरीबों की लड़ाई के माध्यम से समाज के एक ऐसे लालची और लंपट वर्ग को परिभाषित करना भी है जो, मानव मात्र के प्रति मानसिक, सामाजिक अपराध करते हुए सर्वथा अपना लाभ और मुनाफे की बात ही सोचता है। इसके लिए वह रोग फैलने की दुआ तक माँग सकते हैं ताकि उनका कारोबार बढ़े और वह मालामाल हो सके। अपने लाभ के लिए तत्पर ऐसे लोगों की उपस्थिति से आज भी समाज इनकार नहीं कर सकता। इसी प्रकार के एक वर्ग को लक्ष्य करता है यह संवाद- 'और मालिक लोग कहते हैं कि अगर भगवान की दया रही तो, फ्लू बहुत फैलेगा।' ऐसे लोग कुत्सित मानसिकता का स्पष्ट प्रस्तुतीकरण है। सेठ रामनाथ का व्यवसायिक साझेदार वैष्णव, इसी वर्ग का प्रतिनिधि है। जब गलती से ही सही, जहर की एक पेटी दवा की पेटियों मिल जाती है तो अपना व्यापार बढ़ाने की खातिर वह लालची लोग दवा वापस लेने से इनकार कर देते हैं। 'इसके बाद इस दवा को खरीदेगी कौन आप मुझे बर्बाद कर देना चाहते हैं!' और अपनी पोजीशन बचाने के लिए वह अपने ईमानदार कर्मचारी को भी अपने रुतबे व धन के बल पर चुप करा देते हैं, 'मुझे तो इस बात की फिक्र है कि आपका क्या होगा..... इसके जिम्मेदार आप हैं!' यहां सीधे-सीधे धमकी देकर ईमानदार कर्मचारी को शांत कर दिया जाता है। राजू को अपने रास्ते से हटाने के लिए वैष्णव कहता है, 'हो सकता है परसों आप अखबार खोले तो पढ़े कि, पुलिस ने राजकुमार को गिरफ्तार कर लिया या वह लारी के नीचे आ गया'। इस प्रकार के दृश्य सामाजिक षड्यंत्र एवं मुनाफाखोरी की ऐसी तस्वीर पेश करते हैं जो लोगों की जान लेने से भी नहीं हिचकिचाते।

फिल्म में इस तथ्य को भी यथार्थपूर्ण ढंग दर्शाया गया है कि धन और रुतबे का दबाव न्याय व्यवस्था पर स्पष्ट रूप से पड़ता है। 'जिनके हाथ खून से रंगे हुए हैं लेकिन, कानून उन पर हाथ नहीं डाल सकता',

यह हमारे समाज की न्यायिक व्यवस्था का वह सजीव चित्रण है आज भी जिसकी प्रासंगिकता से इनकार नहीं किया जा सकता।

सत्यता, ईमानदारी को इस समाज में वास्तविक सम्मान एवं सफलता नहीं मिलती। इस आक्रोश को राजू ने बहुत ही खूबसूरती से उकेरा है- 'इस दुनिया में जीने का अधिकार उनको है जिन्हें' सड़कों पर बटुए मिले और उन्होंने वापस नहीं किए। यह दुनिया दिल वालों की नहीं दिमाग वालों की है। यह भूख और जंग की दुनिया है जहाँ आदमी जितना नीचे गिरता है उतना ही समाज उसे ऊँचा स्थान देता है। यह गिद्ध और भेड़ियों की दुनिया जहाँ जिंदगी भीख माँगती है और मौत के सौदागर राज करते हैं।' फिल्म का यह दृश्य अपने संवादों में फिल्म की पूरी दर्शनिकता को समाहित किए हुए हैं जिसके द्वारा समाज की वास्तविकता और मानसिकता पर बहुत ही गहरी चोट करने वाला व्यंग प्रस्तुत होता है। यह दृश्य फिल्म के अत्यंत उत्कृष्ट एवं सुदृढ़ दृश्य में से एक है और 'किस-किस अदालत से बचोगे कौन-कौन से फैसलों से भागोगे', कहकर राजू समाज की आत्मा को भीतर तक झिंझोड़ देता है एवं दर्शकों को, समाज को सोचने पर मजबूर कर उनकी अंतरात्मा को जगाता है। फिर, अंततः सेठ रामनाथ की स्वीकारोक्ति कि 'जहर! जो मेरी ही कंपनी में बनाया गया था।' के द्वारा सत्य स्थापित हो ही जाता है और राजू निर्दोष साबित होता है। समाज में जीवन के नैतिक मूल्य और आदर्शों की स्थापना हो जाती है।

इस प्रकार 'अनाड़ी' राज कपूर की एक अत्यंत मनोरंजक फिल्म तो है ही किंतु इसकी कहानी नैतिक शिक्षाप्रद भी है जिसमें समाज के लिए अनेकों निर्देश दिए गए हैं। फिल्म में प्रदर्शित तत्कालीन सामाजिक सरोकार आज भी उतने ही प्रासंगिक है।

इसी क्रम में राज कपूर की वर्ष 1954 में बनी फिल्म बूट पॉलिश बाल मजदूरी, बाल दुर्व्यवहार, बच्चों से भीख मँगवाने की गंभीर समस्या को केंद्र में रखकर बनी एक ऐसी यथार्थवादी फिल्म है जो समाज में मौजूद घृणास्पद और निकृष्ट अपराधियों का और गरीबी के कारण भिक्षावृत्ति की ओर धकेले जाने वाले, मासूम, मजबूर बच्चों की व्यथा का बहुत ही मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करती है। नगरों और महानगरों में बालकों की उपेक्षा, बाल श्रम एवं उन्हें भिक्षावृत्ति की ओर धकेले जाने का अपराध एक संगठित रोजगार में बदल चुका है। फिल्म में इसी समस्या को उठाकर उसके समाधान पर भी फोकस किया गया है। यह समस्या आज भी हमारे समाज में प्रासंगिक है जो एक नासूर बन चुकी है। 2007 में मधुर भंडारकर द्वारा निर्देशित फिल्म 'ट्रैफिक सिग्नल' भी इसी सत्य को उद्घाटित करती है। ट्रैफिक सिग्नलों पर भीख मँगवाने का धंधा किस प्रकार एक संगठित गिरोहों द्वारा व्यवसाय में परिवर्तित किया जाता है इसी का फिल्मांकन पूरी फिल्म का केंद्रीय भाव है। वर्तमान दौर में भी अपराधी गिरोहों द्वारा बच्चों से भीख मँगवाने के आँकड़े चौंकाने वाले हैं। निराश्रित बच्चों की समस्याएं, उनके अस्तित्व को बचाए रखने का संघर्ष एवं संगठित भिक्षावृत्ति के विरुद्ध लड़ाई का यथार्थपरक फिल्मांकन ही इस फिल्म का मूल उद्देश्य है और इस दृष्टि से यह एक सफल फिल्म है जिसमें इन समस्याओं का सहज चित्रण किया गया है। फिल्म में मानवीय पीड़ा और मानवीय हास समानांतर चलता है।

निष्कर्ष :

एक बहुत ही प्रसिद्ध उक्ति है कि साहित्य समाज का दर्पण है किंतु सिनेमा के इस आधुनिक युग में यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि फिल्में भी समाज का ही दर्पण हैं। बल्कि उससे एक कदम आगे बढ़कर ये केवल समाज में व्याप्त विभिन्न मुद्दों व समस्याओं को परिलक्षित ही नहीं करतीं अपितु उन मुद्दों के प्रति जागरूकता तो फैलाती ही है साथ ही समाज को उस बुराई से उभरने का एक तर्कपूर्ण समाधान भी प्रस्तुत करती है और इस प्रकार असंवेदनशील समाज को उन मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाने का बीड़ा भी उठाती है जिन मुद्दों पर अन्यथा शायद समाज का ध्यान ही नहीं जाता। राज कपूर द्वारा

अभिनीत व निर्मित-निर्देशित फिल्में इन मापदंडों पर खरी उतरती हैं। यह कहना गलत न होगा कि फिल्में हमारे वक्त का एक दस्तावेज है, हमारे समय की तस्वीर है और सिनेमा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से समाज को प्रभावित करती है। राज कपूर साहब की फिल्मों के संबंध में तो यह पूर्णतः सत्य है। राज कपूर एक कल्पनाशील कुशल अभिनेता, मेधावी एवं दूरदर्शी व्यक्ति थे जिन्हें समाज का यथार्थवादी चित्रण करने में न केवल महारत हासिल थी बल्कि उक्त समस्याओं का कानून सम्मत समाधान प्रदान करना भी उनकी फिल्मों की एक विशेषता रही है।

20 वीं शताब्दी की शुरुआत के बाद से, फिल्म उद्योग ने अपनी फिल्मों के माध्यम से विभिन्न सामाजिक मुद्दों को न केवल दर्शाया है अपितु उन्हें चुनौती भी दी है। राज कपूर साहब की फिल्में इस फेहरिस्त में अग्रणी रही हैं जिसमें दर्शकों को मौजूदा सामाजिक मुद्दों पर विचार करने की प्रेरणा मिलती है। राज कपूर की फिल्में मनोरंजन से कहीं अधिक समसामयिक मुद्दों में निहित सामाजिक कुरीतियों को उठाती हैं और समाज को उन कुरीतियों के प्रति संवेदनशील बनाती हैं। उनकी फिल्में हमें भारतीय समाज और संस्कृति को देखने का एक अनूठा दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। यह कहना गलत न होगा कि राज कपूर द्वारा अभिनीत व निर्मित-निर्देशित फिल्में महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक दस्तावेज हैं जो हमारी अतीत और वर्तमान दोनों धारणाओं को प्रभावित करती हैं। अन्य शब्दों में कहें तो उनकी फिल्में हमारा मनोरंजन भी करती हैं और हमें सामाजिक मुद्दों से निपटने हेतु शिक्षित भी करती हैं।

संदर्भ सूची :

1. भट्ट, दीप, उपेक्षित किरदार को नेपथ्य से पर्दे पर खींच लाये शोमैन, दैनिक ट्रिब्यून, https://www.dainiktribuneonline.com/news/lifestyle/the-showman-brought-the-neglected-character-from-the-background-to-the-screen/
2. राज कपूर का कालातीत जादू, शाह टाइम्स, https://www.shahtimesnews.com/breaking/raj-kapoors-timeless-magic-a-century-later-the-show-goes-on-143093
3. ड्वायर, रेचेल, द ट्रैम्प एंड द ट्रिक्स्टरः रोमांस एंड द फैमिली इन द अर्ली फिल्म्स ऑफ राज कपूर, द साउथ एशियानिस्ट (ISSN 2050-487X) वॉल्यूम 02, अंक 03, पृष्ठ 9-32
4. अस्मत, ईरम, फ्राम बॉलीवुड टू टॉलीवुडः द हिस्ट्री एंड ग्रोथ ऑफ द इंडियन फिल्म इन्डसट्री, फ्रंटलाइन्स सोशल साइन्सेस एंड हिस्ट्री जर्नल (आईएसएसएन-2752-7018) वॉल्यूम 04, अंक 08, पृष्ठ 14-24
5. राज कपूर की सबसे यादगार फिल्में, इंडिया टुडे, https://www.indiatoday.in/entertainment/photo/most-memorable-films-of-raj-kapoor-366841-2011-12-14/7
6. हिन्दी फिल्मों में राष्ट्रवाद का विकास, पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार, https://pibindia.wordpress.com
7. ड्वायर, रेचेल, द ट्रैम्प एंड द ट्रिक्स्टरः रोमांस एंड द फैमिली इन द अर्ली फिल्म्स ऑफ राज कपूर, द साउथ एशियानिस्ट (ISSN 2050-487X) वॉल्यूम 02, अंक 03, पृष्ठ 9-32
8. हिन्दी फिल्मों में राष्ट्रवाद का विकास, पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार, https://pibindia.wordpress.com

संदर्भित फिल्में :

1. श्री 420
2. अनाड़ी
3. बूट पॉलिश

राज कपूर की वैश्विक लोकप्रियता

डॉ. नवीन कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
ए. एन. कॉलेज पटना

सारांश :

राज कपूर भारतीय सिनेमा के ऐसे अग्रणी कलाकार और फिल्म निर्माता थे, जिन्होंने अपनी फिल्मों के माध्यम से भारतीय समाज, संस्कृति और मानवीय मूल्यों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई। उनकी फिल्मों जैसे 'आवारा', 'श्री 420' और 'मेरा नाम जोकर' ने न केवल भारत में बल्कि सोवियत संघ, चीन, मध्य एशिया और अफ्रीका जैसे देशों में भी अपार लोकप्रियता हासिल की।उनकी फिल्मों में समाजवाद, मानवता और समानता जैसे विचारों को प्रमुखता से स्थान मिला, जो अंतरराष्ट्रीय दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहे। उनके गीतों, विशेष रूप से 'आवारा हूँ' और 'मेरा जूता है जापानी' ने सांस्कृतिक सीमाओं को पार कर लोगों के दिलों में जगह बनाई।राज कपूर की वैश्विक लोकप्रियता उनके मानवीय दृष्टिकोण, अद्वितीय अभिनय और उत्कृष्ट फिल्म निर्माण का प्रमाण है। उन्होंने भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी कला और विरासत आज भी भारतीय और अंतरराष्ट्रीय सिनेमा में प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

बीज शब्द :

राज कपूर, वैश्विक लोकप्रियता, भारतीय सिनेमा, सोवियत संघ, समाजवाद, मानवतावादी दृष्टिकोण, गीत-संगीत, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, भारतीय संस्कृति, मानवीय मूल्य, विरासत।

परिचय :

राज कपूर भारतीय सिनेमा के उन युगांतरकारी व्यक्तित्वों में से एक थे, जिन्होंने अपने बहुआयामी योगदान से सिनेमा को मनोरंजन से आगे ले जाकर एक सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन का माध्यम बना दिया। 14 दिसंबर 1924 को पेशावर (अब पाकिस्तान में) में जन्मे रणबीर राज कपूर, फिल्म निर्माण की परंपरा वाले कपूर परिवार की दूसरी पीढ़ी के प्रतिनिधि थे। उनके पिता पृथ्वीराज कपूर भारतीय रंगमंच और सिनेमा के अग्रणी व्यक्तित्व थे, जिनसे राज कपूर को अभिनय और फिल्म निर्माण की प्रेरणा मिली।

1947 में फिल्म 'नीलकमल' के माध्यम से राज कपूर ने बतौर अभिनेता अपने करियर की शुरुआत की। इसके बाद, उन्होंने मात्र 24 वर्ष की आयु में अपनी प्रोडक्शन कंपनी आर. के. फिल्म्स की स्थापना की और 1948 में अपनी पहली फिल्म 'आग' का निर्देशन किया। यह उनकी महत्वाकांक्षी यात्रा की शुरुआत थी, जिसमें वे सिनेमा को कला, संस्कृति, और समाज के बीच एक सेतु के रूप में प्रस्तुत करने

के लिए प्रतिबद्ध रहे।उनकी फिल्मों ने सामाजिक और भावनात्मक मुद्दों को बड़े प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया। गरीबी, संघर्ष, प्रेम और समानता जैसे विषय उनकी फिल्मों के केंद्रीय तत्व रहे। राज कपूर न केवल एक उत्कृष्ट अभिनेता थे, बल्कि एक दूरदर्शी निर्देशक और निर्माता भी थे, जिन्होंने भारतीय सिनेमा को वैश्विक पहचान दिलाई।राज कपूर की पहचान उनके बहुचर्चित किरदारों और उनकी फिल्मों की अद्वितीय कहानी कहने की शैली में निहित थी। उनका 'आम आदमी' का किरदार दर्शकों के दिलों को छूता था। उनके निर्देशन और अभिनय में चार्ली चैपलिन से प्रेरणा साफ झलकती थी, लेकिन उन्होंने इसे भारतीय संदर्भ में ढालकर नया आयाम दिया।

राज कपूर की फिल्मों का जादू सिर्फ भारत तक सीमित नहीं रहा। उनकी फिल्में सोवियत संघ, चीन, मध्य एशिया और अफ्रीका जैसे देशों में बेहद लोकप्रिय हुईं। 'आवारा' और 'श्री 420' जैसी फिल्मों ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शोहरत दिलाई। उनकी फिल्मों के गीत, विशेष रूप से 'आवारा हूँ' और 'मेरा जूता है जापानी' उन देशों में भी लोकप्रिय हो गए जहां लोगों को हिंदी भाषा की जानकारी नहीं थी।उनकी सोच और कला में एक गहरा समाजवादी दृष्टिकोण था। उनकी फिल्मों ने समानता, न्याय और मानवता जैसे मूल्यों को उजागर किया, जो विशेष रूप से सोवियत संघ के समाजवादी विचारों से मेल खाते थे। यही कारण था कि सोवियत संघ में राज कपूर को एक सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में देखा गया।

राज कपूर की लोकप्रियता केवल फिल्मों तक सीमित नहीं थी। उनकी जीवन शैली, सादगी, और मानवीय दृष्टिकोण ने उन्हें एक 'सर्वजन प्रिय' व्यक्तित्व बनाया। उन्होंने भारतीय सिनेमा को नई तकनीकों, संगीत की नवीनता, और वैश्विक मान्यता के साथ समृद्ध किया।उनका योगदान आज भी भारतीय सिनेमा की विरासत का अभिन्न हिस्सा है। 2 जून 1988 को उनका निधन हो गया, लेकिन उनकी कला और उनकी विचारधारा ने उन्हें अमर बना दिया। राज कपूर भारतीय सिनेमा के इतिहास के उस स्वर्णिम अध्याय का नाम है, जिसने न केवल भारतीय दर्शकों को बल्कि पूरी दुनिया को भारतीय सिनेमा की शक्ति और संवेदनशीलता से परिचित कराया।

राज कपूर का फिल्मी सफर : एक वैश्विक दृष्टिकोण :

राज कपूर का फिल्मी सफर 1940 के दशक में शुरू हुआ, जब उन्होंने अभिनेता के रूप में अपनी पहचान बनानी शुरू की। उन्होंने अभिनय के साथ-साथ निर्देशन और निर्माण में भी अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन किया। उनके करियर में मील का पत्थर साबित हुई 1951 में प्रदर्शित फिल्म 'आवारा', जिसने उन्हें न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रसिद्धि दिलाई।

'आवारा' भारतीय सिनेमा की उन पहली फिल्मों में से एक थी, जिसने भारत के बाहर लोकप्रियता हासिल की। इस फिल्म में राज कपूर ने एक आम आदमी के संघर्ष और समाज की असमानताओं को बड़े प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया। फिल्म का गीत 'आवारा हूँ' सोवियत संघ, चीन, तुर्की और मध्य एशिया के देशों में इतना लोकप्रिय हुआ कि यह वहां के स्थानीय जीवन का हिस्सा बन गया।

राज कपूर की फिल्मों का वैश्विक प्रभाव उनके मानवीय दृष्टिकोण और सरल लेकिन गहराई भरी कहानियों में निहित था। उनका 'आम आदमी' का किरदार दुनिया के हर कोने में संघर्षरत लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया। उनकी फिल्मों ने समाज के निचले तबके के लोगों की उम्मीदों, सपनों और संघर्षों को बड़े प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया।

1955 में आई उनकी फिल्म 'श्री 420' ने इस वैश्विक पहचान को और मजबूत किया। फिल्म का गीत 'मेरा जूता है जापानी' भारतीय जीवन शैली और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बन गया, जिसे अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों ने बेहद पसंद किया।

सोवियत संघ में राज कपूर का प्रभाव :

सोवियत संघ में राज कपूर को 'भारत का चार्ली चैपलिन' कहा गया। उनकी फिल्मों को वहां बड़े पैमाने पर सराहा गया और उन्होंने सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राज कपूर की फिल्मों में समाजवाद और समानता जैसे विषय, सोवियत समाजवादी विचारधारा के अनुरूप थे, जिससे वहां के दर्शकों को उनके साथ गहरा जुड़ाव महसूस हुआ।

अन्य देशों में लोकप्रियता : राज कपूर की लोकप्रियता सिर्फ सोवियत संघ तक सीमित नहीं थी। चीन, तुर्की, मिस्र, और अफ्रीकी देशों में भी उनकी फिल्में देखी और सराही गईं। उनकी फिल्मों ने यह साबित किया कि कला और सिनेमा की भाषा सीमाओं से परे होती है।

वैश्विक मंच पर भारतीय सिनेमा की पहचान: राज कपूर ने भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का काम किया। उनकी फिल्मों को कांस और अन्य अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में प्रदर्शित किया गया, जहां उन्हें प्रशंसा और पुरस्कार मिले।

राज कपूर का फिल्मी सफर केवल एक अभिनेता, निर्माता, और निर्देशक तक सीमित नहीं था; यह भारतीय सिनेमा को विश्व स्तर पर ले जाने की यात्रा थी। उनकी दृष्टि, उनकी कला, और उनकी कहानियों ने यह साबित किया कि सिनेमा की शक्ति सीमाओं को मिटाने और दिलों को जोड़ने में सक्षम है।

राज कपूर की लोकप्रियता के कारण : राज कपूर की वैश्विक लोकप्रियता उनके व्यक्तित्व, उनकी कला, और उनकी फिल्मों की विषय-वस्तु का परिणाम थी। उनकी फिल्मों ने मानवीय मूल्यों और सामाजिक मुद्दों को सरल लेकिन गहराई भरे तरीके से प्रस्तुत किया, जिससे वे न केवल भारतीय दर्शकों के बल्कि अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के दिलों को भी छू गए।

1. **मानवीय दृष्टिकोण :** राज कपूर की फिल्मों में मानवीय भावनाओं, संघर्षों और मूल्यों को प्रमुखता से दर्शाया गया। उन्होंने आम आदमी के जीवन के संघर्ष, प्रेम और समाज की असमानताओं को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया। 'आवारा' में पिता-पुत्र के रिश्तों की जटिलता और सामाजिक असमानता को दिखाया गया। 'श्री 420' में ईमानदारी और भ्रष्टाचार के बीच एक व्यक्ति की दुविधा को उभारा गया।इन विषयों ने दर्शकों को उनके साथ भावनात्मक रूप से जोड़ दिया।
2. **गीत-संगीत का प्रभाव :** राज कपूर की फिल्मों के गीतों ने उनकी लोकप्रियता को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाया। 'आवारा हूँ' और 'मेरा जूता है जापानी' जैसे गीत सोवियत संघ, चीन और अन्य देशों में बेहद लोकप्रिय हुए। उनके फिल्मों का संगीत न केवल मनोरंजन का साधन था, बल्कि यह उनकी कहानियों का अभिन्न हिस्सा भी था। शंकर-जयकिशन, मन्ना डे, लता मंगेशकर और मुकेश जैसे कलाकारों ने उनके संगीत को अमर बना दिया।
3. **समाजवादी विचारधारा :** राज कपूर की फिल्मों में समाजवाद और समानता के विचारों की झलक मिलती थी। उनकी कहानियां गरीब और मध्यम वर्ग के संघर्षों पर आधारित होती थीं, जो सोवियत संघ जैसे देशों के दर्शकों को बेहद प्रभावित करती थीं।उनके किरदार हमेशा न्याय और सच्चाई के पक्ष में खड़े होते थे।उनकी फिल्मों ने समाज के सभी वर्गों को जोड़ने का काम किया।
4. **चार्ली चैपलिन से प्रेरित 'आम आदमी' का किरदार :** राज कपूर ने चार्ली चैपलिन से प्रेरणा लेकर अपनी फिल्मों में 'आम आदमी' का किरदार निभाया। यह किरदार हास्य, भावनाओं, और संघर्ष का प्रतीक था।यह किरदार उन लोगों के लिए आशा और प्रेरणा का स्रोत

बना, जो सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहे थे।

5. **अंतरराष्ट्रीय संबंधों की मजबूती :** राज कपूर की फिल्मों ने भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। विशेषकर सोवियत संघ और चीन में उनकी फिल्मों ने भारतीय और विदेशी संस्कृतियों के बीच एक सेतु का काम किया।उनकी फिल्मों ने भारतीय सिनेमा की सार्वभौमिक अपील को प्रदर्शित किया।उनका संगीत और अभिनय भाषाई और सांस्कृतिक बाधाओं को पार कर हर दिल तक पहुंचा।

6. **अद्वितीय निर्देशन और कहानी कहने की शैली :** राज कपूर की निर्देशन शैली और कहानी कहने का तरीका दर्शकों के दिलों में छाप छोड़ता था।उनकी फिल्मों में रंगीन दृश्य, उत्कृष्ट कैमरा वर्क, और सशक्त संवाद होते थे।उन्होंने सामाजिक संदेशों को सरल और मनोरंजक रूप में प्रस्तुत किया।

7. **भारतीय संस्कृति और परंपराओं का प्रतिनिधित्व :** राज कपूर की फिल्मों ने भारतीय संस्कृति और परंपराओं को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया। उनके फिल्मों में भारतीय जीवन शैली, मूल्यों, और रिश्तों की झलक देखने को मिलती थी।

8. **व्यक्तिगत करिश्मा और सादगी :** राज कपूर की विनम्रता और व्यक्तिगत करिश्मा ने उन्हें एक ऐसा व्यक्तित्व बना दिया, जिसे हर कोई पसंद करता था। उनकी सादगी और जमीन से जुड़े व्यवहार ने उन्हें दर्शकों का चहेता बना दिया।

राज कपूर की लोकप्रियता उनके मानवीय दृष्टिकोण, उत्कृष्ट अभिनय और अनूठी कहानी कहने की शैली का परिणाम थी। उन्होंने सिनेमा को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने और प्रेरित करने का उपकरण बना दिया। उनकी विरासत आज भी भारतीय और अंतरराष्ट्रीय सिनेमा में एक प्रेरणा स्रोत बनी हुई है।

सोवियत संघ और राज कपूर :

राज कपूर का संबंध सोवियत संघ से भारतीय सिनेमा के सबसे महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक संबंधों में से एक था। उनका भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाने में सोवियत संघ का बहुत बड़ा योगदान था। सोवियत संघ में उनकी फिल्मों ने न केवल एक अभिनेता के रूप में, बल्कि भारतीय संस्कृति और समाज के प्रतीक के रूप में भी उन्हें एक अनूठी पहचान दी।

1. **'आवारा' का प्रभाव :** राज कपूर की 1951 में आई फिल्म 'आवारा' ने सोवियत संघ में जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की। यह फिल्म न केवल भारत में सफल रही, बल्कि सोवियत संघ में भी अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। 'आवारा' में राज कपूर का 'आवारा हूँ' गीत विशेष रूप से लोकप्रिय हुआ। इस गीत ने एक तरह से भारतीय सिनेमा के प्रतीक के रूप में राज कपूर को स्थापित किया।

   सोवियत संघ में इस फिल्म को सिर्फ एक मनोरंजन के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि इसे एक सामाजिक और भावनात्मक संदेश देने वाली फिल्म के रूप में स्वीकारा गया। सोवियत संघ के दर्शकों ने फिल्म के द्वारा प्रस्तुत 'आम आदमी' के संघर्ष को अपनी ज़िंदगी से जुड़ा महसूस किया, जो भारतीय और सोवियत समाज के बीच समानता का प्रतीक था।

2. **समाजवादी विचारधारा और सिनेमा :** राज कपूर की फिल्मों में समाजवाद और समानता जैसे विषय महत्वपूर्ण रहे हैं। सोवियत संघ में इन विचारों को विशेष रूप से सराहा गया, क्योंकि यह समाज के सभी वर्गों को जोड़ने की

कोशिश करती थीं। सोवियत समाज में भी वर्ग विभाजन और आर्थिक संघर्षों की कहानी एक आम विषय था, और राज कपूर की फिल्में इन मुद्दों को बड़े प्रभावशाली तरीके से दर्शाती थीं।

फिल्म 'श्री 420' ने भी सोवियत संघ में अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त की, क्योंकि इसमें दिखाया गया था कि एक व्यक्ति अपने सिद्धांतों और नैतिकता को बनाए रखते हुए भ्रष्टाचार से लड़ता है।राज कपूर के द्वारा पेश किए गए किरदार, जो संघर्ष कर रहे थे लेकिन अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करते थे, सोवियत दर्शकों के लिए बहुत प्रेरणादायक थे।

3. **'राज कपूर' का चार्ली चैपलिन जैसा प्रभाव:** राज कपूर की फिल्म शैली और अभिनय में चार्ली चैपलिन का प्रभाव साफ दिखाई देता था, लेकिन उन्होंने इसे भारतीय संदर्भ में ढाला। सोवियत संघ में चार्ली चैपलिन की फिल्मों का व्यापक प्रभाव था, और राज कपूर को वहां 'भारतीय चार्ली चैपलिन' के रूप में जाना जाने लगा।

   उनका 'आवारा' और 'श्री 420' में 'आम आदमी' का किरदार सोवियत दर्शकों के दिलों को छू गया। यह एक ऐसा किरदार था जो अपनी परिस्थितियों से जूझते हुए भी अपने नैतिक और मानवीय मूल्यों को बनाए रखता था। राज कपूर की फिल्मों में हास्य और संवेदनाओं का मेल था, जो उन्हें सोवियत संघ के दर्शकों के बीच एक प्रिय अभिनेता बना देता था।

4. **सोवियत संघ में राज कपूर की लोकप्रियता:** राज कपूर की फिल्मों को सोवियत संघ में सिर्फ एक फिल्म के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और सिनेमा का एक अहम हिस्सा बन गईं। 'आवारा', 'श्री 420' और 'मेरा नाम जोकर' जैसी फिल्मों ने सोवियत संघ में भारतीय सिनेमा की पहचान को मजबूत किया।इन फिल्मों को सोवियत फिल्म महोत्सवों में प्रदर्शित किया गया और राज कपूर को सम्मानित भी किया गया। उनके फिल्म निर्माण और अभिनय को सोवियत फिल्म आलोचकों द्वारा उच्च मान्यता प्राप्त हुई।

5. **सांस्कृतिक आदान-प्रदान और राज कपूर:** राज कपूर की फिल्मों ने भारतीय सिनेमा को सोवियत संघ और अन्य पूर्वी यूरोपीय देशों में लोकप्रिय बनाया, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला।उनके काम ने भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर एक नया आयाम दिया। सोवियत संघ के फिल्म निर्माता और अभिनेता भी राज कपूर की फिल्मों से प्रभावित हुए और उनकी फिल्मों का अध्ययन किया। सोवियत संघ में भारतीय सिनेमा को लेकर एक गहरी रुचि पैदा हुई और राज कपूर ने इस रुचि को और भी प्रोत्साहित किया।

राज कपूर का सोवियत संघ के साथ संबंध भारतीय सिनेमा के वैश्विक विस्तार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। उनकी फिल्में केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि एक माध्यम बन गईं जो भारतीय और सोवियत समाजों के बीच विचारों और भावनाओं के आदान-प्रदान को बढ़ावा देती थीं। राज कपूर ने भारतीय सिनेमा को एक नया दृष्टिकोण दिया और उसे अंतरराष्ट्रीय मंच पर लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके योगदान को आज भी भारतीय और सोवियत सिनेमा में याद किया जाता है।

राज कपूर और भारतीय सिनेमा का वैश्वीकरण:

राज कपूर का भारतीय सिनेमा के वैश्वीकरण में अद्वितीय योगदान था। वे न केवल भारतीय सिनेमा के एक बड़े अभिनेता और निर्माता थे, बल्कि एक सांस्कृतिक दूत के रूप में भी सामने आए, जिन्होंने भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाने

में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी फिल्मों और व्यक्तित्व ने भारतीय सिनेमा को दुनियाभर में लोकप्रिय बनाया, खासकर उन देशों में जहां भारतीय सिनेमा का पहले तक कोई खास प्रभाव नहीं था।

1. **भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाना :** राज कपूर के योगदान से भारतीय सिनेमा ने अपनी पहचान वैश्विक स्तर पर स्थापित की। 1951 में आई उनकी फिल्म 'आवारा' ने सोवियत संघ और चीन जैसे देशों में जबरदस्त सफलता प्राप्त की। यह फिल्म भारतीय सिनेमा का पहला बड़ा कदम था, जिसने अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक अपनी पहुंच बनाई। 'आवारा' में राज कपूर द्वारा प्रस्तुत 'आम आदमी' का संघर्ष और मानवीय मूल्य, जो उन देशों के संघर्षरत लोगों के अनुभवों से मेल खाते थे, दर्शकों के दिलों को छू गए। उनकी फिल्में ने भारतीय जीवनशैली और संस्कृति को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया और भारतीय सिनेमा को एक सशक्त कला रूप के रूप में स्वीकार किया गया।

2. **सामाजिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदानः** राज कपूर की फिल्मों ने भारतीय और विदेशी संस्कृतियों के बीच एक सेतु का काम किया। उनका सिनेमा सोवियत संघ, मध्य एशिया, चीन, और यहां तक कि अफ्रीका जैसे देशों में भी अत्यधिक लोकप्रिय था।राज कपूर ने अपनी फिल्मों में भारतीय समाज के कई पहलुओं को दर्शाया- जैसे वर्ग संघर्ष, प्रेम, न्याय और समानता- जो विश्वभर के दर्शकों के लिए समझने योग्य थे।उनकी फिल्मों ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित किया और भारतीय संस्कृति को विदेशी दर्शकों के बीच लोकप्रिय किया।फिल्म 'मेरा नाम जोकर' और 'श्री 420' जैसी फिल्मों ने न केवल भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य को बल्कि सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को भी उजागर किया, जो किसी भी देश के दर्शकों के लिए समझने योग्य थे।

3. **भारतीय सिनेमा की तकनीकी और कलात्मक उन्नति :** राज कपूर ने भारतीय सिनेमा की तकनीकी और कलात्मक गुणवत्ता को बढ़ाने की दिशा में कई पहल की।उन्होंने 'आर. के. फिल्म्स' के तहत उच्च गुणवत्ता की फिल्में बनाई और सिनेमा के कला रूप को और अधिक विकसित किया।उनका अभिनय और निर्देशन दोनों में भारतीय और पश्चिमी सिनेमा की तकनीकों का मेल था, जो उनकी फिल्मों को आकर्षक और अनूठा बनाता था। उनका उद्देश्य था भारतीय सिनेमा को वैश्विक स्तर पर एक श्रेष्ठ कला रूप के रूप में प्रस्तुत करना। उनकी फिल्में कला, संगीत, और अभिनय के उच्चतम स्तर को प्राप्त करती थीं।

4. **राज कपूर का वैश्विक दृष्टिकोण और चार्ली चैपलिन से प्रेरणा :** राज कपूर का फिल्मी करियर चार्ली चैपलिन के साथ जुड़ा हुआ था, जिनसे उन्होंने अपने अभिनय और फिल्म निर्माण में प्रेरणा ली थी। उनका 'आम आदमी' का किरदार, जो बिना शब्दों के अपने संघर्षों को दर्शाता था, विशेष रूप से सोवियत संघ और चीन जैसे देशों में अत्यधिक लोकप्रिय था।राज कपूर की फिल्मों में हास्य, गंभीरता और भावनाओं का मिश्रण होता था, जिसे अंतरराष्ट्रीय दर्शकों ने पसंद किया।उनकी फिल्मों ने भारतीय सिनेमा को एक नए आयाम में प्रस्तुत किया, जो पश्चिमी सिनेमा के साथ-साथ भारतीय जीवन के बारीक पहलुओं को भी दर्शाता था।

5. **सिनेमा के माध्यम से भारतीय समाज को समझानाः** राज कपूर ने सिनेमा के माध्यम से भारतीय समाज और उसकी जटिलताओं को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। उनके किरदार और कहानियाँ भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं

को उजागर करती थीं- जैसे प्रेम, गरीबी, संघर्ष, भ्रष्टाचार, और न्याय।उनकी फिल्मों ने यह दिखाया कि भारतीय समाज में एक ओर जहां पारंपरिक मूल्य और रीति-रिवाज महत्वपूर्ण हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक असमानता और आर्थिक संघर्ष भी मौजूद हैं। उदाहरण स्वरूप, फिल्म 'श्री 420' में उन्होंने भ्रष्टाचार के खिलाफ ईमानदारी की लड़ाई को पेश किया, जो केवल भारतीय समाज के संदर्भ में ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक था।

6. **भारतीय सिनेमा का प्रचार और समृद्धि :** राज कपूर की फिल्मों ने भारतीय सिनेमा की पहचान को वैश्विक स्तर पर फैलाने का काम किया। उनका अंतरराष्ट्रीय दौरा और उनके द्वारा आयोजित फिल्म महोत्सवों ने भारतीय सिनेमा को एक नया जीवन दिया।वे भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में प्रस्तुत करते थे, जहां उन्हें पुरस्कार मिले और उनकी फिल्में अन्य देशों में भी प्रदर्शित हुईं।राज कपूर के द्वारा किए गए प्रयासों के कारण भारतीय सिनेमा को एक गंभीर कला रूप के रूप में माना गया, न कि केवल मनोरंजन का साधन।

राज कपूर का भारतीय सिनेमा के वैश्वीकरण में योगदान अविस्मरणीय है। उनकी फिल्मों ने न केवल भारतीय समाज के मुद्दों को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया, बल्कि भारतीय सिनेमा को एक नया दृष्टिकोण दिया। उनके सिनेमा ने दुनिया भर के दर्शकों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराया और भारतीय सिनेमा को वैश्विक स्तर पर मान्यता दिलाई। आज भी उनके योगदान को भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

राज कपूर का योगदान और विरासतः राज कपूर भारतीय सिनेमा के ऐसे महानायक थे, जिनका योगदान और विरासत आज भी भारतीय सिनेमा में गहरे प्रभाव डालते हैं। उन्होंने न केवल अभिनय और निर्देशन में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया, बल्कि भारतीय सिनेमा को एक नई दिशा और पहचान देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके योगदान के विभिन्न पहलुओं को देखते हुए, यह कहा जा सकता है कि उनकी विरासत आज भी जीवित है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

1. **फिल्म निर्माण में नवाचार :** राज कपूर का फिल्म निर्माण में योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण और नवोन्मेषपूर्ण था। उन्होंने भारतीय सिनेमा को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया और कई तकनीकी तथा कलात्मक दृष्टिकोण से नवाचार किए।

सिनेमा में कला और तकनीकी का संगमःराज कपूर ने फिल्मों के निर्माण में कला और तकनीकी दृष्टिकोण को एक साथ जोड़ा। उन्होंने अपने निर्देशन में नए प्रयोग किए और सिनेमा को एक कला रूप के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी फिल्मों में संगीत, नृत्य, और अभिनय का बेहतरीन समागम होता था। 'आवारा', 'श्री 420' और 'मेरा नाम जोकर' जैसी फिल्मों में न केवल अच्छे संवाद और संगीत थे, बल्कि कैमरा वर्क और सिनेमेटोग्राफी में भी उत्कृष्टता थी।

उन्होंने अभिनेताओं और अभिनेत्रियों से बेहतरीन अभिनय के साथ-साथ दृश्यावलोकन (Visual Composition) पर भी ध्यान केंद्रित किया, जो उनके फिल्म निर्माण में एक नया दृष्टिकोण था।

विविधता में एकता का संदेश : राज कपूर की फिल्मों ने समाज की विभिन्न परतों को दर्शाया, और वे कभी भी अपने सिनेमा में किसी भी तरह की भेदभाव नहीं करते थे। उनका विश्वास था कि सिनेमा को आम आदमी की भावनाओं और संघर्षों से जोड़ना चाहिए।

'मेरा नाम जोकर' में उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति की कहानी दिखाई जो अपने जीवन में हारने के

बावजूद अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करता।इसके साथ ही उनकी फिल्मों में समाज के विभिन्न वर्गों और उनकी मानसिकताओं की छाप भी साफ देखी जा सकती थी।

गीतों का विशेष स्थान : राज कपूर की फिल्मों में गीतों का अहम स्थान था। उनके द्वारा निर्देशित फिल्में गीत-संगीत के मामले में हमेशा उत्कृष्ट होती थीं। उनकी फिल्में शंकर-जयकिशन, मन्ना डे, मुकेश और लता मंगेशकर जैसे महान संगीतकारों और गायकों के साथ मिलकर संगीत जगत में अमर हो गईं। 'आवारा' और 'श्री 420' जैसे गीतों ने भारतीय सिनेमा को नया संगीत और ध्वनि दिया, जो न केवल भारतीय दर्शकों बल्कि अंतरराष्ट्रीय दर्शकों में भी लोकप्रिय हुए।

2. **परिवार की परंपरा :** राज कपूर का योगदान केवल फिल्म निर्माण तक सीमित नहीं था। उनके परिवार ने उनकी विरासत को न केवल आगे बढ़ाया, बल्कि भारतीय सिनेमा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके परिवार के सदस्य जैसे ऋषि कपूर, रणधीर कपूर, और रणबीर कपूर ने फिल्म उद्योग में अपने अभिनय और योगदान से राज कपूर की विरासत को जीवित रखा।

ऋषि कपूर : राज कपूर के सबसे छोटे बेटे, ऋषि कपूर ने भारतीय सिनेमा में अपनी जगह बनाई और कई हिट फिल्मों में अभिनय किया। उनकी फिल्मों ने भारतीय सिनेमा में रोमांटिक हीरो के रूप में एक नया मुकाम हासिल किया। 'बॉबी', 'चाँदनी' और 'हिम्मतवाला' जैसी फिल्में ऋषि कपूर के करियर के अहम मोड़ रही हैं। ऋषि कपूर की अभिनय शैली और उनकी फिल्मों ने राज कपूर के परिवार की फिल्मी धारा को आगे बढ़ाया।

रणधीर कपूर : राज कपूर के बड़े बेटे, रणधीर कपूर ने भी फिल्म निर्माता और अभिनेता के रूप में अपने करियर में सफलताएं प्राप्त की। उन्होंने कई फिल्मों का निर्देशन किया, जिसमें 'राम-श्याम', 'कहानी' और 'सास' जैसी फिल्में शामिल हैं।रणधीर कपूर ने अपने परिवार की फिल्म निर्माण की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए फिल्मों को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया।

रणबीर कपूर : राज कपूर के पोते, रणबीर कपूर ने बॉलीवुड में अपनी पहचान बनाई और वे एक सफल अभिनेता के रूप में उभरे। उनके अभिनय का स्तर और चयनित फिल्में, जैसे 'वेक अप सिड', 'आय रणबीर' और 'तमाशा', भारतीय सिनेमा में न केवल विविधता ला रहे हैं, बल्कि यह दर्शाते हैं कि कपूर परिवार के कलाकार अपने तरीके से सिनेमा में नवाचार ला रहे हैं।रणबीर कपूर की फिल्मों ने भारतीय सिनेमा को न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान दिलाई है, और वे अपनी फिल्मों में नए प्रयोग करने के लिए प्रसिद्ध हैं।

राज कपूर का योगदान भारतीय सिनेमा के विकास और वैश्वीकरण में अतुलनीय रहा है। उन्होंने भारतीय सिनेमा को कला, तकनीकी दृष्टिकोण, और सामाजिक संदेशों के साथ एक नया आयाम दिया। उनके द्वारा किए गए नवाचार आज भी भारतीय सिनेमा के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं। उनके परिवार ने भी उनकी विरासत को आगे बढ़ाया, और कपूर परिवार के सदस्यों ने भारतीय सिनेमा के विभिन्न पहलुओं में अपनी छाप छोड़ी। राज कपूर की विरासत सिनेमा, कला, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में जीवित रहेगी और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर बनेगी।

निष्कर्ष : राज कपूर न केवल एक महान कलाकार थे, बल्कि एक सांस्कृतिक राजदूत भी थे, जिन्होंने भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया। उनकी फिल्मों ने यह साबित किया कि कला और संस्कृति की कोई सीमाएँ नहीं होतीं और वे एक सशक्त माध्यम के रूप में दुनिया भर में संवाद स्थापित कर सकती हैं। राज कपूर की फिल्मों में

मानवीय मूल्य, सामाजिक समस्याएँ और प्रेम जैसी सार्वभौमिक भावनाओं का चित्रण था, जो हर देश और संस्कृति के लोगों के दिलों को छूने में सक्षम था।

राज कपूर का जीवन और उनकी फिल्में इस बात का प्रमाण हैं कि कला का कोई भूगोल या सीमाएँ नहीं होतीं। उनकी फिल्मों ने न केवल भारतीय समाज की विविधताओं को दर्शाया, बल्कि उनकी फिल्में अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के लिए भी प्रासंगिक थीं। 'आवारा', 'श्री 420' और 'मेरा नाम जोकर' जैसी फिल्मों ने उनके विचारों और दृष्टिकोण को वैश्विक स्तर पर प्रसारित किया। इन फिल्मों के माध्यम से उन्होंने यह दिखाया कि भारतीय सिनेमा भी वैश्विक सिनेमा के बराबर है और उसे किसी भी प्रकार के भेदभाव या सीमाओं में बांधकर नहीं देखा जा सकता।

राज कपूर की वैश्विक लोकप्रियता और उनकी सांस्कृतिक धरोहर उनके मानवीय दृष्टिकोण और उनके द्वारा सृजित सांस्कृतिक संवाद की शक्ति का परिणाम थी। उनके काम ने भारतीय सिनेमा को एक नई दिशा दी और उनकी विरासत आज भी भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है। उनकी फिल्में न केवल भारतीय सिनेमा के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, बल्कि वे आज भी आने वाली पीढ़ियों के लिए कला, संस्कृति और मानवीय दृष्टिकोण के एक अमूल्य उदाहरण के रूप में जीवित हैं। उनके विचार और दृष्टिकोण, जो समाज की जटिलताओं, मानवीय संघर्षों और रिश्तों को समझने की कोशिश करते हैं, आज भी हमें प्रेरित करते हैं। राज कपूर का योगदान न केवल भारतीय सिनेमा, बल्कि वैश्विक सिनेमा के लिए भी अनमोल रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. साहू, शिवाजी. राज कपूर : एक जीवित किंवदंती. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2008.
2. यादव, श्याम सुंदर. राज कपूर : फिल्म और समाज. पं. नेहरू प्रेस, लखनऊ, 2010.
3. आनंद, विजय राज कपूर की सिनेमा यात्रा, सारथी प्रकाशन, मुंबई, 2012.
4. शुक्ल, रामनाथ. भारत में सिनेमा और उसका वैश्वीकरण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2015.
5. सिंह, किशोर कुमार. राज कपूर : कला और संस्कृति के वाहक, पारिजात प्रकाशन, कोलकाता, 2014.
6. कुमार, ललित, भारतीय सिनेमा और राज कपूर, राजहंस प्रकाशन, जयपुर, 2013.
7. कुमार, नरेश, राज कपूर का सिनेमा : एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य. विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 2016.
8. सरीन, सुमित्रा, राज कपूर और भारतीय सिनेमा, शब्दवाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2009.
9. शर्मा, शरद, भारतीय सिनेमा का उत्थान और राज कपूर, दृष्टि प्रकाशन, लखनऊ, 2011.
10. कुमारी, नंदनी, सिनेमा के सम्राट : राज कपूर, राधा प्रकाशन, कोलकाता, 2017

राज कपूर के फिल्मों के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार

कमोला रहमतजोनोवा
एसोसिएट प्रोफेसर
यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएन्ट स्टडीज़, ताशकेंत, उज़्बेकिस्तान

हिंदी भारत की प्रारंभिक आधिकारिक भाषाओं में से एक है। यह संपूर्ण भारत द्वारा समझी जाने वाली एक प्राचीन भाषा है। आज विदेशियों की रुचि हिंदी भाषा में बढ़ती जा रही है। आज के दौर में विदेशियों की हिंदी में रुचि बढ़ने के कई कारण हैं, जो विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पहलुओं से जुड़े हुए हैं। यहां इन कारणों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत हैः

1. बॉलीवुड का वैश्विक प्रभाव :

- हिंदी फिल्म उद्योग (बॉलीवुड) की लोकप्रियता ने विदेशियों को हिंदी भाषा के करीब लाया है।
- भारतीय फिल्में, जैसे 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे', 'शोले', 'पीके' और 'बाहुबली' (हालांकि यह हिंदी में डब है), ने अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के दिलों में जगह बनाई है।
- बॉलीवुड गानों और संवादों को समझने के लिए लोग हिंदी सीखने में रुचि रखते हैं।

2. भारतीय संस्कृति और योग का आकर्षण :

- भारतीय योग, आयुर्वेद, और ध्यान (मेडिटेशन) ने विश्व स्तर पर लोकप्रियता हासिल की है।
- इन प्राचीन पद्धतियों को समझने और गहराई से सीखने के लिए लोग हिंदी सीखते हैं, क्योंकि इनके मूल शास्त्र हिंदी या संस्कृत में उपलब्ध हैं।

3. व्यापार और आर्थिक संबंधों का विस्तार :

- भारत एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति है।
- भारत के साथ व्यापार करने वाले विदेशी कारोबारी हिंदी सीखना चाहते हैं ताकि वे स्थानीय स्तर पर आसानी से संवाद कर सकें।
- खासकर जापान, चीन, और यूरोपीय देशों में व्यापारियों के बीच हिंदी की मांग बढ़ रही है।

4. अंतरराष्ट्रीय शिक्षा और करियर अवसर :

- भारत में विदेशी छात्रों की संख्या बढ़ रही है, खासकर इंजीनियरिंग, चिकित्सा और अन्य उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों के लिए।
- भारत में पढ़ाई करने और भारतीय समाज में घुलने-मिलने के लिए हिंदी सीखना फायदेमंद होता है।
- इसके अलावा, भारत में मल्टीनेशनल कंपनियों के लिए काम करने वाले विदेशी कर्मचारी भी हिंदी सीखते हैं।

विदेशियों की हिंदी में रुचि बढ़ने के पीछे कई कारण हैं, जिनमें भारतीय संस्कृति, व्यापारिक संभावनाएं, और हिंदी फिल्म उद्योग का योगदान प्रमुख है। यह

प्रवृत्ति न केवल हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित कर रही है, बल्कि भारतीयता को भी वैश्विक मंच पर मजबूत कर रही है।

हिंदी फिल्मों की बात करें तो राज कपूर और उनकी फिल्में सबसे अलग होती हैं। राज कपूर भारतीय सिनेमा के एक महान अभिनेता, निर्देशक और निर्माता हैं। उन्होंने अपनी फिल्मों के माध्यम से न केवल भारतीय संस्कृति और समाज की गहराई को प्रस्तुत किया, बल्कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके फिल्मों का प्रभाव भारतीय उपमहाद्वीप तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने वैश्विक स्तर पर भी हिंदी को लोकप्रिय बनाया, खासकर सोवियत संघ, चीन और मध्य एशियाई देशों में।

राज कपूर की फिल्मों में हिंदी भाषा का सरल और प्रभावशाली उपयोग किया गया। उनकी फिल्मों के संवाद आम बोलचाल की भाषा में होते थे, जो दर्शकों के दिलों को छूते थे। यह सादगी और भावनात्मकता उनकी फिल्मों की खासियत थी, जिससे हिंदी को अधिक लोग समझ और अपना सके। उनकी सबसे प्रसिद्ध फ़िल्में: 'आवारा' (1951), 'श्री 420' (1955), 'बरसात' (1949), 'संगम' (1964), 'मेरा नाम जोकर' (1970), 'बूट पॉलिश' (1954), 'जागते रहो' (1956), 'चोरी चोरी' (1956), 'अनाड़ी' (1959), सत्यम शिवम सुंदरम (1978).

राज कपूर की फिल्मों के गीत उनकी सबसे बड़ी ताकत थे। शैलेन्द्र और हसरत जयपुरी जैसे गीतकारों के लिखे गए हिंदी गीतों ने उनकी फिल्मों को अमर बना दिया। 'मेरा जूता है जापानी', 'आवारा हूँ', 'जीना यहाँ, मरना यहाँ' जैसे गाने केवल भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों में लोकप्रिय हुए। इन गीतों ने हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। इतना कि विदेशी लोग राज कपूर की फिल्मों के गाने गाने लगे, भले ही उन्हें हिंदी समझ में न आती हो। फिल्मी प्रसंगों और गीत संगीत के माध्यम से वे धीरे-धीरे हिंदी समझने लगे।

राज कपूर की फिल्में, जैसे 'आवारा'(1951) और 'श्री 420'(1955), उज़्बेकिस्तान और मध्य एशिया में बेहद लोकप्रिय रहीं। उनकी फिल्मों ने इन क्षेत्रों में हिंदी को एक सांस्कृतिक और भावनात्मक जुड़ाव का माध्यम बनाया। रूस में लोग 'आवारा हूँ' जैसे गाने गाते थे, जो हिंदी के प्रचार का प्रमाण है। ऐसा कहा जाता है कि जब उज्बेकिस्तान के सिनेमाघरों में ये फिल्में दिखाई जाती हैं तो वहां लोगों के लिए जगह नहीं बचती और लोग 3 घंटे तक अपने पैरों पर खड़े होकर ये फिल्में देखते हैं।

राज कपूर की फिल्मों में भारतीय संस्कृति और परंपराओं को हिंदी के माध्यम से दर्शाया गया। उदाहरण के लिए, 'संगम' और 'बूट पॉलिश' जैसी फिल्मों ने भारतीय समाज की गहराइयों और संघर्षों को हिंदी के माध्यम से सामने रखा। इसने भाषा को भारतीयता से जोड़ने का काम किया। लोग अपने बच्चों के नाम प्रसिद्ध भारतीय फिल्म पात्रों के नाम पर भी रखने लगे हैं। परिणामस्वरूप, विदेशों में भारतीय नाम आम होते जा रहे हैं।

उनकी फिल्मों के संवाद और संदेश अत्यधिक प्रेरणादायक होते थे। इन संवादों ने हिंदी को एक शक्तिशाली अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। उदाहरण के लिए, 'आवारा' में सामाजिक असमानता पर आधारित संवाद और 'श्री 420' में आदर्शवाद और यथार्थवाद की टकराहट हिंदी के माध्यम से बहुत प्रभावी रही।

राज कपूर की फिल्मों ने न केवल मनोरंजन प्रदान किया, बल्कि हिंदी भाषा को विश्व मंच पर पहचान दिलाने का कार्य भी किया। उनकी फिल्में आज भी हिंदी के प्रति सम्मान और प्रेम को बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम हैं। राज कपूर की फिल्मों और उनके गानों ने दुनिया भर के लोगों को हिंदी बोलने पर मजबूर कर दिया है। राज कपूर की फिल्मों

में इस्तेमाल की गई हिंदी भाषा आम जनता के लिए सहज और समझने योग्य थी। उनकी फिल्मों के संवाद और गाने हिंदी भाषा को नए दर्शकों तक पहुंचाने में मददगार रहे। उनकी फिल्मों के गानों ने हिंदी को एक भावनात्मक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में स्थापित किया। शैलेन्द्र और हसरत जयपुरी जैसे गीतकारों ने सरल और प्रभावशाली हिंदी में गाने लिखे, जो लोगों के दिलों तक पहुंचे। ये गाने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मशहूर हुए और आज भी विभिन्न देशों में गाए जाते हैं। राज कपूर ने भारतीय सिनेमा को एक माध्यम बनाया, जिससे हिंदी भाषा को विश्व स्तर पर पहुंचाया जा सके। उनकी फिल्मों की सफलता ने अन्य भारतीय फिल्म निर्माताओं को भी प्रेरित किया कि वे हिंदी में फिल्में बनाएं और उन्हें अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक पहुंचाएं।

राज कपूर की फिल्मों ने हिंदी को दुनिया भर में फैलाने में ऐतिहासिक योगदान दिया। उनकी कला ने हिंदी को न केवल मनोरंजन की भाषा के रूप में प्रस्तुत किया, बल्कि इसे एक सांस्कृतिक और भावनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में भी स्थापित किया। उनके प्रयासों ने हिंदी को एक वैश्विक पहचान दिलाई, जो आज भी बनी हुई है।

सन्दर्भ सूची :

1. https://www.indiatv.in
2. https://www.jansatta.com
3. https://www.patrika.com
4. https://www.amarujala.com

राजकपूर की फिल्मों में नारियों का चित्रण

प्रभात कुमार
टेलिविज़न और फ़िल्म निर्देशक,
शोध छात्र मुंबई विश्वविद्यालय

भारतीय सिनेमा ने समाज में महिलाओं की बदलती स्थिति को लेकर कई कहानियां प्रस्तुत की हैं, जिसमें महिलाओं की 'एकल' यात्रा का चित्रण भी एक प्रमुख विषय रहा है। हालांकि, पहले के दशकों में सिनेमा में महिलाओं की यात्रा का चित्रण पारंपरिक ढाँचों के भीतर सीमित था, लेकिन जैसे-जैसे समय बदला, फिल्मों में महिलाओं की अकेली यात्रा को आत्मनिर्भरता, साहस और स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में दिखाया जाने लगा। 1940 और 1950 के दशक की फिल्मों में महिलाएं अक्सर घर की चारदीवारी में कैद दिखाई जाती थीं। उस समय महिलाओं की यात्रा को लेकर समाज में बड़ी संकीर्ण धारणाएँ थीं। यदि कोई महिला अकेले यात्रा पर निकलती भी थी, तो उसे सामाजिक विद्रोह के रूप में देखा जाता था।

राजकपूर हिन्दी सिनेमा के प्रसिद्ध अभिनेता, निर्माता एवं निर्देशक थे। नेहरूवादी समाजवाद से प्रेरित अपनी शुरूआती फ़िल्मों से लेकर प्रेम कहानियों को मादक अंदाज से परदे पर पेश करके उन्होंने हिंदी फ़िल्मों के लिए जो रास्ता तय किया, इस पर उनके बाद कई फ़िल्मकार चले।

राज कपूर की फ़िल्मों की कहानियां आमतौर पर उनके जीवन से जुड़ी होती थीं और अपनी ज्यादातर फ़िल्मों के मुख्य नायक वे खुद होते थे।

लेकिन राजकपूर के सिनेमा में महिलाओं की एकल यात्रा के चित्रण ने न केवल सिनेमा की दुनिया में, बल्कि समाज में भी महिलाओं के प्रति धारणा को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहले जहां यह यात्रा समाज के लिए एक चुनौती और विद्रोह का प्रतीक थी, वहीं अब यह आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता और आत्म-खोज का प्रतीक बन गई है। राजकपूर की फिल्मों ने महिलाओं को प्रेरित किया है कि वे अपनी पहचान को खोजें बिना किसी सामाजिक दबाव के अपने फैसले लें और जीवन में नई ऊंचाइयों तक पहुंचें। हालांकि, असली जिंदगी में यह यात्रा अभी भी उतनी सरल नहीं है, जितनी फिल्मों में दिखाई जाती है। फिर भी, यह कहना गलत नहीं होगा कि राजकपूर के सिनेमा ने महिलाओं की यात्रा को समाज में एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनाया है और इससे जुड़ी चुनौतियों को उजागर किया है। सिनेमा ने महिलाओं की एकल यात्रा को सामान्य बनाने में मदद की है, जिससे समाज में इसे लेकर बढ़ती स्वीकृति और जागरूकता भी देखी जा रही है।

राजकपूर ने अपनी फिल्मों में समाज में पल रहे नारीवादी विचारधारा को भी तोड़ा कि नारी सिर्फ घर की चारदीवारी में रहकर घर का काम-काज और बच्चों को पालनें के लिए नहीं होती है। 'बूट पालिश', 'जागृति' जैसी फिल्मों में स्त्री पात्र का चित्रण इसका प्रमाण है।

आज बाज़ार में उत्पाद को प्रचारित करने के लिये स्त्रियों का अंगप्रदर्शन हो रहा है, उसकी सार्वजनिक स्वीकृति राजकपूर ने अपने सिनेमा में हेरोइनों को

प्रस्तुत कर के कर दिया था। आज बदलते परिप्रेक्ष्य में सिनेमा में स्त्री का चरित्र बदला है। वह एक माडल के रूप में किसी वस्तु या उत्पाद को अधनंगे कपड़ों में पेश करती दिखाई देती है। बड़ी-बड़ी लांजरी कम्पनी अपनी लांजरी को फिल्मों के माध्यम से पेश करते है। लेकिन राजकपूर की फिल्म संगम में वैजयंतीमाला और बॉबी में डिम्पल कपाड़िया अंतःवस्त्र पहन कर दृश्य करती दिखती हैं, मेरा नाम जोकर फ़िल्म में सिमी ग्रेवाल जब खेत में कपड़े बदलती है तब भी वो बहुत समय तक अंतःवस्त्र में ही दिखती है, जिसे दर्शकों की स्वीकृति मिली। उसके बाद स्त्री के शरीर का प्रदर्शन करने का सिलसिला चल पड़ा।

राज कपूर के सिनेमा में स्त्री की समस्याएँ, स्त्री-पुरुष संबंध, स्त्री की यौनिकता, स्त्री की शृंगारिक अभिव्यक्तियाँ, स्त्री का देह सौष्ठव, स्त्री सौंदर्य की सम्मोहक प्रस्तुति आदि आकर्षक तत्व रहे हैं। सिनेमा में स्त्री की प्रस्तुति पुरुष की दृष्टि से ही होती रही है- यह एक महत्त्वपूर्ण स्त्रीवादी संकल्पना है।

राजकपूर की फ़िल्मों में नारी चरित्र-प्रधान फ़िल्मों का एक अलग वर्ग है। इनकी फिल्मों में स्त्री जीवन के सुखमय और दुखमय पक्षों का चित्रण समान रूप से हुआ है। राजकपूर के सिनेमा में स्त्री चरित्र के त्याग, अनुराग, मातृत्व, प्रेम, समर्पण जैसे गुणों के महिमामंडित स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। राजकपूर की फिल्मों में स्त्री पात्र को दुश्चरित्र, लोभी, षडयंत्रकारी, उग्र, क्रोधी, प्रतिहिंसात्मक, अनैतिक, देहवादी, पुरुषलोलुप, कामुक, और दुस्साहसी खलनायिका के रूप में कभी भी चित्रित नहीं किया गया, जबकी बहुत सारी अन्य समकालीन फिल्मकार महिला पात्र के इन्हीं पक्ष को दिखाने में विश्वास रखते थे।।

दरअसल स्वतन्त्रता मिलने के कई दशकों बाद भी हिंदी सिनेमा सामंती या उपनिवेश-कालीन आग्रहों से मुक्त नहीं हो पाया। कुछ अपवादों को छोड़कर पर्दे पर दिखाई जा रही वही स्त्री अच्छी थी जिसने संयुक्त परिवार के दायरे के भीतर रहते हुए पितृसत्ता को ज्यों का त्यों बनाए रखा था। इससे ठीक विपरीत छवि आधुनिक औरत की है। आधुनिक औरत विद्रोही और महत्त्वाकांक्षी है- राजकपूर की फ़िल्म 'अंदाज़' में इसका स्वरूप मिलता है।

राजकपूर ने अपनी फिल्मों में स्त्रियों को जब भी दिखाया, उसकी शारीरिक सौन्दर्य को बहुत प्रबलता और प्रमुखता से दरसाय, लेकिन सामाजिक मर्यादा को ध्यान में रख कर दिखाया। जलवायु, स्थान और मौके को ध्यान में रख कर स्त्रियों को इस तरह प्रस्तुत किया की कई आलोचनाओं के बाद भी न तो फ़िल्म सेंसर बोर्ड ने उसे काटा और न ही दर्शकों ने नकारा। राजकपूर के जीवन की एक घटना बहुत महत्वपूर्ण रोचक है जिसे उन्होंने स्वयं अपने साक्षात्कार में बताया था, और उनकी बेटी ने अपने किताब में भी लिखा है।

राजकपूर बचपन में अपनी माँ के साथ नहाते थे तो उन्होंने अपनी माँ के शरीर की सुंदरता आधे ढंके-छुपे या गीले वस्त्रों में और कभी-कभी पूर्ण नग्न भी देखा। राजकपूर के बालसुलभ मस्तिष्क में वो छवि इस तरह अंकित हुई की उन्होंने अपनी फिल्मों में उसी सौंदर्यबोध से अपनी नायिका को प्रस्तुत किया। मेरा नाम जोकर, राम तेरी गंगा मैली, सत्यम शिवम सुंदरम, बॉबी आदि फिल्मों में स्त्री पात्र का प्रस्तुतिकरण इसका बहुत बड़ा उदाहरण है।

राजकपूर अपने बचपन की एक और घटना की चर्चा करते थे। राजकपूर गोरे-चिट्टे थे, आँखें भूरी थीं, शरीर गोलमटोल था, जो बरबस लोगों को आकर्षित करता था। उनके घर के पास एक चने वाला था, राजकपूर के पास पैसे नहीं थे तो चने वाले ने राजकपूर को नंगा चूतर दिखाने को बोला और उसके बदले में चना दिया, और ऐसा कई बार हुआ। तब से ये उनके लिये सेक्स सिम्बल की तरह बन गया जिसका इस्तेमाल उन्होंने बॉबी फ़िल्म में किया।।

ये भी सच है की राजकपूर ने अपनी प्रारंभिक फिल्मों में प्रधान चरित्र पुरुष को रखा, लेकिन अपने

फिल्मी जीवन के उतरार्द्ध में अपनी निर्मित और निर्देशित फिल्मों में पुरुष पात्र और स्त्री पात्र को समान स्थान देने का प्रयास भी किया।

बॉबी से राजकपूर स्त्री प्रधानता की ओर प्रमुखता से कदम बढ़ाते दिखते हैं। बॉबी के बाद सत्यम शिवम सुंदरम, राम तेरी गंगा मैली और फिर हिना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

बॉबी फ़िल्म एक एकाकी भाव से जी रहे अमीर बच्चे से शुरू हो कर बॉबी जैसे मछुआरी लड़की की कहानी बन जाती है। सत्यम शिवम सुंदरम, प्रेम रोग और राम तेरी गंगा मैली में प्रधान पुरुष पात्र के साथ स्त्री प्रधान पात्र का समान महत्व दिखता है।

फ़िल्म समालोचक का एक बहुत बड़ा वर्ग है जो ये मानता है की अपनी फ़िल्म को व्यापक दर्शकों तक पहुचाने के लिये राजकपूर नारी पात्रों का अनुचित लाभ लेते जान पड़ते हैं। बॉबी में डिम्पल कपाड़िया के वस्त्र और हाव-भाव, सत्यम शिवम सुंदरम में जीनत अमान के एक वस्त्रीय परिधान, मेरा नाम जोकर में सिंमी के शर्ट का बटन खुल कर स्तन का दिखना, राम तेरी गंगा मैली में मंदाकिनी का पारदर्शी साड़ी में स्नान और बच्चे को दूध पिलाते समय स्तन को दिखाना ये सब उसके उदाहरण हैं। लेकिन प्रस्तुतीकरण ऐसा की कुछ पुरुष दर्शकों ने स्त्री शरीर के मोहक रूप का आनंद लिया तो कुछ ने स्त्री सुलभ चरित्र के अनेकों रूप में से एक माँ, प्रेमिका, बहन आदि के रूप में स्वीकार किया। राजकपूर की फिल्मों में नारियों के प्रस्तुतीकरण को कुछ ने अशिष्ट और असभ्य माना तो कुछ ने सौंदर्यबोध की उत्तम प्रस्तुति के रूप में स्वीकार किया।

जिस देश में गंगा बहती है में कम्मों (पद्मिनी) जो की डाकू सरदार की बेटी है जब राजू (राज कपूर) से उसे प्यार हो जाता है, वो बस इसलिए होता है की उसकी सोच अच्छी है। इसका मतलब साफ है की राज कपूर ये कहना चाहते हैं की एक लड़की पुरुष में सिर्फ शारीरिक ताकत नहीं देखती अच्छी सोच वाले के साथ जीवन बिताना चाहती है।

फ़िल्म बरसात में प्राण यानि की राज कपूर से रेशमा यानि की नरगिस इसलिए प्यार करती है क्यूँकी वो सच्चा इंसान है। तो ये स्पष्ट होता है की राज कपूर नारियों की भावना के उन पक्षों को उजागर करना चाहते हैं जो सच्चाई को पसंद करता है।

बूट पॉलिश में भोला और बेलू जो की बच्चे हैं और भाई-बहन हैं, में बेलू भी उतना ही संघर्ष करती दिखती है जितना भोला। बेलू भी अपना भविष्य सुधारने के लिये अपना योगदान देती है जितना भोला। मतलब साफ है की राज कपूर ने ये दिखाने का सफल प्रयास किया की जीवन के संघर्ष में जहाँ बाहरी दुनियाँ से आपको लड़ना है वहाँ एक लड़की भी उतना ही सहज और सक्षम है जितना कोई लड़का। ये तो पुरुष समाज है जिसने किसी और कारण से लड़कियों को घर के अंदर रहने के लिये मजबूर किया।

श्री 420 में विद्या (नरगिस) राज से प्यार करती है तब तक जब तक वो जीवन को बेहतर करने के लिये सही रास्ते से चलना चाहता है, लेकिन जैसे ही चारसो बीसी शुरू करता है वो उससे दूर होने लगती है। फिर अंत में जब वो अपनी गलती स्वीकार करता है तो विद्या उसे माफ भी कर देती है। मतलब साफ है की एक नारी के अंदर जो माफ करने की भावना होती है उसको प्रबलता से परिलक्षित करना चाहते हैं।

सरगम फ़िल्म में सुंदर, गोपाल और राधा के त्रिकोणीय प्यार पर ध्यान दें तो राधा के चरित्र का दो महत्वपूर्ण पक्ष उजागर होता है। एक तो ये की राधा अपनी पसंद से ज्यादा दो प्रेमी के पसंद को महत्व देती है, दूसरा ये की वो अपनी पसंद और जरूरत से अधिक दो मित्रों की मित्रता के लिये अपनी इच्छा और अभिलाषा को दबा देने पर भी विश्वास रखती है। राधा भी अपने दिमाग से गोपाल को निकाल देती है और उससे बोलती है कि वो उसके और उसके पति से दूर रहे, ताकि उसके पास रहने से उसे कष्ट होता है।

यह बात बिल्कुल सही है की राजकपूर ने पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों को पुरुष की दृष्टि से ही देखने का प्रयास किया, लेकिन बढ़ते कहानी के क्रम में पुरुषों को ये भी सिखाते जान पड़ते हैं की शारीरिक सुंदरता से आगे स्थान मन की सुंदरता का है। फ़िल्म सत्यम शिवम सुंदरम में नायिका के आधे दिखे सुंदर चेहरे से नायक का प्रेम और आधे जले चेहरे से घृणा बहुत ही यथार्थपरक प्रस्तुतीकरण है। लेकिन अंततः जीत नायिका के अंदर स्थापित कोमल और सुंदर भाव का होता है। इस सत्य को वो शिव कहते हैं और शिव को ही सुंदर।

फ़िल्म राम तेरी गंगा मैली में मंदाकिनी का पात्र नाम गंगा रखा और उसके जीवन चरित्र को गंगा नदी की तरह पवित्र बताया। जिस तरह गंगा गंगोत्री से पवित्र निकलती है और बनारस जा कर अपवित्र होती जान पड़ती है, फिर भी अपने धर्म का निर्वाह कर अपने बच्चे के लिए संघर्ष करती है, वो अनुपम है। मंदाकिनी का एक वस्त्रीय स्नान दृश्य, फिर बच्चे को दूध पिलाते समय स्तन का खुलापन एक दृष्टिकोण से स्त्री शरीर का प्रदर्शन जान पड़ता है तो दूसरे दृष्टिकोण से सहज निश्छल चरित्र का परिचायक, जो कथानक के एकदम अनुकूल है। यही कारण है की फ़िल्म सेंसर बोर्ड ने भी उसे स्वीकार किया। ये राजकपूर में कूट-कूट कर भरे सृजनात्मक शक्ति के कारण ही संभव हो पाया। मंदाकिनी के नंगे स्तनों के साथ सुंदरता को हर संभव अश्लील तरीके से उजागर किया गया था, जो एक पुरुष संयम के लेबल के तहत कर सकता है। फिल्म ने विवादास्पद समीक्षा की, लेकिन अन्यथा एक बड़ी हिट रही। एक बात मुझे स्वीकार करनी चाहिए कि इस विशेष फिल्म ने हमारे पितृसत्तात्मक समाज को बहुत ही बेबाक तरीके से चित्रित किया है।

फिल्म प्रेमरोग में विधवा स्त्री को भी प्रेम करने और प्रेम पाने का हक है इस बात को बहुत प्रमुखता से रखते हैं राजकपूर। एक विधवा स्त्री को भी सम्मान से जीने और अपनी इच्छाओं को मर्यादा में रह कर पूरा करने का हक है ये बात बहुत स्पष्टता से कह पाते हैं राजकपूर।

लेकिन बहुत सारे दर्शक और आलोचक राजकपूर की फिल्मों में नारियों के प्रस्तुतीकरण को लेकर बहुत सारे सवाल भी उठाते हैं। वो पूछते हैं की मेरा नाम जोकर में राजकपूर महिला कामुकता को कहाँ ले गए थे एक मोटा बच्चा, एक छात्र जो अपनी शिक्षिका से प्यार करता है, जब वह नदी में गिरती है तो उसकी टाँगों को निहारता है और फिर उसे नग्न अवस्था में देखने की कल्पना करता है

सत्यम शिवम सुंदरम, जीनत अमान को इतना क्यों दिखाया गया कैमरा लगातार उसके क्लीवेज और कर्व्स पर फोकस करता रहा। अगर कंटेंट अच्छा है (जो वास्तव में था) तो एक महिला को इतना क्यों नंगा किया गया कि खास तौर पर महिला दर्शकों को यह शर्मनाक लगे। फिल्म सुंदरता पर आधारित है, कैसे एक अच्छा लुक एक आदमी को इस हद तक आकर्षित कर सकता है कि वह अपनी नवविवाहित पत्नी को छोड़कर अपनी प्रेमिका की बाहों में चला जाता है। जाहिर है कि उसकी पत्नी और उसकी प्रेमिका एक ही महिला है। फिर भी सेक्स बिकता है।

पुरुष निर्दयी थे, सेक्स के भूखे थे और यह एक सच्चाई है जिसका सामना हम आज भी करते हैं। महिलाओं के स्तन पुरुषों की कल्पना की वस्तु हैं और राज कपूर ने इसे साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

उपर्युक्त सभी भाव राजकपूर के आलोचकों के भाव हैं, जिससे कुछ सहमत हैं कुछ असहमत।

संगम फ़िल्म को एक प्रेम त्रिकोण के साथ, राजकपूर ने नायिका पर ध्यान केंद्रित किया, जिसमें दो नायक उसके लिए होड़ करते हैं और मेरा नाम जोकर एक अर्ध-आत्मकथात्मक फिल्म है, जिसमें तीन प्रमुख महिलाएँ थीं और विषयों की एक बहुतायत थी, जिनके बारे में राजकपूर का मानना था कि उनमें गहरी दार्शनिक गहराई और अर्थ है।

बॉबी की कहानी एक अकेले अमीर लड़के की कहानी से शुरू होती है, जिसका किरदार ऋषि कपूर ने निभाया है, लेकिन हर बीतते पल के साथ, फिल्म की हर चीज बॉबी नामक लड़की के इर्द-गिर्द सिमट जाती है। बॉबी के बाद यह नई-नई मिली महिलाशक्ति और भी ज़्यादा उभर कर सामने आई और बॉबी के बाद कपूर द्वारा निर्देशित तीन फ़िल्मों में यह महिला व्यावहारिक रूप से नई 'हीरो' बन गई।

कुछ लोगों ने कपूर पर उनकी बाद की फिल्मों (सत्यम शिवम सुंदरम, प्रेम रोग और राम तेरी गंगा मैली) में महिलाओं के प्रति शोषणकारी होने का आरोप भी लगाया और प्रथम दृष्टया यह आरोप सिद्ध होता भी दिखता है, लेकिन इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि उनकी कहानी में महिलाओं को समान स्थान दिया गया है।

उपसंहार :

प्रकाशित पुस्तकों, अखबारों, साक्षात्कारों और अन्य सभी माध्यम को पढ़ने, सुनने और राजकपूर के सभी फिल्मों का अवलोकन करने के बाद मैं व्यक्तिगत रूप से अपनी राय के रूप में ये कहना चाहूँगा की राजकपूर बहुत ही सृजनात्मक फिल्मकार थे, जिन्हें अपने सामाजिक दायित्व के साथ-साथ दर्शकों को मनोरंजन देने के दायित्व का भी भान था। स्त्रियों की नग्नता और सौन्दर्य का अद्भुत मिश्रण करते थे राजकपूर। चाहे स्त्री के शरीर का प्रदर्शन जितना करें वो लेकिन अपनी फिल्मों में स्त्रियों का अनादर या अपमान कभी भी नहीं होने दिया। कथानक की यात्रा में लाख दुःख और अपमान सहे नारी लेकिन अंततः समाज और परिवार में उचित सम्मान मिले इसके पक्षधर रहे राजकपूर। यही कारण है की राजकपूर की फिल्मों में स्त्रियों की अश्लीलता और पवित्रता के बीच अंतर निकालना कई बार मुश्किल हो जाता था। उत्तेजना को खूबसूरती के आवरण में परोसने में वो माहिर थे। नारी सुंदरता और कामुकता का अद्भुत समिश्रण करते थे राजकपूर। इसलिए राजकपूर को एक फिल्मकार के रूप में सर्वगुण सम्पन्न और सफलतम निर्माता निर्देशक माना जाता है। आदर के भाव से ही देखा जाता है।

संदर्भ सूची :

1. https://hi.wikipedia.org/wiki/राजकपूर
2. राजकपूर सृजन प्रक्रिया–जयप्रकाश चौकसे

   https://www.pustak.org/index.php/books/bookdetails/6893/Rajkapoor
3. राजकपूरः आधी हकीकत आधा फ़साना – प्रह्लाद अग्रवाल

   https://www.uttaramahilapatrika.com/renaissance-womens-questions-and-practices-books/

   https://www.youthkiawaaz.com/2023/11/raj-kapoor-the-man-behind-the-raw-female-sexuality-in-indian-cinema/

   https://www.dailyo.in/arts/raj-kapoor-awaara-shree-420-nargis-bollywood-bimal-roy-guru-dutt-gender-equality-10978

   https://www.youtube.com/watch?v=TyYFm4Byyc4

राजकपूर के फिल्मों में संगीत की जादूगरी

प्रियंका ठाकुर
अध्यापक
जोगेश चंद्र चौधरी कॉलेज, पद-सेक्ट-1

महान अभिनेता, निर्माता, निर्देशक और हिंदी सिनेमा के 'शोमैन' के रूप में परिचित राजकपूर का सफर रेशमी गलीचे भरा ही नहीं रहा है अपितु उन्हें भी शर के अनेक प्रहार झेलने पड़े है। 'पृथ्वी थियेटर' के मालिक पृथ्वीराज कपूर के बेटे होने के बावजूद भी इस जगत में लघु रूपों से इन्होंने शुरूआत की है। शुरूआत में वे 'बांबे टॉकीज' स्टूडियो में सहायक का कार्य करते थे बाद में वे केदार शर्मा के साथ क्लैपर ब्वॉय के रूप में कार्य करने लगे। राजकपूर के इस प्रारंभिक संघर्षों के विषय में पृथ्वीराज कपूर के साथ रहने वाले एवं बाद के दिनों में राज कपूर के निजी सहायक एवं सहयोगी निर्देशक वीरेन्द्रनाथ त्रिपाठी का कहना है : ''पापा जी (पृथ्वीराज) हमेशा कहते थे राज पढ़ेगा-लिखेगा नहीं, पर फिल्मी दुनिया में शानदार काम करेगा। आज केदार ने उसे मेरा बेटा होने के कारण काम दिया है, लेकिन एक दिन वह भी होगा जब लोग राज को पृथ्वीराज का बेटा नहीं बल्कि पृथ्वीराज को राज कपूर का बाप होने के कारण जानेंगे।''[1]

राजकपूर ने 1935 में फिल्म इंकलाब के माध्यम से मात्र 11 वर्ष की उम्र से अपने अभिनय जगत की शुरूआत की और बतौर नायक के रूप में केदार शर्मा निर्देशित फिल्म 'नीलकमक' से सिने जगत में पदार्पण किया।

1948 में प्रदर्शित 'आग' वह पहली फिल्म थी जिसमें वह अभिनेता के साथ साथ निर्माता-निर्देशक के रूप में भी सामने आये। हालाँकि यह फिल्म सफल नहीं हो पायी लेकिन असफलता ने राजकपूर को तोड़ा नहीं अपितु वे दुगने उत्साह के साथ 1 वर्ष पश्चात्य ही 1949 में फिल्म 'बरसात' लेकर आए। इस फिल्म में निर्माता के तौर पर इन्होंने एक बहुत बड़ा जोखिम लिया था, फिल्म में सारे नए लोगों को मौका दिया गया। मसलन

शंकर- जयकिशन (संगीतकार), हसरत जयपुरी और शैलेन्द्र (गीतकार), रामानंद सागर (लेखक), निम्मी (फिल्म की नायिका) सभी नए लोग फिल्म में कार्यरत थे। इतना ही नहीं राधू कर्मकार, एम॰ आर॰ अचरेकर और जी॰ जी॰ मायेकर जैसे नये टैक्नीशियनों की पूरी टीम थी। इस फिल्म की सफलता ने राजकपूर की झोली में कई और कालजई फिल्मों को ला दिया।

'बरसात' फिल्म की सफलता का एक बहुत बड़ा कारण फिल्म की कहानी के साथ साथ उसका संगीत भी रहा है। चारों ओर इस फिल्म के गाने गूंज रहे थे। राजकपूर सिनेमा में संगीत की भूमिका को बहुत ही बेहतर ढंग से समझते थे। वे इस बात को बखूबी समझते थे कि संगीत कथानक को जीवंत बनाता है तथा कहानी कहने के एक आवश्यक घटक

के रूप में कार्य करता है।यही वजह है कि ना कभी उन्होंने खुद संगीत की रचना की ना गीत गाए, लेकिन जब दूसरे संगीतकारों के बनाए गीत वे अपनी फिल्मों में गाते तो वे 'राज कपूर के गीत' बनकर याददाश्त में बस जाते। राजकपूर के संगीत के प्रति रुझान को व्यक्त करते हुए भास्कर चंदावरकर कहते है कि 'फिल्मों में राजकपूर कई साज बजाते हुए पाए जाते हैं। एकोर्डियन, बैगपाइपए, तबला, ट्रंपेट... ये सारे साज वे बड़ी अदा से, बड़ी सहजता से बजाते हुए नजर आते है। ऐसा लगता है, हाथ में पकड़ा हुआ वह साज उन्हीं के बदन का अभिन्न अंग है। दूसरे कुछ अभिनेताओं को लेकर यह नहीं कहा जा सकता। 'बरसात' में उन्होंने वायलिन बजाया था। आगे चलकर यह वायलिन आर. के. स्टूडिओज के स्थायी प्रतीक-चिह्न का एक हिस्सा बन गया। 'जिस देश में गंगा बहती है' में उन्होंने एक बड़ी सी डफली बजाई है। यह शीर्षक गीत बेहद लोकप्रिय हुआ।इसकी वजह यह थी कि जिस खासियत को लेकर राजकपूर हमेशा सतर्क रहते थे वह खासियत इस गाने में थी और वह था गाने के बोल। सही परिणाम साधनेवाले, दिल को छू लेने वाले, भावना से ओतप्रोत, भावुक कर देनेवाले गीत के बोल।'[2] सबसे कमाल की बात है कि राजकपूर ने कभी शास्त्रीय संगीत की तालीम नहीं ली लेकिन कई वाद्य यंत्रों को बखूबी बजा लेते थे। वे अपनी खुशी के लिए तबला और हार्मोनियम अक्सर बजाया करते थे।

संगीत, दर्शकों को कथा और पात्रों के अनुभव से पूरी तरह जुड़ने में मदद करता है। यह मनोवैज्ञानिक रूप से भी असर डालता है और मूड, व्यवहार और सांस्कृतिक धारणाओं को प्रभावित करता है।सच तो है कि फिल्म जगत में संगीत सिर्फ एक सहायक उपकरण से कहीं अधिक है,यह कहानी कहने के माहौल को आकर देने भावनाओं को तीव्र करने और दर्शकों के अनुभव को समृद्ध करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यही कारण है कि हमारी 'वैश्विक सिनेमा के निरंतर विकसित होते परिदृश्य में संगीत अंतर-सांस्कृतिक कहानी कहने, कथाओं को समृद्ध करने तथा हमारी तेजी से परस्पर जुड़ती दुनिया में संबंधों को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली साधन बना हुआ है।'[3] इसका सबसे बड़ा प्रमाण राजकपूर द्वारा निर्देशित फिल्म 'आवारा' है। अपने समय के महबूब, केदार शर्मा, नितिन बोस, विमल राय, महेश कौल, वी शांताराम जैसे दिग्गज निर्देशकों को पीछे छोड़ नौसिखिए राजकपूर की यह फिल्म 'मिल का पत्थर' साबित हुई। सुप्रसिद्ध फिल्म-समालोचक प्रहलाद अग्रवाल के शब्दों में- ''आवारा' ने इस सत्ताईस साल के नौजवान को इस उंचाई पर पहुंचा दिया, जहां तक पहुंचने के लिए बड़े-से-बड़ा कलाकार लालायित हो सकता है।' आवारा ने ही उसे अंतराष्ट्रीय ख्याति प्रदान की। यहां तक कि वह पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्तित्व बन गया- सोवियत रूस में। रूस और अनेक समाजवादी देशों में 'आवारा' को सिर्फ प्रशंसा ही नहीं मिली, वरन् वहां की जनता ने भी बेहद आत्मीयता के साथ इसे अपनाया।'[4] लेखक-पत्रकार विनोद विप्लव के शब्दों में- 'भारत ने विश्व स्तर पर चाहे जो छवि बनाई हो और उसके जो भी नए प्रतीक हों, लेकिन इतना तय है कि चीन, पूर्व सोवियतसंघ और मिस्र जैसे देशों में राजकपूर हमेशा के लिए भारत का प्रतीक बने रहेंगे।चीन के सबसे बड़े नेता माओ त्से तुंग ने सार्वजनिक तौर पर कहा था कि 'आवारा' उनकी सर्वाधिक पसंदीदा फिल्म थी।शायद यही कारण है कि आज भी पेइचिंग और मास्को की सड़कों पर घूमते-टहलते हुए 'आवारा हूँ' गीत सुनाई पड़ने लगते हैं। यह राजकपूर की लोकप्रियता के विशाल दायरे का एकमात्र उदाहरण है।'[5] 'आवारा' में उनके प्रदर्शन को 2005 में टाइम पत्रिका द्वारा 'विश्व में अब तक वर्ष के शीर्ष दस महानतम प्रदर्शनों' में से एक के रूप में स्थान दिया गया है।

राजकपूर पर चार्ली चैपलिन का प्रभाव फिल्म आवारा के साथ-साथ वर्ष 1955 में प्रकाशित फिल्म 'श्री 420' में भी भलीभांति देखा जा सकता है। शैलेन्द्र द्वारा रचित गाना 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिस्तानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी' इस फिल्म का पहचान बन गया। एक साधारण से गीत को राजकपूर चार्ली चैप्लिन के मस्ती भरे अंदाज में जिस खूबसूरती से पेश करते है वह दर्शक के जहन में बैठ जाता है। इसके साथ गौर करने वाली एक बात और है कि क्या इस जोड़ी ने केवल मनोरंजन के लिए ही इस गीत की रचना की और वो भी तब जब देश आजाद हो चुका था,भारत के संविधान को बने हुए भी 5 साल हो चुके थे, भारत के लोग स्वदेश निर्मित वस्तुओं के इस्तेमाल में फक्र महसूस कर रहे थे ऐसे में विदेशी वस्तुओं की वकालत भला एक संगीतकार क्यों करेगा इनका उद्देश्य और गहरा था। 'शैलेन्द्र और राजकपूर ने सत्ता की तरफ लपकने वाले सदैव स्वहित की बात करने वाले अवसरवादी लोगों की तरफ इशारा किया जो अंग्रेजी कला में तो खादी से नफरत करते थे और जनता का मूड भांप कर वे खड़ी की बात करने लगे। खादी ने जो सम्मान हासिल किया था संघर्ष के दशकों में उसने उसे राजनेताओं के लिए एक सम्मानीय वेशभूषा बना दिया था और राजनीति में आने वालों के लिए एक तरह से सुरक्षित कवच का काम करने लगी थी।'[6] इस गाने का अंतिम अंतरा भी बहुत खास है- 'होंगे राजे राजकुँवर हम बिगड़े शहजादे, हम सिंहासन घर पर जा बैठे जान जब करें इरादे, सूरत है जानी पहचानी दुनिया वालों को हैरानी, सर पे लाल टोपी रूसी फिर भी दिल है हिंदुस्तानी' जनता की शक्ति का आभास कराता है। यह हमें कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के प्रगतिवादी विचारधारा के नजदीक ला खड़ा करता है जहां वे व्यक्तिवाद को प्राथमिकता देते है।यह गीत भी 'साधारण व्यक्ति की ठसक है, यह स्वाभिमानी व्यक्ति का फक्कड़पन है, चाहे तो सिंहासन धुल कर दे या धूल की मॉडल समझ लें और चाहे तो सत्ताधारियों को सत्ताच्युत करके सुशासन की स्थापना करने के लिए जनता का शासन ले आए।मुकेश ने गीत को इस सरल तरीके से है कि गीत आसानी से श्रोता के अंदर प्रवेश कर जाता है। प्रबलन के लेखन के स्तर पर यह उतना साधारण और एक परत वाला गीत नहीं है बल्कि शैलेन्द्र गीत को गहराई वाली और प्रभाव दे गए है।'[7]

वर्ष 1970 में प्रकाशित फिल्म 'मेरा नाम जोकर' भी अपने आप में अनेक संवेदनशील तत्वों को समेटे हुए है। इस फिल्म के माध्यम से राजकपूर ने एक एंटरटेनर के जीवन को छुने की कोशिश की। 'कल खेल में हम हों न हों, गर्दिश में तारे रहेंगे सदा' गीत इस स्थिति को जाहिर करता है।

राजकपूर ने गीतों के माध्यम से संपूर्ण भौगोलिक प्रदेशों को लयबद्ध कर दिया था। 'जिस देश में गंगा बहती है में चंबल की घाटी की धुनें थी। बॉबी के ना मांगू सोना चांदी गीत में उन्होंने गोवा के लोकगीत का बेहतरीन इस्तेमाल किया। राम तेरी गंगा मैली के जरिए वे हिमाचल प्रदेश की लोकधुनों को सिनेमा में ले आए।'[8] इनके इस संपन्न, समृद्ध संरचना के चार स्तंभ थे गीतकार शैलेन्द्र और हसरत जयपुरी, गायक मुकेश,संगीतकार शंकर और जयकिशन और एक मजबूर स्तंभ वे स्वयं। इनके पास अपना एक सशक्त विजन था। सही जगह,सही व्यक्तियों के गाए,सही ढंग से बनकर तैयार हुई पूरी फिल्म को अपनी मन की आंखों से देख पाने की क्षमता रखते थे।

राजकपूर संगीत को एक घटक के रूप में नहीं अपितु वे इसे प्राणबिदु मानते थे। उनके शब्दों में हमारा जन्म संगीत से जुड़ा हुआ है।हमारी मृत्यु एक विलाप से जुड़ी है, जो की 'हमारे देश में, हमारा पूरा अस्तित्व, हमारी जीवनशैली, हमारी सांस्कृतिक संरचना संगीत से जुड़ी हुई है। हमारा जीवन संगीत ही है। हमारे रीति-रिवाज, हमारे भगवान, हमारी देवी, हमारे त्यौहार, हमारी फसल, अब कुछ संगीत, संगीत,

संगीत है... जहां शब्द विफल हो जाते है, वहां संगीत ही है जो सभी शब्दों को एकसाथ रखने से कहीं अधिक संदेश देता है।'[9] और निःसंदेह ही राजकपूर ने अपनी इस कथनी को फिल्मों में बखूबी उतारा भी।

संदर्भ सूची :

1. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C_%E0%A4%95%E0%A4%AA%E0%A5%82%E0%A4%B0
2. https://samalochan.com/raj-kapoor/
3. https://www.lmtmusicacademy.co.uk/the-role-of-music-in-film
4. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C_%E0%A4%95%E0%A4%AA%E0%A5%82%E0%A4%B0
5. वही
6. https://cinemanthan.com/2013/09/27/merajutahaijapani/
7. वही
8. https://samalochan.com/raj-kapoor/
9. https://anuradhawarrier.blogspot.com/2015/12/raj-kapoor-musically_14.html

राज कपूर की फिल्मों में महिलाओं का वस्तुकरण और विरोधाभास : 'सत्यम शिवम सुन्दरम' के सन्दर्भ में

ज्योति शर्मा

सहायक प्राध्यापिका

चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, मोहाली, पंजाब, भारत

राज कपूर हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के एक बड़े अभिनेता, निर्माता और निर्देशक रहे हैं, जिनकी फिल्में समाजिक मुद्दों और मनोरंजन का अच्छा मेल होती थीं। उनके सिनेमा में महिलाओं का चित्रण अलग-अलग तरीके से हुआ है। राज कपूर ने अपनी फिल्मों में महिलाओं को अहम रोल में दिखाने में बड़ी भूमिका निभाई है। आमतौर पर, उनकी फिल्मों में महिलाओं का चित्रण मजबूत और सशक्त तरीके से किया गया है। हालांकि, उनकी कुछ फिल्मों जैसे 'सत्यम शिवम सुंदरम' और 'राम तेरी गंगा मैली' में महिलाओं का चित्रण ऐसा किया गया है, जिससे उन पर दर्शनरति यानि 'वॉययूरिज़्म' का आरोप भी लगाया गया। इस प्रपत्र का उद्देश्य राज कपूर की फिल्मों में महिलाओं के चित्रण को समझना और उसका विश्लेषण करना है।

मुख्य शब्द :

राज कपूर, महिलाएँ, वॉययूरिज़्म, सिनेमा, फिल्म

राज कपूर को हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के सबसे प्रसिद्ध अभिनेता, निर्देशक और निर्माता होने के बावजूद, उन्हें एक विवादास्पद रचनात्मक व्यक्ति भी माना जाता था। राज कपूर को अक्सर एक ऐसे फिल्म निर्माता के रूप में देखा जाता था जिनकी फिल्मों में सामाजिक मुद्दों को उठाया जाता था। उनकी फिल्में जैसे 'आवारा' 'जिस देश में गंगा बहती है' और 'श्री 420' बहुत हिट हुईं और उन्हें एक गंभीर फिल्म निर्माता के रूप में जाना जाने लगा। ये फिल्में भारतीय सिनेमा में यथार्थवादी फिल्मों का अच्छा उदाहरण मानी गईं। उन्होंने अपनी फिल्मों के पात्रों-चाहे वे पुरुष हों या महिला-पर किसी प्रकार की महानता थोपने की कोशिश की। उन्होंने फिल्मों में आम आदमी की छवि को बढ़ावा दिया,तीसरी कसम में नायक की भूमिका में उन्होंने ऐसे व्यक्ति को चरित्रार्थ किया जो अपनी मुश्किलों के बावजूद खुश रहता है और मुस्कुराता रहता है। जब बात उनकी फिल्मों में महिलाओं के चित्रण की होती है, तो राज कपूर ने महिलाओं के सशक्त व्यक्तित्व को उभारा वहीं दूसरी तरफ उन को महिलाओं को नग्नता और आकर्षण का साधन दिखाने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा। हालांकि, राज कपूर ने कभी इस आलोचना को नकारा नहीं। उनका कहना था- 'उनके लिए महिलाओं का चित्रण सिर्फ उनके फिल्म निर्माण का एक हिस्सा था, न कि कुछ और'। राज कपूर ने हमेशा अपनी फिल्मों के अंतिम परिणाम पर ध्यान दिया। कभी-कभी, अपने फिल्मी किरदारों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए, उन्होंने महिलाओं का वस्तुकरण भी किया। राज कपूर का व्यक्तित्व भी बहुत जटिल था और उनकी फिल्मों में महिलाओं के पात्र भी उतने

ही जटिल थे। उन्हें किसी एक तरीके से समझना मुश्किल था।

राज कपूर एक ऐसे व्यक्ति थे जिनमें विरोधाभास थे। उनकी फिल्में पूर्वी यूरोप के देशों में भी बहुत प्रसिद्ध हुईं, जिनका मुख्य विचार साम्यवादी था। इसके बावजूद, उनकी फिल्मों में भारतीय परंपराओं और पौराणिक प्रतीकों का भी भरपूर उपयोग किया गया। उनकी फिल्मों में आधुनिकता और पारंपरिकता दोनों का मिश्रण दिखाई देता है और यह उनके महिला पात्रों के बारे में भी सही है। राज कपूर की फिल्मों में महिलाओं का चित्रण दो चरणों में देखा जा सकता है। नरगिस दत्त का समय जब वह बरसात फिल्म की शूटिग कर रही थी, 28 वर्ष की थीं और फिर नरगिस दत्त के बाद का समय। नरगिस के द्वारा निभाए गए किरदार कभी भी कमजोर नहीं होते थे। उदाहरण के तौर पर, फिल्म 'बरसात' में भी नरगिस और निम्मी ने अपनी भूमिकाओं के जरिए फिल्म की सफलता में अहम योगदान दिया। नरगिस ने अपनी भूमिका में एक गहरा प्रेम और जुनून दिखाया, जो पहले कभी नहीं देखा गया था। इस फिल्म में नायिकाओं की पारंपरिक छवि नहीं दिखाई गई, बल्कि वे अपने भावों को बिना किसी हिचकिचाहट के बयाँ करती थीं।

राज कपूर की फिल्म 'आवारा' में नरगिस ने एक स्वतंत्र और सशक्त किरदार निभाया, जो फिल्म में राज कपूर के साथ एक मजबूत भूमिका में दिखी। 'श्री 420' में भी नरगिस का किरदार महत्वपूर्ण था, जिसमें वह रज्जू की आंतरिक आवाज़ बनीं, जो गलत रास्ते पर जा रहा था। राज कपूर के फिल्मों के नरगिस दत्त के बाद के दौर में महिलाओं के चित्रण में बदलाव दिखाई दिया। इस दौर में राज कपूर की फिल्मों में पहले जैसी मासूमियत और रोमांस की जगह कामुकता और नग्नता की ओर बढ़ने का रुझान था। राज कपूर की फिल्म 'जिस देश में गंगा बहती है' में इस बदलाव की शुरुआत हुई। इसी फिल्म का एक गीत 'ओ मैंने प्यार किया' में नायिका पद्मिनी की वेशभूषा इसकी गवाही देती है कि जहाँ इस फिल्म में समाज के हाशिए पर मौजूद डाकुओं के पुनर्वास की कहानी है वहीं इसी के साथ-साथ, पद्मिनी के शरीर को विशेष ध्यान में रखा गया था। इस फिल्म के प्रसिद्ध झरने के दृश्य और नायिकाओं को आधी गीली साड़ी में दिखाने का चलन यहीं से शुरू हुआ। इस बदलाव में कम्मो के किरदार की अहमियत कहीं खो गई। इस तरह, राज कपूर की फिल्मों में महिलाओं का चित्रण उनके फिल्म निर्माण के विकास के साथ बदलता रहा, जिसमें एक तरफ सशक्त और स्वतंत्र पात्र थे, तो दूसरी ओर कामुकता और नग्नता की ओर बढ़ती प्रवृत्तियाँ भी थीं।

राज कपूर की फिल्म 'संगम', जिसमें वजयंती माला मुख्य भूमिका में थीं, ने महिलाओं के चित्रण में एक नई दिशा दी। कुछ आलोचकों का मानना है कि जब पद्मिनी ने 'जिस देश में गंगा बहती है' में प्रवेश किया, तो राज कपूर ने महिलाओं को फिल्माने का तरीका बदल दिया। पहले जो फिल्मों में रोमांस और संवेदनशीलता थी, वह अब धीरे-धीरे कामुकता की ओर बढ़ने लगी। इस बदलाव को पूरी तरह से महसूस किया गया, खासकर 'मेरा नाम जोकर', 'बॉबी', 'सत्यम शिवम सुंदरम' और 'राम तेरी गंगा मैली' जैसी फिल्मों में, महिलाओं का चित्रण अधिक कामुक और शरीर के प्रदर्शन के रूप में हुआ। महिलाओं के चित्रण पर आलोचनाओं के बावजूद, राज कपूर को एक ऐसे फिल्म निर्माता के रूप में देखा जाता है जिन्होंने महिलाओं को सुंदर और आकर्षक तरीके से दिखाया। ऐसा लगता है कि उन्होंने महिलाओं को कामुकता के साथ शारीरिक रूप से प्रस्तुत करने का फैसला इसलिए किया क्योंकि प्रतियोगिता के उस दौर में वह अपनी फिल्मों की व्यावसायिक सफलता बनाए रखना चाहते थे। इसी कारण उन्होंने महिलाओं को एक अलग तरीके से दिखाने की कोशिश की। 'राम तेरी गंगा मैली' ने उस समय उभर रहे वीडियो ट्रेंड के बावजूद एक

बड़ी हिट साबित हुई।

इस प्रपत्र में राज कपूर की तीन फिल्मों-सत्यम शिवम सुंदरम, राम तेरी गंगा मैली-का विश्लेषण किया गया है, ताकि महिलाओं के किरदारों और उनसे जुड़े सामाजिक मुद्दों को समझा जा सके।

सत्यम शिवम सुंदरम 1978 में रिलीज़ हुई इस फिल्म के निर्माता और निर्देशक राज कपूर ही थे। फिल्म की मुख्य भूमिका में शशि कपूर, ज़ीनत अमान, पद्मिनी कोल्हापुरे और अन्य गौण पात्र थे। फिल्म में यह दिखाया गया है कि आध्यात्मिक प्रेम, जो दिल से होता है, वह शारीरिक प्रेम से कहीं ज़्यादा सच्चा होता है। फिल्म में प्रेम और सुंदरता को एक दार्शनिक और आध्यात्मिक तरीके से दिखाया गया है।

फिल्म का सारांश :

कहानी की नायिका रूपा (ज़ीनत अमान) का जीवन बचपन से ही कठिनाइयों से घिरा हुआ है। उसकी मां का निधन उसके जन्म के समय हो जाता है, और गांववाले उसे 'अभागन' मानते हैं। एक दुर्घटना में उसके चेहरे का आधा हिस्सा जल जाने के कारण उसकी शादी नहीं हो पाती।रूपा की मुलाकात राजीव (शशि कपूर) से होती है, जो उसकी खूबसूरत आवाज़ से प्रभावित होकर उससे प्रेम करने लगता है। हालांकि, वह रूपा के जले हुए चेहरे से अनजान है। जब राजीव को शादी के बाद सच पता चलता है, तो वह उसे ठुकरा देता है। रूपा दोहरी भूमिका में जीने लगती है- एक पत्नी और दूसरी घूंघट में छिपी प्रेमिका। अंततः, एक प्राकृतिक आपदा के दौरान, राजीव यह समझता है कि सच्चा प्रेम बाहरी सुंदरता से नहीं, आत्मा से होता है, और वह रूपा को पूरी तरह से स्वीकार कर लेता है।

फिल्म और नायिका का विश्लेषण :

'सत्यम शिवम सुंदरम' एक गहरी फिल्म है, जिसमें बहुत सारी महत्वपूर्ण बातें छिपी हैं। राज कपूर ने इस फिल्म में एक खास विचार को पेश किया है, जिसमें पौराणिक तत्वों का इस्तेमाल किया गया है। फिल्म का नाम ही यह बताता है कि भगवान ही सच्चे हैं, और सच्चा प्रेम ही सबसे श्रेष्ठ होता है। फिल्म में यह भी दिखाया गया है कि सुंदरता सिर्फ बाहर से नहीं होती, यह दिल और आत्मा में होती है। ये विचार हिंदू पौराणिक कथाओं में गहरे रूप से मौजूद हैं।

फिल्म की मुख्य पात्र रूपा का किरदार पौराणिक राधा के समान दिखाया गया है। रूपा और राजीव का रिश्ता राधा और कृष्ण जैसा है। फिल्म में बहुत से धार्मिक प्रतीक और संकेत दिखाए गए हैं, जो पूरी कहानी में गहरे अर्थ जोड़ते हैं। यह फिल्म राज कपूर की एकमात्र ऐसी फिल्म है, जिसमें उन्होंने धर्म और आध्यात्मिकता को कामुकता के साथ मिलाकर दिखाया है। रूपा को एक पुजारी की बेटी के रूप में दिखाया गया है, जिससे उसके साथ धर्म और आध्यात्मिकता जुड़ी हुई हैं। राज कपूर ने इस फिल्म को अपने करियर का सबसे बड़ा प्रयोग माना था, और उन्होंने कहा था कि यह फिल्म बनाना बड़ा जोखिम था क्योंकि उस वक्त समाज में सेक्स और हिंसा को लेकर सोच अलग थी। हालांकि, राज कपूर का उद्देश्य सही था, लेकिन उस समय की फिल्मों के रुझान को देखते हुए, वह भी पूरी तरह से नहीं जानते थे कि उनकी फिल्म सफल होगी या नहीं। इसी कारण, फिल्म में रूपा का किरदार कहीं न कहीं वासना का प्रतीक बन जाता है, और दर्शक उसे केवल एक सुंदरता के रूप में देखते हैं, न कि एक गहरे और सच्चे किरदार के रूप में।

फिल्म में यह विरोधाभास स्पष्ट होता है जैसे कि राजीव कैसे रूपा से बिना उसका चेहरा देखे आकर्षित हो गया। रूपा का किरदार कभी कामुकता की ओर बढ़ता है, और कभी वह राधा-कृष्ण जैसे प्रेम के प्रतीक के रूप में सामने आती है। ज़ीनत अमान की छवि उस वक्त ग्लैमरस गर्ल की थी और

राज कपूर ने इस ग्लैमर को रूपा के किरदार में दिखाने से खुद को रोक नहीं पाए।

राज कपूर ने अपनी पिछली फिल्मों में महिला पात्रों को बहुत सुंदरता और सुसंस्कृत तरीके से दिखाया था, लेकिन इस फिल्म में रूपा के किरदार को सही तरीके से पेश नहीं किया। फिल्म में प्रेम को दिखाने के नाम पर कई बार कामुकता और सेक्स का गलत तरीके से इस्तेमाल किया गया, जो रूपा के चरित्र को कमजोर करता है।

राज कपूर की फिल्म में दिखाए गए विचार महत्वपूर्ण हैं। खासकर भारतीय समाज में कई लड़कियाँ अपनी त्वचा के रंग या चेहरे की विकृति के कारण शादी के योग्य नहीं मानी जातीं। अगर राज कपूर इस फिल्म में सेक्स और पौराणिकता को जरूरत से ज्यादा ना घुसेड़ते, तो यह फिल्म और रूपा का किरदार एक क्लासिक बन सकता था।

फिल्म में रूपा के किरदार के दो पहलू दिखाए गए हैं- एक तरफ वह राजीव की प्रेमिका हैं, और दूसरी तरफ उसकी पत्नी। राजीव का व्यवहार एक सिज़ोफ्रेनिक प्रेम जैसा है, जिसमें वह एक ही महिला से एक ही समय में प्रेम और घृणा कर सकता है। यह विरोधाभास दर्शाता है कि कभी-कभी हमारी धारणा और वास्तविकता में अंतर होता है।

हिंदी फिल्मों में अक्सर महिला पात्र पुरुषों की धारणा के हिसाब से बनते हैं, और यही रूपा के साथ हुआ। राजीव की धारणा के अनुसार रूपा का प्यार असल में वह रूपा नहीं है, जिसकी राजीव को तलाश थी।

रूपा के चरित्र और महिलाओं के वस्तुकरण पर विचार :

अगर हम हिंदी सिनेमा में महिलाओं के किरदारों और उनकी भूमिकाओं को देखें, तो रूपा का चरित्र महिलाओं के वस्तुकरण का उदाहरण लगता है। वस्तुकरण का मतलब है जब किसी महिला को सिर्फ एक वस्तु के रूप में देखा जाता है, न कि एक इंसान के रूप में। रूपा के किरदार में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो इस वस्तुकरण से जुड़ी होती हैं :

- एक ऐसी पोशाक, जो बहुत पारंपरिक और आकर्षक होती है।
- जब महिला पात्र बारिश या झरने के पास आकर रोमांटिक अंदाज में दिखती है।
- ऐसा कामुक ब्लाउज पहनना जिसमें पीठ या कमर का हिस्सा दिखे।
- जांघ, कमर और पीठ का ज्यादा हिस्सा दिखाना।

रूपा का 'दृश्यमान और अदृश्य' पहलू :

रूपा, जिसे राजीव प्रेम करता है, असल में उसकी कल्पना है। राज कपूर ने इस विरोधाभास के माध्यम से दिखाया कि वास्तविक प्रेम बाहरी सौंदर्य से परे है।

आवाज़ और आत्मा की सुंदरता :

रूपा की आवाज़ को उसकी दिव्यता का प्रतीक बनाया गया है। सुबह की उसकी गूंजती हुई आवाज़ को निर्देशक ने एक शुद्ध, अप्रशिक्षित कला के रूप में प्रस्तुत किया। रूपा का सुबह-सुबह गाना गाने का दृश्य सूरज के उगने और दिन की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। यह भी महत्वपूर्ण है कि रूपा कोई पेशेवर गायिका नहीं है, बल्कि वह एक साधारण महिला है, और उसकी आवाज़ शुद्ध और अप्रशिक्षित है। यह दिखाने की कोशिश की गई है कि रूपा की आवाज़ एक दिव्यता से भरपूर है, जो उसे सांसारिक मोह-माया से ऊपर उठाती है।

आलोचनात्मक दृष्टिकोण :

राज कपूर की कल्पना और प्रस्तुति कई जगह विफल होती दिखती है।पहला, ज़ीनत अमान के ग्लैमरस व्यक्तित्व को आध्यात्मिक रूपा के चरित्र में ढालने में कठिनाई दिखती है। दूसरा, सेक्स और ग्लैमर पर निर्देशक की निर्भरता फिल्म के गहरे संदेश को कमजोर करती है और तीसरा, राजीव और

रूपा के बीच के संबंध को कभी-कभी अनिश्चित और अतार्किक तरीके से दिखाया गया है।

सत्यम शिवम् सुंदरम में राज कपूर ने कई नये प्रयोग किये भारतीय और पाश्चात्य तत्वों का मेल, लौकिकता और आध्यात्मिकता का मेल, नायिका प्रधान किरदार, समाज पर व्यंग्य, मनुष्य की सोच के अलग-अलग पहलू, इत्यादि प्रस्तुत किये। उनकी फिल्मों में महिलाओं का वस्तुकरण तो हुआ है, इस बात में कोई शक नहीं लेकिन दूसरी तरफ यह फ़िल्म समाज को यह सीख देती है कि हमें किसी की बाहरी दिखावट के आधार पर उसे आंकने की बजाय उसकी आंतरिक विशेषताओं और अच्छाईयों को महत्व देना चाहिए। यह फिल्म आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि यह हमें अपने अंदर झांकने और समाज में व्याप्त सतही सोच को बदलने के लिए प्रेरित करती है। सत्य, पवित्रता, और वास्तविक सुंदरता का यह संदेश जीवन के हर पहलू में मार्गदर्शक बन सकता है।

संदर्भ :

1. अग्रवाल, प्रह्लाद (2009) आधी हकीकत आधी फसाना। न्यू दिल्ली, भारतः राजकमल प्रकाशन।
2. जैन, मधु (2005)द कपूर, द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा, न्यू दिल्लीः पेंगुइन इंडिया।
3. नंदा, रितु (2002) राज कपूर स्पीकस, न्यू दिल्लीः पेंगुइन इंडिया।
4. दसनायके, विमल और साहाई, मालती (1988) राज कपूर की फिल्में, विमर्शों का सामंजस्य, न्यू दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस।
5. फिल्म- जिस देश में गंगा बहती है (1960)
6. फिल्म- सत्यम शिवम् सुन्दरम (1978)

राज कपूर की वैश्विक लोकप्रियता

नूरमतोवा ज़ुबैदा दिलशाद किज़ी
अध्यापक, शोधार्थी SSEAL विभाग
ताशकंत स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएन्टल स्टडीज़

यह लेख अभिनेता और निर्देशक के रूप में राज कपूर के भारतीय सिनेमा पर महत्वपूर्ण प्रभाव का विश्लेषण करता है। उनकी विविध फिल्मी कृतियाँ, जैसे- 'आवारा', 'श्री 420', 'बॉबी', 'मेरा नाम जोकर' और 'प्रेम रोग' मनोरंजन को गहन सामाजिक विषयों के साथ मिश्रित करने की उनकी अद्वितीय कौशल को उजागर करती हैं। कपूर का सिनेमा प्रयास जटिल कथानकों और सामाजिक चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करता है, जो अक्सर उनके समय में उन्नत माने जाने वाले विषयों पर विचार-विमर्श शुरू करता है। उनकी कलात्मक दृष्टि का न केवल बॉलीवुड पर गहरा प्रभाव पड़ा बल्कि वह सार्वभौम मानवीय भावनाओं के साथ भी गूँजता रहा, जिससे उनकी फिल्में वैश्विक फिल्म जगत की कालजयी कृतियों के रूप में स्थापित हुईं।

राज कपूर, भारतीय सिनेमा के महानायक, एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने अपने अनोखे अंदाज और सृजनशीलता से न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में अपनी लोकप्रियता का परचम लहराया। उनका फिल्म निर्माण के प्रति अद्वितीय दृष्टिकोण और संगीतमय फिल्में आज भी हर पीढ़ी के दर्शकों को आकर्षित करती हैं।

राज कपूर का जन्म 14 दिसंबर 1924 को पेशावर में हुआ था। वह भारतीय सिनेमा के प्रतिष्ठित कपूर परिवार से थे। राज कपूर ने 1940 के दशक के उत्तरार्ध में फिल्मी करियर की शुरुआत की और अपनी पहली हिट फिल्म 'बरसात' (1949) से ही वे लोगों के दिलों में बस गए। उनकी फिल्मों ने सामाजिक मुद्दों, मानवीय भावनाओं और प्रेम कहानियों को बड़े ही सजीव और संवेदनशील तरीके से पेश किया।

राज कपूर ने अपने करियर की शुरुआत मात्र 11 वर्ष की उम्र में फिल्म 'इंकलाब' (1935) से की थी।[4] उन्होंने न केवल एक अभिनेता के रूप में बल्कि एक निर्देशक और निर्माता के रूप में भी अपनी पहचान बनाई। उनकी फिल्में जैसे 'आवारा', 'श्री 420', 'मेरा नाम जोकर' और 'संगम' ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई।[4]

राज कपूर की फिल्मों में सामाजिक मुद्दों को रोमांटिक और मनोरंजक तरीके से प्रस्तुत किया गया, जिससे वे न केवल भारत में बल्कि सोवियत संघ और मध्य-पूर्व में भी बेहद लोकप्रिय हो गए। उनकी फिल्म 'आवारा' का गाना 'आवारा हूँ' सोवियत संघ में इतना लोकप्रिय हुआ कि लोग इसे गुनगुनाते थे।[4]

उनकी फिल्मों में संगीत का विशेष महत्व था। शंकर-जयकिशन, हसरत जयपुरी, और शैलेन्द्र जैसे संगीतकारों और गीतकारों के साथ उनकी जोड़ी ने कई यादगार गाने दिए। राज कपूर ने लता मंगेशकर और मुकेश जैसे गायकों को भी अपनी फिल्मों में प्रमुखता से प्रस्तुत किया।[4]

राज कपूर की लोकप्रियता का एक और कारण उनकी फिल्मों में मानवीय संवेदनाओं का चित्रण था। उन्होंने अपनी फिल्मों में आम आदमी की समस्याओं और संघर्षों को दिखाया, जिससे दर्शक उनसे जुड़ाव महसूस करते थें।[4] उनकी फिल्में न केवल मनोरंजन करती थीं बल्कि समाज को एक संदेश भी देती थीं।

राज कपूर की वैश्विक लोकप्रियता :

1. **प्रेरणादायक कहानियां :** राज कपूर की फिल्में ऐसी कहानियों पर आधारित थीं जो मानवीय मूल्यों और सामाजिक मुद्दों को बेहद रोचक और मार्मिक तरीके से प्रस्तुत करती थीं। 'आवारा', 'श्री 420' और 'मेरा नाम जोकर' जैसी फिल्मों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सराहना प्राप्त की।
2. **संगीत :** उनकी फिल्मों का संगीत सदाबहार और अमर माना जाता है। राज कपूर ने संगीतकार जोड़ी शंकर-जयकिशन, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल और आर. डी. बर्मन के साथ काम किया, जिन्होंने अद्वितीय संगीत दिया। गाने जैसे 'मेरा जूता है जापानी' और 'आवारा हूँ' विश्वभर में लोकप्रिय हुए।
3. **आकर्षक व्यक्तित्व :** राज कपूर का चरित्र और अभिनय शैली बहुत ही आकर्षक थी। वे एक ऐसे कलाकार थे जो अपने प्रत्येक किरदार को दिल से जीते थे और अपने अभिनय से दर्शकों के दिलों को छू जाते थे।
4. **सामाजिक संदेश :** उनकी फिल्मों में सामाजिक मुद्दों और मानवीय मूल्यों पर गहरा ध्यान दिया गया। 'श्री 420' में उन्होंने ईमानदारी और देशभक्ति का संदेश दिया, जबकि 'आवारा' ने पारिवारिक संबंधों और परवरिश के प्रभाव को उजागर किया।
5. **अंतर्राष्ट्रीय पहचान :** राज कपूर की फिल्में न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी पसंद की गईं। विशेषकर सोवियत संघ में उनकी फिल्मों को बहुत प्यार मिला। उन्होंने भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित किया।

राज कपूर ने अपने जीवनकाल में कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए। उनकी फिल्मों ने भारतीय सिनेमा में एक नया अध्याय जोड़ा और वे हमेशा के लिए एक आइकन बने रहेंगे। उनकी विरासत आज भी जिंदा है और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। राज कपूर का संगीतमय और सृजनात्मक दृष्टिकोण आज भी प्रेरणादायक है और उनकी फिल्में भारतीय सिनेमा की धरोहर बन चुकी हैं।

राज कपूर को उनके योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें 'पद्म भूषण' और 'दादासाहेब फाल्के पुरस्कार' शामिल हैं।[4] उनकी विरासत आज भी जीवित है और उनकी फिल्में नए दर्शकों को प्रेरित करती हैं।

राज कपूर को अपने शानदार करियर के दौरान कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए, जिन्होंने भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा में उनके अद्वितीय योगदान को मान्यता दी :

1. **फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार :** उन्हें कई फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें 'अनाड़ी' और 'संगम' जैसी फिल्मों के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और सर्वश्रेष्ठ निर्देशक शामिल हैं।
2. **राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार :** उन्हें प्रतिष्ठित राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार प्राप्त हुए, जिन्होंने भारतीय सिनेमा में उनके कलात्मक उत्कृष्टता और योगदान को मान्यता दी।
3. **पद्म भूषण :** 1971 में, भारत सरकार ने उन्हें कला के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए पद्म भूषण, तीसरा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, प्रदान किया।
4. **दादा साहेब फाल्के पुरस्कार :** 1987 में, उन्हें दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जो भारतीय सिनेमा में आजीवन उपलब्धि के लिए सर्वोच्च पुरस्कार है।

5. **अंतर्राष्ट्रीय मान्यता :** उनकी फिल्मों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा मिली, जिसमें विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों, जैसे कान्स, में कई पुरस्कार और प्रदर्शन शामिल हैं।

6. **आजीवन उपलब्धि पुरस्कार :** उन्हें विभिन्न फिल्म संगठनों द्वारा कई आजीवन उपलब्धि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिन्होंने सिनेमा पर उनके स्थायी प्रभाव का जश्न मनाया।

राज कपूर के पुरस्कारों का संग्रह उनके कलात्मक प्रतिभा और भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर ऊँचाई पर पहुंचाने में उनके प्रभावशाली भूमिका को दर्शाता है।

राज कपूर की वैश्विक लोकप्रियता का मुख्य कारण उनकी फिल्मों की सार्वभौमिकता और मानवीयता थी। उन्होंने भारतीय सिनेमा को एक नई दिशा दी और अपनी कला के माध्यम से दुनिया भर में भारतीय संस्कृति का प्रचार किया।

राज कपूर, भारतीय सिनेमा के एक महानायक, ने उद्योग को आकार देने वाले गहरे योगदान दिए :

1. **नवाचारी कहानी कहने की शैली :** वह सामाजिक मुद्दों को मनोरंजन के साथ जोड़ने के लिए जाने जाते थे, गरीबी, प्रेम और सामाजिक मानदंडों जैसे मुद्दों को संबोधित करते थे। उनकी फिल्मों में अक्सर ऐसे सार्वभौमिक संदेश होते थे जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिध्वनित होते थे।

2. **सांगीतिक विरासत :** कपूर ने शंकर-जयकिशन जैसे संगीतकारों के साथ मिलकर यादगार साउंडट्रैक बनाए। उनकी फिल्मों के गाने समय के साथ हिट बन गए, जो वैश्विक स्तर पर दर्शकों को पसंद आए।

राज कपूर ने कई प्रतिष्ठित फिल्में बनाई जो बॉलीवुड पर अमिट छाप छोड़ गईं। उनके सबसे उल्लेखनीय कार्यों में शामिल हैं :

1. **आवारा (1951) :** यह फिल्म गरीबी और न्याय जैसे विषयों के नाटकीय प्रस्तुति के लिए प्रसिद्ध है। इसे अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली और इसमें 'आवारा हूँ' जैसा यादगार गीत था।

2. **श्री 420 (1955) :** अपने सामाजिक टिप्पणी के लिए जानी जाने वाली इस फिल्म ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के भारत में आम आदमी के संघर्षों और सपनों को दर्शाया। 'मेरा जूता है जापानी' गीत विशेष रूप से प्रसिद्ध हुआ।

3. **बरसात (1949) :** एक रोमांटिक ड्रामा जिसने राज कपूर की प्रतिभा को एक निर्देशक और अभिनेता के रूप में स्थापित किया। फिल्म की संगीत और प्रमुख जोड़ी के बीच की रासायनिकता की आलोचकों ने प्रशंसा की।

4. **छलिया (1960) :** इस फिल्म ने भारत-पाकिस्तान विभाजन की पृष्ठभूमि में प्रेम और अलगाव के विषयों की खोज की, जिससे कपूर की विविध फिल्म निर्माण क्षमताएं सामने आईं।

5. **संगम (1964) :** यह फिल्म प्रेम और दोस्ती की खोज के लिए उल्लेखनीय थी और यह पहली फिल्मों में से एक थी जिसे विदेशी स्थानों पर शूट किया गया था, जिससे भविष्य की बॉलीवुड फिल्मों के लिए एक प्रवृत्ति स्थापित हुई।

6. **मेरा नाम जोकर (1970) :** राज कपूर के लिए एक व्यक्तिगत और महत्वाकांक्षी परियोजना, यह फिल्म एक जोकर की आंखों से जीवन पर विचार करती है। प्रारंभिक ठंडी प्रतिक्रिया के बावजूद, अब इसे एक पंथ क्लासिक माना जाता है।

7. **बॉबी (1973) :** ऋषि कपूर की शुरुआत वाली इस रोमांटिक ड्रामा ने एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक सफलता हासिल की, अपने समय के युवाओं को आकर्षित किया और बॉलीवुड में किशोर रोमांस को पुनर्परिभाषित किया।

8. **प्रेम रोग (1982) :** राज कपूर द्वारा निर्देशित, इस फिल्म ने सामाजिक मुद्दों को संबोधित किया, विधवा पुनर्विवाह पर ध्यान केंद्रित किया, जो अपने समय में एक साहसी और प्रगतिशील विषय था।

ये फिल्में न केवल राज कपूर की एक निर्देशक और अभिनेता के रूप में रेंज को दिखाती हैं बल्कि भारतीय सिनेमा में सामाजिक और सांस्कृतिक कथाओं में उनके योगदान को भी उजागर करती हैं।

राज कपूर की लोकप्रियता केवल भारतीय सिनेमा तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। उनकी फिल्मों की कहानी और संगीत गहन सामाजिक मुद्दों को छूते हुए भी सहज, सुलभ और मनोरंजक बने रहते हैं। उनके भावनात्मक परिप्रेक्ष्य ने उन्हें वैश्विक दर्शकों के दिलों में जगह दिलाई। रूस में उनकी लोकप्रियता एक उदाहरण है, जहाँ उनकी फिल्में और गाने बेहद पसंद किए जाते थे। भारतीय और विदेशी दर्शकों पर उनकी विशेष पकड़ ने उन्हें सिनेमा की सीमाओं से परे एक सांस्कृतिक प्रतीक बना दिया। राज कपूर अपनी बहुआयामी शैली, मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक प्रतिबद्धता के कारण आज भी प्रशंसित हैं और उनकी विरासत अगली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

राज कपूर का फिल्मी सफर

सोनाली शर्मा
शोधार्थी
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सिनेमा का उद्भव और विकास : 20वीं सदी का अभिव्यक्ति के माध्यमों में सबसे सशक्त माध्यम सिनेमा को ही माना जा सकता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित होने के कारण सिनेमा का मनोरंजन और जनसंचार माध्यम के रूप में विकास बड़ी तेजी से हुआ है। वर्तमान समय में मानव मन और बुद्धि को प्रभावित करने वाला सबसे सशक्त माध्यम सिनेमा को ही माना जा सकता है। प्रारंभ में मनुष्य ने पहले-पहल प्रकृति से प्रभावित होकर चित्र रचना प्रारंभ की थी। गुफाओं में जानवरों और पेड़-पौधों के चित्र इसके महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। मानव अपने प्रारंभिक विकास के समय से ही विविध प्रकार के कला माध्यमों के द्वारा अपनी भावनाओं को प्रकट करने का प्रयास करता रहा है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ मानव अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए नए-नए माध्यमों को खोजता आया है। मनुष्य ने अपनी आंगिक चेष्टाओं और धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से अपनी भावनाएँ ही नहीं, बल्कि मनोरंजन भी किया है। इसे और आगे तक ले जाने के लिए मनुष्य ने कैमरे और फोटोग्राफी का आविष्कार भी किया।

सिनेमा शब्द का अर्थ : वर्तमान में सिनेमा शब्द के अनेक पर्यायवाची शब्द प्रयोग में हैं। जैसे चलचित्र, छायाचित्र, मोशन, मूवी, फिल्म, पिक्चर आदि। इस प्रकार अनेक शब्दों का प्रयोग सिनेमा के लिए किया जाता है। हिंदी भाषा में इसे चलचित्र कहते हैं, जिसका अर्थ है चलते हुए बिम्ब। इसके अंतर्गत एक स्थान से दूसरे स्थान तक गति करते हुए चित्रों को दिखाया जाता है। डॉ. हरदेव बाहरी ने 'शिक्षार्थी शब्दकोश' में सिनेमा का अर्थ 'चलचित्र', 'छायाचित्र' तथा 'सिनेमा' देखने का भवन आदि दिया है। नालंदा विशाल शब्द सागर में 'सिनेमा' का अर्थ- वे चित्र जो पर्दे पर जीवित प्राणियों के समान काम करते हुए दिखाएं जाते हैं बताया गया है।'

राज कपूर का जन्म सन् 1924 में पाकिस्तान स्थित पेशावर में हुआ था। इनका मूल नाम रणबीर राज कपूर था। जब उनकी आयु 5 वर्ष की थी, तब उनके पिता इन्हें पेशावर से मुंबई ले आए थे। राज कपूर ने जब से होश संभाला तब से ही अपने पिता को खूब संघर्ष करते देखा और उन्हीं से जीवन के लिए प्रेरणा भी ली। इन्होंने पिता के साथ ही जीवन की त्रासदी को बहुत करीब से देखा और जाना था। पिता की तरह ही बचपन से ही अभिनय का शौक था, जब उनकी आयु 11 वर्ष थी, तब ही इन्होंने फिल्म 'इंकलाब' में एक बाल कलाकार के रूप में अभिनय किया था और फिर इसी नाजुक उम्र से ही उनके फिल्मी सफर की शुरुआत मानी जा सकती है। 'इंकलाब' के बाद राज कपूर ने छोटी-बड़ी अनेक फिल्मों में अपनी छोटी-बड़ी भूमिकाएं निभानी शुरू कर दीं। जिसमें मुख्य थीं- 'हमारी बात', 'गौरी', 'गोपीनाथ', 'वाल्मीकि', 'चित्तौर' और 'अमर प्रेम'; इसके साथ-साथ ही अपने पिताजी के सहयोग से

कई नाटकों में भी काम किया। इनके पिता पृथ्वीराज कपूर का मानना था कि 'फिल्म एक तकनीकी माध्यम है जिसके लिए उचित प्रशिक्षण लेना आवश्यक है।' राज कपूर ने अभिनय की प्रारंभिक शिक्षा अपने पिताजी से ही ली थी। बॉम्बे टॉकीज और पृथ्वी थिएटर की स्थापना इनके पिता द्वारा की गई और राज कपूर इनसे जुड़ गए। बॉम्बे टॉकीज में क्लैप बॉय एवं पृथ्वी थिएटर में अभिनय के साथ-साथ बतौर प्रोडक्शन मैनेजर और कला निर्देशक के रूप में भी काम करने लगे। इनका मानना था कि 'सीखना एक निरंतरता का नाम है जो सारी उम्र चलती रहती है, बशर्ते हम उस पर अमल करें।' उस समय निर्देशक अमिय चक्रवर्ती के निर्देशन में बनी फिल्म 'ज्वार भाटा' जो अभिनय सम्राट दिलीप कुमार की पहली फिल्म थी, जिसमें बतौर सहायक निदेशक के रूप में राज कपूर ने फिल्म निर्देशन की बारिकियों को समझा था। ऐसा माना जाता है जीवन एक निरंतर चलने वाली यात्रा है जिसकी अपनी गति होती है। इस सफर में चलते हुए कौन, कब और कहां आगे बढ़ जाता है या पीछे छूट जाता है यह कोई नहीं जान सकता। जीवन के सफर में कई ऐसी घटनाएँ या दुर्घटनाएँ आती हैं जिसके विषय में शायद ही पहले से किसी को मालूम होता है। ऐसी ही सुखद घटना राज कपूर के जीवन में भी घटित हुई थी।एक दिन एक गलती हो जाने पर निर्देशक केदार शर्मा ने राज कपूर को एक थप्पड़ मारा। जिससे राज कपूर अत्यंत निराश हो गए थे, परंतु अगले ही दिन निर्देशक केदार शर्मा ने राज कपूर को बुलाकर अपनी अगली फिल्म का नायक घोषित कर दिया। बतौर नायक की भूमिका में काम करने के लिए चुने जाने पर राज कपूर अत्यंत प्रसन्न हुए। केदार शर्मा के सुझाव से ही राज कपूर ने अपना मूल नाम रणबीर राज कपूर को बदलकर, संक्षिप्त में राज कपूर तक ही सीमित कर दिया। जो आगे चलकर बहुत प्रसिद्ध हुआ। इसी फिल्म में अभिनेत्री मधुबाला ने अपनी अहम भूमिका नायिका के रूप में निभाई। फिर 'नील कमल' राज कपूर की बतौर नायक की भूमिका में पहली फिल्म आई। इस फिल्म में अभिनय करने के दौरान यह जितना बढ़िया शॉट देते, उतनी बार केदार शर्मा उन्हें एक रुपया ईनाम के रूप में देते जाते थे और राज कपूर इस अनमोल राशि को खुशी-खुशी स्वीकार करते जाते थे। सन् 1946 में राज कपूर बॉम्बे टॉकीज के बाद, रणजीत स्टूडियो आ गए और यहाँ एक सहायक निर्देशक के रूप में काम करने लगे। इस तरह अभिनेता राज कपूर आसमान की बुलंदियों को छूने लगे एवं फिल्म अभिनय, फिल्म-निर्माण और निर्देशक के सक्रिय प्रशिक्षण के 2 वर्ष बाद सन् 1948 में राज कपूर ने अपनी ऐतिहासिक फिल्म-निर्माण संस्थान 'आर. के. फिल्मस' की स्थापना की। अपनी फिल्म 'आग' के निर्माण में राज कपूर अभिनेता के साथ-साथ निर्माता और निर्देशक भी बन गए। फिल्म 'आग' बॉक्स ऑफिस पर छा गई। जिसने दर्शकों का मन मोह लिया और राज कपूर की फिल्म निर्देशक के रूप में एक नई पहचान भी बन गई। फिर दूसरी फिल्म 'बरसात' सन् 1949 में रिलीज हुई और बॉक्स ऑफिस पर अत्यंत सफल भी रही। फिल्म की नायिका नरगिस और नायक राज कपूर की जोड़ी ने तो दर्शकों के मन को मोह ही लिया। इसके बाद राज कपूर और नरगिस की जोड़ी ऐसी जमी कि इनकी एक के बाद अनेक फिल्में सुपरहिट होती गईं। 'अंदाज' फिल्म भी सुपरहिट हुई थी।

सन् 1949 में मिली इन दोनों फिल्मों की सफलता के बाद राज कपूर ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और देखते ही देखते कुछ ही वर्षों में राज कपूर भारतीय सिनेमा के सबसे बड़े पहले 'शो मैन' बन गए और दर्शकों के दिलों पर राज करने लगे। राज कपूर एक सफल नायक, अभिनेता, निर्माता, निर्देशक बनकर हिन्दी फिल्म जगत के सामने आए, जिसकी कोई दूसरी मिसाल आज तक नहीं मिली। एक अभूतपूर्व व्यक्तित्व के धनी, दूरदृष्टि और पक्के इरादे से भरा हुआ फिल्मकार जिसको भारतीय संगीत की इतनी सूक्ष्म से सूक्ष्मतर जानकारी थी, उतनी आज

किसी दूसरे भारतीय फिल्मकार में शायद ही देखने को मिले।

राज कपूर की महत्त्वपूर्ण फिल्मों का ऐतिहासिक सफ़र इस प्रकार है :

1. **आवारा-सन् 1951 :** आवारा नामक राज कपूर की फिल्म को हिंदी सिनेमा के इतिहास में मिल का पत्थर माना जा सकता है। इस फिल्म ने नायक के रूप में राज कपूर को एक अलग पहचान दी। इसी फिल्म ने 27 साल के राज कपूर को वो ऊंचाई दी जिसको पाने के लिए बड़ा से बड़ा कलाकार लालायित रहता है। 'आवारा' फिल्म के कारण ही राज कपूर ने अंतर्राष्ट्रीय ख्याति भी पायी। उस समय पं. जवाहरलाल नेहरू के बाद सोवियत रूस में यदि कोई सर्वाधिक भारतीय लोकप्रिय व्यक्तित्व बना तो वह राज कपूर ही थे। 'आवारा' के बहाने राज कपूर ने तत्कालीन भारतीय युवाओं का प्रतिनिधित्व करने का सफल प्रयास किया एवं आजादी के बाद की बदलती हुई छवि को दिखाया। कैसे अमीर और गरीब की खाई तेजी से चौड़ी होती जा रही है, कैसे देश की सत्ता पर धनाढय वर्ग का दबदबा बढ़ता जा रहा है। यह वह समय था जब स्वतंत्र भारत का हर युवक सामाजिक छद्म परंपराओं और दकियानुसी रिवाजों के विरोध में जागरूक हो रहा था। आवारा फिल्म के गीतों ने सहज भावाभियक्ति के कारण ही देश और काल की सीमाओं को लांघा है :

आबाद नहीं, बरबाद सही,
गाता हूँ खुशी के गीत मगर।
जख्मों से भरा सीना है मेरा,
हँसती है मगर ये मस्त नज़र।।
दुनिया,ओ दुनिया -
मैं तेरे तीर का या तकदीर का मारा हूँ!
आवारा हूँ !!
या गर्दिश में हूँ, आसमान का तारा हूँ !!

इसी फिल्म से भारतीय हिंदी सिनेमा को फिल्म कला और व्यवसाय का एक नया मंत्र मिला। इस फिल्म से हिंदी फिल्म संसार को एक बड़ा अंतरराष्ट्रीय बाजार और व्यापक दर्शक वर्ग मिला। आवारा फिल्म को आधार बनाकर तब से आज तक न जाने कितनी फिल्मों की पटकथाएँ लिखी जा चुकी हैं।

2. **आह-सन् 1953 :** इस फिल्म में राज कपूर ने बतौर निर्माता और अभिनेता के रूप में काम किया। इस फिल्म की कथा एक त्रिकोणीय प्रेम विषय पर आधारित थी। इस फिल्म के गीत और संगीत बहुत लोकप्रिय हुए थे।

3. **बूट पॉलिश-सन् 1954 :** यह फिल्म बच्चों को केंद्र में रखकर लिखी गई थी। यह फिल्म खास दर्शक वर्ग के अतिरिक्त ज्यादा सफल नहीं हो पाई।

4. **श्री 420 :** फिल्म आवारा की कड़ी में यह दूसरी फिल्म कही जा सकती है। आवारा की तरह ही बॉक्स ऑफिस पर यह सुपरहिट रही, इसके गीत-संगीत भी काफी लोकप्रिय रहे। इस फिल्म ने फिर से राज कपूर को अपने समय का सर्वश्रेष्ठ, निर्माता, निर्देशक और अभिनेता साबित कर दिया। इस फिल्म से राज कपूर को केवल सफलता ही नहीं मिली, देश-विदेश में खूब सराहना भी प्राप्त हुई और यह अपने समय की सबसे अलग फिल्म थी। जिसमें उस समय सभ्यता और प्रगति की आड़ में पनप रही खोखली नैतिकता को पहचानने की कोशिश के साथ ही उसके संभावित खतरों से आगाह भी किया था।

5. **जागते रहो-सन् 1956 :** यह अपने समय की प्रयोगवादी नहीं एक यथार्थवादी फिल्म थी, इसलिए आज भी यह अपने ढंग की अकेली और अनोखी कृति मानी जा सकती है। इसमें सामाजिक जागरूकता को केंद में रखा गया है।

ऐसा माना जाता है कि 'जागते रहो' अपने समय से पहले ही बनाई गई फिल्म है। राज कपूर की यह एक ऐतेहासिक फिल्म है। आज भी पुनः प्रदर्शित होने पर वर्तमान पीढ़ी उसे देखकर विस्मित हो उठती है। कुछ समीक्षकों ने इसे राज कपूर की सर्वश्रेष्ठ फिल्म के रूप में स्वीकार किया है।

6. **अब दिल्ली दूर नहीं-सन् 1957 :** इस फिल्म में राज कपूर एक सफल निर्माता के रूप में हमारे सामने आते हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू के बच्चों के प्रति असीम अनुराग को आधार बनाकर इस फिल्म का ताना-बाना बुना गया है। अब दिल्ली दूर नहीं है फिल्म का कथानक है कि जब तक बच्चों के चाचा नेहरू प्रधानमंत्री हैं तब तक दिल्ली उनके निकट ही है। नेहरूजी के शासन में बच्चों के साथ अन्याय नहीं हो सकता है।

7. **अनाड़ी-सन् 1959 :** राज कपूर द्वारा निर्मित अनाड़ी नामक फिल्म भी अपने समय की एक मशहूर फिल्म है। इसका एक गीत अत्यंत लोकप्रिय हुआ था-

सब कुछ सीखा हमने, ना सीखी होशियारी!

सच है दुनियाँ वालों कि हम हैं अनाड़ी !!

8. **जिस देश में गंगा बहती है-सन् 1960 :** यह एक आदर्शवादी फिल्म है। राज कपूर का दृष्टिकोण शुरू से ही आदर्शवादी रहा है, परंतु वे यथार्थ स्थितियों से टकराते हुए चलते रहते हैं। इस फिल्म की संरचना अधिक कसी हुई और प्रभावोत्पादक है। इसके गीत इतने प्रभावशाली हैं कि आज भी लोगों की जबान पर सुनाई देते हैं -

हम कल क्या थे, हम आज हैं क्या, इसका ही नहीं अभिमान हमें।

जिस राह पे आगे चलना है, है उसकी भी पहचान हमें।

अब हम तो क्या, सारी दुनिया ! सारी दुनिया से कहती है--

हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है !!

एक और मशहूर गीत जो आज भी दूरदर्शन और आकाशवाणी से प्रसारित होता है :

ओ बसंती! पवन पागल !!

ना जा रे, ना जा! रोको कोई..... !!

याद कर तूने कहा था,

प्यार से संसार है।

हम जो हारे दिल की बाजी,

ये तेरी ही हार है।।

आज भी यह गीत अनेक महिलाओं का प्रिय गीत है।

9. **छलिया-सन् 1960 :** छलिया फिल्म भी अपने समय की अत्यंत लोकप्रिय फिल्म है। स्वतंत्रता के समय विभाजन की त्रासदी को इसके कथानक का आधार बनाया गया है। इसके दो गीत अत्यंत प्रसिद्ध हुए थे :

1. डम डम डिगा डिगा....!!
2. छलिया मेरा नाम!

हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई सबको मेरा सलाम !!

10. **संगम-सन् 1964 :** यह फिल्म राज कपूर की अखिल भारतीय स्तर पर प्रदर्शित हुई थी। अपने समय की यह बहुत बड़ी लागत की फिल्म मानी जाती थी और बहुत लोकप्रियता को प्राप्त हुई। इस फिल्म के अनेक गीत आज भी दर्शकों का मनोरंजन करते हैं। आर. के. फिल्म के अंतर्गत बननेवाली यह पहली रंगीन फिल्म है। इससे पहले तक राज कपूर ने सभी श्वेत-श्याम फिल्मों का निर्माण किया था। 'संगम' राज कपूर की शौमैनशिप की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है।

11. **तीसरी कसम-सन् 1966 :** राज कपूर द्वारा अभिनीत यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सफलता प्राप्त नहीं कर पाई। हालांकि अभिनेत्री वहीदा रहमान के साथ राज कपूर का अभिनय दर्शकों को काफी पसंद आया था और इसके इस गीत ने बहुत लोकप्रियता प्राप्त की थी -

सजन रे झूठ मत बोलो,
खुदा के पास जाना है!
न हाथी है न घोड़ा है,
वहाँ पैदल ही जाना है !!

12. **मेरा नाम जोकर-सन् 1970 :** बड़े बजट की इस फिल्म में देश के बड़े-बड़े कलाकारों के साथ रूस की एक अभिनेत्री और जैमिनी सर्कस के कलाकारों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपने समय की यह फिल्म बड़े कैनवास की एक बड़ी फिल्म थी। इस फिल्म ने भारतीय हिंदी सिनेमा के निर्माण और प्रस्तुति के सारे रिकॉर्ड ही तोड़ दिए थे। ऐसी संवेदनशील और भव्य फिल्म इससे पहले भारत में नहीं बनी थी। परंतु बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म ने उतनी सफलता प्राप्त नहीं की, जितनी राज कपूर को अपेक्षा थी। इस फिल्म के न चलने से राज कपूर को आर्थिक हानि उठानी पड़ी। उनका बरसों का सपना टूट गया, फिल्म की विफलता ने राज कपूर को अंदर से तोड़ दिया।

13. **बॉबी-सन् 1973 :** राज कपूर ने नई टीम का गठन कर बॉबी फिल्म का निर्माण किया। क्योंकि राज कपूर नाम है मुश्किलों से लड़ने और अपनी मंजिल पर पहुँचने का। राज कपूर ने इस फिल्म में अपने पुत्र ऋषि कपूर को नायक की भूमिका में एवं नायिका डिंपल कपाड़िया को फिल्म में उतारा। उस समय युवा दर्शक वर्ग इस फिल्म को देखकर पागल-सा हो गया था। बॉबी फिल्म की भारी सफलता से राज कपूर के सिर पर फिर से नयी सफलता के नये रिकॉर्ड का ताज चमचमाने लगा। साथ में पिछली फिल्म का आर्थिक नुकसान भी दूर हो गया।

फिर इसी कड़ी में पाँच वर्ष बाद सन् 1978 में आयी फिल्म 'सत्यम शिवम सुंदरम।' इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर कोई खास प्रभाव नहीं दिखाया, परंतु इसके गीत जरूर लोकप्रिय हुए। इसके बाद 'बीवी और बीवी' सन् 1981, 'प्रेम रोग' सन् 1982, 'राम तेरी गंगा मैली' सन् 1985, आदि फिल्में राज कपूर को एक सफल निर्माता, निर्देशक के रूप में प्रतिष्ठित करती चली गईं।

अभिनेता राज कपूर ने जीवन को गंभीरता से देखा और परखा था। इसी कारण इनकी फिल्मों के चरित्रों में विविधता, आर्थिक संघर्ष, जन जीवन की व्यथा, सामाजिक-आर्थिक उत्पीड़न और शोषण के विभिन्न पहलूओं का फिल्माकंन हुआ है। राज कपूर की फिल्मों में नायक नायिका के प्रेम संबंधी अंतर विरोधों को बहुत ही मार्मिकता से अभिव्यक्ति मिली है। दर्शक इन दृश्यों से प्रभावित होकर आँसू बहाने लगते थे। जीवन की विविधता और जीवन की भव्यता इनकी फिल्मों में विशेष रूप से देखने को मिलती है। इसी कारण से ही राज कपूर को भारतीय सिनेमा का सबसे बड़ा शो मैन कहा जाता था। राज कपूर को अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार और सम्मानों से अलंकृत किया गया है जैसे -

1. बूट पॉलिश फिल्म को कांस फिल्मोत्सव सन् 1955 में बेबी नाज और संगीतकार शंकर - जयकिशन को विशेष पुरस्कार मिला।
2. जागते रहो फिल्म को कार्लोवी वरी फिल्मोत्सव सन् 1957 में ग्रां प्री पुरस्कार की प्राप्ति हुई।
3. संगम फिल्म को उत्तम सिनेमेटोग्राफी के लिए तेहरान विद्यापीठ सन् 1964 का विशेष सम्मान की प्राप्ति हुआ।
4. श्री 420 फिल्म को प्रादेशिक हिन्दी विभाग सन् 1957 द्वारा प्रशंसा पत्र मिला।

5. एक दिन रात्रे फिल्म को प्रादेशिक बंगाली विभाग द्वारा प्रशंसा पत्र सन् 1956 में प्राप्त हुआ। यह जागते रहो फिल्म का बंगला संस्करण है।
6. जिस देश में गंगा बहती है फिल्म को प्रादेशिक हिन्दी विभाग द्वारा प्रशंसा पत्र सन् 1960 में मिला। मेरा नाम जोकर फिल्म को उत्तम छायांकन के लिए राधू कर्माकर तथा उत्तम बाल कलाकार के लिये ऋषि कपूर सन् 1970 को पुरस्कृत किया गया।
7. सन् 1988 में हिन्दी सिनेमा का सर्वाधिक प्रतिष्ठित दादा साहब फाल्के अवार्ड से राज कपूर को सम्मानित किया गया।

इसी के साथ भारतीय सिनेमा का सबसे बड़ा अभिनेता, निर्देशक, निर्माता सदा-सदा के लिये सन् 1988 में इस दुनिया को अलविदा कह गया और अपने पीछे छोड़ गया हिंदी सिनेमा की एक अत्यंत समृद्ध परंपरा जो आज भी हिन्दी फिल्म संसार के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. भारतीय सिनेमा... एक अनन्त यात्रा... प्रसून सिन्हा, प्रकाशक श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली-110053
2. सिनेमा का इतिहास और फिल्मान्तरण.... डॉ. बिन्दु वेलसार, प्रकाशक.... अनन्य प्रकाशन, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032,
3. राज कपूर, आधी हकीकत आधा फसाना --- प्रहलाद अग्रवाल, प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली
4. राज कपूर, राहुल रवैल , प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
5. शो मैन राज कपूर---रितु नंदा, प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली
6. The Kapoors : The First Family of India Cinema—Madhu Jain.

भारतीय सिनेमा और समाजीकरण में राज कपूर का योगदान; आवारा, बूट पॉलिश और श्री 420 के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. दानिश खान
अतिथि सहायक प्रध्यापक
मानु हैदराबाद

मोहम्मद आमिर बद्र
प्रोडूसर,
आई एम सी, मानु, हैदराबाद

सारांश :

हिंदी फिल्मो के प्रसिद्ध अभिनेताओं व निर्माताओं में राज कपूर का नाम शीर्ष सूची में आता है। आज़ादी के बाद से राज कपूर को एक सफल फिल्म निर्माता के रूप में जाना जाता है। पचास के दशक के मध्य तक भारतीय सिनेमा में राजकपूर कि फिल्मों का समाज के उपर व्यापक असर होगया था। इनकी कुछ प्रसिद्ध फ़िल्में जिसमे समाज से जुड़े मुद्दों को अच्छी तरह चित्रित किया गया है। यह अध्ययन राजकूपर कि तीन प्रसिद्ध फिल्मों क्रमशः आवारा, बूट पॉलिश और श्री 420 पर आधारित है इन फिल्मों में समाज के मुद्दों को कैसे दिखाया गया है उसी का विश्लेषण किया गया है। और इस अध्ययन में गुणात्मक समाग्री विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है। इन चुने तीनो फिल्मों में प्रस्तुत चरित्र और समाज के मुद्दों कि व्याख्या कि गई है। इसके साथ ही इन प्रमुख फिल्मों को समाज के मुद्दों के आधार पर चित्रित और आज़ादी के बाद के समस्याओं पर आधारित होने से इस अध्ययन में शामिल किया गया है।

मुख्य शब्द :

राजकपूर, समाजीकरण, भारतीय सिनेमा, चित्रित आवारा, बूट पॉलिश और श्री 420, समाज इत्यादि

परिचय :

भारतीय सिनेमा, जिसे बॉलीवुड के नाम से भी जाना जाता है, ने अपनी एक अनोखी पहचान बनाई है। यहां बनने वाली फिल्में न केवल भारतीय दर्शकों के बीच लोकप्रिय हैं, बल्कि दुनियाभर में भी सराही जाती हैं। भारतीय सिनेमा के कई कलाकारों और फिल्म निर्माताओं ने अपने काम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है, जिनमें राज कपूर का नाम शीर्ष पर आता है।

भारतीय सिनेमा को समाज का आईना कहा जाता है और यह प्रारंभ से ही समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम रहा है। इसकी शुरुआत 1913 में दादा साहेब फाल्के की पहली मूक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' से हुई थी। यह फिल्म भारतीय पौराणिक कथाओं पर आधारित थी और उस समय के समाज के लिए एक नई दिशा का प्रतीक बनी। इसके बाद, 1931 में भारतीय सिनेमा की पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' रिलीज़ हुई, जिसने सिनेमा के भविष्य की नींव रखी।

1940 और 1950 के दशक भारतीय सिनेमा के लिए स्वर्ण युग माने जाते हैं। सत्यजीत रे, मृणाल सेन और राज कपूर जैसे महान फिल्म निर्माताओं ने

इस दौर में अपनी अनोखी शैली से दर्शकों के दिलों में जगह बनाई। राज कपूर की फिल्मों ने आम आदमी की समस्याओं, गरीबी, भुखमरी और सामाजिक असमानताओं को बहुत संवेदनशीलता के साथ पर्दे पर उतारा। 1981 में रघुनाथ रैना ने लिखा कि, 'जो चीज़ नए भारतीय सिनेमा को पुराने सिनेमा से अलग करती है, वह है उदार और मानवीय मूल्यों का समावेश, जो तत्कालीन समस्याओं के प्रगतिशील समाधानों को अपनाता है। यह गरीबों और उत्पीड़ितों की दुर्दशा के प्रति संवेदनशीलता और बदलाव की दिशा में मानवता की अंतिम उम्मीद को व्यक्त करता है।' (चक्रवर्ती, 1993)

भारतीय सिनेमा में यथार्थवाद की शुरुआत 1920 के दशक में वी. शांताराम की फिल्म 'सावकारी पाश' के साथ हुई थी। हालांकि, कला सिनेमा की शैली को 1940 और 1950 के दशक में सत्यजीत रे, मृणाल सेन और राज कपूर की फिल्मों के माध्यम से व्यापक पहचान मिली।

भारतीय सिनेमा ने समाज के विभिन्न मुद्दों जैसे लैंगिक असमानता, जातिवाद, दहेज प्रथा, गरीबी, और भुखमरी को उजागर किया है। समानांतर सिनेमा, मुख्यधारा के सिनेमा से एक मजबूत विचलन के रूप में, समाज में जागरूकता फैलाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बना।

आज भारतीय सिनेमा दुनिया में सबसे अधिक फीचर फिल्में बनाने वाला उद्योग है। हर साल लगभग 800 से 1000 फिल्में बनाई जाती हैं, जो हॉलीवुड की तुलना में कहीं अधिक है। हिंदी सिनेमा, जिसे बॉलीवुड कहा जाता है, इस उद्योग का सबसे बड़ा हिस्सा है। इसके अलावा, तमिल, तेलुगु, बंगाली और भोजपुरी जैसी क्षेत्रीय भाषाओं में बनने वाली फिल्में भी अपने-अपने क्षेत्रों में अद्भुत प्रदर्शन करती हैं।

सिनेमा, मनोरंजन के साथ-साथ, सामाजिक बदलाव लाने और संवाद स्थापित करने का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। दादा साहेब फाल्के की विरासत से शुरू होकर आज तक, भारतीय सिनेमा ने समाज को नई दिशा देने और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राजकपूर का जीवन परिचय :

भारतीय सिनेमा में शोमैन के नाम से प्रसिद्ध महान फिल्म निर्माता राजकपूर का जन्म 14 दिसम्बर सन 1924 को हुआ था इनके बचपन का नाम सृष्टि नाथ कपूर था बाद में इन्हें रणबीर राज कपूर के नाम से भी जाने जाना लगा। राजकपूर एक महान अभिनेता के साथ निर्देशक और निर्माता भी थे,इसके साथ ही इनकी भारतीय सिनेमा के इतिहास में महान और प्रभावशाली अभिनेताओं और फिल्म निर्माताओं में गिनती होती है, और इन्हें भारतीय सिनेमा का सबसे बड़ा शोमैन और भारतीय सिनेमा का चार्ली चैपलिन भी कहा जाता है।

कपूर परिवार के पृथ्वीराज कपूर के सबसे बड़े बेटे राज कपूर ने कई फिल्मों में अभिनय किया और उनका निर्माण किया, जिसके लिए उन्हें कई पुरस्कार मिले, जिनमें तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और 11 फिल्मफेयर पुरस्कार शामिल हैं। राज कपूर चार्ली चैपलिन से प्रेरित थे 2005 में टाइम पत्रिका द्वारा आवारा में उनके प्रदर्शन को 'विश्व सिनेमा में अब तक के शीर्ष दस महानतम प्रदर्शनों' में से एक माना गया था। उनकी फ़िल्में आवारा (1951) और बूट पॉलिश (1954) ने क्रमशः 1951 और 1955 के संस्करणों में कान फ़िल्म समारोह में पुरस्कार के लिए प्रतिस्पर्धा की। राजकपूर एक निर्देशक, निर्माता और स्टार के रूप में, आज़ादी देश की स्वतंत्रता के बाद पहले दो दशकों में भारतीय सिनेमा में 'स्वर्ण युग' के दौरान भारत के अग्रणी फिल्म निर्माताओं में इनका नाम शामिल हो गया था। राजकपूर बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे इसके साथ ही एक दोहरे चरित्र वाले, जिनका एक चेहरा स्वतंत्रता के युग की आकांक्षाओं को देखता है और दूसरा स्टार-चालित हिंदी सिनेमा की वर्तमान स्थिति को, जिसमें व्यापक अपील और वैश्विक दर्शक हैं।

राजकपूर कि फ़िल्में एशिया, मध्य पूर्व, कैरिबियन, अफ़्रीका और सोवियत ब्लॉक के कुछ हिस्सों में वैश्विक व्यावसायिक सफलताएँ हासिल कि थीं। कला में उनके योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें 1971 में पद्म भूषण से सम्मानित किया। सिनेमा में भारत का सर्वोच्च पुरस्कार, दादा साहब फाल्के पुरस्कार, उन्हें 1988 में भारत सरकार द्वारा प्रदान किया गया था।

पदार्पण और संघर्ष :

राज कपूर ने अपनी कैरियर कि शुरूआत दस साल की उम्र में, एक बाल कलाकार के रूप में सन 1935 में फिल्म इंकलाब से कि, इस बाद उन्हें 1947 में किदार शर्मा की रोमांटिक ड्रामा नील कमल में बेगम पारा और मधुबाला के साथ मुख्य भूमिका के साथ बड़ा ब्रेक मिला।यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर एक अर्ध-हिट साबित हुई।इसके अलावा राजकपूर कि रिलीज़ अन्य फिल्मे, जैसे जेल यात्रा, दिल की रानी और चित्तौड़ विजय ने अच्छा प्रदर्शन नहीं किया।

सन् 1948 से राजकपूर ने अपना खुद का बैनर आर. के. फिल्म्स की स्थापना की और संगीत नाटक आग के साथ निर्देशन में अपनी शुरुआत की, जिसमें उन्होंने नरगिस, प्रेमनाथ और कामिनी कौशल के साथ अभिनय किया।इन फिल्मो में भी उन्हें मायूसी हाथ लगी लेकिन आलोचकों ने इस सब कि सकारात्मक समीक्षा कि जो इस समय इनके लिए आत्मविश्वास लाने वाला स्मरण था ।

स्टारडम (1949-1964) :

आज़ादी के तुरंत बाद वर्ष 1949 से राजकपूर के करियर में बड़ा बदलाव आया जिसने इनकी दिशा बदल दी।उनकी पहली रिलीज़ फिल्म सुनहरे दिन व्यावसायिक रूप से फ्लॉप रही, लेकिन अगली फ़िल्म परिवर्तन ने ठीक-ठाक कारोबार किया और सेमी-हिट साबित हुई, जबकि उनकी तीसरी रिलीज़ फिल्म महबूब खाऩ की रोमांटिक ड्रामा अंदाज़ जिसमें दिलीप कुमार और नरगिस भी थे, बॉक्स ऑफ़िस पर ब्लॉकबस्टर साबित हुई। इसके अलावा अंदाज़ की मेगा सफ़लता के बाद बरसात आई जिसका निर्देशन और निर्माण भी उन्होंने खुद ही किया।यह फ़िल्म पहले वाली फिल्मों से आगे निकल गई और एक बड़ी ब्लॉकबस्टर के साथ-साथ अशोक कुमार अभिनीत किस्मत कि फिल्मों के रिकॉर्ड को तोड़ते हुए अब तक की सबसे ज़्यादा कमाई करने वाली फ़िल्म बन गई। अंदाज़ और बरसात की बड़ी सफ़लता ने राजकपूर को दिलीप कुमार और देव आनंद के साथ उस समय के प्रमुख पुरुष सितारों में से एक बना दिया।अगले वर्ष, उन्होंने सरगम और दास्तान में क्रमशः रेहाना और तत्कालीन शीर्ष अभिनेत्री सुरैया के साथ हिट फ़िल्मों के साथ अपने स्टार-स्टेटस को और मज़बूत किया। वही राजकपूर की सन 1951 में केवल एक ही फ़िल्म रिलीज़ हुई जो उनके अपने निर्देशन में बनी थी, क्राइम ड्रामा आवारा जिसमें पृथ्वीराज कपूर और नरगिस सह-कलाकार थे।फिल्म को आलोचकों के साथ-साथ दर्शकों से भी अत्यधिक सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली और यह अभिनेता के लिए एक और मेगा ब्लॉकबस्टर साबित हुई।शंकर-जयकिशन द्वारा रचित इसका साउंडट्रैक 1950 के दशक का सबसे अधिक बिकने वाला हिंदी फिल्म संगीत एल्बम था और विदेशी बाजारों में भी बेहद लोकप्रिय हुआ, खासकर सोवियत संघ, चीन, तुर्की और अफगानिस्तान जैसे दक्षिण एशियाई देशों में। आवारा फिल्म ने राजकपूर को सोवियत संघ में भी बड़े पैमाने पर प्रशंसक अर्जित किए, जहां फिल्म को लगभग 100 मिलियन प्रवेश मिले और यह देश में तीसरी सबसे ज्यादा देखी जाने वाली विदेशी फिल्म बनी रही।सन 1952 में, उन्होंने मनोवैज्ञानिक ड्रामा अनहोनी और क्राइम नॉयर बेवफा के लिए नरगिस के साथ फिर से काम किया और अनहोनी ने बॉक्स ऑफिस पर इस साल की सबसे ज़्यादा कमाई करने वाली फ़िल्म थी और इसने उनकी पिछली फ़िल्म आवारा के रिकॉर्ड तोड़ दिए। 1956 में, उन्होंने आखिरी बार चोरी चोरी में नरगिस के साथ निर्माण

और अभिनय किया। उसी वर्ष, नरगिस ने जागते रहो में भी एक छोटी भूमिका निभाई, जो कि आखिरी बार था जब वह और राजकपूर एक साथ स्क्रीन पर दिखाई दिए। वह कई बाहरी प्रस्तुतियों जैसे दो उस्ताद (1959), अनाड़ी (1959) और छलिया (1960) में दिखाई दिए। 1960 में, उन्होंने हिट संगीतमय सामाजिक नाटक जिस देश में गंगा बहती है का निर्माण और अभिनय किया, जिसका निर्देशन उनके लगातार छायाकार राधू करमाकर ने किया था।

गिरावट और निर्देशन पर ध्यान 1965-1988 :

अभिनेता के रूप में उनकी बाद की फ़िल्में जैसे कि अराउंड द वर्ल्ड (1966) और सपनों का सौदागर (1968) बॉक्स ऑफ़िस पर फ्लॉप रहीं। 1970 में, उन्होंने मेरा नाम जोकर का निर्देशन और अभिनय किया, जो बॉक्स ऑफ़िस पर एक आपदा थी और जिसने उनके फ़िल्म निर्माण स्टूडियो को लगभग दिवालिया बना दिया। उनके स्टूडियो ने अगले वर्ष तब वापसी की जब उन्होंने अपने बेटे रणधीर कपूर के करियर को पारिवारिक ड्रामा कल आज और कल से लॉन्च किया। इस फ़िल्म ने कपूर परिवार की तीन पीढ़ियों को एक साथ लाया, जिसमें पृथ्वीराज कपूर, राज कपूर और रणधीर मुख्य भूमिकाओं में थे और साथ ही रणधीर की होने वाली पत्नी बबीता भी थीं। रणधीर ने इस फ़िल्म के साथ अपने निर्देशन की शुरुआत भी की। 1973 में, उन्होंने अपने मझले बेटे ऋषि कपूर के करियर को रोमांटिक कॉमेडी ड्रामा बॉबी से लॉन्च किया, जिसमें डिंपल कपाड़िया भी शामिल थीं। 1975 में, उन्होंने अपने बेटे रणधीर के साथ फिर से धरम करम में अभिनय किया, जो रणधीर द्वारा निर्देशित दूसरी फिल्म थी। सन 1970 के दशक के उत्तरार्ध और 1980 के दशक की शुरुआत में उन्होंने महिला प्रधान फिल्मों का निर्माण और निर्देशन कियाः जीनत अमान के साथ सत्यम शिवम सुंदरम (1978), पद्मिनी कोल्हापुरी के साथ प्रेम रोग (1982) और मंदाकिनी को पेश करने वाली राम तेरी गंगा मैली (1985)। उन्होंने 1970 के दशक के अंत और 1980 के दशक की शुरुआत में कम फिल्मों में अभिनय किया, लेकिन नौकरी (1978) में राजेश खन्ना के साथ एक उल्लेखनीय सहायक भूमिका निभाई और अबु धाबी में संजय खान के साथ मुख्य किरदार निभाया। इसके साथ उस समय इनकी बहुत सारी फिल्मों ने समाज पर अमिट छाप छोड़ा है जैसे आवारा,बूट पालिस,श्री 420 मुख्य रही हैं । राज कपूर का योगदान भारतीय सिनेमा में क्रांतिकारी था और भारतीय सिनेमा पर उनका प्रभाव आज भी महसूस किया जाता है।

साहित्य की समीक्षा :

जोफरी जी जोंस और सिंग्धा सुर (2017) राजकपूरः द सोसलिस्ट शोमैन : यह अध्ययन आज़ादी के बाद के दशकों में महान बॉलीवुड फिल्म निर्माता राज कपूर पर के फ़िल्मी कैरियर पर आधारित है। यह अध्ययन राज कपूर ने 1948 के बाद आरके स्टूडियो का निर्माण किया, जिसमें रोमांस के साथ सामाजिक संदेशों को मिलाकर फिल्मों की एक श्रृंखला जारी की गई, जो सामाजिक अन्याय की दुनिया में आम आदमी के भाग्य पर केंद्रित है । इस शोध में इस बात पर चर्चा कि गई है कि राजकपूर की फिल्मों में महिलाओं को कैसे दर्शाया गया और लैंगिक रूढ़ियों को बढ़ावा देने और आज ग्रामीण भारत में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों में योगदान देने में सिनेमा की भूमिका पर चर्चा करने में सक्षम बनाता है। यह अध्ययन सोवियत संघ और कम्युनिस्ट दुनिया में राजकपूर की फिल्मों की सफलता को भी शामिल किया गया है। आज़ादी के बाद के दशकों के दौरान दो वैश्विक दुनियाएँ थीं। पश्चिमी दुनिया और कम्युनिस्ट दुनिया जहाँ पश्चिमी दुनिया में, हॉलीवुड ने सिनेमाई मनोरंजन की एक धारा प्रदान पर जोर दिया वहीँ कम्युनिस्ट दुनिया में, मुख्यतः बॉलीवुड ने वही सेवा प्रदान की। वे दोनों दुनिया के वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करते थे।इस अध्ययन में गुणात्मक समाग्री विश्लेषण पद्धति का

प्रयोग किया गया है और इस अध्ययन में राजकपूर कि समाजीकरण से जुडी सफल फिल्मों का अध्ययन किया गया है।

जित्का डे प्रीवल (2015) फिल्मफेयर एंड राज कपूर : कोम्पलिसिटी और डीपेंडेन्सी? केस स्टडी : यह अध्ययन में 1955 के दौर में प्रसिद्ध फिल्म निर्माता राज कपूर कि फिल्मों पर आधारित है। इस साल राज कपूर ने वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार जीता था। अपने फिल्मफेयर निबंध द आर्टिस्ट एंड द जर्नलिस्ट में उन्होंने फिल्म पत्रकारों की आलोचना की और सितारों की जीवनशैली के बारे में लेखों के प्रभुत्व, सिनेमैटोग्राफिक रचनात्मकता में रुचि की कमी और भारतीय सिनेमा के इतिहास में शोध की अनुपस्थिति की निंदा की। इस अध्ययन में पचास के दशक के मध्य में भारतीय सिनेमा पत्रकारिता का परिदृश्य क्या और कैसा था उसे भी शामिल किया गया है इसके अलावा समकालीन प्रतिस्पर्धा पत्रिकाओं के संबंध में तब फिल्मफेयर की स्थिति क्या थी? इसके पसंदीदा विषय क्या थे? समीक्षाओं पर किसने हस्ताक्षर किए? इसे कैसे वित्तपोषित किया गया? संपादकीय रणनीति के बारे में क्या पता है? उस समय पत्रिका और सिनेमा सितारों के बीच किस तरह के रिश्ते थे? इस पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है।यदि कपूर परिवार उन कलाकारों में से है, जिन्हें पत्रिका के पन्नों को भरने के लिए कार्यक्रमों के प्रमुख आपूर्तिकर्ता के रूप में प्रेस द्वारा सबसे अधिक पसंद किया जाता है, तो हम राज कपूर की आलोचना को कैसे समझ सकते हैं? फिल्मफेयर पत्रिका के पहले वर्षों के विश्लेषण के माध्यम से, जो उन कुछ पत्रिकाओं में से एक है, जिसका संपूर्ण उत्पादन पुणे के एनएफएआई (भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार) द्वारा संरक्षित किया गया है, यह पत्र मध्य-पांचवें दशक के भारतीय सिनेमा प्रेस की एक छवि प्रस्तुत करता है जो आज की फिल्म पत्रिकाओं को बेहतर ढंग से परिप्रेक्ष्य में रखता है।

उद्देश्य :

1. समाजीकरण को बढ़ावा देने में राजकपूर कि फिल्मों के योगदान का अध्ययन करना ।
2. राजकपूर की फिल्मों में प्रदर्शित पात्रों का विश्लेषण करना ।

शोध पद्धति : किसी विषय पर जानकारी इकट्ठा करने और उसका विश्लेषण करने के लिए इस्तेमाल कि जाने वाली तकनीको और प्रक्रियाओं का वर्णन है,यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके जरिये शोधकर्ताअपने अध्ययन को इस तरह डिजाईन करता है कि वह अपने उद्देश्यों को हासिल कर सके ।

गुणात्मक समाग्री विश्लेषण पद्धति :

इस अध्ययन में गुणात्मक समाग्री विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है। गुणात्मक समाग्री विश्लेषण,विश्लेषण कि एक विधि है जिसमे अर्थ सम्बन्धो के आधार पर सामग्री कि संरचना करना शामिल है ।जिसका लक्ष्य स्थिरता और परिपत्र व्यवस्था जैसी अवधारणाओ के बीच अर्थ और कनेक्सन पर ध्यान केन्द्रित करके संख्यात्मक डाटा से परे समझ को गहन करना है ।

सैंपलिंग :

इस अध्ययन में रैंडम सैंपलिंग का प्रयोग किया गया है,और राज कपूर कि प्रसिद्ध फिल्मों में से तीन फिल्मों को चुना गया है। इन फिल्मों को रेंडमली इस अध्ययन में शामिल किया गया है ।

अध्ययनों की सीमाएँ :

समानांतर सिनेमा भारतीय प्रवासियों के विभिन्न स्तरों पर कई सामाजिक मुद्दों पर फैला हुआ है, जिसके लिए प्रत्येक विषय पर कम से कम एक फिल्म पर चर्चा करने की आवश्यकता हो सकती है। अशिक्षा, लैंगिक पूर्वाग्रह, समानता का अधिकार, भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, समान लिंग संबंध, महिलाओं के खिलाफ अपराध, कन्या भ्रूण हत्या, मानसिक स्वास्थ्य और जागरूकता से संबंधित कलंक,

पर्यावरण सुरक्षा और कई अन्य सामाजिक मुद्दे इस शोध पत्र में शोध के दायरे से बाहर हो सकते हैं। दर्शकों की धारणाओं को मात्रात्मक रूप से परिभाषित नहीं किया जा सकता है और बॉक्स ऑफिस पर उचित रूप से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। गुणात्मक समीक्षा विशेष रूप से समानांतर सिनेमा से संबंधित फिल्मों की सफलता के संदर्भ में बेहतर समझ प्रदान करेगी।राजकपूर कि फिल्मों का अध्ययन करने के लिए बहुत अधिक रिसोर्स और समय कि जरूरत होगी क्यूंकि उनकी एके एक फिल्म समाज के उपर आधारित है जिसमे समाज में फैली बुराइयों को अच्छे से चित्रित किया है।

अध्ययन में शामिल तीनो फिल्मो का विवरण :

आवारा :

राज कपूर की फिल्म आवारा अब तक की सबसे बड़ी अंतरराष्ट्रीय हिट फिल्मों में से एक है, जो पूरे एशिया में लोकप्रिय है और कई स्थानीय संस्करणों में बनाई गई है (विशेष रूप से तुर्की में, समाज के लिए चिंता दिखाते हुए, फिल्म किसी भी विशिष्ट राजनीतिक प्रतिबद्धता को प्रदर्शित नहीं करती है, हालांकि इसे नेहरूवादी समाजवाद के मूल्यों को कायम रखने के रूप में देखा जा सकता है जो नव-औपनिवेशिक भारत में प्रमुख लोकाचार था। केए अब्बास ने वी.पी. साठे के साथ आवारा में काम किया, जिनकी पृष्ठभूमि भी गीतकार शैलेंद्र की तरह ही समाजवादी थी। यह दृष्टिकोण फिल्म की मुख्य कहानियों में से एक को रेखांकित करता है, अर्थात् गरीबी और सामाजिक परिस्थितियाँ किसी व्यक्ति को जीवन भर के लिए अभिशप्त कर सकती हैं, इसके साथ ही राजकपूर के अंतिम प्रवचन में, वे बच्चों को होने वाली पीड़ा के बारे में बात करते हैं और बताते हैं कि माता-पिता का उनके प्रति कर्तव्य कैसा है। उस समय की अन्य हिंदी फ़िल्में भी सामाजिक मुद्दों से जुड़ी हुई थीं, आवारा की सबसे बड़ी ताकत यह है कि यह इन सभी को एक साथ जोड़ती है, इसलिए फिल्म को एक रोमांस और एक सामाजिक नाटक के रूप में देखा जाता है, बिना एक दूसरे को अधीनस्थ किए। फिल्म बेरोजगारी, शिक्षा, न्याय और जेल की सजा के मुद्दों को प्रस्तुत करती है, लेकिन केवल नायक और उसकी तत्काल चिंताओं का सामना करने वाली समस्याओं के रूप में। आवारा गरीबों और वंचितों के लिए उपलब्ध सामाजिक गतिशीलता की कमी को संबोधित करता है, इस संघर्ष पर ध्यान केंद्रित करके कि क्या चरित्र जन्म से बनता है या किसी के पालन-पोषण से। फिल्म में संघर्ष के दोनों ओर दो किरदार हैं, जज रघुनाथ (पृथ्वीराज कपूर) और उनके बेटे राज कपूर (आरके), जो यह नहीं जानते कि वे फिल्म के अंत तक रिश्तेदार हैं जब राजकपूर की प्रेमिका रीता (नरगिस) पूरे परिवार को ही चुनौती देती है, इस फिल्म में पृथ्वीराज के पिता बशेश्वरनाथ कपूर द्वारा जज की भूमिकानिभाई गई है। फिल्म के अंत में, जब राजकपूर तीन साल की सश्रम सजा सुनाए जाने के बाद जेल चला जाता है, तो दृश्य ऐसा लगता है जैसे रीता सलाखों के पीछे है, शायद इसलिए क्योंकि उसे ही सज़ा दी जा रही है, जबकि रघुनाथ को खोया हुआ और अकेला दिखाया गया है। दर्शक को इस बात में कोई संदेह नहीं है कि राज और रीतु फिर से मिल जाएँगे लेकिन रघुनाथ का भाग्य उतना स्पष्ट नहीं है।

श्री 420 :

एक और बड़ी अंतर्राष्ट्रीय हिट, श्री 420 (शीर्षक भारतीय दंड संहिता की धारा 420 को संदर्भित करता है जो धोखाधड़ी और ठगी से संबंधित है), इलाहाबाद विश्वविद्यालय के एक मासूम स्नातक, राजकपूर (आर.के.) की कहानी है, जो अपने ईमानदारी के पदक के अलावा कुछ भी नहीं लेकर बॉम्बे आता है। उसकी शिक्षा रोजगार पाने में किसी काम की नहीं है, इसलिए वह अपने 'ईमानदारी के पदक' को गिरवी रख देता है, जो उसकी मासूमियत के अंत का संकेत है। परिवार के बिना, वह वास्तव में गरीब है।

हालांकि, ताश के पत्तों के साथ उसके कौशल को रैकेटियरों द्वारा देखा जाता है जो उसे अपने बीच में खींचते हैं और धन और भ्रष्टाचार की दुनिया में फंस जाते हैं, उन्हें अच्छे और बुरे के बीच चयन करना पड़ता है, जिसका व्यक्तित्व दो महिलाओं, माया (नादिरा), ग्लैमरस डांसर और विद्या (नरगिस), स्कूल टीचर द्वारा दर्शाया गया है। श्री 420 फिर से एक रोमांटिक कॉमेडी के साथ एक सामाजिक नाटक को जोड़ता है। सामाजिक कहानी पैसे से संबंधित है। गरीब, ज्यादातर देश से शहर में प्रवासी, सड़क पर रहने के कारण आवास संकट और वहाँ वे उस गाँव की लालसा के बारे में गाते हैं जहाँ वे जानते हैं कि वे कभी वापस नहीं लौटेंगे। वे क्षेत्रीय रूप से एक मिश्रित समूह हैं और उनके बंधन एक परिवार के हैं। इस फिल्म में राजकपूर, जिसका कोई परिवार नहीं है, जल्द ही बॉम्बे में एक नया परिवार बनाता है। सेठ सोनाचंद धर्मानंद, जिसे राज '840' कहता है, यानी एक दोहरा बदमाश, इस नाटक का खलनायक लगभग पिता की भूमिका निभाता है, राजकपूर को काम दिलाता है और उसे अपने कुटिल तरीकों से प्रशिक्षित करता है। केला बेचने वाली, गंगमा, उसके लिए माँ की तरह बन जाती है, जबकि अन्य फुटपाथ पर रहने वाले उसके भाई-बहन बन जाते हैं। बॉम्बे में अभी भी अपने पुराने अभिजात वर्ग हैं, राजघराने के लोग व्यापारी राजकुमारों और नए अमीरों के साथ होटलों, शराब पीने और जुआ खेलने के नए सार्वजनिक स्थानों पर मिलते हैं, नाचने वाली लड़कियों द्वारा मनोरंजन किया जाता है। जाति गरीबों के लिए अप्रासंगिक हो जाती है क्योंकि राजकपूर इस फिल्म में जो सेल्समैन बनने की कोशिश करता है, फिर कपड़े धोने वाले के रूप में निम्न-जाति का काम करता है जबकि विद्या के पिता को 'शास्त्री' कहा जाता है, जो आमतौर पर ब्राह्मणों के लिए आरक्षित नाम है। दोनों समूहों के बीच विरोधाभास तब देखने को मिलता है जब गरीब लोग दिवाली को नएपन के अवसर के रूप में और धन की आशा में मनाते हैं, लेकिन अमीर लोग उस धन की पूजा करते हैं जिसे वे गरीबों को धोखा देकर इकट्ठा करते हैं। इस फिल्म में राजकपूर एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो अमीर और गरीब के बीच आसानी से आ-जा सकता है, आंशिक रूप से अपने ताश के खेल के कौशल के कारण, लेकिन साथ ही अपने आप को छिपाने के लिए मुखौटे लगाने की अपनी क्षमता के कारण और लॉन्ड्री से उधार लिए गए कपड़े पहनकर भी। जयभारत (भारत की जय हो)। फिल्म का उनका सबसे प्रसिद्ध गीत, 'मेरा जूता है जापानी' अक्सर एक राष्ट्रवादी गीत माना जाता है क्योंकि वह गाते हैं कि वह दुनिया भर के कपड़े पहनते हैं लेकिन उनका दिल अभी भी भारतीय है ('फिर भी दिल है हिंदुस्तानी')।

बूट पॉलिश :

पश्चिम में भारतीय सिनेमा की पहली बड़ी सफलताओं में से एक ('एक प्यारी तस्वीर' 1958 के न्यूयॉर्क टाइम्स की समीक्षा में चहकते हुए), बूट पॉलिश ने इतालवी नवयथार्थवाद को विक्टर ह्यूगो जैसी चमक और भारतीय समाजवादी टिप्पणी के साथ जोड़ा है, जिसमें बेघर होने, कानून और संगठित भीख मांगने से जूझ रहे दो प्यारे अनाथों की कहानी है। फिल्म के शानदार संगीतमय सेट पीस, हास्यपूर्ण राहत और आंसू बहाने वाली ताकत से परे एक स्क्रिप्ट है जो नेहरू युग के सुधारों और गर्व से आत्मनिर्णयवादी राष्ट्रवाद को दर्शाती है; बच्चे एक दृश्य में 'महात्मा गांधी की जय हो!' चिल्लाते हैं, और दूसरे में 'एक नई सुबह आएगी' नामक गीत में प्यारे से 'श्रम का फल मीठा होता है' गाते हैं। 'भिक्षा मत दो; काम दो', बाद में फिल्म का दयालु दिल, डेविड अब्राहम द्वारा अभिनीत एक अक्सर शराबी बूटलेगर से विनती करता है। हॉलीवुड की लिटिल रास्कल्स की स्ट्रीट लाइफ़ के विज़न में समाजवादी, उपमहाद्वीपीय स्वाद को शामिल करते हुए, बूट पॉलिश दशकों से गूंजती रही है, जिसका संदर्भ सलाम, बॉम्बे और स्लमडॉग मिलियनेयर जैसी फ़िल्मों में

दिया गया है। हालाँकि इसका श्रेय राज कपूर के सहायक प्रकाश अरोड़ा को जाता है, लेकिन माना जाता है कि राज कपूर ने पूरी फ़िल्म खुद ही शूट की थी।

निष्कर्ष :

भारतीय सिनेमा और समाज के सामाजिकरण में राज कपूर का योगदान अविस्मरणीय है। उनकी फिल्मों में भारतीय मूल्यों और सामाजिक मुद्दों का गहरा चित्रण मिलता है, जो उस समय के समाज का आईना थीं। अध्ययन में शामिल तीनों फिल्में उस दौर में बनीं, जब आजादी के तुरंत बाद देश गरीबी, भुखमरी, पलायन और शिक्षा की असमानता जैसी कई समस्याओं से जूझ रहा था। इन फिल्मों में अमीरी-गरीबी के अंतर और समाज में फैले ऊँच-नीच को बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत किया गया, जिसने दर्शकों पर गहरी छाप छोड़ी और राज कपूर को भारतीय सिनेमा का 'शोमैन' बना दिया।

आवारा, श्री 420 और बूट पॉलिश जैसी फिल्मों में समाज के ज्वलंत मुद्दों को न केवल उजागर किया गया, बल्कि इन समस्याओं का मानव जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव भी दिखाया गया। इन फिल्मों ने यह संदेश दिया कि इंसान जन्म से अपराधी नहीं होता, बल्कि परिस्थितियाँ उसे ऐसा बना देती हैं। साथ ही, यह भी बताया गया कि कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प से कोई भी व्यक्ति अपनी जिंदगी बदल सकता है। इन कहानियों ने उस समय के दर्शकों के दिलों को छू लिया, आम आदमी की समस्याओं और उम्मीदों को पर्दे पर जीवंत किया, और जीवन में बदलाव की प्रेरणा दी।

सन्दर्भ सूची :

1. जोफरी जी जोंस और सिंग्धा सुर (2017) राजकपूरः द सोसलिस्ट शोमैन,हार्वर्ड बिजनेस स्कूल केस 300-117.
2. भाटिया (2016) फ्राम सोस्लिजम टू डिस्को डांस, हाउ बॉलीवुड मेड इट्स मार्क इन रसिया, 23-31.
3. बोस एम. (2008) बॉलीवुड ए हिस्ट्री रोली बुक्स नई दिल्ली।
4. जित्का डे प्रीवल (2015) फिल्मफेयर एंड राज कपूरः कोम्पलिसिटी और डीपेंडेन्सी? केस स्टडी।
5. डवयेर, आर. (2013) फायर एंड रेन द ट्रंप एंड ट्रीकेस्टर : रोमांस एंड द फैमली इन द एर्ली फिल्म्स आफ राजकपूर,द साउथ एसिअनिस्ट भोल्युम-2
6. नन्दा आर (2002) राजकपूर स्पीक्स ,पेंगुइन इंडिया, नई दिल्ली।
7. जोशी पी (2015) बॉलीवुड इंडिया : ए पब्लिक फेंटसी, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस न्यूयोर्क।
8. अग्रवाल, प्रहलाद (2007) राजकपूर : आधी हकीकत आधा फ़साना, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
9. बिप्लव, बिनोद (2013) हिंदी सिनेमा के 150 सितारे, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
10. चटर्जी, प्रथा (2009) वाटर एज ए मेटाफोर इन इंडियन सिनेमा, इन वाटर : कल्चर पॉलिटिक्स एंड मंजमेंट, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर नई दिल्ली।

राज कपूर - फिल्मी सफर

वन्दना त्रिवेदी
सहायक निदेशक,
राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद्, जयपुर, राजस्थान, इण्डिया

किसी भी देश का सिनेमा वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक घटक है, जो उस देश की संस्कृति सभ्यता एवं मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। सिनेमा किसी देश की सांस्कृतिक पहचान के साथ ही सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक पहलुओं पर भी अपना गहरा प्रभाव छोड़ता है। भारतीय सिनेमा जिसे बॉलीवुड भी कहा जाता है, ने भारतीय सांस्कृतिक विरासत आयुर्वेद, योग, संगीत, नाट्य, लोकरंग आदि को विश्व पटल पर उजागर करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारतीय फिल्मों की विषय वस्तु में सभी संस्कृतियों के लोगों का समावेश होने से इसकी लोकप्रियता बढ़ी है, साथ ही सिनेमा की विभिन्न शैलियों ने दर्शकों को भरपूर मनोरंजन प्रदान किया है। भारतीय सिनेमा ने वैश्विक आकांक्षाओं के संदर्भ में भारतीय संस्कृति और मूल्यों को विश्व पटल पर प्रदर्शित करते हुए भारत की सकारात्मक छवि विकसित करते हुए पर्यटन को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की हैं। भारतीय सिनेमा के अभिनेता-अभिनेत्री ने अपने उत्कृष्ट किरदार से सभी के दिलों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है, जिसमें राज कपूर भी एक हैं।

राज कपूर का जन्म 14 दिसंबर 1924 को पेशावर में हुआ। वह हिंदी सिनेमा में प्रसिद्ध अभिनेता, निर्माता एवं निर्देशक रहे हैं, जिन्होंने 1935 में मात्र 11 वर्ष की आयु में 'इंकलाब'से अभिनय की दुनिया में पदार्पण किया। उस दौर के प्रसिद्ध निर्देशक केदार शर्मा ने राज कपूर की अभिनय क्षमता को पहचाना एवं 1947 में अपनी फिल्म 'नीलकमल' में प्रमुख नायक की भूमिका दी, जिसमें अभिनेत्री के रूप में मधुबाला उनके साथ मुख्य महिला किरदार के रूप में नज़र आई। राज कपूर ने अपने फ़िल्मी कॅरियर में सर्वाधिक फिल्में नरगिस एवं मधुबाला के साथ की।

1948 में मात्र 24 वर्ष की उम्र में उन्होंने अपना स्टूडियो आर. के. फिल्म्स स्थापित किया और अपने समय के सबसे कम उम्र के फिल्म निर्देशक बने। बतौर निर्देशक राज कपूर ने 'आग' फिल्म से निर्देशन की शुरुआत की जिसमें स्वयं के साथ नरगिस, कामिनी कौशल एवं प्रेमनाथ को मुख्य भूमिका में लिया। 1949 में महबूब खान की ब्लॉकबस्टर फिल्म 'अंदाज' में दिलीप कुमार एवं नरगिस के साथ सह-अभिनय किया, जो एक अभिनेता के रूप में उनकी पहली बड़ी सफलता थी। उन्होंने अपने आर. के. बैनर तले बनी कई हिट फिल्मों का निर्माण एवं अभिनय किया। जिसमें 'बरसात' (1949) 'आवारा' (1950) 'श्री420' (1955) 'चोरी चोरी' 'जागते रहो' (1956) और 'जिस देश में गंगा बहती है' (1960) जैसी कई फिल्में शामिल है। 'बरसात' फिल्म में अभिनेता के साथ-साथ निर्माता एवं निर्देशक के रूप में उन्होंने सफलता के नए मानदंड स्थापित किये। इस फिल्म में उनकी पूरी टीम नयी थी,

लेकिन 'बरसात' के संगीत ने देश काल की सीमाओं को भी तोड़ दिया एवं लता मंगेशकर एवं मुकेश के गाए हिट गीतों ने अपार सफलता हासिल की। इस सफलता के बाद राज कपूर की बतौर नायक 1950 में एक साथ 6 फिल्में रिलीज हुई जिसमे नरगिस के साथ 'जान पहचान' और 'प्यार' गीता बाली के साथ, 'बावरे नयन' सुरैया के साथ, 'दास्तान' निम्मी के साथ, 'भंवरा' और रेहाना के साथ 'सरगम' थी।

राज कपूर की 1951 में प्रदर्शित 'आवारा' फिल्म ने हिंदी सिनेमा का रिकॉर्ड तोड़ दिया एवं 'आवारा' ने उनकी फिल्मों को सामाजिक यथार्थ के धरातल पर ला खड़ा कर, दिग्गज निर्देशकों को भी परास्त किया। सुप्रसिद्ध फिल्म समालोचक प्रहलाद अग्रवाल ने 'आवारा' फिल्म के लिए अपने शब्दों में कहा- ''आवारा ने इस 27 साल के नौजवान को उस ऊंचाई पर पहुंचा दिया जहां तक पहुंचने के लिए बड़े से बड़ा कलाकार लालायित हो सकता है।'' 'आवारा' ने ही उसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्रदान की। यहां तक कि वह पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्तित्व बन गया। रूस और अनेक समाजवादी देशों में 'आवारा' को सिर्फ प्रशंसा ही नहीं मिली, वरन वहां की जनता ने भी बेहद आत्मियता के साथ इसे अपनाया।''

1951-56 मेंराज कपूर की जितनी भी फिल्में आयी उसमें उनकी नायिका नरगिस थी, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड था। 1953 का वर्ष राज कपूर के फिल्मी करियर के लिए निराशा पूर्ण साबित हुआ। इस वर्ष उनकी आर. के. फिल्मस की तीन फिल्में रिलीज हुई 'आह', 'धुन' और 'पापी' लेकिन तीनों ही असफल रही। हालांकि 'आह' का संगीत काफी लोकप्रिय हुआ, लेकिन इसमें राज कपूर के टीबी के मरीज के रूप में निराशावादी प्रेमी की भूमिका को लोगों ने नकार दिया। राज कपूर ने निर्देशक के रूप में बाल फिल्म 'बूट पॉलिश' का निर्देशन किया जिसमें दो बाल कलाकार बेबी नाज और रतन कुमार और प्रसिद्ध चरित्र अभिनेता अब्राहम डेविड थे। यह फिल्म सफल साबित हुई।

1955 में 'श्री 420' में राज कपूर को सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ा दिया, जिसमें उन्होंने एक ग्रामीण देहाती युवक का अभिनय किया जो नौकरी की तलाश में शहर आता है एवं शहर की जीवन शैली से प्रभावित हो गलत कार्यों में फंस जाता है, इसमें राज कपूर का अभिनय मन मोह लेने वाला है, जो अंत में सामाजिक परिदृश्य एवं नैतिक मूल्यों में तादात्म्य स्थापित कर लेता है। इसका संगीत 'मेरा जूता है जापानी' देशभक्ति के प्रतीक के रूप में गाया जाने लगा।

1956 में उनके निर्देशन में बनी 'जागते रहो' एवं 'चोरी-चोरी' फिल्मों ने अपार सफलता हासिल की। 'जागते रहो' फिल्म को 'कार्लोरीवेरी' अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का 'ग्रैंड प्री' पुरस्कार मिला। कला समीक्षकों ने इसे हिंदी सिनेमा की महत्वपूर्ण उपलब्धि माना है। फिल्म विशेषज्ञ एवं लेखक प्रदीप चौबे के अनुसार- 'ऑस्कर अवार्ड यदि सचमुच ही वैश्विक श्रेष्ठता का मापदंड हो तो 'जागते रहो' अभी भी इसकी हकदार है। हालांकि भारतीय सिनेमा के वातावरण को इस सब की जरूरत नहीं क्योंकि, पुरस्कारों की नियति खुद भी बहुत दरिद्र होती आयी है उधर राज कपूर को भी शायद ही कभी पुरस्कारों की लालसा रही हो। जनता की लगातार तालियों से बड़ा और कौन सा पुरस्कार हो सकता है। 'जागते रहो' सिर्फ अपने समय का नहीं बल्कि हर समय का विराट सच है और आधुनिक समाज के परिदृश्य में तो इसकी प्रासंगिकता और भी बढ़ती जाती है इसलिए मैं इसे कालजयी फिल्म स्वीकार करता हूँ। इसके निर्माण के 53 वर्ष बाद भी यह फिल्म एक ताजा गुलाब की तरह जहनो दिल में महकती है।'

1957 में राज कपूर की मीना कुमारी के साथ आई फिल्म 'शारदा' में राज कपूर का मीना कुमारी

के बेटे के रूप में अभिनय काबिले तारीफ था।

1959 में प्रदर्शित 'अनाड़ी' फिल्म के अभिनय से राज कपूर को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का 'फिल्म फेयर पुरस्कार' भी प्राप्त हुआ।

1964 में राज कपूर के निर्देशन में बनी रोमांटिक फिल्म 'संगीत संगम' में राज कपूर ने राजेंद्र कुमार और वैजयंती माला के साथ अभिनय किया यह राज कपूर की पहली रंगीन फिल्म थी जिसने उनके जीवन के विविध पहलूओं को छुआ। इस फिल्म के लिए उन्हें 'फिल्म फेयर सर्वश्रेष्ठ निर्देशक पुरस्कार' और 'फिल्म फेयर सर्वश्रेष्ठ संपादक पुरस्कार' भी प्राप्त हुए। संगीत संगम ने राज कूपर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन बना दिया। एक प्रमुख अभिनेता के रूप में यह उनकी आखिरी बड़ी सफलता थी क्योंकि युवा अभिनेत्री राजश्री और हेमा मालिनी के साथ उनकी बाद की फिल्में जैसे 'अराउंड द वर्ल्ड', 'सपनों का सौदागर' बॉक्स ऑफिस पर कोई कमाल नहीं दिखा पाई। सन 1965 में उन्हें चौथे मास्को अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव में जूरी का सदस्य बनाया गया।

1970 में रिलीज हुई उनके द्वारा निर्मित, निर्देशित और अभिनीत महत्वाकांक्षी फिल्म 'मेरा नाम जोकर' फ्लॉप फिल्म साबित हुई, जिससे उनके परिवार को वित्तीय संकट का सामना करना पड़ा लेकिन बाद के वर्षों में इसे एक क्लासिक फिल्म के रूप में स्वीकार किया गया। 'मेरा नाम जोकर' फिल्म के संबंध में प्रसिद्ध लेखक जयप्रकाश चौकसे के अनुसार : 'हिंदी सिनेमा में दो असफलता की बड़ी हसरत से चर्चा की जाती है- गुरुदत्त की 'कागज के फूल' और राज कपूर की 'मेरा नाम जोकर' यह दोनों ही फिल्में उनकी सबसे महत्वकांक्षी फिल्में थी, जिन्हें दर्शकों ने नकार दिया, लेकिन दो-दो पीढ़ियां गुजर जाने के बावजूद वह आज भी मौजूद है। यह फिल्मे दर्शकों को एवं उनकी अगली पीढ़ी को अचंभित कर रही है। आनंदित कर रही है।'

मेरा नाम जोकर के बाद राज कपूर ने चरित्र अभिनेता के रूप में भूमिका निभाई। उन्होंने 1971 में अपने सबसे बड़े बेटे रणधीर कपूर निर्देशित पारिवारिक ड्रामा 'कल आज और कल' में रणधीर उनके पिता पृथ्वीराज कपूर तथा रणधीर की होने वाली पत्नी बबीता के साथ अभिनय किया। उन्होंने अपने दूसरे बेटे ऋषि कपूर के कॅरियर की शुरुआत 1973 में कि जब उन्होंने 'बॉबी' का निर्माण तथा निर्देशन किया, जिसमें ऋषि कपूर के साथ डिंपल कपाड़िया का बोल्ड किरदार भारतीय सिनेमा जगत हेतु चौकाने वाला था। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट रही।

1970 के दशक के उत्तरार्ध और 1980 के दशक की शुरुआत में उन्होंने महिला प्रधान फिल्मों का निर्माण तथा निर्देशन किया। जीनत अमान के साथ 1978 में 'सत्यम शिवम सुंदरम' एवं पद्मिनी कोल्हापुरी के साथ 1982 मे 'प्रेम रोग' तथा मंदाकिनी के साथ 1985 में 'राम तेरी गंगा मैली' प्रमुख महिला किरदारों वाली फिल्मे थी। 'प्रेम रोग' विधवा विवाह पर आधारित फ़िल्म थी, जो तत्कालीन सामंती सोच एवं विधवा महिला की सामाजिक स्थिति की यथार्थता का वर्णन करती है।

1979 में वे 11मास्को अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में जूरी के पुनः सदस्य रहे। राज कपूर की आखिरी प्रमुख फिल्म 'वकील बाबू' थी जिसमें वह अपने छोटे भाई शशि कपूर के साथ नजर आए। 1988 में अपनी मृत्यु से पहले वह अपने बेटे ऋषि एवं पाकिस्तानी अभिनेत्री जेबा बख्तियार अभिनीत 'हिना' का निर्देशन करने वाले थे जिसे उनकी मृत्यु के बाद उनके बेटे रणधीर ने निर्देशित किया।

राज कपूर को अपने कॅरियर के दौरान कई पुरस्कार मिले जिसमें हिंदी में सर्वश्रेष्ठ फिचर फिल्म के लिए 2 राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, 11 फिल्म फेयर पुरस्कार एवं 19 नामांकन शामिल है। टाइम्स मैगजीन द्वारा पूर्व में उनके अभिनय को Top 10 Perfor-

mance of all time में से एक माना गया। राज कपूर बहुआयामी प्रतिभा के धनी एवं लोकप्रिय कलाकार थे। उनके जीवन काल में उनके द्वारा निर्मित, निर्देशित और अभिनीत कई फिल्में आई, जिसमें उनके द्वारा कई पुरस्कार जीते। 1987 में राज कपूर को 'दादा साहब फाल्के पुरस्कार' एवं कला के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा 1971 में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया। इनकी तुलना विश्व सिनेमा के महान अभिनेता चार्ली चैपलिन से की जाती है। फ़िल्म समीक्षक डॉक्टर सी-भास्कर राव के अनुसार : "उन्होंने चार्ली की नकल नहीं की बल्कि उन्हें भारतीय रंग में कुछ इस कदर इतने मौलिक रूप में रंग दिया कि वे विश्व के दूसरे चैपलिन बन गए।"

राज कपूर की लोकप्रियता एवं सर्वकालिक महत्व के संदर्भ में डॉक्टर सी भास्कर राव ने लिखा है किः 'वे सिनेमा के एक ऐसे कलाकार थे जिनकी तुलना अन्य किसी कलाकार से नहीं की जा सकती है। सिनेमा का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसका ज्ञान और अनुभव उन्हें नहीं रहा हो। सिनेमा उन में बसता था और वह खुद सिनेमा को जीते थे। यही कारण है कि वह एक मिसाल बन गए। उनकी कामयाबी और ऊंचाई तक कोई भी पहुंच नहीं पाया है। उन्हें अपने अभिनय के लिए 10 सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं में एक माना गया। उन्हें सदी के सर्वश्रेष्ठ निर्देशक और सदी के सर्वश्रेष्ठ शोमैन का सम्मान भी प्रदान किया गया। लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि वह सिर्फ व्यवसायिक फिल्में ही बनाते थे। उनकी अधिकांश फिल्मों में व्यवसायिकता, कलात्मकता, साहित्यिकता और सामाजिकता का सम्मोहन मिलता है। वास्तव में वह एक हरफलमौला सीने व्यक्तित्व थे, उनकी फिल्मों का हर पक्ष इतना सधा हुआ होता था कि हिंदी सिनेमा का हर दर्शक उससे मुग्ध हो जाता था। वह हिंदी और भारतीय सिनेमा के ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने उसे एक विश्व मंच प्रदान किया। नायक तो सिनेमा के क्षेत्र में बहुतेरे हुए पर राज जैसे महानायक सदियों में कोई एक ही होता है।'

सन्दर्भ सूची :

1. Raj Kapoor: The Master at Work - Bloomsbury India; 1st edition (3 January 2022)
2. Raj Kapoor Speaks - Publisher : **(Penguin India; First Edition (10 December 2002)**
3. जयप्रकाश चौकसे (2010), राजकपूर : सृजन प्रक्रिया, नयी दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
4. डॉ॰ सी॰ भास्कर, राव (2014). दादा साहब फाल्के पुरस्कार विजेता, भाग-1 (प्रथम संस्करण), दरियागंज, नयी दिल्ली : शारदा प्रकाशन।
5. शोमैन राज कपूर - रितु नंदा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
6. प्रहलाद, अग्रवाल (2007), राजकपूर : आधी हकीकत आधा फसाना, नयी दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।

राज कपूर का भक्त माहिनूर जी

प्रो. उलफ़त मोहिबोवा

राज कपूर उज्बेकिस्तान में सबसे लोकप्रिय और पसंदीदा भारतीय अभिनेता और निर्देशक हैं। जब भारतीय फिल्मों की बात आती है तो उज़्बेक लोग सबसे पहले राज कपूर को याद करते हैं, राज कपूर का नाम लेते हैं। उज्बेकिस्तान में उनके हजारों प्रशंसक हैं। ये प्रशंसक राज कपूर से बहुत प्यार करते हैं और उनकी कला और अभिनय कौशल का इतना सम्मान करते हैं कि भले ही अभिनेता को निधन हुए 36 साल हो गए हों, वे हमेशा उन्हें याद करते हैं, दिसंबर में उनका जन्मदिन मनाते हैं, उनकी फिल्मों के दृश्यों का मंचन करते हैं और उनके गीतों की प्रस्तुति देते हैं। विशेष रूप से, भारत गणराज्य के ताशकंद में स्थित लाल बहादुर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में हिंदी भाषा, कथक राष्ट्रीय नृत्य और योग पाठ्यक्रम पढ़ाए जाते हैं। इन समूहों से हिंदी भाषा में रुचि रखने वाले श्रोता राज कपूर की फिल्मों के कारण ही इस केंद्र में हिंदी भाषा सीखते हैं, उनकी रुचि हिंदी भाषा, भारत, भारतीय कला में होती है। हिंदी भाषा समूहों में पढ़ने वाले श्रोताओं में से एक माहिनूर जी बहन राज कपूर की सच्ची भक्त थीं। जब माहिनूर विश्वविद्यालय में पढ़ती थीं, तो उनकी मुलाकात राज कपूर से हुई, जो अपनी नयी फिल्म के साथ ताशकंद में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में आए थे और इस मुलाकात की तस्वीरें भी ली गईं। तभी से माहिनूर बहन को राज कपूर के काम में दिलचस्पी पैदा हुई और उन्होंने इस अभिनेता के बारे में सारी जानकारी का अध्ययन करती रहीं। भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में हिंदी भाषा शिक्षण के बारे में जानने के बाद माहिनूर जी हिंदी सीखने के लिए केंद्र में आए। इस अध्ययन के दौरान वे हर साल दिसंबर में अपनी पहल पर और केंद्र के निदेशक की अनुमति से हिंदी समूह के दर्शकों के साथ राज कपूर का जन्मदिन मनाते थे। राज कपूर को समर्पित ये सभी कार्यक्रम मोहिनूर जी के तत्वावधान में उनके द्वारा तैयार किये गये कार्यक्रम के आधार पर आयोजित किये जाते थे। ये कार्यक्रम हमेशा उज्बेकिस्तान में दिखाई गई राज कपूर की फिल्मों के गीतों और नृत्यों पर आधारित होते थे, जिनमें श्री 420, बॉबी, संगम, मेरा नाम जोकर और अन्य शामिल हैं। इन आयोजनों को केंद्र के पास रहने वाले आस-पड़ोस के प्रतिनिधि, सभी श्रोता और हिंदी फिल्मों के प्रशंसक बड़े चाव से देखते हैं। नीचे इन कार्यक्रमों की तस्वीरें हैं। यह हिन्दी भाषा का समूह भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेता रहा है। 2022 में दिवंगत भारतीय प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी के पोते आदर्श शास्त्री जी के साथ ताशकंद का दौरा करने वाले प्रतिनिधिमंडल के लिए हिंदी समूह के सदस्यों की भागीदारी से एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम के बाद उज्बेकिस्तान में भारत के राजदूत श्री मनीष प्रभात जी ने केंद्र में हिन्दी सीखनेवालों को एक सप्ताह के लिए भारत जाने की सिफारिश की।

बायें से दायें: राज कपूर, हमीदोवा माहीनूर जी,
अनुवादक भारतविद् फ़तीह तेशाबायेव, ऋषी कपूर

दायें से बायें: नरगिस, हमीदोवा माहीनूर जी

हमीदोवा माहीनूर जी 'मेरा नाम जोकर' फ़िल्म से,
जोकर के अभिनय में माहीनूर जी

'मेरा नाम जोकर' फ़िल्म से

हमीदोवा माहीनूर जी

हमीदोवा माहीनूर जी शयाना फ़ार्म कंपनी का
निदेशक अशोक तिवारी जी के साथ

भारत के राजदूत श्री मनीष प्रभात जी के साथ

आसीसीआर के डाइरेक्टर जेनेराल
श्री विनय सहस्त्रबुद्धे जी के साथ

शास्त्री के जी पोते, आदर्श शास्त्री जी ने भारतीय कला के भक्तों के इस समूह का स्वागत करने और उनके लिए आवास प्रदान करने का वादा किया। परिणामस्वरूप, जनवरी 2023 में हिन्दी सीखनेवाले पांच लोग भारत की यात्रा पर गये। वहां, श्री आदर्श शास्त्री जी ने भारतीय कला के प्रति अपना प्यार दिखाने के लिए ताशकंद के मेहमानों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम की व्यवस्था करने में मदद की। ताशकंद से आए मेहमानों को बड़े हॉल में भारतीय फिल्मों के गाने और नृत्यों से तैयार किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रम दिखाने का अवसर मिला। कार्यक्रम में उन्होंने भारतीय फिल्मों के गाने और नृत्य प्रस्तुत कर भारतीय दर्शकों को आनंदित कर दिया। हिन्दी सीखनेवाला यह ग्रुप आज भी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते आ हैं।

राज कपूर और उज़्बेकिस्तान

शम्सिकामर तिलोवमुरोदोवा
पीएचडी स्टूडेंट, ताशकेंट स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज,
वैज्ञानिक पर्यवेक्षक : प्रोफेसर, होदजायेवा तमारा अलीमोवना

मुझे यह कभी याद नहीं कि सबसे पहले मुझे भारत से परिचित कराने वाला व्यक्ति कौन था। मेरे स्मृतियों में ऐसा कुछ नहीं है। लेकिन मुझे इतना जरूर याद है कि मेरे दादा की भारत के प्रति गहरी मोहब्बत धीरे-धीरे हमारे दिलों में भी भारत के प्रति प्रेम की चिंगारी भरती चली गई। उनके इस प्रेम का प्रमुख कारण निश्चित रूप से राज कपूर थे।

उज़्बेक और भारतीय लोगों के बीच के संबंध सदियों पुराने हैं, शायद उससे भी अधिक। रेशम मार्ग ने दोनों देशों के बीच न केवल व्यापारिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित किया बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान में भी बड़ी भूमिका निभाई। इसी तरह, दोनों देशों के प्रतिनिधि आज भी अपने राजनयिक संबंधों को बनाए रखने और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। इन संबंधों पर आधारित कई विद्वान हर साल अपने शोध और स्नेहपूर्ण विचारों को दर्शाने वाली किताबें प्रकाशित करते हैं। इन अकादमिक स्रोतों का केंद्र ताशकेंट स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज का दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशियाई भाषाओं और साहित्य का उच्च विद्यालय है।

आज इस छोटे से लेख में, मैं हमारे विद्वानों द्वारा किए गए कार्यों पर चर्चा करने के बजाय, एक उज्बेक नागरिक के रूप में अपने विचार साझा करने को उपयुक्त मानती हूँ। उज़्बेकिस्तान के किसी भी कोने में घूमने जाएं, अगर भारत का ज़िक्र होता है तो निश्चित रूप से चर्चा राज कपूर से शुरू होती है। मुझे आज भी याद है, मेरे दादाजी आज भी 20 साल पहले की तरह राज कपूर की फिल्म 'श्री 420' में गाए गीत को गुनगुनाते हैं।

मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिशतानी
सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी
मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिशतानी
सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी
मेरा जूता है जापानी...

अब सवाल उठ सकता है, क्या मेरे दादा हिंदी जानते हैं? अफसोस, नहीं। तो फिर वे इस गीत को कैसे गुनगुनाते हैं? असल में, वे गाने के बोल नहीं जानते, लेकिन अपने दोस्तों के साथ मिलकर इस धुन पर अपने शब्द बनाकर गाया करते थे। क्यों ऐसा करते थे, मैं नहीं जानती। उनसे मैंने कभी यह सवाल भी नहीं किया क्योंकि जब भी वे यह गाना गाते थे, उनके दोस्तों के चेहरे पर खुशी देखकर मुझे भी खुशी होती थी।

मेरे दादाजी जैसे ही, हमारे देश के बुजुर्ग, अपने सबसे प्यारे पलों को भारतीय फिल्मों, खासकर राज कपूर के साथ जोड़ते हैं। मेरे पिता, अपनी छात्रावस्था को याद करते हुए, बताते हैं कि राज कपूर की फिल्मों के लिए पैनोरमा सिनेमाघर के सामने लंबी कतारों में खड़े होते थे।

कई लोग कह सकते हैं कि यह बॉलीवुड के प्रभाव का नतीजा हो सकता है। हां, मैं इससे सहमत हूँ। लेकिन इतने सारे बॉलीवुड सितारों के बीच, केवल राज कपूर ही उज़्बेक लोगों के लिए इतने प्रिय क्यों बने? अपने अवलोकन और वरिष्ठ पीढ़ी द्वारा साझा की गई कहानियों के आधार पर, मैं निम्नलिखित कारण बता सकती हूँ।

1. **अपने काम के प्रति सच्ची लगन :**

   राज कपूर द्वारा निभाए गए किरदार इतने स्वाभाविक थे कि उनके अभिनय ने भारतीय व्यक्तित्व को वैश्विक रूप में प्रस्तुत किया। यह उन्हें दर्शकों के लिए एक पड़ोसी या करीबी व्यक्ति जैसा महसूस कराने में मददगार साबित हुआ। उज्बेक लोग भी ऐसे व्यक्तियों को अत्यधिक मान देते हैं जो अपने पेशे के प्रति समर्पित होते हैं।

2. **परिश्रम और सकारात्मक दृष्टिकोण :**

   राज कपूर ने अपने कला के माध्यम से मेहनत और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया। उनकी फिल्मों के माध्यम से उन्होंने संदेश दिया कि जीवन में खुशी और सुकून हासिल करना संभव है।

राज कपूर ने अपने व्यक्तित्व में सादगी, नम्रता और स्वाभाविकता का प्रदर्शन किया। उनके दौरे अक्सर बड़ी भीड़ को आकर्षित करते थे और उन्हें एक वैश्विक सितारे के रूप में सम्मानित किया जाता था। अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति सच्चे रहते हुए, उन्होंने अन्य संस्कृतियों का सम्मान किया, जिससे उन्हें दुनिया भर में आदर मिला।

निष्कर्ष :

राज कपूर का व्यक्तित्व और उनकी रचनात्मक विरासत न केवल स्क्रीन पर बल्कि उससे बाहर भी गहरा प्रभाव डालती है। उन्हें भारतीय कला, संस्कृति और मानवता की भावना के प्रतीक के रूप में पहचाना जाता है। उनकी विरासत आज भी विभिन्न पीढ़ियों के दिलों में जीवित है, और उज़्बेकिस्तान में तो यह अमर है।

राज कपूर के फिल्मी गीतों की प्रसिद्धी और प्रासंगिकता

डॉ. सुधा बी. गदग
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिंदी-विभाग,
जैन (डीम्ड-टू-बी युनिवेर्सिटी) सी.एम.एस.,
बेंगलुरु, कर्णाटक

डॉ. बी. एस. हेमलता
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, कन्नड़- विभाग,
जैन (डीम्ड-टू -बी युनिवेर्सिटी) सी.एम.एस.,
बेंगलुरु, कर्णाटक

हिंदी फिल्म जगत विश्व प्रसिद्ध और प्राचीन है। 1913 में निर्मित 'राजा हरिश्चंद्र' नामक मूक चलचित्र से इसका श्री गणेश किया गया। इसने अपने आरंभ के 25-30 साल के अंतर्गत बोल युक्त फिल्म का निर्माण कर मील का पत्थर स्थापित कर दिया। इस प्रकार यह दुनिया श्वेत-श्याम से मनमोहक रंगीन दुनिया में भी बदल गई। किंतु यह सफर इतना आसान नहीं था आज की तुलना में यदि कहा जाए तो उस समय में अत्यंत ही कम सुविधाएँ थी और तकनीक न के बराबर। फिर भी कुछ महारथियों ने अपनी लगन मेहनत और फिल्म जगत के लिए अपनी तल्लीनता से चार चांद लगा दिए हैं। इस योगदान में कपूर परिवार का योगदान भुलाया नहीं जा सकता। मूक-चलचित्र के युग से लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस युग में भी यह परिवार हिंदी फिल्म जगत में सक्रिय है। पृथ्वीराज कपूर से लेकर रणबीर कपूर तक इस परिवार के अधिकतर सदस्यों ने हिंदी फिल्म को ही अपना जीवन और अपने संपूर्ण जीवन को फिल्मी दुनिया के लिए समर्पित कर दिया है। एक अध्ययन के अनुसार यह स्पष्ट हो जाता है कि लगभग 115 साल के हिंदी फिल्मों के इतिहास में 94 वर्षो का बहुमूल्य योगदान इस परिवार का रहा है। प्रथमतः पृथ्वीराज कपूर जी ने मूक चलचित्रों द्वारा अपने वृत्ति जीवन की शुरुआत कर 'कपूर' परिवार की नींव फिल्म जगत में डाली। यह केवल परिवार की नहीं बल्कि यह भारतीय हिंदी फिल्म जगत की बुनियाद थी जिसपर भविष्य में 'हिंदी फिल्म इंडस्ट्री' की महल खड़ी हो पाई है।

कपूर परिवार की दूसरी पीढ़ी की शुरुआत राज कपूर से होती है। बाल कलाकार के रूप में फिल्मी दुनिया में कार्यरत होकर राज कपूर जी ने हिंदी फिल्मों के अभिनेता, नायक, निर्देशक और निर्माता के रूप में हिंदी फिल्मों को ही अपने जीवन को समर्पित कर दिया। उनके जीवन काल को यदि हिंदी फिल्म जगत का स्वर्ण युग कहा जाए तो गलत नहीं होगा। केवल अपने 64 वर्ष की आयु में 71 फिल्मों की अद्वितीय योगदान किसी काल पुरुष से ही संभव हो सकता है। इनकी 71 फिल्मों में इनके द्वारा अभिनय किए गए या उनके निर्देशन में बने फिल्मी हो, एक से बढ़कर एक बनी, हर फिल्म नयी कहानी, नए किरदार, जीवन के नए मूल्य, आधुनिक विचारधारा आदि नएपन से जुड़ी थी जो आज भी भारत और भारत के बाहर स्मरण की जाती है। आपकी फिल्मों के सुप्रसिद्धी और आकर्षण का एक और कारण इन फिल्मों के गीतों को माना जा सकता है। क्योंकि हर एक फिल्म की सुप्रसिद्धी उनके गानों पर भी निर्भर करता है। तत्कालीन समय में इनमें प्रयुक्त संगीत के साथ-साथ उनके बोल पर भी अधिक महत्व दिया जाता था। राज कपूर के फिल्मों में निहित प्रत्येक गाना जीवन-संदेश को लेकर चलता है। उसमें प्रेम,

विरह, धोखाधड़ी आदि भावनाओं के साथ-साथ जीवन सत्य भी निहित रहता था। उनकी फिल्मों में न्यूनतम 5 से लेकर 10 गानों का होना उनकी संगीत प्रियता को उजागर करता है। आश्चर्य की बात तो यह है कि आज के डिजिटल युग की फिल्मों में जहाँ बड़ी मुश्किल से एक या दो गाने 'सुपरहिट' हो पाते हैं वही इनकी फिल्मों के चार या पांच गाने यूँ ही लोकप्रिय हो जाते थे। राज कपूर के अभिनय और निर्देशन में बनी पहली सुपरहिट फिल्म 'बरसात' (1949) इसका ज्वलंत उदाहरण माना जा सकता है। इस फिल्म में कुल 9 गाने हैं जिनमें- 'जिया बेकरार है', बरसात में हमसे मिले तुम साजन', हवा में उड़ता जाए मेरा लाल दुपट्टा', मैं जिंदगी में हरदम रोता ही रहा हूँ' 'मुझे किसी से प्यार हो गया' आदि गाने लोगों की ज़बान पर रहते हैं। जिनका आज की पीढ़ी के लोग भी आनंद लेते हैं। कहा जाता है कि यह फिल्म राज कपूर की निर्देशन में बनी दूसरी फिल्म थी। 'इस फिल्म की लगभग पूरी टीम ही नयी थी। संगीतकार नये थे- शंकर-जयकिशन। गीतकार नये थे- हसरत जयपुरी और शैलेन्द्र। लेखक नया था-रामानन्द सागर। फिल्म की नायिका भी नयी थी- निम्मी। इतना ही नहीं राधू कर्मकार, एम॰आर॰ अचरेकर और जी॰ जी॰ मायेकर जैसे नये टैक्नीशियनों की पूरी टीम थी। इन कारणों से लोग कहते थे 'आग' में जो कुछ जलने से रह गया है वह 'बरसात' में बह जाएगा।'[1] 'इसका एक और कारण यह था कि उनकी पहली फिल्म 'आग' पूरी तरह से असफल हो चुकी थी। 'बरसात' का संगीत देश-काल की सीमाओं को लाँघ गया। चारों ओर मुकेश और लता के गाये हुए गीतों की धुन थी। गायिका लता मंगेशकर की पहचान भी 'बरसात' फिल्म में ही मुख्यतः बन पायी।'[2]

'शोमैन' राज कपूर के निर्देशन में बनी फिल्म 'आवारा' भी एक बहुचर्चित फिल्म है जो केवल भारत में ही नहीं विदेशों में भी अपनी छाप छोड़ चुकी है। इस फिल्म के अधिक से अधिक गाने लोकप्रिय रहे हैं। जैसे- तुम गर जो इधर मुंह फेरे, '123 आजा मौसम है रंगीन', 'एक बेवफा से प्यार किया'', 'हैया हो हैया', 'घर आया मेरा परदेसी'[3] आदि गाने तो लोकप्रिय रहे हैं इनके साथ-साथ इस फिल्म का टाइटल सॉन्ग 'आवारा हूँ'- गाने के बोल के साथ-साथ राज कपूर जी का अभिनय और उनके साथ चेहरे के छवि को भी दर्शकों के दिलों में अंकित कर दिया है। इस गाने का एक-एक शब्द समाज में बेसहारे और आवारा व्यक्ति की दशा का परिचय देता है। एक अनाथ, बेघर और आवारा इंसान को भी जिंदगी कैसे जीना है और जिंदगी का मकसद क्या होना चाहिए इसका संदेश कुछ पंक्तियों से ही प्राप्त हो जाता है।

'अब बात नहीं बर्बाद सही, गाता हूँ खुशी के गीत मगर
जख्मो से भरा सीना है मेरा हसती है मगर में यह
मस्त नगर'[4]

1955 में बनी फिल्म 'श्री-420' इसी श्रेणी की है। यह फिल्म तो अत्यंत लोकप्रिय रही हैं किंतु इस फिल्म का प्रत्येक गाना एक विशेष छवि दर्शकों के मन में छोड़ देता है। शैलेंद्र और हसरत जयपुरी द्वारा लिखे गए गीत, शंकर जयकिशन के संगीत में उभरे ये गीत जीवन का एक नया अर्थ और एक नई परिभाषा उपलब्ध कराती हैं। जैसे- 'प्यार हुआ इकरार हुआ प्यार से फिर क्यों डरता है दिल' गाने के बोल एक ओर दुनिया में दो प्रेमियों की दुविधा का परिचय करते हैं और दूसरी ओर जीवन में प्रेम की महत्ता को स्पष्ट कराती है। प्रेम जीवन का क्षणिक आकर्षण नहीं बल्कि जीवन का सत्य है और यही शाश्वत भी। इस सत्य से अभिग्न प्रेमी समाज की बाधाओं से परे खड़े होने की क्षमता नहीं रख सकते हैं। निष्कलंक, निस्वार्थ, शुद्ध भाव ही प्रेम का सही तात्पर्य है। इस तात्पर्य की और परित्र भावना की समझ आज के युवाओं में करना आवश्यक है।

इसी फिल्म का एक और सुप्रसिद्ध गाना 'रमैया वस्तावैया' युवा वीडियो में प्यार के मीठे दर्द के साथ-साथ प्रेम के सच्चे अर्थ को सिखा देता है। इस

सर्वकालिक सत्य को उद्घाटित करता है कि सच्चे प्यार में कभी व्यापार, व्यवहार या दुनियादारी अपना स्थान नहीं बना सकती है। केवल प्रेम ही प्रेम की पूर्ति कर सकता है अपितु दुनिया की कोई और वस्तु नहीं। अन्य एक गीत- 'किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार' एक ऐसा गीत है जो संदेश देता है कि जीवन का उद्देश्य दूसरो की खुशी में गलना, दूसरे के दर्द में शामिल होना, जरूरतमंदों, पीड़ितों का उपकार करना है। एक इंसान बनना है इस गाने से यह समझा जा सकता है की मनुष्य जीवन की सही परिभाषा क्या है। इस प्रकार के गीत और अर्थ को अधिक मात्रा में प्रसारित और प्रचारित करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि आज की पीढ़ी जीवन का अर्थ केवल मौज मस्ती, पैसे कमाना और पैसे लूटना मानती है।

इस मूवी का एक अन्य गीत 'मेरा जूता है जापानी' कोई भुला ही नहीं सकता है। यह गाना किसी भी आयु या किसी भी अवस्था के लोगों में देशीय भावना को बढ़ाने में अत्यंत सफल कहा जा सकता है। इस गाने में कपूर जी ने 'चार्ली चैप्लिन' की अदा में हिंदुस्तानी दिल का परिचय देते हैं। साथ ही साथ यह संदेश भी देते हैं कि विदेशी संस्कृति या विदेशी पोशाक अवश्य अपना लो लेकिन कभी अपने संस्कार और अपनी निजता को मत भुलाओ। गाने के अन्तरे में राज साहब ने मनुष्य जीवन की सच्चाई को भी अंकित करने का प्रयास किया है और कहां है कि मनुष्य एक सैलानी है, चलना उसका काम, मंजिल उसे नहीं पता इसे भगवान जानता है। मनुष्य के जीवन में स्थितियां ऊपर-नीचे अवश्य होती रहती हैं लेकिन इसे देखते, कोई निठल्ला नहीं बैठता है। वे कहते हैं कि 'चलना जीवन की कहानी और रुकना मौत की निशानी'-5 है। इस प्रकार उन्होंने गीतों के माध्यम से अपनी तथा भविष्य की सभी पीढ़ियो को कर्मठता का संदेश दिया है। यही कर्मठता राज साहब के जीवन का मूल मंत्र भी था इसी करण से वे 1 साल में 5-6 फिल्में बना लिया करते थे।

इस फ़िल्म की अन्य गीत- मुड़-मुड़ के न देख मुड़-मुड़ के, दिल का हाल सुने दिलवाला दोनों ही गीत भारतीय समाज और मनुष्य जीवन के गहरे अर्थ को स्थापित करते हैं। मुड़-मुड़ के न देख- गीत क्या अवलोकन करने पर मनुष्य स्वयं को दुनिया के ढांचे में कैसे डाल सकता है कितना समझौता उसे करना है, दुनिया में सफलता तो हासिल होती है लेकिन इसकी तुलना किसी से नहीं हो सकती, इंसान की जिम्मेदारी केवल आँखें पढ़ते रहना है जैसे जीवन सत्य को उद्घाटित कर फिल्म और संगीत के माध्यम से भी राज कपूर जी दुनिया को यह संदेश देने का प्रयास किया है। 'दिल का हाल सुने दिल वाला' गाना गरीब और अमीर के जीवन के अंतर को स्पष्ट करते हुए गरीब की स्थिति का बेहतर उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह स्थिति गीत में - 'भूख ने है बड़े प्यार से पाला.... टांग अड़ाया है दौलत वाला'[6] आदि में स्पष्ट हुआ है।

कपूर साहब के अत्यंत लोकप्रिय और ब्लॉकबस्टर फिल्म के गाने सुनहरे अक्षरों में लिखे जाने वाले गाने कहे जा सकते हैं। फिल्म की कहानी, मुख्य किरदार की स्थिति और तत्कालीन संदर्भ आदि से संबंधित ये गाने हिंदी समझने वाले प्रत्येक मनुष्य के जीवन की अपनी कहानी को प्रस्तुत करती है। इन गीतों में संदेश है, उपदेश है, सलाह है और जीवन के प्रति जागृति भी। इस फिल्म का गाना- 'जीना यहाँ मरना यहाँ इसके सिवा जाना कहाँ' जैसा गाना या संदेश शायद ही दुनिया के किसी गाने में होगा। और यह गाना भी विश्व प्रसिद्ध, सर्वकालिक और सार्वभौमिक ख्याति प्राप्त करना कहा जा सकता है। यह एकमात्र नाम राज कपूर जी की हिंदी फिल्मों के योगदान को बखूबी स्पष्ट कर देता है। इसके अतिरिक्त 'ए भाई जरा देख के चलो आज की कॉर्पोरेट दुनिया में व्यवसायिक स्वभाव वाले मनुष्य से बचने को सचेत करता है। मनुष्य को अपने कार्य-स्थल, परिवार, रिस्तेदारों, सामाजिक वातावरण में जागृत रहना सिखाता है।

इस प्रकार राज साहब की बहुत सारी फिल्में जैसे- 'संगम', 'धर्म-कर्म', 'बॉबी', उनके द्वारा निदेशित अंतिम फिल्म- 'राम तेरी गंगा मैली' मे भी उच्च कोटी के गीत हिंदी फिल्म जगत मिल के पत्थर बने रहेंगे।

इनकी फिल्मी गीतों में कुछ विशिष्टताएं इस प्रकार हैं :

- उनकी अधिकतर फिल्मों में एक न एक गाना बारिश मैं फिल्माया गया होता है।
- राज कपूर जी का पहनावा सूट बूट और हैट अधिकतर दिखाई देता है।
- राज कपूर आदित्य गानों में किसी देशी या विदेशी वाद्य यंत्रों का प्रयोग करते हुए दिखाई देते हैं।
- हर एक गाने की पिक्चराइजेशन में कुछ नयापन दिखाई देता है।
- गीतों की भाषा चरित्र एवं वातावरण के अनुकूल है।
- कुछ गानों में हिंदी की पहेलियाँ और टंग ट्विस्टर्स का सुन्दर प्रयोग दिखाई देता है।
- हर फिल्म में कम से काम एक विरह वेदना या असफल प्रेम का गीत होता ही है।
- अधिकतर फिल्मो की नायिकाओं का पोशाक और वेशभूषा में भारतीय परंपरा का पालन नहीं होता है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि राज कपूर जी के जीवन का प्रत्येक क्षण हिंदी फिल्मों के लिए समर्पित रहा। फलस्वरुप दुनिया को सर्वश्रेष्ठ फिल्में और उत्कृष्ट गानो का धरोहर प्राप्त हुआ। इन्होंने नई तकनीक और नवाचार लाकर फिल्मों को समृद्ध ही नहीं किया बल्कि अनेक श्रेष्ठ कलाकारों, गीतकारों टेक्नीशियन आदि के जीवन को समृद्ध किया है। फिल्मों के साथ-साथ इनमें निहित प्रत्येक गीत अर्थपूर्ण, सटीक, सुंदर और धनात्मक विचारों से भरपूर हैं। जीवन से सीधा संबंध रखने वाले अनेको गीत आज भी सिल्वर स्क्रीन के माध्यम से चलचित्र प्रेमी, राज कपूर साहब के अनुयायिओं में जीवन की रूचि, जीवन की समझ और जीवन जीने के की कला को भर रही है। फिल्मी दुनिया में कुछ अभिनेताओं का दौर आता और जाता रहता है। समय परिवर्तन के साथ-साथ उनकी पहचान बनती और मिटती जाती है किंतु कुछ देव मानव अपने सामर्थ्य और विशिष्टता से अपना अमिट पहचान अंकित कर देते है - जिनमें राज कपूर जैसा कोई अन्य न हुवा है और शायद ही कोई होगा।

सदर्भ-सूची :

1. प्रदीप चौबे, हिंदी सिनेमा : बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक (प्रगतिशील वसुधा, अंक-81, अप्रैल-जून, 2009; ढसिनेमा विशेषांकल), संपादक-प्रहलाद अग्रवाल, (पुस्तक रूप में 'साहित्य भंडार', 50, चाहचंद रोड, इलाहाबाद से प्रकाशित) पृष्ठ-128.(विकिपीडिता)
2. (https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C_%E0%A4%95%E0%A4%AA%E0%A5%82%E0%A4%B0)
3. https://www.youtube.com/watch?v=ZHReeehsoqw
4. https://www.youtube.com/watch?v=ZHReeehsoqw
5. https://youtu.be/bJAmFaBAAGQ?si=e_8-8IHkc8W257zQ
6. https://youtu.be/bJAmFaBAAGQ?si=e_8-8IHkc8W257zQ

''अमर कलाकार''
राज कपूर की 100वीं जयंती

अहमदजोन कासिमोव
'दोस्ती पदक' के धारक, भारतविद्, अनुवादक, अंतर्राष्ट्रीय पत्रकार,
'नमस्ते, भारत' कार्यक्रम के लेखक एवं प्रस्तुतकर्ता
ताश्कन्द, उज़्बेकिस्तान

जब हम भारत के बारे में सोचते हैं, तो सबसे पहली चीज़ जो दिमाग में आती है, वह है इसकी अनोखी धुनें, गाने और फ़िल्में। दरअसल, भारत के लोगों के समृद्ध इतिहास और संस्कृति, विशेषकर सिनेमा की अनूठी कला ने दुनिया भर के लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया है और अब भी कर रही है। जब हम अपने देश में भारतीय कला की बात करते हैं तो मशहूर कलाकार, निर्देशक और अभिनेता राज कपूर साहब का ख्याल आता है। भारत देश को कितने लोग प्यार करते हैं, भारतीय कला फिल्में आज भी प्यार से देखी जाती हैं और उनके गाने बार-बार प्यार से सुने जाते हैं। मशहूर कलाकार, भारतीय सिनेमा के पुरोधा, निर्देशक और निर्माता राज कपूर पिछली सदी के 50 और 80 के दशक के बेहद मशहूर और प्रिय फिल्म अभिनेता थे। आज हमारे आदरणीय पिता और माताएं गहरी उत्तेजना और मीठी यादों के साथ उन फिल्मों को देखते हैं जिनमें राज कपूर साहब ने अभिनय किया है।

मैं अतिशयोक्ति नहीं करूंगा अगर मैं कहूँ कि भारतीय फिल्मों ने भारतीय और उज़्बेक लोगों के बीच दोस्ती को मजबूत करने में बहुत बड़ा योगदान दिया है, खासकर राज कपूर साहब की इस अच्छे काम में महत्वपूर्ण भूमिका थी। राज कपूर साहब की फ़िल्में पहली चीज़ थीं जिन्होंने मुझे भारतविद् बनने के लिए प्रेरित किया। मुझे याद है कि कैसे हम अपने स्कूल के पास के सिनेमाघर में 'आवारा', 'श्री 420', 'संगम' फिल्में बार-बार देखा करते थे। हालाँकि, उस समय मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि एक दिन मैं उस महान कलाकार से मिलूंगा, उन के बगल में साथ चलूँगा और समय आने पर एक अनुवादक के रूप में उनके साथ काम करूँगा।

मैंने पहले उज़्बेक भारतविद् प्रो. फातिख तेशाबायेव और प्रो. आज़ाद शामातोव के बारे में अपनी पहली हिन्दी की शिक्षिका शाडीयेवा दिलबर जी खामिदोवा से सुना था, जिन्होंने उन प्रोफ़ेसरों से हिंदी का अध्ययन किया था। मैं काफी भाग्यशाली था कि पाठशाला से स्नातक होने के बाद उन्हीं शिक्षकों से मैं ने हिन्दी सीखी। उस समय मैं ताशकंद राज्यकीय विश्वविद्यालय के पूर्वी फ़ेकल्टी का विद्यार्थी था। जब मैं विद्यार्थी था, तो मुझे हर दो साल में आयोजित होने वाले 'एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिकी देशों के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव' में भारतीय फिल्म निर्माताओं के साथ संवाद करने का अवसर मिलता। मैं अपने शिक्षक फातिख तेशाबायेव की वजह से पहली बार श्री राज कपूर जी के साथ रहने के लिए मौक़ा मिला था।

वे दिन जब मैं श्री राज कपूर जी के लिए जो न केवल एक फिल्मी सितारा थे बल्कि विश्व सिनेमा के लिए एक सूरज भी बुन चुके थे अनुवादक के रूप में काम किया वह मेरे लिये हमेशा सब से अच्छे याददाश के रुप में रहेगा। मेरे जैसे एक साधारण व्यक्ति के लिए, जो भारत की भूमि से प्यार करता था, इस व्यक्ति के साथ संवाद करना, उसके बगल में चलना एक बड़े सम्मान की बात थी। उस व्यक्ति के व्यवहार में ईमानदारी होने के बावजूद भी मैं हमेशा उत्साहित रहता था। मुझे आज भी उज़्बेकिस्तान होटल की 10वीं मंजिल पर कमरा नंबर 114 में श्री कपूर के साथ बिताए गए दिन मीठी यादों के साथ याद हैं। उस समय, मैंने ऐसे प्रसिद्ध व्यक्ति की ईमानदारी और दयालुता व्यक्तिगत रूप से देखी। मुझे घंटों तक राज कपूर के दर्द और लालसाओं को सुना पड़ता था। तब मुझे आश्चर्य होता था कि इतने महान व्यक्ति को भी एक सामान्य व्यक्ति जितनी ही चिंताएँ थीं। वे मुझे अपना बेटा जैसा मानकर अपनी दिल की गहराई की बातें बोलते थे, विशेष तौर पर ऋषि कपूर पर बात चलती थी। यदि वे किसी को कुछ करने के लिए भेजना चाहते थे, तो वे दयालुता के साथ 'इमाद बेटा' कहते थे। मुझे अपना क़रीब इनसान समझकर बोल देते थेः 'तुम मेरे बेटे जैसा हो, बुरा नहीं मानोगे तो फलां का फोन नंबर दे देना या मेरे लिए कुछ ले आना।' जब कभी कहीं पार्टी में जाते तो वापसी में थकान से वे मेरे कंधों पर हाथ रख लेते थे। उस वक्त मुझे आश्चर्य होता था कि राज साहब अतिथि गृह में खुद अलग कमरे में रहते थे। हालाँकि, कई बार वह उत्सव में अकेले नहीं, बल्कि अपने बच्चों और भाइ शशि कपूर जी के साथ आते थे। वे मंडलियों में जाते समय भी अलग-अलग चलना चाहते थे। मैंने कभी उस व्यक्ति को एक ही कमरे में अपने बच्चों के साथ घेरे में बैठे नहीं देखा। मुझे इस बात पर भी आश्चर्य हुआ कि बच्चे भी अपने पिता को 'राज साहब' कहकर बुलाते थे। उस समय मैंने देखा कि पिता और बच्चों के बीच एक निश्चित दूरी थी, चाहे वह पिता के सम्मान के कारण हो या उनकी ताकत के कारण। मुझे नहीं पता था कि ये अवलोकन एक दिन मेरी मदद करेंगे। 2007 में हम 'अलीशेर नवोई' फिल्म हाल में राज कपूर की याद में आयोजित 'भारतीय फिल्मों का सप्ताह' की शुरुआत फिल्म '**थ्री ट्रेड्स**' से करना चाहते थे। (Film "Tree idiot" Hindi me likhna he) तब इसमें हिस्सा लेने आए रणधीर कपूर जीऔर ऋषि कपूर जी ने कहा, "हम नहीं जाएंगे, हमें इस फिल्म से क्या लेना-देना", तो मैंने चालाकी करके फोन पर श्री राज कपूर की आवाज बजाई, जो इस महल में बोल रहे थे।

'शायद श्री राज कपूर की आत्मा उस समय इस महल में भटक रही होगी।' ढाई हजार से ज्यादा लोग आपका इंतजार कर रहे हैं, कृपया, आपके पिता की आत्मा को शांति मिले!', मेरे कहने के बाद ही वे सहमत हुए। उसी दिन की एक और घटना मैं कभी नहीं भूलूंगा। मंच पर श्री रणधीर कपूर को आमंत्रित किया गया था। हम एक साथ मंच के किनारे स्थित सीढ़ियों के पास पहुँचे तो श्री रंधीर कपूर जी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'एमाद भाई, सहारा ले लूं'। मैं ने कहा 'हाँ जी, बिल्कुल"। असल में मुझे ऐसे लोगों का समर्थन करने और उनकी मदद करने से खुशी हो रही थी।

उज़्बेक भारतविदों में से एक प्रो. फातिख तेशाबायेव, श्री राज कपूर के अनुवादक थे। ऐसे कई हमवतन लोग थे जो श्री राज कपूर के साथ रहकर अनुवादक के रूप में काम करते थे। उनके भी प्रभाव विशेष हैं। उनमें सबसे कम उम्र का भारतविद होने पर मुझे गर्व है। राज साहब की मृत्यु से पहले उनकी ताशकंद की अंतिम यात्रा के दौरान उनके साथ होने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था।

1979 में, जब मैं दिल्ली विश्वविद्यालय में एक साल की फ़ेलोशिप पर था, मुझे श्री ऋषि कपूर और सुश्री नीतू सिंह की सगाई के लिए श्री शशि कपूर से निमंत्रण मिला। उन दिनों मेरे शिक्षक फातिख तेशाबायेव बंबई में पूर्व सोवियत संघ के सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक थे। होटल में कमरा लेने के बाद मैं अपने अध्यापक फातिख तेशाबायेव के घर गया। उनकी पत्नी और बच्चों ने उनका बहुत गर्मजोशी से स्वागत किया, हमने काफी देर तक बातें की और मैंने उन्हें बताया कि मैं बंबई क्यों आया। मेरे उस्ताद ने मुझे अपनी कार अपने ड्राइवर को मेरी सेवा के लिये दे दिया। मैंने स्टूडियो भवन में समारोह में भाग लिया। उन दिनों की तस्वीरें मैं ने अभी तक सुरक्षित रखा। बाद में, जब मैं बम्बई आता तो चेंबूर सड़क पर स्थित 'आर. के. फिल्म्स स्टूडियो' में ज़रूर जाता था। आखिरी बार मैं वहां 28 अगस्त 2013 को गया था। दुर्भाग्य से, यह स्टूडियो अब मौजूद नहीं है।

श्री राज कपूर के भाई शशि कपूर साहब के साथ हमारा एक अलग रिश्ता था। उन्होंने मुझे भी श्री राज कपूर की तरह 'एमाद' कहकर बुलाते थे। श्री शशि कपूर जी ने ही मुझे श्री अमिताभ बच्चन से परिचय कराया था। शशि साहब ने 'कमाल है' शब्द का प्रयोग बहुत सुंदर उच्चारण के साथ खूब किया करते थे। मुझे उनकी कई बातें याद हैं- 'दुनिया में आदमी इंसान बन जाए, यही बहुत बड़ी बात है'।

एक अंतर्राष्ट्रीय पत्रकार होने के नाते, मैंने श्री राज कपूर और कई अन्य फिल्म सितारों, वैज्ञानिकों, राजनेताओं के इन्टेर्व्यू अभी तक संभालके रखा हूँ। उज़्बेकिस्तान में राज कपूर साहब सबसे प्रिय अतिथि थे जिनके लिये हमारे देश में हमेशा प्रतीक्षा रहती थी। हमारे लोग उन से बेहद प्यार करते थे और हम आज भी उनका नाम सम्मान के साथ याद करते हैं। ताशकंद में आयोजित एशियाई, अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी देशों के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में राज कपूर की यात्रा ने महोत्सव को सदा और भी मनोरंजक बना देता था। अपने अंतिम इन्टेर्व्यू में, राज कपूर

साहब ने संस्कृत में बोले गए निम्नलिखित शब्दों को उद्धृत कियाः 'वसुधेव कुटुम्बम', जिसका अर्थ है 'पूरा विश्व एक परिवार है'। मैं आज ये शब्द उद्धृत नहीं करता। हमने ताशकंद में दुनिया के विभिन्न देशों, विशेषकर एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के फिल्म निर्माताओं को देखा।

इस संबंध में, मेरे और मेरे परिवार के लिए ताशकंद फिल्म महोत्सव का महत्व अलग है। हम एक-दूसरे की रचनाओं से परिचित हुए, सीखे और जानकारी प्राप्त की। हम, रचनाकारों पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी है। हमें भाईचारे को बढ़ावा देना चाहिए और एक परिवार के बच्चों के रूप में रहने का रास्ता दिखाना चाहिए।' यदि दुनिया में शांति होगी तभी हम कलाकारों को स्वतंत्र रूप से रचना करने का अवसर मिलेगा। हम रचनाकारों को इसे बढ़ावा देना चाहिए। ताशकंद को 'शांति और मित्रता का शहर' यूं ही नहीं कहा जाता है। इसलिए, आइए संस्कृत में कहे गए इन शब्दों को न भूलेंः 'पूरा विश्व एक परिवार है!'- 'वसुधेव कुटुंबकम्!'

कोई भी श्री राज कपूर के जीवन और काम के बारे में घंटों बात कर सकता है। अगर आपको याद हो तो दिसंबर 2006 की शुरुआत में राज कपूर की याद में ताशकंद, नामंगन और समरकंद में शामें आयोजित की गई थीं।

मैंने ताशकंद के 'इस्तिकलाल' कला महल में मंच पर श्री रणधीर कपूर के निम्नलिखित शब्दों का अनुवाद किया था। 'नमस्ते! ताशकंद में मेरे दोस्तों को रणधीर कपूर का सलाम! मैं बेहद सम्मानित महसूस कर रहा हूँ कि उन्होंने मेरे लिए आपका आभार व्यक्त करने का ऐसा अवसर दिया है। राज कपूर साहब का परिवार और उनके बच्चे जीवन के अंत तक उज़्बेकिस्तान के लोगों के प्रति अपना आभार व्यक्त करते नहीं थकेंगे। हम लगभग एक सप्ताह से उज़्बेकिस्तान में हैं। हमने नमंगन और समरकंद का दौरा किया।

हमें पता चला कि हम जितना सोचा था उससे कहीं अधिक प्यार को हम ने देखा, हमने यह देखा कि उज़्बेक लोग हमारे पिता राज कपूर साहब से कितना प्यार करते हैं। मैं अपने पिता के साथ कई बार आपके देश में आया हूँ। राज कपूर को उज़्बेकिस्तान और ताशकंद बहुत पसंद थे। आप जानते हैं कि आप उस व्यक्ति से बहुत प्यार करते थे। लेकिन वह शख्स आपसे ज्यादा आपसे प्यार करता था। आप श्री राज कपूर की फिल्मों को जानते हैं, वे आपके देश में बहुत लोकप्रिय व्यक्ति थे। हालांकि 18 साल बीत गए, लेकिन इनमें से किसी भी देश ने राज कपूर साहब को याद नहीं किया, केवल उज़्बेकिस्तान के लोगों ने ऐसी स्मृति रात्रि आयोजित करने का फैसला किया। राज कपूर साहब के निधन के बाद हमें पहली बार राज कपूर साहब के परिवार के सदस्यों को यह अवसर दिया गया, इस लिये हम आपको धन्यवाद देने के लिए आये हैं। सामान्य तौर पर, राज कपूर साहब हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन जब तक आपके दिल में राज कपूर साहब के लिए सम्मान और प्यार है, वह कभी नहीं मरेंगे, वह हमेशा ज़िन्दा रहेंगे!'

बाद में, 24-29 अक्टूबर, 2010 को श्री रणधीर कपूर ताशकंद में आयोजित 'भारतीय फिल्म महोत्सव' में अतिथि थे।

राज कपूर साहब के जन्मदिन की पूर्व संध्या पर, मैंने दर्शकों को उनके काम के बारे में बताया और कहा कि मैं उनके द्वारा बनाई गई हिंदी फिल्मों के गाने प्रसारित करने का इरादा रखता हूँ। क्या आपके रेडियो चैनल का नाम 'जवान' है? तो 'जवान' में- 'जीना इसी का नाम है', इसका मतलब है-'इसी को ज़िन्दगी कहते हैं। मेरे पिता राज साहब इन शब्दों का खूब इस्तेमाल करते थे। कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने कहा, ''मैं भी अभी तक इन बातों का मतलब पूरी तरह से नहीं समझ पाया हूँ। 'आपने अच्छा काम शुरु किया है, मैं आपकी मदद करूंगा, मैं आपको मेरे पिता जी की फिल्मों के गानों की सीडी भेजूंगा।'

लोगों के बीच, हम अक्सर 'कला कोई सीमा नहीं जानती, 'कला कोई भाषा नहीं चुनती' जैसी अभिव्यक्तियाँ सुनते हैं, और कभी-कभी हम स्वयं इसका उपयोग करते हैं। मुझे कई बार यकीन हुआ है कि ये शब्द कितने सच हैं।

28 अगस्त 2013 को मुंबई के दादा साहेब फाल्के सिनेमा सिटी में अपनी संयुक्त बैठक में हमने ऋषि कपूर साहब के साथ इन दिनों को याद किया था। विशेष रूप से, श्री ऋषि कपूर ने अपने आसपास के लोगों से उज़्बेकिस्तान और वहां आयोजित स्मारक पार्टियों के बारे में गर्व के साथ सुनाया था।

हम जानते हैं कि हमारे देश में ऐसे कई हमवतन हैं जिन्होंने भारतीय फिल्मों को प्यार से देखकर और उनके गाने गुनगुनाकर कला की दुनिया में कदम रखा है। उनमें से एक उज़्बेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और काराकल्पकस्तान के पीपुल्स आर्टिस्ट बाबामुराद खामदामोव की अनोखी आवाज़ थी। उन्होंने हिंदी फिल्मों के लगभग 50 गाने गाए। बाबामुराद खामदामोव में मैंने राज कपूर साहब की क्षमता और उनके दिल की सादगी की तुलना की।

जब मैंने श्री राज कपूर की फ़िल्में देखने और उनका आनंद लेने के बाद 'भारत' नामक रहस्यमयी दुनिया में प्रवेश किया, तो मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं हिंदी और उर्दू भाषाओं की फ़िल्मों और धारावाहिकों का अनुवाद करूँगा। अब मेरी तरफ से अनूदित फिल्मों की संख्य लगभग 400 हैं। मुझे खुशी है कि अपने तैयार कार्यक्रमों, लेखों और अनुवादों के साथ, मैं उज़्बेकिस्तान और भारत के जनताओं के बीच मौजूद प्राचीन मित्रता और सहयोग को और मजबूत करने में योगदान दे रहा हूँ। इसमें श्री राज कपूर और आम तौर पर कपूर खानदान का योगदान अतुलनीय है।

जैसा कि श्री राणाधीर कपूर ने कहा, 'जब तक हमारे दिल में राज कपूर साहब के लिए सम्मान और प्यार है, तो वे कभी नहीं मरेंगे, सदा जीवित रहेंगे!''

चार्ली चैप्लिन और राज कपूर

प्रीति उपाध्याय
शोधार्थी
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

फिल्मी दुनिया के दो बड़े कलाकार जो अपने सपनों की उड़ान भरने के लिए तथा दुनिया को अपनी कला के माध्यम से खुश तथा जीवन जीने की एक नई राह दिखाने के लिए जाने जाते हैं, जिनमें पहले मूक फिल्म में जान डालने वाले चार्ली चैप्लिन हैं तो वहीं दूसरे बॉलीवुड में अपने अभिनय से जान डालने वाले राजकपूर।

छोटा कद, सर पर टोपी, चेहरे पर छोटी सी मुछ तथा हाथ में छड़ी इस वेशभूषा (ट्रैम्प) को जब भी हम देखते है तब हमें याद आते हैं चार्ली चैप्लिन। चार्ली चैप्लिन हाथ में चांदी की चम्मच लेकर नहीं जन्में थे। आज हॉलीवुड से लेकर बालीवुड तक सभी चार्ली चैप्लिन के अभिनय के आगे अपना सर झुकाते है। लंदन में जन्मे सर चार्ल्स स्पेंसर चैप्लिन का चार्ली चैप्लिन बनने तक का सफर आसान नहीं था। चार्ली चैप्लिन के माता-पिता स्टेज पर गायन तथा छोटे-मोटे अभिनय किया करते थे। चार्ली चैप्लिन जब 5 वर्ष के थे तब इनकी माता, जिनका नाम हेना था वह एक दिन स्टेज पर गाना गा रही थी, गाना गाते-गाते अचानक उनका गला खराब होने से दर्शकों ने हल्ला करना शुरु कर दिया। जिसके बाद उन्हें स्टेज पर अपमानित भी किया गया। चार्ली तुरंत स्टेज के संचालक के पास जाते है तथा गाना गाने का निवेदन करते है। संचालक से अनुमति मिलने पर वह स्टेज पर गाना गाता है तथा दर्शकों को खुब लुभाता भी हैं। अब मंच पर सिक्को की बारिश होने लगती है,चार्ली पहले सिक्को को बटोरते है फिर अपना गाना पुनः शुरु करते है। चार्ली के इस तरह पैसे उठाने तथा बाद में गाना गाने से दर्शकों को खुब मजा आता है। अब आप ये समझने की कतई भूल न करे कि इसके बाद चार्ली चैप्लिन बहुत बड़े अभिनेता बन गए तथा खूब पैसा कमाकर फिल्मों में काम किया। बल्कि इसके बाद तो चार्ली की दुनिया में उथल-पुथल मचना शुरू हुई। पिता जी की माता से रिश्ते खराब हो गए तथा वे उन्हें छोड़कर चले गए। उनके पिता जी ने किसी और से विवाह कर लिया तथा चार्ली की माता का साथ छोड दिया। चार्ली तथा उनके भाई की जिम्मेदारी उनकी माँ पर आ गई। गला खराब होने के चलते वे डिप्रेशन का शिकार हो गई। अब चार्ली तथा उनके भाई को ही अपनी जिम्मेदारी खुद निभानी थी। माता-पिता होने के बाद भी उन्हें अनाथालाय में रहना पड़ा। चार्ली ने अब स्टेज शो करना शुरु कर दिए थे। पढ़ाई-लिखाई में चार्ली का मन नहीं लगता था। वे स्टेज शो तथा छोटे-मोटे कामों को करने लगे। एक दिन स्टेज शो करते समय उनकी ऐक्टिंग से प्रभावित होकर उन्हें हेमलटन के 'शेरलॉक होम्स' में अभिनय का अवसर दिया। पढ़े लिखे वे थे नहीं इसलिए डायलॉग को कई बार सुन कर याद कर लेते थे। इस शो के के बाद उन्हें बहुत सराहा गया।

इसके बाद वे 1914 में अमेरिका आए तथा 'मेक अ लिविंग' के साथ अपना फिल्मी करियर

शुरू किया। एक साल के भीतर उन्होंने 35 फिल्में की। 1915 में चार्ली के करियर ने आसमान छू लिया। ऐसा कहा जाता हैं कि राष्ट्रपति से भी ज्यादा इनकी कमाई थी। अपने दुख को उन्होंने दर्शकों के सामने कभी नहीं रखा तथा इतने दुखों व अभावों में जीने के बाद भी आज हम उन्हें एक हास्य अभिनेता के रूप में जानते हैं। ये किसी भी व्यक्ति के लिए आसान नहीं। चार्ली चैप्लिन ने अपनी फिल्मों के माध्यम से न केवल आम जनता के दिल में अपनी पैठ बनाई साथ ही हिटलर को भी अपने अभिनय से विचलित कर दिया।

चार्ली चैप्लिन की पहली फिल्म मेकिंग अ लिविंग 1914 में रिलीज हुई थी। इस फिल्म में चार्ली ने एक ठग की भूमिका निभाई थी। यह फिल्म केवल 15 मिनट की ही थी। यह पूरी तरह से मूक फिल्म थी। अपने एक्शन और एक्सप्रेशन से लोगों को दीवाना बना दिया। चार्ली के ट्रैम्प किरदार से लोग इतने प्रभावित हुए की कई फिल्मों में उनके इस किरदार की नकल भी की गई।

चार्ली चैप्लिन का फिल्मी सफर अमेरिका से शुरू हुआ। चार्ली की फिल्मों में 'द किड' (1921), 'अ वुमन ऑफ पेरिस' (1923), 'द गोल्डन रश' (1925), 'द सर्कस' (1928), 'सिटी लाइट' (1931), 'मॉडर्न टाइम्स' (1936), 'द ग्रेट डिक्टेटर' (1940), 'मानसियर वरडॉक्स' (1947), 'लाइमलाइट' (1952), 'द किंग इन न्यू यॉर्क' (1957), 'अकाउंटेंट फॉर्म हॉन्ग कोंग' (1967) इन फिल्मों को आज भी खूब पसंद किया जा रहा है।

राज कपूर जिन्हें भारत का पहला चार्ली चैप्लिन कहा जाता है। राज कपूर ने 40 के दशक में फिल्म 'आग' से अपने सिनेमा करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद तो उनकी फिल्मों का शुरू हुआ सिलसिला आज भी हिंदी सिनेमा को जगमगाता आ रहा है। राज कपूर ने 'आवारा' (1951) और 'श्री 420' (1955) जैसी फिल्मों में ट्रैम्प पर आधारित किरदार निभाए। राज कपूर की फिल्म 'मेरा नाम जोकर' चार्ली चैपलिन की 50 के दशक की शुरुआत में आई फिल्म 'लाइमलाइट' से प्रभावित है। चार्ली अपने दुःख को हंसी के पीछे छुपा लिया करते थे वही राज कपूर ने बड़े पर्दे पर देसी अंदाज में चार्ली के किरदार को निभाकर अपनी अलग पहचान बनाई। राजकुमार की तुलना के संदर्भ में प्रहलाद अग्रवाल की स्पष्ट मान्यता है- 'निःसंदेह चार्ली विश्व सिनेमा का एक महान स्तंभ है। उससे यदि राजकपूर की तुलना की जाए तो यह भी बड़ी बात ही होगी। पर है यह गलत। इनमें बाह्य साम्य देखकर इनके मूल ध्येय को भुला देना गड़बड़ी होगी। चार्ली चैप्लिन ने अपनी फिल्मों में मनुष्य के भौतिक जीवन के प्रति आग्रही व्यक्तित्व के बाह्य संकट की ओर अधिक ध्यान केंद्रित किया है, जबकि राजकपूर का क्षेत्र अधिकांशतः आदमी का मानसिक यातना-संसार है। चार्ली चैप्लिन और राजकपूर इसी धरातल पर एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। हाँ, अपने समय से आगे दोनों देखते हैं- सार्थक कलात्मक दृष्टि से। 'मॉडर्न टाइम्स' में चार्ली इशारा करता है कि मशीनीकरण की अन्धी दौड़ स्वयं मनुष्य को मशीन बना देगी। इस बात को बहुत बाद में महसूस किया गया। इसी तरह 'श्री 420' में राजकपूर देखते हैं- सार्थक कलात्मक दृष्टि से। 'मॉडर्न टाइम्स' में चार्ली इशारा करता है कि मशीनीकरण की अन्धी दौड़ स्वयं मनुष्य को मशीन बना देगी। इस बात को बहुत बाद में महसूस किया गया। इसी तरह 'श्री 420' में राजकपूर शिक्षित बेरोजगारी की आगत भविष्य में भयावहता की ओर संकेत करता है। जिस ताकत से उसने यह बात सन् 1955 में कही थी, भारतीय समाज और उसके नियामकों ने उसकी शिद्दत को सन् 1970 के बाद ही समझा।' फिल्म समीक्षक डॉ0 सी0 भास्कर राव के अनुसार- 'उन्होंने चार्ली की नकल नहीं की, बल्कि उन्हें भारतीय रंग में कुछ इस कदर, इतने मौलिक रूप में रंग दिया कि वे विश्व के दूसरे चैप्लिन बन गये।'

राज कपूर के पिता पृथ्वीराज कपूर फिल्म में कार्य करते थे लेकिन पृथ्वीराज कपूर काफी सख्त स्वभाव के थे। सन् 1935 में मात्र 11 वर्ष की उम्र में राज कपूर ने फिल्म 'इंकलाब' में अभिनय किया। उस समय वे मुंबई टॉकीज स्टूडियो में सहायक का काम करते थे। बाद में केदार शर्मा के साथ क्लैपर बॉय का कार्य करने लगे। केदार शर्मा उस समय के प्रसिद्ध निर्देशक थे। उन्होंने राज कपूर के भीतर की अभिनय क्षमता और लगन को पहचाना और राज कपूर को सन 1947 में अपनी फिल्म 'नीलकमल' में नायक की भूमिका दी। इस फिल्म में मधुबाला के साथ उन्होंने काम किया। राज कपूर ने हिंदी सिनेमा में 40 वर्षों से भी अधिक काम किया तथा इस दौरान अनेक सुपरहिट फिल्में बॉलीवुड को दी। 24 साल की उम्र में ही अर्थात 1948 में उन्होंने अपना स्टूडियो आर. के. फिल्म्स की स्थापना कर दी थी तथा अपने समय के सबसे कम उम्र के निर्देशक बन गए थे।

उनकी फिल्मों में 'चित्तौड़ विजय', 'दिल की रानी', 'अमर प्रेम', 'बरसात', 'प्रेम रोग' तथा 'राम तेरी गंगा मैली' जैसी फिल्मों से धूम मचा दी। राज कपूर को हिंदी सिनेमा का शोमैन बनाने के पीछे उनकी फिल्म 'आवारा', 'श्री 420', 'बरसात', 'संगम', 'मेरा नाम जोकर' का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। यह फिल्में राज कपूर के नायकत्व को प्रदर्शित करती हैं। सन 1955 में आर. के. फिल्म्स की 'श्री 420' ने राजकुमार को सबसे बढ़कर बना दिया। इस फिल्म ने सफलता तो प्राप्त की ही साथ ही देश-विदेश में सराही भी गई और इन दोनों से बढ़कर यह की 'श्री 420' अपने समय की सबसे अलग फिल्म थी बिल्कुल नए मिज़ाज की। इस फिल्म में राज कपूर का अभिनय बेमिसाल है तथा चार्ली चैप्लिन के अभिनय से प्रभावित है। इस फिल्म में वे मजाक ही मजाक में बहुत बड़ी बातें कह जाते हैं। यह एक ऐसी फिल्म थी जो अपने समय की जरूरत को पूरा करती है। हर वर्ग के दर्शक के साथ तादात्म्य स्थापित भी करती है।

हिंदी सिनेमा में दो असफलताओं की बड़ी हसरत से चर्चा की जाती है। गुरुदत्त की 'कागज के फूल' और राज कपूर की 'मेरा नाम जोकर'। यह दोनों ही फिल्में उनकी सबसे महत्वाकांशी फिल्में थी, जिन्हें दर्शकों नकार दिया। लेकिन दो-दो पीढ़ियां गुजर जाने के बावजूद भी ये आज भी मौजूद हैं। उन्हीं दर्शकों को, उनकी अगली पीढ़ी को अचंभित व आनंदित कर रही है। 'मेरा नाम जोकर' के साथ ही राज कपूर ने अभिनय का साथ छोड़ा लेकिन अब उन्होंने निर्माता- निर्देश के रूप में 'बॉबी' फिल्म से यह साबित कर दिया कि यदि बॉक्स ऑफिस ही उनके ध्यान में हो तो बड़े-बड़े सितारों के बिना भी बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा देने में वह पूरी तरह सक्षम है। 'बॉबी' सन 1973 में राज कपूर ने अपने बेटे ऋषि कपूर और डिंपल कपाड़िया जैसे बिल्कुल नए किरदारों को मुख्य भूमिका में रखते हुए इस फिल्म ने उस समय के व्यावसायिक सफलता के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए थे।

अतः राज कपूर को भारतीय सिनेमा का चार्ली चैपलिन कहा जाता है। राज कपूर की फिल्मों ने सोवियत रूस, चीन, अफ्रीका आदि देशों में भी प्रसिद्धि पाई। राज कपूर को सिने प्रेमी दर्शकों के साथ ही साथ फिल्म आलोचकों से भी भरपूर प्रशंसा मिली। वे चार्ली चैप्लिन के प्रशंसक थे और उनके अभिनय में चार्ली चैप्लिन का पूरा-पूरा प्रभाव पाया जाता था। अपने अंतिम समय में भी राज कपूर 'हिना' फिल्म पर काम कर रहे थे परंतु दुर्भाग्यवश वे इस फिल्म को पूरा न कर सके तथा 2 जून 1988 को राज कपूर ने अंतिम श्वास ली। 'हिना' फिल्म को उनके बेटे रणधीर कपूर ने पूरा किया। राज कपूर ने अपने अभिनय से भारतीय सिनेमा को एक नई पहचान दी है। उनकी फिल्मों के गाने आज भी गुन-गुनाए जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. ममता झा, चार्ली चैपलिन, प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2018
2. चार्ली चैपलिन, माई वंडरफुल विजिट, प्रभात प्रकाशन, 1916
3. चार्ली चैपलिन, माई ट्रिप अब्रॉड, फ़ॉरगॉटन बुक्स, 1922
4. चार्ली चैपलिन, चार्ली चैपलिन की अपनी कहानी, क्रिएटस्पेस इंडिपेंडेंट पब्लिशिंग प्लेटफॉर्म, 1916
5. चार्ली चैपलिन, ए कॉमेडियन सीज़ द वर्ल्ड, 1930, मिसौरी विश्वविद्यालय
6. चार्ली चैपलिन, माई ऑटोबायोग्राफी, पेंगुइन यूके, 1964
7. रितु नंदा, शो मेन राज कपूर, प्रभात प्रकाशन, 2019
8. जयप्रकाश चौकसे, राज कपूर सृजन प्रक्रिया, राजकमल प्रकाशन
9. राहुल रवेल, प्रणिक शर्मा, राज कपूर : बॉलीवुड के सबसे बड़े शोमैन, प्रभात प्रकाशन
10. विनोद विप्लव, हिंदी सिनेमा के 150 सितारे, प्रभात प्रकाशन,नयी दिल्ली, 2013
11. प्रहलाद अग्रवाल, राजकपूर : आधी हकीकत आधा फसाना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली प्रथम (परिवर्धित) संस्करण, 2007.

राजकपूर : एक फ़िल्म निर्माता और निर्देशक के रूप में

डॉ. रीना सिंह
सहायक प्राध्यापक
आर. के. तलरेजा महाविद्यालय, उल्हासनगर, जि. थाना, महाराष्ट्र

किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार,
किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार,
किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार...
जीना इसी का नाम है

गीत की उपर्युक्त चार पंक्तियाँ राजकपूर एक फिल्म निर्माता और निर्देशक के मनोभाव और उद्देश्य को बहुत हद् तक स्पष्ट करती है। मात्र तेरह वर्षों की उम्र में केदार शर्मा के साथ क्लैपर ब्वाय का कार्य करने लगे राजकपूर। कुछ लोगों का मानना है कि उनके पिता पृथ्वीराज कपूर को विश्वास नहीं था कि राज कपूर कुछ विशेष कार्य कर पायेगा, इसीलिये उन्होंने उसे सहायक या क्लैपर ब्वाय जैसे छोटे काम में लगवा दिया था। परन्तु, पृथ्वीराज कपूर के साथ रहने वाले एवं बाद के दिनों में राज कपूर के निजी सहायक एवं सहयोगी निर्देशक वीरेन्द्रनाथ त्रिपाठी का कहना है : ''पापा जी (पृथ्वीराज) हमेशा कहते थे राज पढ़ेगा-लिखेगा नहीं, पर फिल्मी दुनिया में शानदार काम करेगा। आज केदार ने उसे मेरा बेटा होने के कारण काम दिया है, लेकिन एक दिन वह भी होगा जब लोग राज को पृथ्वीराज का बेटा नहीं बल्कि पृथ्वीराज को राज कपूर का बाप होने के कारण जानेंगे।''[1]

1948 में प्रदर्शित 'आग' फिल्म सफल नहीं हो पायी। राज कपूर अभिनेता के साथ-साथ निर्माता-निर्देशक के रूप में पहली बार इसी में सामने आये। 'आग' के प्रदर्शन के साथ ही राज कपूर की छवि एक विवाद ग्रस्त व्यक्तित्व के रूप में बनी। 'आग' फिल्म जमी-जमाई परंपराओं का अनुकरण नहीं करती थी, किन्तु फिर भी वह अपनी अलग पहचान बनान में कामयाब नहीं हो सकी। राज कपूर ने हार नहीं माना। 'आग' के बाद 1949 में राज कपूर 'बरसात' फिल्म में अभिनेता के साथ-साथ निर्माता-निर्देशक के रूप में पुनः उपस्थित हुए और इस फिल्म ने सफलता का नया पैमाना प्रस्तुत कर दिया।

'बरसात' सिर्फ एक वर्ष के समय में पूरी हो गयी और 1949 में 'बरसात' के प्रदर्शन के साथ ही मानो हिन्दी सिनेमा में एक बहुत बड़ी क्रांति हो गई। शंकर-जयकिशन, शैलेन्द्र, हसरत जयपुरी, रामानन्द सागर, निम्मी और सारे टैक्नीशियन रातों-रात चोटी पर पहुँच गये। 'बरसात' का संगीत देश-काल की सीमाओं को लाँघ गया। चारों ओर मुकेश और लता के गाये हुए गीतों की धुन थी। गायिका लता मंगेशकर की पहचान भी 'बरसात' फिल्म में ही मुख्यतः बन पायी।

इसके बाद तो महबूब, केदार शर्मा, नितिन बोस, विमल राय, महेश कौल, वी शांताराम जैसे

महामहिमों के रहते नौसिखए राज कपूर ने अपनी फिल्म 'आवारा' से साबित कर दिया कि वह हर मोर्चे पर बड़े-बड़े दिग्गजों के हौसले पस्त कर सकते हैं।

राजकपूर निर्मित और निर्देशित फिल्में :

आग-1948, आवारा-1951, श्री 420-1955, मेरा नाम जोकर-1971, संगम-1964, राम तेरी गंगा मैली-1985, बॉबी-1973, सत्यम शिवम सुंदरम-1978, बरसात-1949, जिस देश में गंगा बहती है-1960, प्रेम रोग-1982, आह-1953, जागते रहो-1956, कल आज और कल-1971, धरम कर्म-1975, बूट पॉलिश-1954, बीवी ओ बीवी-1981, अब दिल्ली दूर नहीं-1957।

'आह'अपने दौर की सभी विशेषताओं को लिए हुई थी । इसका संगीत बेहद कर्णप्रिय था और उस जमाने में बहुत प्रसिद्ध हुआ था। उसकी मोहनी-शक्ति 'बरसात' और 'आवारा' से उन्नीस नहीं, बीस थी। 'आजा रे अब मेरा दिल पुकारा' और 'जाने न नज़र पहचाने जिगर'' राजा की आएगी बारात, रंगीली होगी रात, मगन मैं नाचूँगी', आदि गीत बेहद लोकप्रिय हुए थे।... फिर भी 'आह' इसलिए असफल हो गयी, क्योंकि 'आवारा' इस फिल्म ने राज कपूर की इमेज एक बिल्कुल अलग किस्म के मस्तमौला, फक्कड़ नौजवान की बना दी थी। उस फ्रेम में राज कपूर का यह निराशावादी व्यक्तित्व कहीं नहीं फिट बैठता था।

राज कपूर ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि उनकी तीनों ही फिल्म असफल हो जाएगी। इन फिल्मों की असफलता से उनकी लोकप्रियता को गहरा धक्का लगा। राज कपूर के पास उस समय कोई फिल्म नहीं थी। लेकिन उन्होंने हार नहीं माना। 'आह' की असफलता के तुरंत बाद आर॰ के॰ फिल्म्स के अंतर्गत एक ऐसी फिल्म बनायी गयी जिसने पूरे फिल्म उद्योग को चौंका दिया। यह फिल्म थी 'बूट पॉलिश', जिसमें राज कपूर स्वयं नायक भी नहीं थे और नरगिस भी नहीं थी। इसमें थे दो बाल कलाकार-बेबी नाज और रतन कुमार और प्रसिद्ध चरित्र अभिनेता अब्राहम डेविड। बाल फिल्मों की सफलता हमेशा ही संदिग्ध रही है। परन्तु राज कपूर के महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व के अनुरूप 'बूट पॉलिश' एक ऐसा करिश्मा साबित हुई जिसने उनकी प्रतिष्ठा पर लगे धक्के के एहसास तक को नष्ट कर दिया। इसकी रजत-जयंती सफलता ने पूरे फिल्म उद्योग को अचंभे में डाल दिया।

सन् 1955 में आर॰ के॰ फिल्म्स की 'श्री 420' ने फिर से राजकपूर को सबसे बढ़कर बना दिया। इस फिल्म को सफलता तो मिली ही, देश-विदेश में सराहना भी हुई। और इन दोनों से बढ़कर यह कि 'श्री 420' अपने समय की सबसे अलग फिल्म थी बिल्कुल नए मिजाज की। दर्शकों को इसमें नया स्वाद मिला। उन्होंने इसकी संवेदनशील भाषा में सामाजिक जिन्दगी का नया अर्थ पहचाना। तब देश आजाद हुए कुल 8 वर्ष हुए थे। जनमानस पर आजादी का नशा छाया हुआ था। उस समय 'श्री 420' में सभ्यता और प्रगति की आड़ में पनप रही खोखली नैतिकता को पहचानने की कोशिश के साथ ही उसके संभावित खतरों से आगाह किया गया था। इसमें वे मजाक ही मजाक में बहुत बड़ी बातें कहते हैं। यह एक ऐसी फिल्म थी जो अपने समय की जरूरत को पूरा करती है। हर वर्ग के दर्शक के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेती है।

सन् 1956राज कपूर के जीवन का महत्त्वपूर्ण वर्ष रहा। इसी वर्ष वे एक ओर कलात्मक ऊँचाइयों के चरमोत्कर्ष तक पहुँचे और दूसरी ओर लोकप्रियता के उच्चतम शिखर तक भी। वे हिन्दी सिनेमा में अपने ढंग का अलग व्यक्तित्व बन गये, जिसका कोई मुकाबला नहीं। इस वर्ष उनकी दो फिल्में प्रदर्शित हुईं- 'जागते रहो' और 'चोरी-चोरी'। इनमें से व्यावसायिक दृष्टि से 'चोरी-चोरी' अधिक सफल रही थी तथा अत्यधिक लोकप्रिय भी। 'जागते रहो' को आरंभ में अधिक व्यवसायिक सफलता नहीं मिली;

परंतु यह एक महान फिल्म थी। इस फिल्म को कार्लोरीवेरी अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का 'ग्रैंड प्रीं' पुरस्कार मिला। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत होने के उपरान्त हिन्दी दर्शक इस फिल्म का नाम सुनकर चौंके और दोबारा प्रदर्शित होने पर पहले की अपेक्षा 'जागते रहो' को अधिक सफलता प्राप्त हुई। उस समय तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी भारतीय फिल्म को इतना बड़ा पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ था। यह पुरस्कार मिलने के बाद हिन्दी जगत ने 'जागते रहो' का भरपूर स्वागत किया। कला समीक्षकों ने इसे हिन्दी सिनेमा की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माना।

इस बात में दो राय नहीं कि राजकपूर (1924-1988) हिन्दी सिनेमा के महाननिर्माता एवं निर्देशक थे। उन्नीसवीं सदी के चालीस और पचास के दशक में जब भारतीय सिनेमा आरंभिक दौर में था और देश अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुआ था, जब आर्थिक और तकनीकि संसाधनों की कमी थी उस दौर में राजकपूर की श्वेत-श्याम फिल्मों में विषय चयन, सम्पादन, गीत-संगीत, संवाद, विचारधारात्मक परिपक्वता जैसे तत्व हमें आश्चर्यचकित करते हैं।

'जिस देश में गंगा बहती है' का निर्माण भी राज कपूर ने ही किया था। यह फिल्म काफी उत्तम तथा सफल सिद्ध हुई। इस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का 'फिल्म फेयर पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

26 जून 1964 को अखिल भारतीय स्तर पर 'संगम' प्रदर्शित हुई। यह निर्माता, निर्देशक के रूपों में राज कपूर की पहली रंगीन फिल्म थी। 'संगम' में राज कपूर अपनी बहुआयामी प्रतिभा के साथ उपस्थित हुए। 'संगम' के निर्माता, निर्देशक, संपादक और नायक वे स्वयं थे। इस फिल्म के लिए उन्हें 'फ़िल्मफ़ेयर सर्वश्रेष्ठ निर्देशक पुरस्कार' प्राप्त हुए। रागात्मक सम्मोहन, नयनाभिराम दृश्यांकन और मधुर संगीत ने मिलकर इसे घनघोर लोकप्रिय बना दिया। भारत में ही नहीं, यूरोप के अनेक देशों में भी 'संगम' को बहुत सफलता मिली। 'संगम' ने राज कपूर को एशिया का सबसे बड़ा शो मैन बना दिया।

सन् 1967के दिसंबर में आर॰ के॰ फिल्म्स की अपने समय की सबसे महँगी फिल्म 'मेरा नाम जोकर' अखिल भारतीय स्तर पर एक साथ प्रदर्शित हुई। यह राज कपूर के जीवन की सबसे महत्त्वाकांक्षी फिल्म थी। फिल्म समालोचक प्रहलाद अग्रवाल के शब्दों में :

'... निश्चय ही राजकपूर इसके माध्यम से (बाजार) लूटने के लिए नहीं, अपने कलाकार की मुक्ति की उद्दाम आकांक्षा से उद्वेलित होकर निकले थे।... एक निर्देशक और एक कलाकार के रूप में राजकपूर ने अपनी जिन्दगी का सब-कुछ 'जोकर' को दिया। एक निर्माता के रूप में उन्होंने अंगरेजी की 'लेफ्ट नो स्टोन अनटर्न्ड' कहावत चरितार्थ की। 'मेरा नाम जोकर' राजकपूर के सपनों का एक ऐसा तमाशा था जिसे वह एक साथ कलात्मक और व्यावसायिक ऊँचाइयों तक पहुँचाना चाहते थे।... 'जोकर' असफल हो गयी। राजकपूर की जिन्दगी का सबसे बड़ा सपना मिट्टी में मिल गया। वह सपना जिसके लिए उसने अपना पूरा अस्तित्व दाँव पर लगा दिया था। इस सब के बावजूद 'जोकर' राजकपूर की महानतम कलाकृति है जिसमें उसने अपने व्यक्तित्व, अपने रचनात्मक कौशल और कलाकार की पीड़ा को अत्यन्त मार्मिक और सघन अभिव्यक्ति दी है।'[2]

फिल्म विशेषज्ञ एवं लेखक प्रदीप चौबे ने संस्मरणात्मक शैली में लिखा है कि '...1971 में मेरा नाम जोकर देख चुका था। वह भी मजबूरी में। जोकर के साथ ही बाजार में उतरी थी- जॉनी मेरा नाम। ठीक जोकर के साथ ही रिलीज हुई थी। जॉनी की धूम मची हुई थी। जॉनी.. ने ..जोकर को पछाड़ दिया था। रायपुर (छत्तीसगढ़) में दोनों फिल्में आमने-सामने लगी थीं। जॉनी मेरा नाम का टिकिट जब ब्लैक में भी नहीं मिला तो मन मारकर दोस्तों का टोला ..जोकर में घुसा। टिकिट खिड़की खाली पड़ी

थी। टिकिट लेकर हॉल में घुसे तो वह भी खाली पड़ा था, बहुत निराशा हुई।... बहुत अन्यमनस्क मूड में हम लोग ..जोकर में घुसे थे परंतु पौने चार घंटे की यह फिल्म देखने के बाद जब हम लोग हॉल से बाहर निकले तो राजकपूर लगातार मेरे भीतर-बाहर थे। रायपुर से अपने कस्बे की दो घंटों की बस यात्रा में ..जोकर मेरे भीतर से निकलने को तैयार न था। फिल्म की कहानी, विदूषक का जीवन-दर्शन, भव्य फिल्मांकन, महान करुणा प्रधान संगीत, उदासी भर देने वाली टेक्निकल रंग-प्रस्तुति आदि सभी तत्वों ने मुझे झकझोर दिया। ..जोकर के माध्यम से राजकपूर ने मेरी फिल्म चेतना पर हमला कर दिया था। लगभग सप्ताह भर मैं ..जोकर की खुमारी में रहा। राज कपूर एक झटके में मेरी समझ में आ गए।'[3]

'आवारा', 'श्री 420' तथा 'मेरा नाम जोकर' राज कपूर के सृजन के तीन शिखर भी हैं तथा उनके जीवन-दर्शन को प्रस्तुत करने के महत्वाकांक्षी माध्यम भी। यही कारण है कि राज कपूर ने 'आवारा' तथा 'श्री 420' इन दोनों फिल्मों को किसी न किसी रूप में मेरा नाम जोकर से सम्बद्ध किया है। 'मेरा नाम जोकर' में 'आवारा' का प्रसिद्ध गीत 'आवारा हूँ' दोहराया गया है तथा 'श्री 420' के कई दृश्यों की झलक दिखलायी गयी है। इसलिए 'मेरा नाम जोकर' को समझने के लिए यह आवश्यक है कि उसे देखने से पहले 'श्री 420' को अवश्य देख लिया गया हो।

'मेरा नाम जोकर' जैसी क्लासिक फिल्म की व्यावसायिक असफलता तथा अपनी व्यावसायिक क्षमता के प्रति लोगों की आशंकाओं को निराधार साबित करते हुए राज कपूर ने स्वनिर्मित 'बॉबी' फिल्म के द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि यदि बॉक्स ऑफिस ही उनके ध्यान में हो तो वे बड़े-बड़े सितारों के बिना भी बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा देने में पूरी तरह सक्षम हैं। बॉबी सन् 1973में प्रदर्शित हुई जो बॉक्स आफिस पर सुपरहिट हुई। अपनी इस फ़िल्म में उन्होंने अपने बेटे ऋषि कपूर और डिम्पल कपाड़िया जैसे बिल्कुल नये कलाकारों को मुख्य भूमिका में लिया और दोनों ही सुपरहिट स्टार साबित हुए। इस फ़िल्म ने उस समय व्यावसायिक सफलता के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये।

बॉबी फ़िल्म की सफलता के बाद राज कपूर रुके नहीं, उन्होंने अगली फ़िल्म 'सत्यम शिवम सुन्दरम' बनायी जो कि फिर एक बार हिट हुई। रजत जयंती मनाने के बाद भी इसने दर्शकों और कला पारखियों को निराश ही किया। इस फिल्म पर पानी की तरह पैसा बहाने के बावजूद जितनी आकांक्षाएँ इसको लेकर पैदा की गयी थीं, उन पर यह पूरी नहीं उतरी। हालाँकि उन्होंने एक-एक दृश्य को चरम सीमा तक खूबसूरत बनाने के लिए उन्होंने कड़ा परिश्रम किया था। इस फ़िल्म के क्लाइमेक्स में बाढ़ का दृश्य था जिसे फ़िल्माने के लिये उन्होंने अपने खर्च से नदी पर बांध बनवाया और नदी में भरपूर पानी भर जाने के बाद बांध को तुड़वा दिया जिससे कि बाढ़ का स्वाभाविक दृश्य फ़िल्माया जा सके। जयप्रकाश चौकसे के शब्दों में :

'सत्यम्' के बाढ़-दृश्य इतने प्रामाणिक इसलिए लगते हैं कि वे असली बाढ़ के दृश्य हैं और कमर तक पानी में खड़े रह कर लिए गए हैं। दरअसल वे दृश्य बहुत खतरा उठा कर लिए गए हैं, क्योंकि बाढ़ का तेज बहाव यूनिट के सदस्यों को मुसीबत में डाल सकता था। स्वयं राज कपूर कमर तक पानी में खड़े रहकर काम कर रहे थे। जब बाढ़ का पानी उतर गया, तब देखा कि 'सत्यम्' के लिए लगाया पूरा गाँव बह गया- मन्दिर का विशाल सेट लगभग नष्ट हो गया है। राज कपूर ने उस समय भी शूटिंग की जब बाढ़ का पानी उतार पर था, क्योंकि फिल्म में उन दृश्यों की भी आवश्यकता थी।'[4]

'सत्यम् शिवम् सुंन्दरम्' के बाद राज कपूर ने 'प्रेम रोग' का निर्माण किया। इसका निर्देशन भी उन्होंने स्वयं किया। इसमें नायक रूप में ऋषि कपूर एवं नायिका के रुप में पद्मिनी कोल्हापुरे को लिया

गया। आरंभ में इस फिल्म की सफलता की गति काफी धीमी रही। इसके विरुद्ध प्रचार भी खूब हुआ था, परंतु धीरे-धीरे यह सँभलती चली गयी तथा सफल हो गयी। अनेक स्थानों पर इसने रजत जयंती मनायी। यद्यपि इसकी व्यापारिक सफलता चामत्कारिक नहीं थी, परंतु अनेक दृष्टियों से इस फिल्म को काफी महत्वपूर्ण माना गया है। यह न केवल विधवा-विवाह की समस्या पर आधारित थी, वरन् मूलतः यह औरत के बारे में तत्कालीन सामंती सोच पर बहुत से सूक्ष्मता से प्रहार करने वाली फिल्म थी। स्त्री के अक्षत कौमार्य की रुढ़िगत महत्ता को अत्यंत कलात्मकता के साथ इसमें तोड़ा गया है।

सन् 1985में रणधीर कपूर द्वारा निर्मित तथा राज कपूर द्वारा निर्देशित फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' प्रदर्शित हुई। यह वह समय था जब पिछले कुछ वर्षों में फिल्म उद्योग के प्रायः सभी हिन्दी फिल्म निर्माता चमत्कारी सफलता का मुंह देखने के लिए तरस गये थे। इस फिल्म के भी रिलीज होने के एक दिन पहले तक किसी को अनुमान भी नहीं था कि राज कपूर का जादू फिर लोगों के सिर चढ़कर बोलेगा। लेकिन जब यह फिल्म रिलीज हुई तो इसने सफलता का नया कीर्तिमान रच दिया। फिल्म के एक दृश्य में पहाड़ों में रहने वाले एक लड़की के निर्द्वन्द्व तथा उन्मुक्त जीवन को दर्शाने के लिए दिखलाये गये छोटे से उन्मुक्त दृश्य पर कुछ लोगों ने काफी हो हल्ला मचाया; परंतु इस फिल्म को देखने के लिए उमरी पारिवारिक दर्शकों की भारी भीड़ तथा उसमें भी महिलाओं की प्रभूत संख्याने सबके मुंह बंद कर दिये।

राम तेरी गंगा मैली बनाने के बाद वे 'हिना' के निर्माण में लगे थे जिसकी कहानी भारतीय युवक और पाकिस्तानी युवती के प्रेम-सम्बन्ध पर आधारित थी। 'हिना' के निर्माण के दौरान राज कपूर की मृत्यु हो गयी और उस फ़िल्म को उनके बेटे रणधीर कपूर ने पूरा किया।

राज कपूर को संगीत की बहुत अच्छी समझ थी। साथ ही साथ वे यह भी अच्छी तरह से जानते थे कि किस तरह के संगीत को लोग पसंद करते हैं। यही कारण है कि आज तक उनके फ़िल्मों के गाने लोकप्रिय हैं। शंकर जयकिशन जैसे प्रसिद्धि के शिखर तक पहुंचने वाले संगीतकार को उन्होंने ही अपनी फ़िल्म 'बरसात' में पहली बार संगीत-प्रस्तुतीकरण का अवसर दिया था। फ़िल्म बरसात से राज कपूर ने अपनी फल्मों के गीत-संगीत के लिए एक प्रकार से एक टीम बना लिया था जिसमें उनके साथ गीतकार शैलेन्द्र तथा हसरतजयपुरी, गायक मुकेश और संगीतकार शंकर जयकिशन शामिल थे।

राजकपूर एक संपूर्ण फ़िल्मकार के रूप में हिन्दी सिनेमा का महत्वपूर्ण हिस्सा बने रहे। राजकपूर को फ़िल्म की विभिन्न विधाओं की बेहतरीन समझ थी। यह उनकी फ़िल्मों के कथानक, कथा प्रवाह, गीत संगीत, फ़िल्मांकन आदि में स्पष्ट महसूस किया जा सकता है। शायद इसकी वजह निचले दर्जे से सफ़र की शुरुआत थी। राजकपूर के पिता पृथ्वीराज कपूर अपने दौर के प्रमुख सितारों में से थे लेकिन फ़िल्मों में राजकपूर की शुरुआत चौथे असिस्टेंट के रूप में हुई थी। राजकपूर ने एक साक्षात्कार में कहा था, पिताजी का नाम मेरे लिए कितना सहायक हुआ यह नहीं मालूम। उन्होंने फ़िल्मों में मुझे चौथे असिस्टेंट के रूप में भेजा। शायद यही वजह रही कि अपनी फ़िल्मों के हरेक मामले में उनकी अलग छाप स्पष्ट दिखती है। समीक्षकों के अनुसार उनकी फ़िल्मों को मोटे तौर पर दो हिस्सों में बाँटा जा सकता है। एक ओर प्रेम प्रधान फ़िल्में हैं जिनमें आग, बरसात, संगम, बॉबी आदि हैं। दूसरी श्रेणी उन फ़िल्मों की है जिनमें स्वतंत्रता के बाद की पीढ़ी के सपने नज़र आते हैं और आज़ादी के बाद सब कुछ ठीक हो जाने का सपना है। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के सपनों के साथ उनकी फ़िल्में एक उम्मीद दिखाती हैं। इस क्रम में श्री 420, बूट पालिश, अब दिल्ली दूर नहीं, जिस देश में गंगा बहती है, आवारा आदि

का नाम लिया जा सकता है।

राजकपूर के जीवनकाल में उनके द्वारा निर्मित-निर्देशित फिल्मों ने, उनके लिए जितना लाभ कमाया, उससे हजार गुना अधिक धन, उनकी मृत्यु के बाद विगत इक्कीस वर्षों में कमाया है। प्रति तीन वर्ष सैटेलाइट पर प्रदर्शन के अधिकार अकल्पनीय धन में बिकते रहे हैं और यह सिलसिला आज भी जारी है। उनके समकालीन किसी भी फिल्मकार की रचनाओं को ये दाम नहीं मिले हैं।

अंततः मैं कहना चाहूँगी की राजकपूर भारतीय सिनेमा के एक ऐसे निर्माता-निर्देशक थे, जिनकी तुलना अन्य किसी निर्माता-निर्देशक से नहीं की जा सकती है। सिनेमा का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसका ज्ञान और अनुभव उन्हें नहीं रहा हो। सिनेमा उनमें बसता था और वे खुद सिनेमा को जीते थे, यही कारण है कि वे एक मिसाल बन गए।... उनकी कामयाबी और ऊँचाई तक कोई भी पहुँच नहीं पाया है। उनकी अधिकांश फिल्मों में व्यावसायिकता, कलात्मकता, साहित्यिकता और सामाजिकता का सम्मोहक सम्मिश्रण मिलता है। वास्तव में वे एक हरफनमौला सिने व्यक्तित्व थे। उनकी फिल्मों का हर पक्ष इतना सधा हुआ होता था कि हिन्दी सिनेमा का हर दर्शक उससे मुग्ध हो जाता था।

संदर्भ सूची :

1. https://hi.wikipedia.org/wiki/राजकपूर
2. राजकपूर : आधी हकीकत आधा फ़साना – प्रह्लाद अग्रवाल,नयी दिल्लीः राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 42.
3. हिंदी सिनेमा : बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक, प्रदीप चौबे, प्रगतिशील वसुधा, अंक-81, अप्रैल-जून, 2009; (सिनेमा विशेषांक), पृष्ठ-121-122.
4. राजकपूर : सृजन प्रक्रिया ,जयप्रकाश, चौकसे, प्रथम संस्करण, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ॰ 70-71
5. https://en.bharatdiscovery.org/india/राज-कपूर
6. https://hindi.webdunia.com/hindi-books-review/
7. https://www.uttaramahilapatrika.com/re-naissance-womens-questions-and-prac-tices-books/

डिजिटल युग में शोमैन राजकपूर की फिल्मों की प्रासंगिकता

परमेश कुमार
फैक्लिटी, जनसंचार विभाग, डीएवी कॉलेज फॉर गर्ल्स, यमुनागनर, हरियाणा

डिजिटल युग ने सिनेमा की प्रस्तुति, वितरण और उसके अनुभव को पूरी तरह बदल दिया है। ओटीटी प्लेटफॉर्म, यूट्यूब, और सोशल मीडिया जैसे डिजिटल माध्यमों ने फिल्मों को एक नया जीवन दिया है। इन बदलावों के बीच भारतीय सिनेमा के शौमन राजकपूर की फिल्में आज भी प्रासंगिक हैं। राजकपूर की फिल्में न केवल भारतीय सिनेमा की सांस्कृतिक धरोहर है, बल्कि यह मानवता, समाज और कला का एक ऐसा संगम है, जो हर युग में प्रेरणा देता रहेगा।

राजकपूर ने अपने फिल्मी करियर में 70 से ज्यादा फिल्मों में काम किया। उनका सिनेमा का सफर बतौर बाल कलाकार वर्ष 1935 में इंकलाब फिल्म शुरू हुआ। अभिनेता के रूप में उन्होंने 24 मार्च 1947 में रिलिज हुई नीलकमल फिल्म से अभिनय की शुरूआत की। त्रिकोणिय प्रेम पर आधारित इस फिल्म में महज 14 साल की उम्र में मधुबाला ने अभिनेत्री का किरदार अदा किया, जो कि उनकी पहली फिल्म थी। निर्माता, निर्देशक व पटकथा लेखक केदार नाथ शर्मा द्वारा निर्मित यह ऐतिहासिक फिल्म राजकपूर व मधुबाला के करियर में मील का पत्थर साबित हुई। राजकपूर ने अपनी फिल्मों में सामाजिक मुद्दों को जोर शोर से उठाया, जो कि आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। आवारा फिल्म में जहां उन्होंने सामाजिक असमानता और न्याय प्रणाली की आलोचना की, तो वहीं श्री 420 में भ्रष्टाचार और ईमानदारी के संघर्ष को रूपहले पर्दे पर दिखाया। बतौर निर्देशक उन्होंने राम तेरी गंगा मैली में नैतिक पतन की बात को लोगों के समक्ष रखा।

एआई के युग में कहानी और भावनाओं का महत्व बरकरार :

डिजिटल युग में जहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और वर्चुअल रियलिटी जैसे माध्यम उभर रहे हैं, वहीं राज कपूर की फिल्में सच्ची मानवीय भावनाओं को चित्रित कर रही है। उनकी फिल्में हमें सिखाती हैं कि तकनीकी प्रगति के बावजूद, कहानी और भावनाओं का महत्व कभी कम नहीं होता। सन् 1951 में प्रदर्शित आवारा फिल्म, हिन्दी सिनेमा के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुई। फिल्म ने राजकपूर को नायक के रूप में नयी और अलग पहचान दी। आवारा ने ही फिल्मकार के रूप में एक दृष्टिकोण दिया; और आवारा ने ही उनकी फिल्मों को सामाजिक यथार्थ के धरातल पर ला खड़ा किया। सुप्रसिद्ध फिल्म-समालोचक प्रहलाद अग्रवाल के शब्दों में आवारा ने इस सत्ताइस साल के नौजवान को उस ऊँचाई पर पहुँचा दिया, जहाँ तक पहुँचने के लिए बड़े-से-बड़ा कलाकार लालायित हो सकता है। आवारा ने ही उसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्रदान की। यहाँ तक सोवियत

रूस में राजकपूर, पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्तित्व बन गए। रूस और अनेक समाजवादी देशों में आवारा को सिर्फ प्रशंसा ही नहीं मिली, अपितू वहाँ की जनता ने भी बेहद आत्मीयता के साथ इसे अपनाया।

लेखक-पत्रकार विनोद विप्लव के शब्दों में भारत ने विश्व स्तर पर चाहे जो छवि बनायी हो और उसके जो भी नये प्रतीक हो, लेकिन इतना तय है कि चीन, पूर्व सोवियत संघ और मिस्र जैसे देशों में राजकपूर हमेशा के लिए भारत का प्रतीक बने रहेंगे। चीन के सबसे बड़े नेता माओ त्से तुंग ने सार्वजनिक तौर पर कहा था कि आवारा उनकी सर्वाधिक पसंदीदा फिल्म थी। शायद यही कारण है कि आज भी पेइचिंग और मास्को की सड़कों पर घूमते-टहलते हुए आवारा हूँ गीत सुनाई पड़ने लगते हैं। यह राज कपूर की लोकप्रियता के विशाल दायरे का एक उदाहरण मात्र है।

राज कपूर की फिल्मों की एक खासियत यह है कि उनके विषय सार्वभौमिक रहे हैं। आवारा और श्री 420 जैसी क्लासिक्स फिल्मों ने रूस, चीन, और मध्य एशियाई देशों में अपार लोकप्रियता हासिल की। डिजिटल युग में, इन फिल्मों की वैश्विक पहुंच और बढ़ गई है। नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर इन फिल्मों को नई पीढ़ी के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय दर्शकों से भी सराहना मिल रही है। राजकपूर की फिल्मों ने वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को मजबूती प्रदान की है और वैश्विक स्तर पर सदियों से चली आ रही हमारी परंपरा का बखूबी निर्वाह किया है। राजकपूर जैसे कलाकार सदियों में कोई-कोई होता है, जो पूरे विश्व को जोडने का कार्य करते हैं।

राज कपूर की फिल्मों को डिजिटल युग में पुनः बहाल करना बेहद महत्वपूर्ण है। उनकी ब्लैक एंड व्हाइट और प्रारंभिक रंगीन फिल्मों को एचडी, 4के और अन्य उन्नत तकनीकों के माध्यम से रीमास्टर्ड किया जा रहा है। यह न केवल इन फिल्मों की गुणवत्ता को सुधार रहा है, बल्कि इन्हें नई पीढ़ी के दर्शकों के लिए आकर्षक भी बना रहा है। डिजिटल युग में राजकपूर की फिल्मों को बहाल (रिस्टोर) करके उच्च गुणवत्ता में प्रस्तुत करना, उनकी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने का एक अहम कदम है। उनके गानों, संवादों और दृश्यों को डिजिटल फॉर्मेट में पेश करना न केवल सिनेमा प्रेमियों के लिए फायदेमंद है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम भी है।

ओटीटी प्लेटफॉर्म जैसे नेटफ्लिक्स, हॉटस्टार, अमेज़न प्राइम और यूट्यूब पर उनकी फिल्मों को शामिल करना उनकी विरासत को दुनिया भर के दर्शकों तक पहुँचाने का एक प्रभावी माध्यम है। उदाहरण के लिए फिल्म आवारा का टाइटल ट्रैक आवारा हूँ आवारा हूँ या गर्दिश में हूँ आसमान का तारा हूँ आवारा हूँ रूस और अन्य देशों में यूट्यूब पर लाखों बार देखा और सुना गया है।

चार्ली चैप्लिन बनाम राजकपूर :

चार्ली चैप्लिन से राजकपूर की अनेक बार तुलना गयी है। इस सन्दर्भ में प्रहलाद अग्रवाल की स्पष्ट मान्यता है कि निस्संदेह चार्ली विश्व सिनेमा का एक महान स्तंभ है। उससे यदि राजकपूर की तुलना की जाए तो यह भी बड़ी बात ही होगी। चार्ली चैप्लिन ने अपनी फिल्मों में मनुष्य के भौतिक जीवन के प्रति आग्रही व्यक्तित्व के बाह्य संकट की ओर अधिक ध्यान केंद्रित किया, जबकि राजकपूर की फिल्मों में सामाजिक समस्याओं को बखूबी उठाया गया। चार्ली चैप्लिन और राजकपूर इस धरातल पर एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। सार्थक कलात्मक दृष्टि से दोनों अपने समय से आगे देखते हैं। मॉडर्न टाइम्स में चार्ली इशारा करता है कि मशीनीकरण की अन्धी दौड़ स्वयं मनुष्य को मशीन बना देगी। इस बात को बहुत बाद में महसूस किया गया। इसी तरह श्री 420 में राजकपूर शिक्षित बेरोजगारी की आगत

भविष्य में भयावहता की ओर संकेत करता है। जिस ताकत से उन्होंने यह बात सन् 1955 में कही थी, भारतीय समाज और उसके नियामकों ने उसकी शिद्दत को सन् 1970 के बाद ही समझा। फिल्म समीक्षक डॉ. सी. भास्कर राव के अनुसार उन्होंने चार्ली की नकल नहीं की, बल्कि उन्हें भारतीय रंग में कुछ इस कदर इतने मौलिक रूप में रंग दिया कि वे विश्व के दूसरे चैप्लिन बन गये।

राजकपूर की फिल्मों का संगीत :

राजकपूर की फिल्मों का संगीत उनकी पहचान है। शंकर-जयकिशन, मुकेश, लता मंगेशकर और मन्ना डे जैसे महान कलाकारों के सहयोग से उनके गाने हर पीढ़ी में लोकप्रिय हैं। राजकपूर की फिल्मों में संगीत एक विशिष्ट पहचान रखता है। जो कि भारतीय सिनेमा के स्वर्णिम युग का प्रतीक है। उनकी फिल्मों का संगीत मुख्य रूप से भावनात्मक, मधुर और क्लासिकल अंदाज में प्रस्तुत किया गया। राजकपूर की फिल्मों का संगीत जन साधारण के भावों को सशक्त अभिव्यक्ति है। वह व्यक्ति की भावनाओं का कुछ इस तरह से उजागर करते हैं कि दर्शक स्वयं को उनके साथ आत्मसात कर लेते हैं, तो फिर राजकपूर और दर्शक मानों दोनों एक ही हो जाते है। जिसमें भारतीय लोक और शास्त्रीय संगीत का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। राजकपूर की फिल्मों का संगीत उनकी कहानी और पात्रों की भावनाओं को खूबसूरती से उभारता है। राजकपूर की ज्यादातर फिल्मों में शंकर जयकिशन ने संगीत दिया है। उनकी जोडी ने राजकपूर की फिल्मों में सदाबहार और कालजयी गीतों की रचना की। गीतकार शैलेंद्र और हसरत जयपुरी ने राजकपूर की फिल्मों के लिए गीत लिखें। जो सरल लेकिन गहरे अर्थों वाले हाते थे। इन गीतों में सामाजिक संदेश और रोमांस का अनूठा संगम दिखाई देता है। 1951 आई राजकपूर की फिल्म आवारा का टाइटल ट्रैक आवारा हूँ आवारा हूँ या गर्दिश में हूँ आसमान का तारा हूँ आवारा हूँ, वर्ष 1955 में फिल्म बरसात का गीत प्यार हुआ इकरार हुआ, प्यार से क्यूं डरता है दिल तथा मेरा जूता है जापानी, वर्ष 1964 में आई फिल्म संगम का गीत ये मेरा प्रेम पत्र पढ़कर तुम नारान न होना व 1970 में आई फिल्म मेरा नाम जोकर का गीत जीना यहां मरना यहां सहित अन्य गीतों को आज भी गुनगुनाते सुना जा सकता है। इससे जाहिर है कि राजकपूर की फिल्मों का संगीत उनके सिनेमा का दिल था। जो कि उनके सपनों, समाज के प्रति उनकी सोच और दर्शकों से उनके जुडाव को दर्शाता है। उनके गाने आज भी हर पीढी को प्रेरित कर रहे है। डिजिटल युग में सिनेमा निर्माताओं को यह समझने की जरूरत है कि एक अच्छी फिल्म के लिए अद्भुत संगीत कितना जरूरी है।

राजकपूर की प्रमुख फिल्में और उनकी विशेषताएं :

वर्ष 1951 में रिलीज हुई फिल्म आवारा गरीबी, सामाजिक भेदभाव और न्याय प्रणाली पर आधारित थी। फिल्म में राज कपूर ने एक आवारा का किरदार निभाया, जो समाज की अन्यायपूर्ण व्यवस्था का शिकार होता है। फिल्म का गाना आवारा हूँ, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेहद लोकप्रिय हुआ। वर्ष 1955 में आई श्री 420 फिल्म भ्रष्टाचार, पूंजीवाद और ईमानदारी के संघर्ष पर आधारित थी। फिल्म में मेरा जूता है जापानी, गाने ने भारतीय संस्कृति और आत्मसम्मान को दर्शाया। राजकपूर ने अपनी फिल्मों के माध्यम से उन पात्रों को जीवंत कर दिया था, जो मुख्यधारा से कटे हुए थे। यानि उन्होंने जनसाधारण की पीडा को उजागर किया और अभिजात्य वर्ग की उनके प्रति सोचने के लिए विवश किया है। वर्ष 1964 में बनी संगम फिल्म त्रिकोणीय प्रेम पर आधारित थी। फिल्म की खास बात यह थी कि इसमें पहली बार तकनीकी रूप से उन्नत रंगीन सिनेमाटोग्राफी का प्रयोग हुआ था। वर्ष 1970 में आई मेरा नाम जोकर राज कपूर की एक महत्वाकांक्षी फिल्म थी। जो कि एक जोकर की जिंदगी और उसके संघर्षों पर आधारित थी।

हालांकि यह फिल्म व्यावसायिक रूप से असफल रही, लेकिन इसे सिनेमा का एक महान कृति माना जाता है। वर्ष 1985 में आई राम तेरी गंगा मैली का निर्देशन राजकपूर ने ही किया था। जो कि उनकी आखिरी फिल्म थी। जिसमें भारतीय समाज में नैतिक पतन को दर्शाया गया था।

राजकपूर की फिल्मों की दीर्घकालिक महत्ता एवं लोकप्रियता के संबंध में जयप्रकाश चौकसे ने लिखा है कि राजकपूर के जीवनकाल में उनके द्वारा निर्मित-निर्देशित फिल्मों ने उनके लिए जितना लाभ कमाया, उससे हजार गुना अधिक धन उनकी मृत्यु के बाद विगत 36 वर्षों में कमाया है। सैटेलाइट पर प्रदर्शन के अधिकार अकल्पनीय धन में बिकते रहे हैं और यह सिलसिला आज भी जारी है। उनके समकालीन किसी भी फिल्मकार की रचनाओं को ये दाम नहीं मिले हैं। उनकी प्रासंगिकता के संबंध में उदाहरण-स्वरूप जयप्रकाश चौकसे ने लिखा है कि सूरज बड़जात्या की पहली फिल्म मैंने प्यार किया का सफल प्रदर्शन हुआ और फिल्म के लिए श्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार लेते हुए बड़जात्या ने कहा कि राजकपूर की फिल्मों ने उन्हें प्रेरित किया है और पाठ्यक्रम की तरह वे इन फिल्मों को बार-बार देखते हैं। युवा पीढ़ी के निर्माता-निर्देशक करण जौहर और आदित्य चोपड़ा भी राजकपूर की फिल्मों से प्रेरणा लेते हैं। राजकपूर की बहुआयामिता एवं सार्वकालिक महत्ता के संदर्भ में सिनेमा संबंधी अनेक पुस्तकों के लेखक डॉ. सी. भास्कर राव ने लिखा है कि राजकपूर भारतीय सिनेमा के एक ऐसे कलाकार थे, जिनकी तुलना अन्य किसी कलाकार से नहीं की जा सकती है। सिनेमा का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसका ज्ञान और अनुभव उन्हें नहीं रहा हो। सिनेमा उनमें बसता था और वे खुद सिनेमा को जीते थे, यही कारण है कि वे एक मिसाल बन गए। उनकी कामयाबी और ऊँचाई तक कोई भी पहुँच नहीं पाया है। उन्हें अपने अभिनय के लिए दस सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं में एक माना गया। उन्हें सदी के सर्वश्रेष्ठ निर्देशक और सदी के सर्वश्रेष्ठ शो मैन का सम्मान भी प्रदान किया गया। उन्हें सिनेमा का सबसे बड़ा शो मैन माना जाता है, लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि वे सिर्फ व्यावसायिक फिल्में ही बनाते थे। उनकी अधिकांश फिल्मों में व्यावसायिकता, कलात्मकता, साहित्यिकता और सामाजिकता का सम्मोहक सम्मिश्रण मिलता है। वास्तव में वे एक हरफनमौला सिने व्यक्तित्व थे। उनकी फिल्मों का हर पक्ष इतना सधा हुआ होता था कि हिन्दी सिनेमा का हर दर्शक उससे मुग्ध हो जाता था। वे हिन्दी और भारतीय सिनेमा के ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने उसे एक विश्वमंच प्रदान किया। सिनेमा के क्षेत्र में नायक तो बहुत हुए, लेकिन राजकपूर जैसे नायक सदियों में कोई एक ही होता है। राजकपूर ने हिंदी सिनेमा को वो उंचाई प्रदान की है, जो अब तक के कलाकारों के साथ-साथ भविष्य में भी सदियों तक लोगों को प्रेरित करती रहेगी। राजकपूर का योगदान अतुलनीय है।

निष्कर्ष :

राजकपूर की फिल्मों ने भारत को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई। उनकी फिल्में रूस, चीन और मध्य एशिया के देशों में विशेष रूप से लोकप्रिय थी। आवारा और श्री 420 फिल्म ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय शोहरत प्रदान की। भारतीय सिनेमा में अद्वितीय योगदान के लिए वर्ष 1987 में उन्हें दादा साहेब फाल्के पुरस्कार दिया गया। भारत सरकार ने वर्ष 1971 में पद्म भूषण पुरस्कार दिया। सोवियत संघ ने राजकपूर को शोमैन ऑफ इंडिया के नाम से सम्मानित किया। इसके अलावा उन्हें फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सर्वश्रेष्ठ अभिनेता सहित अन्य पुरस्कारों और सम्मानों से नवाजा गया।

डिजिटल युग में राज कपूर की जिंदगी और उनकी फिल्मों पर डॉक्यूमेंट्री और वेब सीरीज बनाना उनकी विरासत को संरक्षित और प्रचारित करने का एक अनूठा तरीका हो सकता है। इससे न केवल

उनके जीवन और कार्यों को समझने में मदद मिलेगी, बल्कि यह नई पीढ़ी को प्रेरित भी करेगा। राज कपूर की फिल्मों को फिल्म स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली सामग्री के रूप में शामिल किया जाना चाहिए। डिजिटल युग में ऑनलाइन कोर्स और वेबिनार के माध्यम से उनकी फिल्मों के महत्व को समझाया जाना चाहिए। डिजिटल माध्यमों से उनकी फिल्मों को संरक्षित, पुनर्स्थापित और प्रचारित करके हम उनकी विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचा सकते हैं। यह न केवल भारतीय सिनेमा के इतिहास को जीवित रखने का काम करेगा, बल्कि यह दुनिया भर में भारतीय संस्कृति और सिनेमा की गहरी समझ और सम्मान को भी बढ़ाएगा। इससे युवाओं में रोजगार के नए अवसरों का सृजन भी होगा। राज कपूर सिनेमा के शोमैन थे और डिजिटल युग में भी उनकी यह पहचान अमर रहेगी। वास्तव में राजकपूर के अभिनय में ऐसे राज छुपे हैं, जो अपने आप में शोध का विषय है। उनकी बारीकियों को उजागर कर एआई माध्यम से और अधिक प्रचारित प्रसारित किया जा सकता है। अनेक संभावनाओं के द्वार खोले जा सकते है। यह आलेख उसका प्रथम प्रयास कहा जा सकता है।

सन्दर्भ :

1. जयप्रकाश, चौकसे (2010), राजकपूर : सृजन प्रक्रिया (प्रथम (संशोधित-परिवर्धित) संस्करण), नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
2. विनोद, विप्लव (2013), हिंदी सिनेमा के 150 सितारे (प्रथम संस्करण), आसफ अली रोड, नयी दिल्ली, प्रभात प्रकाशन (पेपरबैक्स)।
3. मृत्युंजय (संपादक) (2017), सिनेमा के सौ बरस (दशम संस्करण), शाहदरा, दिल्ली, शिल्पायन।
4. प्रदीप चौबे, हिंदी सिनेमा : बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक (प्रगतिशील वसुधा, अंक-81)।
5. अप्रैल-जून, 2009; द्सिनेमा विशेषांकल), संपादक- प्रहलाद अग्रवाल, (पुस्तक रूप में साहित्य भंडार, 50, चाहचंद रोड, इलाहाबाद से प्रकाशित)।
6. राज कपूर : आधी हकीकत आधा फसाना, प्रहलाद अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम (परिवर्धित) संस्करण-2007

राज कपूर की फिल्मों का संगीत

प्रभा लोढ़ा
एम. ए. हिन्दी साहित्य 4-सेमिस्टर
के. सी. कालेज, मुम्बई - भारत

राजकपूर का जन्म 14 दिसम्बर सन् 1924 में पेशावर (पाकिस्तान) में हुआ। इनके बचपन का नाम रणवीर राजकपूर था। ये अपने पिता पृथ्वीराज कपूर अपने पिता श्री बसेरनाथ जी के साथ संयुक्त परिवार में रहा करते थे। विभाजन के बाद वे भारत आ गये और कलकत्ता में बस गये। यहीं उनका बीता व प्रारम्भिक शिक्षा हुई। पढ़ाई में विषेश रुचि न थी। 10वीं की पढ़ाई बीच में ही छोड़ दिया। उसके बाद वे सपरिवार मुम्बई आ गये।

एक दिन पिता से बोले, मेरी इच्छा फिल्म बनाने की है। मैं एक अच्छा फिल्म डायरेक्टर बनना चाहता हूँ। किन्तु उन दिनों इस सब टेक्निकल बातों को सीखने के लिये कोई स्कूल तो हैं नहीं, इसलिये मैं कोई स्टुडियो ज्वाइंट करना चाहता हूँ। उनकी भावनाओं को समझते हुये पृथ्वीराज कपूर ने जो उन दिनों पृथ्वी थियेटर तथा सिनेमा में काम किया करते थे उन्हें 'रणजीत स्टूडियों' में केदार शर्म के यहाँ तीसरे सहायक के रुप में नियुक्त करवा दिया। शुरु में एक साधारण एपरटिस का काम मिला था, तो उन्होंने वजन उठाने और पोंछा लगाने के काम से भी परहेज नहीं किया। पंडित केदार शर्मा के साथ काम करते हुये उन्होंने अभिनय की बारीकियों को समझा। यहीं से उनका फिल्मी सफर शुरु हुआ।

केदार शर्मा के साथ सहायक के रुप में काम करने के बाद राजकपूर ने बॉम्बे टॉकीज में काम किया, जहाँ उनकी मुलाकात इन्दरराज आनन्द से हुई बाद में इन्होंने पृथ्वी थियेटर में स्टेज पर काम किया। अपने करियर का आरम्भ इन्दरराज आनन्द लिखित ''दिवार'' नाटक से की, जिसमें इन्होंने एक नौकर का किरदार निभाया। नाटक की सफलता के बाद इनके गुरु केदार शर्मा ने इन्हें फिल्म ''नीलकमल'' (1947) में हीरो बना दिया। तत्पश्चात् फिल्म ''गोपीनाथ'' (1948) में उनके सशक्त अभिनय के बावजूद बॉक्स आफिस में पिट गई।

इससे पहले राज कपूर ने बाल कलाकार के रुप में 'इनकलाब' (1935), 'हमारी बात' (1943) और 'गौरी' (1943) फिल्म में छोटी भूमिकाओं में कैमरे का सामना राज कपूर करने लगे थे। फिल्म बाल्मीकी (1946) तथा नारद और अमर प्रेम में आपने कृष्ण की भूमिका निभाई। मात्र 24 वर्ष की आयु में राज कपूर के पर्दे पर पहली प्रमुख भूमिका ''आग'' (1948) नामक फिल्म में निभाई। जिसका निर्माण और निर्देशन भी इन्होंने किया।

राजकपूर ने मुम्बई के चेम्बूर इलाके में 4 एकड़ जमीन लेकर सन् 1950 में आर. के. स्टूडियो की स्थापन की। सन् 1951 में फिल्म 'आवारा' के माध्यम से लोकप्रियता मिली। 'बरसात' 1949, श्री 420 (1955), जागते रहो (1956) व 'मेरा नाम जोकर' जैसी सफल फिल्मों का न केवल निर्देशन व लेखन अपितु उसमें अभिनय भी राजकपूर ने

किया। राजकपूर का कहना था लोग रोज डायरी लिखते है, पर मैं रोज स्क्रीन प्ले लिखता हूँ जिसमें मेरे दिन-प्रतिदिन के विचारों का प्रतिबिम्ब होता है।

राजकपूर को हिन्दी फिल्मों का पहला शो मैन माना जाता है। राजकपूर की फिल्में न केवल भारत अपितु पूरे विश्व में सिने प्रेमियों द्वारा पसन्द की गई। रुस में उनकी लोकप्रियता गज़ब थी। उज्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में आज भी राजकपूर के नाम का एक प्रसिद्ध भारतीय व्यजनों का रेस्टोरेन्ट है, मूल्यांकन एक महान फिल्म संयोजक के रुप में भी किया जाता है। उन्हें फिल्म की विभिन्न विद्याओं की बेहतरीन समझ थी। उनकी फिल्मों में आवारगी, आषिकी, देश प्रेम, मौज मस्ती, प्रेम हिंसा से लेकर अध्यात्मवाद, मानवतावाद और नायकत्त्व से लेकर लगभग सब कुछ उपलब्ध रहता था। उनकी फिल्मों के कथानक, कथा-प्रवाह, गीत-संगीत फिल्मांकन आदि में स्पष्ट महसूस किया जा सकता है।

राजकपूर को सन् 1987 में 'दादासाहेब फालके' पुरस्कार दिया गया। राजकपूर को कला के क्षेत्र में सन् 1971 में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया। जून 1988 में राजकपूर ने अन्तिम सांस ली। अपनी फिल्म में संगीत उनकी पहचान थी यह उनका एक अभिन्न हिस्सा था। उनके गानों में मेलोडी, भावनात्मक गहराई और कहानी को आगे बढ़ाने की शक्ति थी।

राजकपूर ने शंकर जय किशन, हसरत जयपुरी, शैलेन्द्र और लता मंगेशकर जैसे महान कलाकारों के साथ काम किया जो उनके संगीत को कालजयी बना गये।

उनकी फिल्मों में गाने सिर्फ मनोरंजन नहीं थे। बल्कि कहानी और किरदारों की आत्मा को उजागर करते थे। उदाहरण के लिये आवारा हूँ (आवारा) और मेरा जूता है जापानी।

राजकपूर ने अपनी फिल्मों में मुकेश की आवाज का उपयोग कर एक विशिष्ट शैली बनाई। मुकेश को उनकी आवाज़ माना जाता था। उनके रोमांटिक गाने जैसे 'जीना यहां मरना यहां', 'मेरा नाम जोकर' और 'प्यार हुआ इकरार हुआ' (श्री 420) आज भी बेहद लोकप्रिय है। इसके अलावा उन्होंने क्लासिक लोकसंगीत और पश्चिमी प्रभाव का सुन्दर मिश्रण किया है। उनके फिल्मों में नृत्य और संगीत की प्रस्तुती भव्य होती थी। हर गाना उनकी कहानी का अभिन्न हिस्सा होता था।

'आग' फिल्म के निर्माण के समय शमशाद बेगम से, जो उस समय बहुत व्यस्त थी। राजकपूर उनके पास गये व आग्रह किया कि वो 'आग' की गीत गाये। 'उन्होंने कहा आप नये फिल्म निर्माताओं को बहुत प्रोत्साहन देती है।' आखिर शमशाद बेगम कुछ गीत गाने को राजी हो गई। इसके गीत वहज़ात लखनवी, सरस्वती कुमार, दीपक तथा मजरुह सुल्तानपुरी ने लिखा। शमशाद बेगम द्वारा गाये 'न आँखों में आंसू, न होठो पे हाये' बहुत लोकप्रिय हुआ।

विधि का विधान विचित्र है 'आग' से 1948 हुई आर. के. फिल्मस् कंपनी की स्थापना हुई और अंत भी 2017 में आर. के. स्टुडियो के आग में जलकर खाक हो गया।

राजकपूर का फिल्म संगीत न केवल भारतीय सिनेमा के मील का पत्थर था बल्कि उसने भारतीय संगीत की धारा को भी गहराई से प्रभावित किया। उनका संगीत सरल मगर भावनात्मक रुप से समृद्ध था। संगीत और गीतों को उन्होंने सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों में ढ़ाला।

'बरसात' के मधुर गीतों को रिमझिम श्रोताओं के तन-मन को पूरा भिगा देती है। मधुर गीतों की बरसात से संगीत की दुनिया में एक नई ऊर्जा का आहवान हुआ। दो गीतों को छोड़ सारे गीत हसरत जयपुरी और शैलेन्द्र ने लिखे जो बिल्कुल नये थे। लता मंगेशकर ने अधिकांश गाने गाये। इस फिल्म में अधिकांश गीत भैरवी राग पर आधारित थे। शंकर जयकिशन का अति प्रिय राग है। 'उड़ता जाये लाल

दुपट्टा मल मल का' जो नारी के चंचल अदाओं को उजागर करता है। अति कर्ण प्रिय और आज भी श्रोताओं के जुबान पर है। 'जिया बेकरार है छाई बहार है' बहुत प्रसिद्ध हुआ। दर्द भरे नग्मा लता ने गाये व हसरत जयपुरी ने बखूबी लिखा।

'बरसात में हमसे मिले तुम' आज भी दिलो दिमाग तरो ताजा हो जाता है। इस गीत में हर्ष, उल्लास, पीड़ा, इन्तज़ार सब कुछ है। इस फिल्म में बांसुरी तथा वायलिन का सर्वाधिक उपयोग हुआ है।

संगीतकार शंकर-जयकिशन और गीतकार शैलेन्द्र और हसरत जयपुरी जिन्होंने यादगार संगीत दिया व अप्रतिम गाने लिखे। गीतों में गहराई और सरलता का अनूठा मिश्रण है।

'आवारा' के संगीत में जीवन के हल पहलू का रंग था। हर्ष, विषाद, उल्लास, मिलन, बिछोह तथा लोकसंगीत का अच्छा मिश्रण है। आवारा हूँ तो विदेशी लोग इसका अर्थ समझे बिना इसे लोकगीत समझकर गुनगनाते रहते है। यह विश्व का लोकप्रिय गीत है तथा भारत व रुस की सांस्कृतिक संबधों का प्रतीक है। फिल्म में कल्ब सांग भी है। फिल्म में मुकेश के स्वर में दर्द भरा नगमा 'हम तुमसे मोहब्बत करके सनम रोते भी रहे हंसते भी रहे' बहुत हृदयस्पर्शी है। नायक राजकपूर पर फिल्माया गया है। 'दमभर जो उधर मूँह फेरे' रोमांटिक युगल गीत श्रोता को बहुत कर्णप्रिय लगा।

'आह' एक क्लासिक फिल्म थी। गीत संगीत का कार्य शंकर-जयकिशन, शैलेन्द्र हसरत जयपुरी ने किया। झनन झनन घुंघरवा बाजे जितना मधुर है उतना कर्णप्रिय है। इन गीत में भारतीय शास्त्रीय संगीत के माधुर्य और लोकसंगीत की भीनी-भीनी सुगंध आती है।

विवाह से पूर्व नारी कल्पना की उड़ान भरता एक संगीत गीत है। जिसमें खुशी और गम दोनों है। 'राजा की आयेगी बारात' लता ने गाया है, कई गीतों में जीवन की सम्पूर्णता तथा अध्यात्मिकता का बोध भी होता है।

श्री 420 राजकपूर की सफलतम फिल्मों में से एक है। जिसकी पट कथा, संवाद, गीत-संगीत निर्देशन तथा सम्पादन सभी कुछ उच्चकोटी का था। जिस समय इस फिल्म की कहानी लिखी जा रही थी। देश की हालात बहुत अच्छी नही थी। इन्हीं परिस्थितियों को सरल शब्दों में बाँध कर गीतकार शैलेन्द्र ने एक बहुत ही सुंदर रचना की। 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिशतानी, सिर पर लाल टोपी रुसी भी दिल है हिन्दुस्तानी'। इस गीत के अंतरे में इंटरव्हयू म्युजिक में आलाप गवाकर गीत की मधुरिमा को और मधुर बना दिया। यह गीत गली गली में गूंजने लगा और राजकपूर रुस के लोगों के दिलों पर राज करने लगे।

फिल्मों में गीतों के ट्रेंड के मुताबिक इस फिल्म में 10 गीत थे। फिल्म की कथा वस्तु और शैलेन्द्र के विचारों में काफी समानता थी। यह फिल्म आम आदमी के संघर्षमय जीवन की सम्पूर्ण कहानी है। मुम्बई के फुटपाथ पर रहने वाले अभाव ग्रस्त लोगों के मनोभावों को दर्शाता है। एक कर्णप्रिय समूह गीत 'रमय्या वस्तावैया, रमय्या वस्ता वैया' आज भी हिन्दी सिने जगत का लोकप्रिय गीत है। इसका कम्पोजीशन गजब का है। यहाँ संगीतकार शंकर जयकिशन और उनके सहायक दत्ताराम की संगीत प्रतिमा अप्रतिम हैं।

'जागते रहो' एक प्रयोगात्मक, कम खर्चे की फिल्म बनी। पृष्ठभूमि बंगाल के कलकत्ता शहर की थी। 'जागो मोहन प्यारे' ईश वन्दना हृदय को छू जाती है। भारतीय संगीत की उत्कृष्ठ रचना है। गीत के बोल मार्मिक व संवेदनशील है। बाक्स ऑफिस में अधिक सफल न रही पर अंतराष्ट्रीय पुरस्कार मिला। यह राजकपूर और नरगिस की साथ की आखिरी फिल्म थी। 16 फिल्मों में दोनों ने साथ काम किया।

जिस देश में गंगा बहती है का निर्माण तब किया जब आचार्य विनोबा भावे डाकुओं को आत्म

समर्पण के लिये प्रेरित कर रहे थे। डाकुओं पर बनी फिल्म में कैसा गीत-संगीत पर गीतकार शैलेन्द्र ने अपने देश की सम्यता, ईमानदारी और सच्चाई की कहानी का शीर्शक गीत 'होठों पे सच्चाई रहती है' की रचना की। यह गीत फिल्म का सबसे उज्ज्वल पक्ष रहा। सब रंग इसमें थे। इसके अधिकांश गीतों की शब्द रचना शैलेन्द्र की है। प्रथम गीत 'मेरा नाम राजू धराना अनाम' राजकपूर ढपली बजाते, गाते, ऋषिकेश के गंगा किनारे पूर्ण रुप से चरितार्थ करता है। दास्यु नायिक (पद्मिनी) के मन में प्यार का अंकुर फूट पड़ता है ''क्या हुआ? ये मुझे क्या हुआ? क्या पता?'' में नायिका अपनी मनोदशा व्यक्त करती है। यहाँ नायक दस्यओं को आत्मसर्मपण के लिये प्रेरित करता है। बेड़ाघाट की बीहड़ चट्टानी में फिल्म नायिक पर लता मंगेशकर ने बहुत मार्मिक गीत ''ओ बसंती पवन पागल, ना गा रे ना जा'' फिल्माया गया। इस गीत के अंतरो में इन्टरल्युड में ढ़ीलक-तबले की मधुर ताल पर विभिन्न वाद्यों पर बजते सरोद और सितार के झाले श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर देता है।

इसमें ओ मैंनै प्यार किया, हाय हाय क्या जुर्म किया और दूसरा गीत 'बेगानी शादी में अब्दुला दिवाना' दोनो ही उच्च कोटी के मधुर गीत है। फिल्म में गीत-संगीत में इसके पार्श्व संगीत का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। राग शिव रंजनी का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

'संगम' राजकपूर की प्रथम रंगीन फिल्म थी। यह एक त्रिकोणी प्रेम कहानी है। महेन्द्र कपूर के स्वर में 'हर दिल जो प्यार करेगा।' शैलेन्द्र जी घोर आर्थिक संकट में थे क्योंकि उनकी फिल्म 'तीसरी कसम' निर्माण कार्य में झूल रही थी। राजकपूर इसके नायक विदेश चले गये थे। संगम के काफिले के साथ। फिल्म में मुकेश द्वारा गया हृदयस्पर्शी गीत दोस्त दोस्त न रहा, प्यार प्यार न रहा' एक अर्न्तमन की गहरे दर्द की अनुभूति है। इसका एक गीत 'ओ मेरे सनम ओ मेरे सनम-दो जिस्म मगर एक जान है हम' बहुत ही मनभावन गीत है। इस फिल्म का हर गीत कर्णप्रिय है। 'मैं का करुं राम, मुझे बुड्ढा मिल गया।' 'ये मेरा प्रेम पत्र पढ़ कर' मोहम्मद रफी ने गाया व हसरत जयपुरी ने लिखा हर प्रेमी के दिल की धड़कन है। फोटोग्राफी की दृष्टी से ओ महबूबा, मेरे दिल के पास हो तुम बहुत बहुत आकर्षित लगता है।

मेरा नाम जोकर एक महात्वकांक्षी फिल्म बनी। बॉक्स आफिस की असफलता के बाद भी संगीत प्रेमियों ने इसे बहुत पसंद किया। इसे पाँच फिल्म फेयर एवार्ड मिले। श्रेष्ठ संगीतकार शंकर जयकिशन, श्रेष्ठ गायक मन्ना डे 'ऐ भाई जरा देख कर चलो' बहुत पसन्द किया गया। 'जीना यहाँ मरना यहाँ' शैलेन्द्र के जीवन काल में अधुरा रह गया। उनके बेटे शैली शैलेन्द्र ने पूरा किया। फिल्म के शेष गीतों को कवि गीतकार नीरज (गोपाल दास) ने लिखे। एक दार्शनिक गीत 'ऐ भाय देख कर चलो' ये जीवन की तीनों अवस्थाओं को सरल भाषा में वर्णित किया गया।

कल, आज और कल में तीनों पीढ़ियों को साथ दिखाया है। बॉबी में नये कलाकारों का चयन किया। संगीत के लिये प्रथम बार लक्ष्मीकांत प्यारेलाल को लिया। 'हम तुम एक कमरे में बंद।' परम्परा गीतों से भिन्न थे। एक लोग गीत पर रचा गया 'ना मांगू सोना चॉदी, ना माँगू हीरा मोती' बहुत उत्कृष्ट था। 'सत्यम् शिवम् सुंदरम'' के गीत उच्च कोटी के लिखे गये। फिल्म का मुख्य आकर्षण इसकी फोटोग्राफी और मधुर संगीत था। कैमरा मैन राघू करमाकर ने गाँव के कुछ प्रातः कालीन सुन्दर दृश्यों को कैमरा में कैद कर लिया व फिल्म में ताजगी भर दी। 'प्रेम रोग' सामाजिक विषमता पर लिखी गई एक प्रेम कहानी है। फिल्म का गीत संगीत खुब चला। इसे 4 फिल्म फेयर एवार्ड मिले, सर्वश्रेष्ठ गीत के लिये, गीतकार सन्तोष आनंद को उनके गीत 'मुहब्बत है क्या चीज' के लिये चुना गया, 'ये गलियॉ ये चौबारा। भंवरे ने

खिलाया फूल, फूल को-' लता और सुरेश वाडकर ने अपनी आवाज़ दी। 'राम तेरी गंगा मैली' आर. के. फिल्मस् की राजकपूर के जीवन काल में प्रदर्शित अन्तिम फिल्म थी। गीत संगीत रविन्द्र जैन ने दिया। एक गीत पुराने गीतकार हसरत जयपुरी का लिया गया। 'ओ हो हो सुन साहिबा सुन' जिसे लता मंगेशकर और सखियों ने एक समूह नृत्य के लिये है। संगीतकार रविन्द्र जैन ने भी इन्टरल्युड म्युजिक में विभिन्न साजों का प्रयोग किया है। राजकपूर ने जीवन काल में आर. के. के अन्तर्गत 18 फिल्मों का निर्माण किया।

राजकपूर का गीत-संगीत किरदारों और कथानक के माध्यम से झलकता है। गीत उनके जीवन के गुढ़ सत्य, संघर्ष, आशा और भावनाओं का दर्पण थे। संगीत उनके जीवन का प्रतिबिंब था और उन्होंने इसे बेहद सजीव और भावनात्मक रुप से प्रस्तुत किया है।

उनके गीतों के कुछ अविस्मरणीय बिन्दू :

जीवन का संघर्श और आम आदमी की कहानी :

राजकपूर के गाने अक्सर आम आदमी के जीवन की कठिनाईयों और संघर्ष को दर्शाते है, श्री 420 का गाना 'मेरा जुता जापानी' साधारण व्यक्ति की आशाओं और आत्मसम्मान का प्रतीक है। 'आवारा हूँ' जैसे समाज के वर्ग भेद और एक भटके व्यक्ति की पहचान को उजागर करते है।

प्रेम और मानवीय भावनाओं की गहराई :

उनके गानों में प्रेम केवल रोमांस तक सीमित नहीं था, बल्कि यह आत्मा का मिलन और बलिदान का प्रतीक था। 'प्यार हुआ इकरार हुआ' (श्री 420) में मासूम प्रेम की मिठास है, जबकि दोस्त दोस्त न रहा (संगम) जैसे गानों में टूटते रिष्तों का दर्द है।

जीवन का दर्शन :

राजकपूर के गाने गहरे दार्शनिक अर्थो से भरे थे। 'जीना यहाँ मरना यहाँ' (मेरा नाम जोकर) जीवन के क्षण भंगूर होने की बात करता है। इसी तरह ''सब कुछ सीखा हमने'' (आवारा) जीवन के अनुभवों और गलतियों से सीखाने की शक्ति को दर्शाता है।

समाज और मानवता की झलक :

उनके संगीत में समाज के प्रति सवाल और संदेश भी होते थे। 'इचक दाना विचक दाना' (श्री 420) में मासूमियत और शिक्षा की अहमियत है जबकि 'राम तेरे नाम' (जागते रहो) में अध्यात्मिकता और सत्य की खोज दिखती है।

हास्य और आशा का सन्तुलन :

जीवन के सभी रंग उनके गानों में थे। जहाँ तक एक तरफ गहरे भाव थे वहीं दूसरी तरफ हास्य और आशा भी थी। 'सर जो तेरा चकराये' (श्री 420) जैसे गाने जीवन के हल्के फुल्के क्षणों को खुबसुरती से पेश करते है।

आत्मा और कला का संगम :

'मेरा नाम जोकर' के संगीत में जीवन और कला की बीच जटिल संबंधों को दिखाया है। 'जिंदगी का नाम रुक जाना नहीं' संघर्ष करने का संदेश देता है। जबकि 'ऐ भाई जरा देख के चलो' जीवन की विडम्बनाओं को उजागर करता है।

राजकपूर के संगीत ने हर व्यक्ति को किसी न किसी रुप में छुआ है। उनके गाने जीवन के जश्न भी थे और उनकी सच्चाई का आईना थी। यही वजह है कि उनके फिल्मों के संगीत आज भी लोगों को प्रभावित करते है और गहराई से जोड़ते है। शंकर जयकिशन की मधुर धुने, गीतकारों की अद्भुत लेखनी, गायकों का जादू, संगीत में विविधता और अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव ने गीत संगीत को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई।

राजकपूर के गीत-संगीत का जादू, उनकी समझ, संवेदनशीलता और कहानी कहने की कला में था। अपनी फिल्मों के माध्यम से मानवीय करुणा, विश्वास, प्रेम, मस्ती और संवेदना का सौन्दर्यं पुरे विश्व में बिखरने के लिये इस महान अमिनेता को सदैव याद

रखेगा। वर्ष 2024 राजकपूर का जन्म शताब्दी वर्ष है।

अतः उनके वैश्विक फिल्मी योगदान को याद करने का सुनहरा अवसर है, जो उनकी विरासत को आज भी जीवित रखा है।

संदर्भ सूची :

1. आर. के. फिल्मस् और उसका अविस्मरणीय गीत-संगीत -राधेश्याम बेडिया
2. CHAT GPT.
3. RAJ KAPOOR – The fabulous showman – Bunny Reuben forward Zubin Mehta
4. Google

चालीस से अस्सी दशक के चलचित्रों के नायक राज कपूर पर विभिन्न समालोचकों के निजी मत

डॉ. नवल पाल
शोधार्थी, गुरू काशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, पंजाब।

भूमिका :

हरियाणा की एक कहावत बहुत ही मसहूर है कि पूत के पांव पालने में ही दीखना, अर्थात जिस इंसान को जो बनना होता है। उसका वह रूप हमें बचपन में दिखाई देने लग जाता है। अर्थात जैसे कोई बच्चा बड़ा होकर डॉक्टर बनता है, तो वह बचपन में ही डॉक्टर वाले खेल खेलने लग जाता है। किसी बच्चे को इंजिनियर आदि बनना होता है, तो वह बचपन में ही नये-नये खिलौने बनाकर खेलने लग जाता है, और बड़ा होकर वह अपने बचपन के खेलों को साकार करने लग जाता है। ऐसा ही कुछ राज कपूर के जीवन को लेकर हुआ है। वह बचपन से ही अभिनय किया करता था। वह दौर हिन्दी सिनेमा का शुरूआती दौर था। सो मात्र ग्यारह वर्ष की आयु में वह सिनेमा जगत् में उतरा। राज कपूर ने चलचित्र 'इंकलाब' में काम किया। उसके पिता जी श्री पृथ्वीराज कपूर को यह बिल्कुल भी आभास नही था कि वह अर्थात राज कपूर अपनी जिंदगी में कुछ कर पायेगा भी या नही। अतः उन्होंने उसे बचपन में ना पढ़ने-लिखने के कारण बाम्बे टॉकिज स्टूडियो में सहायक का काम दिला दिया। जिसे क्लैपर ब्वॉय कहा जाता था। यह कार्य की दृष्टि से बहुत ही छोटा काम समझा जाता था। राज कपूर ने कभी पढ़ना-लिखना तो सीखा ही नही। तभी तो उनके पिता जी पृथ्वीराज कपूर यही कहा करते थे कि जब यह पढेगा-लिखेगा ही नही तो क्या काम कर पायेगा, मगर केदार शर्मा ने राज कपूर के अन्दर छिपी प्रतिभा को परख लिया था। सो उन्होंने सन् 1947 में चलचित्र 'नीलकमल' में बतौर नायक की भूमिका दी। जिसकी नायिका मधुबाला थी। यह चलचित्र बहुत ही ज्यादा प्रसिद्ध हुई। इसके बाद राज कपूर ने पिछे मुड़कर नही देखा। एक के बाद एक बहुत सारे चलचित्रों में उन्होंने बतौर नायक की भूमिका अदा की। जिनमें ब्लैक एण्ड व्हाईट पर्दे पर दिखाई जाने वाले चलचित्र जिसमें कि राज कपूर ने केवल काम किया था, वे हैं- सन् 1935 इन्कलाब, सन् 1943 हमारी बात, सन् 1943 गौरी, सन् 1946 वाल्मीकि थी। उनके चलचित्र इस प्रकार से हैं : सन् 1947 नीलकमल, सन् 1947 चित्तौड़ विजय, सन् 1947 दिल की रानी, सन् 1947 जेल यात्रा, सन् 1948 आग, सन् 1948 गोपीनाथ, सन् 1948 अमर प्रेम, सन् 1949 अंदाज, सन् 1949 सुनहरे दिन, सन् 1949 बरसात, सन् 1949 परिवर्तन, सन् 1950 जान पहचान, सन् 1950 दास्तान, सन् 1950 प्यार, सन् 1950 बावरे नैन, सन् 1950 भँवरा, सन् 1950 सरगम, सन् 1951 आवारा, सन् 1952 बेवफा, सन् 1952 आशियाना, सन् 1952 अंबर, सन् 1952 अनहोनी, सन् 1953 पापी, सन् 1953

आह, सन् 1953 धुन, सन् 1954 बूट पॉलिश, सन् 1955 श्री 420, सन् 1956 चोरी-चोरी, सन् 1956 जागते रहो, सन् 1957 शारदा शेखर, सन् 1958 फिर सुबह होगी, सन् 1958 परवरिश, सन् 1959 चार दिल चार राहें, सन् 1959 मैं नशे में हूँ, सन् 1959 दो उस्ताद, सन् 1959 कन्हैया, सन् 1959 अनाड़ी, सन् 1960 श्रीमान सत्यवादी, सन् 1960 छलिया, सन् 1960 जिस देश में गंगा बहती है, सन् 1961 नज़राना, सन् 1962 आशिक, सन् 1963 एक दिल सौ अफसाने, सन् 1963 दिल ही तो है, सन् 1964 दूल्हा-दुल्हन, सन् 1964 संगम, सन् 1966 तीसरी कसम, सन् 1967 दीवाना, सन् 1967 अराउन्ड द वर्ल्ड, सन् 1968 सपनों का सौदागर, और सन् 1970 मेरा नाम जोकर चलचित्र में काम किया, जो कि जनता में इतनी अधिक मसहुर नही हो पाई, और राज कपूर ने चलचित्रों वाली दुनिया के अभिनेता से विदा ली। इसके बाद आप निर्देषक व निर्माता के रूप में चलचित्रों वाले बाजार में उतरे। आपने बहुत सारे चलचित्रों का निर्माण किया। जिन चलचित्रों के निर्माता और निर्देषक रहे वे चलचित्रें थी 1982 वकील बाबू, 1982 गोपीचन्द जासूस, 1981 नसीब, 1980 अब्दुल्ला, 1978 सत्यम शिवम सुन्दरम, 1978 नौकरी, 1977 चाँदी सोना, 1976 खान दोस्त 1975 धरम करम, 1975 दो जासूस, 1973 मेरा दोस्त, मेरा धर्म और 1971 कल, आज और कल थी।

सन् 1947 में बने चलचित्र में राज कपूर एक नायक के रूप में उभरकर जनता के सामने आये। इसके बाद मात्र सत्ताइस के नायक राज कपूर को 'आवारा' चलचित्र ने उस समय चलचित्रों के दौर में बुलंदियों पर पहुंचा दिया। सुप्रसिद्ध चलचित्र-समालोचक प्रहलाद अग्रवाल के शब्दों में इसका यह उदाहरण देखिए- 'आवारा' ने इस सत्ताइस साल के नौजवान को उस ऊँचाई पर पहुँचा दिया, जहाँ तक पहुँचने के लिए बड़े-से-बड़ा कलाकार लालायित हो सकता है। 'आवारा' ने ही उसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्रदान की। यहाँ तक कि वह पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्तित्व बन गया- सोवियत रूस में। रूस और अनेक समाजवादी देशों में 'आवारा' को सिर्फ प्रशंसा ही नहीं मिली, वरन् वहाँ की जनता ने भी बेहद आत्मीयता के साथ इसे अपनाया।'

जब भारत में चलचित्रों का चलन ही हुआ था, उस दौर में जो कहानियां होती थी, वो अंचल अथवा ग्रामीण क्षेत्र व समाज में फैली बुराईयों पर आधारित होती थी। चालीस से अस्सी के दषक में उभरे इस नायक ने केवल भारत ही नही वरन् विदेषों में भी अपनी छाप छोड़ी। उनके बारे में लेखक व पत्रकार विनोद विप्लव के शब्दों में देखिए- 'भारत ने विश्व स्तर पर चाहे जो छवि बनायी हो और उसके जो भी नये प्रतीक हों, लेकिन इतना तय है कि चीन, पूर्व सोवियत संघ और मिस्त्र जैसे देशों में राजकपूर हमेशा के लिए भारत का प्रतीक बने रहेंगे। चीन के सबसे बड़े नेता माओत्से तुंग ने सार्वजनिक तौर पर कहा था कि 'आवारा' उनकी सर्वाधिक पसंदीदा चलचित्र थी। शायद यही कारण है कि आज भी पेइचिंग और मास्को की सड़कों पर घूमते-टहलते हुए 'आवारा हूँ' गीत सुनाई पड़ने लगते हैं। यह राज कपूर की लोकप्रियता के विशाल दायरे का एक उदाहरण मात्र है।'

चालीस से अस्सी के दशक के दौर में आने वाले चलचित्र में आने वाले गीत जितने लोकप्रिय हुए थे। शायद ही आज के दौर में इस तरह से कोई गीत लोकप्रिय हो, इसकी कल्पना हम इस दौर के गीतों से कर सकें। उस दौर के प्रसिद्ध संगीत के बारे में सुप्रसिद्ध चलचित्र समालोचक प्रहलाद अग्रवाल कहते हैं कि - 'अपने दौर की सभी विशेषताओं को लिए हुई थी 'आह', इसका संगीत तो बेहद लोकप्रिय हुआ था। उसकी गुरुता और मोहनी-शक्ति 'बरसात' और 'आवारा' से उन्नीस नहीं, बीस थी। 'राजा की आएगी बारात, रंगीली होगी रात, मगन मैं नाचूँगी', 'आजा रे अब मेरा दिल पुकारा' और 'जाने न नजर पहचाने जिगर' आदि गीत बेहद लोकप्रिय हुए थे।..

फिर भी 'आह' इसलिए असफल हो गयी, क्योंकि 'आवारा' ने राज कपूर की इमेज एक बिल्कुल अलग किस्म के मस्तमौला, फक्कड़ नौजवान की बना दी थी। उस फ्रेम में राज कपूर का यह निराशावादी व्यक्तित्व कहीं नहीं अँटता था।'

पुरस्कार के संबंध में यदि देखा जाए तो किसी चलचित्र को जो पुरस्कार दिया जाता है। वह उस चलचित्र की हर खूबी को देखा जाता है। पहले वाले चलचित्रों में इन सभी खूबियों को देखकर पुरस्कार दिया जाता था, परन्तु उन सभी चलचित्रों में इस तरह की खूबी होती थी कि किसी भी चलचित्र को पुरस्कार के लिए निकालना बहुत ही कठिन होता था। चलचित्र विशेषज्ञ एवं लेखक प्रदीप चौबे के अनुसार- 'ऑस्कर अवार्ड यदि सचमुच ही वैश्विक श्रेष्ठता का मापदण्ड हो तो 'जागते रहो' आज भी उसकी हकदार है। हालांकि भारतीय सिनेमा के वातावरण को इस सबकी जरूरत नहीं क्योंकि पुरस्कारों की नियति खुद भी बहुत दरिद्र होती आयी है। उधर राजकपूर को भी शायद ही कभी पुरस्कारों की ऐषणा रही हो। जनता की लगातार तालियों से बड़ा और कौन-सा पुरस्कार हो सकता है! 'जागते रहो' सिर्फ अपने समय का नहीं बल्कि हर समय का विराट सच है और आधुनिक समाज के परिदृश्य में तो इसकी प्रासंगिकता और भी बढ़ती जाती है! इसीलिए मैं इसे कालजयी चलचित्र स्वीकार करता हूँ। इसके निर्माण के 53 वर्ष बाद भी यह चलचित्र एक ताजा गुलाब की तरह जहनो दिल में महकती है।'

किसी चलचित्र के सफल होने या असफल में दर्शकों की अहम् भूमिका होती है। सन् 1958 में प्रदर्शित चलचित्र 'फिर सुबह होगी' एक ऐसा ही चलचित्र है। जिसमें राज कपूर और माला सिन्हा ने बहुत ही लग्न से काम किया, मगर पर्दे पर यह असफल रही, इसके पिछे जो कारण रहे उनके बारे में प्रहलाद अग्रवाल ने जो कहा है वह देखिए- '58 में ही प्रदर्शित होने वाली रमेश सहगल की 'फिर सुबह होगी' निश्चित ही एक उम्दा चलचित्र थी, लेकिन टिकिट-खिड़की पर बुरी तरह असफल हो गयी। हिन्दी सिनेमा में कभी-कभी कुछ चमत्कार भी होते हैं। 'फिर सुबह होगी' की असफलता एक ऐसा ही चमत्कार थी। इसमें राज कपूर और माला सिन्हा ने उत्कृष्ट अभिनय किया था। रमेश सहगल का निर्देशन भी सक्षम था और इसके साथ ही साहिर लुधियानवी के सारगर्भित भावनापूर्ण गीतों को संगीतकार खय्याम ने मधुर धुनों से सजाया था... 'फिर सुबह होगी' में राज कपूर ने अपनी प्रचलित छवि से हटकर संजीदा भूमिका की थी। पर इस चलचित्र की असफलता ने उन्हें बाद में पुनः अपने छवि के दायरे में वापस कर दिया।'

आधुनिक युग में जिस प्रकार से नायक-नायिका किसी चलचित्र में काम करने के लिए निर्देश अथवा निर्माता से अंधाधुंध कमाई की ईच्छा रखते हैं, वहीं पुराने जमाने में लोगों के मनोरंजन व घर का खर्चा चलाने के लिए चलचित्रों में नायक-नायिका काम करते थे और समाज को नया रास्ता दिखाने के लिए अथवा समाज से बुराई मिटाने के लिए नया संदेश देने वाले चलचित्रों में काम करते थे। इसे चलचित्र समालोचक प्रहलाद अग्रवाल के शब्दों में देखिए '...निश्चय ही राज कपूर इसके माध्यम से (बाजार) लूटने के लिए नहीं, अपने कलाकार की मुक्ति की उद्दाम आकांक्षा से उद्वेलित होकर निकले थे।... एक निर्देशक और एक कलाकार के रूप में राजकपूर ने अपनी जिन्दगी का सब-कुछ 'जोकर' को दिया। एक निर्माता के रूप में उन्होंने अंगरेजी की 'लेफ्ट नो स्टोन अनटर्न्ड' कहावत चरितार्थ की। 'मेरा नाम जोकर' राजकपूर के सपनों का एक ऐसा तमाशा था जिसे वह एक साथ कलात्मक और व्यावसायिक ऊँचाइयों तक पहुँचाना चाहते थे।... 'जोकर' असफल हो गयी। राजकपूर की जिन्दगी का सबसे बड़ा सपना मिट्टी में मिल गया। वह सपना जिसके लिए उसने अपना पूरा अस्तित्व दाँव पर लगा दिया था। इस सब के बावजूद 'जोकर' राजकपूर की महानतम कलाकृति है जिसमें उसने अपने व्यक्तित्व, अपने रचनात्मक

कौशल और कलाकार की पीड़ा को अत्यन्त मार्मिक और सघन अभिव्यक्ति दी है।'

राज कपूर के समय में भी प्रतियोगिता का चलन था। सन् 1970 में जब 'मेरा नाम जोकर' आई थी तो उसी समय 'जॉनी मेरा नाम' चलचित्र भी बाजार में आई। हालांकि 'मेरा नाम जोकर' चलचित्र खास प्रदर्शन नही कर पाई। क्योंकि 'जॉनी मेरा नाम' लोगों के दिलों दिमाग पर अपना वर्चस्व बना चुकी थी, मगर 'मेरा नाम जोकर' आज भी लोगों को अपनी तरफ आकर्षित कर रही है। इन दोनों चलचित्रों के बारे में चलचित्र विशेषज्ञ एवं लेखक प्रदीप चौबे ने संस्मरणात्मक शैली में लिखा है कि '..1970 में मेरा नाम जोकर देख चुका था। वह भी मजबूरी में। ..जोकर के साथ ही बाजार में उतरी थी- जॉनी मेरा नाम। ठीक ..जोकर के साथ ही रिलीज हुई थी। जॉनी.. की धूम मची हुई थी। फिर देव हमारा सुपर हीरो। जॉनी.. ने ..जोकर को पछाड़ दिया था। रायपुर (छत्तीसगढ़) में दोनों चलचित्रें आमने-सामने लगी थीं। जॉनी मेरा नाम का टिकिट जब ब्लैक में भी नहीं मिला तो मन मारकर दोस्तों का टोला ..जोकर में घुसा। टिकिट खिड़की खाली पड़ी थी। टिकिट लेकर हॉल में घुसे तो वह भी खाली पड़ा था, बहुत निराशा हुई।... बहुत अन्यमनस्क मूड में हम लोग ..जोकर में घुसे थे परंतु पौने चार घंटे की यह चलचित्र देखने के बाद जब हम लोग हॉल से बाहर निकले तो राजकपूर लगातार मेरे भीतर-बाहर थे। रायपुर से अपने कस्बे की दो घंटों की बस यात्रा में ..जोकर मेरे भीतर से निकलने को तैयार न था। चलचित्र की कहानी, विदूषक का जीवन-दर्शन, भव्य चलचित्रांकन, महान करुणा प्रधान संगीत, उदासी भर देने वाली टेक्नीकल रंग-प्रस्तुति आदि सभी तत्वों ने मुझे झकझोर दिया। ..जोकर के माध्यम से राजकपूर ने मेरी चलचित्र चेतना पर हमला कर दिया था। लगभग सप्ताह भर मैं ..जोकर की खुमारी में रहा। राज कपूर एक झटके में मेरी समझ में आ गए। वह अचानक ही मेरे लिए दिलीप और देव से बहुत बड़े हो गए।... रायपुर में ..जोकर देखने के एक सप्ताह बाद यह मेरे लिए एक सुखद प्रसंग हुआ कि रायपुर के सिनेमा हॉल से उतरकर चलचित्र मेरे छोटे से कस्बे की टूरिंग टॉकीज में लगी।... चलचित्र वहाँ सिर्फ दस दिनों के लिए आई थी।... आप इसे मेरा अतिरेक कहें या पागलपन कि लगातार मैंने और दोस्तों ने हर रात वह चलचित्र, टाइटल्स से लेकर दी एण्ड तक बिलानागा देखी। हर शो उसी तन्मयता से, उसी मुग्धता से और हर बार किसी नयी खोज के साथ। संक्षेप में यह कि यहीं से, बिल्कुल यहीं से राजकपूर मेरा महानायक बना।'

'मेरा नाम जोकर' में जो किरदार राज कुमार ने किया। उसके बारे में सुप्रसिद्ध लेखक जयप्रकाश चौकसे ने कहा है, देखिए- सुप्रसिद्ध लेखक जयप्रकाश चौकसे के अनुसार : 'युवा पीढ़ी के दर्शकों ने तुलना कर देखा और उन्हें अपनी पीढ़ी के चलचित्रकार इस 'प्यारे बूढ़े जोकर' के सामने बहुत फीके लगे।'

कुछ चलचित्र जो लोगों के हृदय में अपनी जगह नही बना पाई, उसके लिए कुछ लोगों के मत थे कि राज कपूर यदि इन चलचित्रों में अपनी भूमिका नही निभाते तो ही अच्छा था। इसके बारे में प्रहलाद अग्रवाल के शब्दों में- 'लेकिन उनके बारे में इतना ही कहना काफी है कि राजकपूर ने ये चलचित्रें स्वीकार न की होतीं तो वही ज्यादा उपयुक्त होता। पर राजकपूर ईमानदारी से दोस्ती निभाने वाले लोगों में-से हैं। उन्होंने किसी का एहसान कभी नहीं भुलाया। मुहब्बत की हमेशा कद्र की। प्यार के एक कतरे से बढ़कर अजीज तो उनकी जिन्दगी में कुछ है ही नहीं। इसीलिए दोस्ती की खातिर, मुहब्बत की खातिर उन्होंने कई ऐसी चलचित्रों में भूमिकाएँ कीं जिनमें उन्हें कतई काम नहीं करना चाहिए था।'

उस दौर में जब तकनीक इतनी ज्यादा अग्रसर नही थी, तब सजीव चित्र दिखाने के के लिए असली व प्रामाणिक दृष्यों को कैद किया जाता था। उसी तरह से बाढ़ के दृश्य बनाने के लिए बाढ़ का ही दृष्य चलचित्र में लिया जाता है। जिसमें कि बहुत

ज्यादा खतरा होता था। इस खतरे को दिखाने के लिए किस प्रकार से मेहनत की जाती थी। इसका प्रमाण जयप्रकाश चौकसे के शब्दों में देखिए- 'सत्यम् के बाढ़-दृश्य इतने प्रामाणिक इसलिए लगते हैं कि वे असली बाढ़ के दृश्य हैं और कमर तक पानी में खड़े रह कर लिए गए हैं। दरअसल वे दृश्य बहुत खतरा उठा कर लिए गए हैं, क्योंकि बाढ़ का तेज बहाव यूनिट के सदस्यों को मुसीबत में डाल सकता था। स्वयं राज कपूर कमर तक पानी में खड़े रहकर काम कर रहे थे। जब बाढ़ का पानी उतर गया, तब देखा कि 'सत्यम' के लिए लगाया पूरा गाँव बह गया- मन्दिर का विशाल सेट लगभग नष्ट हो गया है। राज कपूर ने उस समय भी शूटिंग की जब बाढ़ का पानी उतार पर था, क्योंकि चलचित्र में उन दृश्यों की भी आवश्यकता थी।'

उस दौर में विदेशी चलचित्रों एक नाम बहुत ही प्रचलित था। जिसे लोग चार्जी चैप्लीन के नाम से जानते थे। काफी सारे लोग तो राज कपूर को भी चार्ली चैप्लीन की संज्ञा दे चुके थे, क्योंकि राज कपूर भी कुछ-कुछ चार्ली चैप्लीन की तरह ही अभिनय करते थे। राज कपूर के बारे में प्रहलाद अग्रवाल की स्पष्ट मान्यता है कि 'निःसंदेह चार्ली विश्व सिनेमा का एक महान स्तंभ है। उससे यदि राज कपूर की तुलना की जाए तो यह भी बड़ी बात ही होगी। पर है यह गलत। इनमें बाह्य साम्य देखकर इनके मूल ध्येय को भूला देना गड़बड़ी होगी। चार्ली चैप्लिन ने अपनी चलचित्रों में मनुष्य के भौतिक जीवन के प्रति आग्रही व्यक्तित्व के बाह्य संकट की ओर अधिक ध्यान केंद्रित किया है, जबकि राज कपूर का क्षेत्र अधिकांशतः आदमी का मानसिक यातना-संसार है। चार्ली चैप्लिन और राज कपूर इसी धरातल पर एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। हाँ, अपने समय से आगे दोनों देखते हैं- सार्थक कलात्मक दृष्टि से। 'मॉडर्न टाइम्स' में चार्ली इशारा करता है कि मशीनीकरण की अन्धी दौड़ स्वयं मनुष्य को मशीन बना देगी। इस बात को बहुत बाद में महसूस किया गया। इसी तरह 'श्री 420' में राज कपूर शिक्षित बेरोजगारी की आगत भविष्य में भयावहता की ओर संकेत करता है। जिस ताकत से उसने यह बात सन् 1955 में कही थी, भारतीय समाज और उसके नियामकों ने उसकी शिद्दत को सन् 1970 के बाद ही समझा।'

राज कपूर और दिलीप कुमार का सामंजस्य किस प्रकार से बिठाया है, क्योंकि उन दिनों दोनों ही नायक जनता के हृदय पर राज कर रहे थे। राज कपूर को तुलसी तो वहीं दिलीप कुमार को सूरदास की उपमा दी है। तुलसी और सूर दोनों ही हिन्दी के चमकते सितारे रहे हैं। इन दोनों के बारे में सुप्रसिद्ध चलचित्र समालोचक प्रहलाद अग्रवाल जो कहा है। वह उन्हीं के शब्दों में देखिए- 'हिन्दी सिनेमा में इन दोनों की स्थिति ठीक उसी प्रकार की है जैसी हिन्दी साहित्य में तुलसी और सूर की है। आज तक यह निर्णय नहीं हो सका कि इन दोनों में श्रेष्ठ कौन है? यह निर्णय हो भी नहीं सकता, क्योंकि वे दोनों अपने-अपने क्षेत्रों में अनुपम हैं। तुलसी का व्यक्तित्व बहुआयामी है। उन्होंने अपने काव्य में लोकमंगल को प्रधानता दी। उनकी दृष्टि की परिधि में सम्पूर्ण मानव-जीवन समाहित हो जाता है। सूर के व्यक्तित्व में सघनता है। उनकी दृष्टि जीवन के अनिर्वचनीय सौंदर्य का सन्धान करती है। वे प्रेम और सौन्दर्य के महासागर में डूब जाते हैं। जीवन के एक ही भाव की अनन्त गहराइयों में उतरते हैं। ठीक उसी तरह राज कपूर और दिलीप कुमार हैं। जहाँ राज कपूर का सपना एक सम्पूर्ण चलचित्र होती है, वहीं दिलीप कुमार अपने अभिनेता व्यक्तित्व के प्रति इतने सतर्क हैं कि वे पूरी चलचित्र की उत्तमता का पर्याय बन जाते हैं। राज कपूर अपनी निजता को चलचित्र से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति में प्रसारित करते हैं। वह प्रत्येक सहयोगी कलाकार और तकनीशियन के भीतर की क्षमता का अधिक-से-अधिक उपयोग कर लेते हैं। वह अपने व्यक्तित्व को प्रत्येक पक्ष में बाँट देते हैं और चलचित्र निर्माण के साथ जुड़े हुए हर व्यक्ति की

क्षमता को अधिक से अधिक विकसित करने में सहयोगी बनते हैं।'

धरती पर जाने कितने ही जीव-जंतु पैदा होते हैं, और अपनी-अपनी भूमिका अदा कर चले जाते हैं। कुछ बेनाम से होते हैं, वहीं कुछ ऐसे जीव अथवा मनुष्य होते हैं जो अपने कठिन परिश्रम के बलबूते पर इस धरती के मानव हृदय पर राज करते हैं। जब जन्मते हैं तो उन्हें कोई नही जानता, परन्तु जब इस संसार से विदा लेते हैं तो दुनिया की आंखें भर आती हैं। सदियों तक उनके जहन में उस जीव अथवा मानव का चेहरा रमा रहता है। ऐसे ही एक शख्श राज कपूर हुए हैं। राज कपूर की बहुआयामिता एवं सार्वकालिक महत्ता के संदर्भ में सिनेमा संबंधी अनेक पुस्तकों के लेखक डॉ. सी. भास्कर राव ने लिखा है कि 'वे भारतीय सिनेमा के एक ऐसे कलाकार थे, जिनकी तुलना अन्य किसी कलाकार से नहीं की जा सकती है। सिनेमा का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसका ज्ञान और अनुभव उन्हें नहीं रहा हो। सिनेमा उनमें बसता था और वे खुद सिनेमा को जीते थे, यही कारण है कि वे एक मिसाल बन गए।... उनकी कामयाबी और ऊँचाई तक कोई भी पहुँच नहीं पाया है। ...उन्हें अपने अभिनय के लिए दस सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं में एक माना गया।... उन्हें सदी के सर्वश्रेष्ठ निर्देशक और सदी के सर्वश्रेष्ठ शो मैन का सम्मान भी प्रदान किया गया।... उन्हें सिनेमा का सबसे बड़ा शो मैन माना जाता है, लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि वे सिर्फ व्यावसायिक चलचित्रें ही बनाते थे। उनकी अधिकांश चलचित्रों में व्यावसायिकता, कलात्मकता, साहित्यिकता और सामाजिकता का सम्मोहक सम्मिश्रण मिलता है। वास्तव में वे एक हरफनमौला सिने व्यक्तित्व थे। उनकी चलचित्रों का हर पक्ष इतना सधा हुआ होता था कि हिन्दी सिनेमा का हर दर्शक उससे मुग्ध हो जाता था। वे हिन्दी और भारतीय सिनेमा के वैसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने उसे एक विश्वमंच प्रदान किया।... नायक तो सिनेमा के क्षेत्र में बहुतेरे हुए, पर राज जैसे नायक सदियों में कोई एक ही होता है।'

निष्कर्ष : अंत में इतना कि इस संसार में जाने कितने ही बुद्धिजीव मानवों ने जन्म लिया है, और लेते रहेंगे। मगर कुछ ऐसे लोग हुए हैं जो अमीर घर में पैदा हुए हैं। उन्होंने अपने ऐशोआराम को त्याग संसार के सामने एक मिसाल कायम की हैं, वहीं कुछ लोग जो गरीब घर में पैदा हुए हैं, मगर अपने संघर्ष आदि के बल पर लोगों के हृदय पर छाए हुए हैं। उन्हीं में से एक हमारे राज कपूर जी हैं। जिन्होंने अपनी काबिलियत के बल पर पूरे संसार पर व संसार के लोगों के हृदय पर राज किया है।

संदर्भ सूची :

1. प्रहलाद अग्रवाल, राज कपूरः आधी हकीकत, आधा फसाना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम (परिवर्धित) संस्करण-2007, पृ. सं.-44.
2. विनोद, विप्लव, हिंदी सिनेमा के 150 सितारे, प्रथम संस्करण 2013, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली, प्रभात प्रकाशन (पेपरबैक्स), पृ. सं. 81
3. प्रहलाद, अग्रवाल, राज कपूरः आधी हकीकत, आधा फसाना, प्रथम परिवर्धित संस्करण-2007 नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ. सं. 55
4. प्रदीप चौबे, हिंदी सिनेमाः बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक (प्रगतिशील वसुधा, अंक-81, अप्रैल-जून, 2009, सिनेमा विशेषांक, संपादक- प्रहलाद अग्रवाल, (पुस्तक रूप में 'साहित्य भंडार', 50, चाहचंद रोड, इलाहाबाद से प्रकाशित, पृ. सं. 128.
5. प्रहलाद, अग्रवाल, राज कपूरः आधी हकीकत, आधा फसाना प्रथम परिवर्धित संस्करण-2007 नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन. पृ. सं. 94-95.
6. प्रहलाद, अग्रवाल, राज कपूरः आधी हकीकत, आधा फसाना, प्रथम परिवर्धित संस्करण-2007 नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ. सं. 147.
7. प्रदीप चौबे, हिंदी सिनेमाः बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक, (प्रगतिशील वसुधा, अंक-81, अप्रैल-जून, 2009, सिनेमा विशेषांक, संपादक-प्रहलाद

अग्रवाल, (पुस्तक रूप में 'साहित्य भंडार', 50, चाहचंद रोड, इलाहाबाद से प्रकाशित, पृ. सं. 121-122

8. जयप्रकाश, चौकसे, राज कपूरः सृजन प्रक्रिया, प्रथम संशोधित-परिवर्धित संस्करण-2010 नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन. पृ. सं. 54.
9. प्रहलाद, अग्रवाल, राज कपूरः आधी हकीकत, आधा फसाना, प्रथम परिवर्धित संस्करण-2007, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ. सं. 162.
10. जयप्रकाश, चौकसे, राजकपूरः सृजन प्रक्रिया, प्रथम संशोधित-परिवर्धित संस्करण-2010 नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ. सं. 70-71.
11. प्रहलाद अग्रवाल, राज कपूरः आधी हकीकत, आधा फसाना, प्रथम परिवर्धित संस्करण-2007, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ. सं. 51.
12. प्रहलाद, अग्रवाल, राजकपूरः आधी हकीकत, आधा फसाना, प्रथम परिवर्धित संस्करण-2007, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन. पृ. सं. 125.
13. डॉ. सी. भास्कर, राव दादा साहब फाल्के पुरस्कार विजेता, भाग-1, प्रथम संस्करण-2014 दरियागंज, नयी दिल्ली, शारदा प्रकाशन. पृ. सं. 178.

राज कपूर की फिल्मों में संगीत - विविध आयाम

गायत्री जोशी
वरिष्ठ व्याख्याता
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर (राजस्थान)

राज कपूर एक महान अभिनेता, निर्देशक और निर्माता थे, जिन्होंने हिंदी सिनेमा में अपनी अमिट छाप छोड़ी। उनका जन्म 14 दिसंबर 1924 को पेशावर में हुआ था और उनका निधन 2 जून 1988 को मुंबई में हुआ था।वह इस सदी के महान कलाकार थे।अभिनय के क्षेत्र में राज कपूर ने कई यादगार फिल्मों में अभिनय किया, जिनमें प्रमुख''मेरा नाम जोकर'', ''बावरें नैन'', ''चोरी चोरी'', ''अनाडी'', ''जिस देश में गंगा बहती है'',आदि शामिल हैं।

निर्देशन के क्षेत्र में भी राज कपूर ने कई फिल्मों का निर्देशन किया, जिनमें ''आग'' (1948) ''बरसात'' (1949) ''आवारा'' (1951), ''श्री 420'' (1955), ''जिस देश में गंगा बहती है''(1959), ''संगम'' (1964) ''मेरा नाम जोकर''(1969), और ''राम तेरी गंगा मैली'' (1985) आदि प्रमुख हैं।

राज कपूर ने अपनी खुद की प्रोडक्शन कंपनी, ''आर. के. फिल्म्स'' की स्थापना 1948 में की, जिसने अगले कुछ दशकों में कई फिल्मों का निमार्ण किया जिनमें ''मेरा नाम जोकर'' (1970), ''बॉबी'' (1973) ''सत्यम शिवम् सुन्दरम्'' (1978), ''प्रेम रोग'' (1982) और ''राम तेरी गंगा मैली'' (1985) आदि कई क्लासिक फिल्में शामिल हैं।

राजकपूर को उनके फिल्मी जीवन में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए जिनमें तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, 11 फिल्मफेयर अवॉर्ड्स एवं सिनेमा में भारत का सर्वोच्य पुरस्क, दादासाहेब फाल्के पुरस्कार 1987 में प्रदान किया गया।

राज कपूर की फिल्में आज भी दर्शकों को आकर्षित करती हैं और उनकी यह विरासत हिंदी सिनेमा में हमेशा के लिए रहने वाली है।

यह उनकी अभिनय क्षमता का ही कमाल था कि उन पर फिल्माया हर गीत दर्शकों का मन मोह लेता था। उनकी सफल फिल्मों का श्रेय निश्चित ही उनके गीतों को भी दिया जा सकता है। उन पर फिल्माये गीत जीवन के हर पहलू को दर्शाते है। उनके कालजयी फिल्मी गीतो से राजकपूर आज भी जनमानस पर छाए हुए है। उनके फिल्म संगीत में जीवन के सभी पहलुओं को दर्शाया गया है। जिनसे प्यार, देशभक्ति, दर्द, जीवन दर्शन, हास्य व्यंग्य आदि विविध श्रेणी में रखा जा सकता है।

श्री राज कपूर की फिल्मों में कई प्यार भरे गीत हैं जो आज भी लोगों के दिलों पर राज करते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख गीत हैं।

1. ''प्यार हुआ इकरार हुआ, प्यार से फिर क्यों डरता है दिल।

   कहता है दिल, रस्ता मुश्किल, मालूम नहीं है कहां मंजिल।'' - श्री 420 (1955)

   इस गाने के द्वारा प्यार की खूबसूरती को दर्शाते हुए प्रेमी जनों को प्यार में आने वाली मुश्किलों को चित्रित किया गया है।

2. ''हर दिल जो प्यार करेगा,

वो गाना गायेगा,

दिवाना सैकडों में पहचाना जायेगा।''

- श्री 420 (1955)

इस गाने के माध्यम से प्यार में खुषियों का इजहार करते हुए हमसफर के साथ का महत्व बताया गया है।

3. ''आजा, सनम मधुर चांदनी में
हम तुम मिले तो, वीराने में भी आ जाएगी बहार,
झूमने लगेगा आसमान''

-चोरी चोरी (1956)

4. ''ये रात भीगी भीगी, ये मस्त फिजाएँ,
उठा धीरे धीरे, वो चॉद प्यारा-प्यारा।''

-चोरी चोरी 1956

उक्त दोनों गानां में नायक-नायिका एवं चांदनी रात में प्यार का मनोहर प्रस्तुतिकरण किया गया है।

5. ''मेरे मन की गंगा और तेरे मन की जमुना का,

बोल राधा बोल संगम होगा कि नहीं

अरे बोल राधा बोल संगम होगा कि

नहीं नहीं, कभी नहीं!

कितनी सदियाँ बीत गईं हैं
हाय तुझे समझाने में''

- संगम (1964)

राज कपूर और वैजयन्ती माला पर फिल्माया गये इस गीत में अमर प्रेम की गहराईयों का दर्शाया किया गया।इन गीतों में से अधिकांश ''शंकर- जयकिशन'' द्वारा संगीतबद्ध किए गए थे, जो राज कपूर के साथ उनके सहयोग के लिए जाने जाते हैं। ये गीत राज कपूर की फिल्मों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और आज भी लोगों को याद हैं।

श्री राज कपूर की फिल्मों में जहा प्रेम एवं सौन्दर्य से भरा संगीत है तो देशभक्ति की भी धारा बहती है।उनकी फिल्म के ऐसे कई गीत हैं जो आज भी लोगों को देश प्रेम के लिए प्रेरित करते हैं। उनमे यहाँ कुछ प्रमुख गीत हैं -

1. ''मेरा जूता है जापानी,

ये पतलून इंग्लिशतानी,

सर पर लाल टोपी रुसी,

फिर भी दिल है हिंदुस्तानी।

-श्री 420 (1955)

यह गीत देशभक्ति और स्वदेशी की भावना को दर्शाता है।

2. ''होंठों पे सच्चाई रहती है, जहाँ दिल में सफाई रहती है

हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है

मेहमां जो हमारा होता है, वो जान से प्यारा होता है।''- जिस देश में गंगा बहती है।

यह गीत भारत देश व भारतवासियों की विशेषताओं का वर्णन करता है। साथ ही अपने देश को समस्त संसार में सर्वोपरि मानता है तथा गंगा जैसी पवित्र नदियों का महत्व बताता है। इन गीतों में भी अधिकांशतः शंकर- जयकिशन द्वारा ही संगीतबद्ध किए गए थे और आज भी लोगों को देशभक्ति की भावना से भर देते हैं।

श्री राज कपूर की फिल्मों में जीवन दर्शन के कई गीत हैं। ये गीत राज कपूर की फिल्मों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं। जीवन जीने की कला सिखाते हैं उन्हें प्रोत्साहित करते हैं तथा जीवन के हर कठिनाईयों से लड़ने की क्षमता प्रदान करते हैं इनमें से कुछ प्रमुख गीत हैं

1. ''जीना यहाँ मरना यहाँ इसके सिवा जाना कहां,

जी चाहे जब हमको आवाज दो, हम थे यही हम है जहां'' - मेरा नाम जोकर (1970)

- राजकपूर पर फिल्माया गया यह गीत जीवन के अस्थायित्व को दर्शाता है।

2. ''आवारा हूँ या गर्दिश में हूँ आसमान का तारा हूँ'' - आवारा (1951)

- यह गीत जीवन की अनिश्चितता और आवारगी को दर्शाता है। तथा जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों को हसते-मुस्कराते हुए सहन करने तथा हर परिस्थिति में खुश रहने का संदेश देता है।

3. ''किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार, किसी के वास्ते हो

तेरे दिल में प्यार, किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार।

जीना इसी का नाम है'' - अनाड़ी (1959)

यह गीत परोपकार की भावना से ओत-प्रोत है तथा दूसरो की भलाई में ही जीवन की खुशियों को ढूंढने की महत्ता को दर्शाता है। दूसरों की मदद करने को ही जीवन का लक्ष्य बताता है तथा स्वार्थ से बढ़कर परमार्थ पर बल देता है।

4. ''एक दिन बिक जाएगा माटी के मोल।
जग में रह जाएंगे, प्यारे तेरे बोल।''
- धरम करम (1975)

- यह गीत जीवन में सभी के साथ अच्छा व्यवहार करने तथा मीठी बोली बोलने के लिए प्रेरित किया गया है। यह गीत इंसान को जीवन की अनिश्चितता बताते हुए अच्छे कर्म एवं व्यवहार करने हेतु प्रेरित करता है।

5. ''वो सुबह कभी तो आएगी।

इन काली सदियों के सर से जब रात का आँचल ढलकेगा।

जब दुःख के बादल पिघलेंगे, जब सुख का सागर छलकेगा।

जब अम्बर झूम के नाचेगा, जब धरती नग़मे गाएगी।

वो सुबह कभी तो आएगी।''
- फिर सुबह होगी

- नर्गिस और राजकपूर पर फिल्माये इस गीत में दुःख भरे जीवन, अंधकार एवं निराशा के बाद सुख के सूरज की आशा की गयी है।

इस प्रकार से राजकपूर पर फिल्माए गए गीतों द्वारा समस्त दर्शकों को निराशा और घोर अंधकार की स्थिति में भी आशावादी बने रहने की प्रेरणा मिलती है तथा जीवन की परेशानियों से घबराने के बजाय उनसे लड़ने का उत्साह दिया जाता रहा है। राजकपूर इन गीतो के माध्यम से एक महान दार्शनिक की तरह लोगों को जीवन के गूढ रहस्यो का ज्ञान देते नजर आते है।

राज कपूर की फिल्मों में दर्द भरे कई गीत हैं। इन गीतों में से अधिकतर गीत शंकर-जयकिशन द्वारा ही संगीतबद्ध है। ये राज कपूर की फिल्मों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और आज भी लोगों के दिलों को छूते हैं। प्यार और दर्द की गहराई को महसूस कराते हैं उन पर फिल्माए गये गीतों से लोग स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस करते हैं। यहाँ उन पर फिल्माए दर्द भरे कुछ प्रमुख गीत हैं-

1. ''दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई,

काहे को दुनिया बनायी, तुने काहे को दुनिया बनायी

काहे बनाये तूने माटी के पुतले, धरती ये प्यारी, प्यारी मुखड़े काहे बनाया

तूने दुनिया का खेला जिसमें लगाया जवानी का मेला

गुप-चुप तमाशा देखे वाह रे तेरी खुदाई।

तूने काहे को दुनिया बनाई।'' -तीसरी कसम

- तीसरी कसम फिल्म के इस गीत में फिल्म का नायक जब तकलीफ में होता है तो स्वयं ईश्वर से ही गीत के माध्यम से अपनी परेशानी व्यक्त करता है।

2. ''आँसू भरी हैं ये जीवन की राहें

कोई उनसे कह दे हमें भूल जाए

वादे भुला दे, कसम तोड़ दे वो,
हालत पे अपनी हमें छोड़ दे वो
ऐसे जहां से क्यों हम दिल लगाए ''
- परवरिश

3. ''मैं गाऊँ तुम सो जाओ।
सुख सपनों में खो जाओ
माना आज की रात है लम्बी
माना दिन था भारी,
पर जग बदला बदलेगी एक दिन तक़दीर हमारी''
- बावरै नैन (1950)

4. ''तुम बिन जाऊँ कहाँ, के दुनिया में आके।
कुछ न फिर चाहा कभी तुमको चाहके, तुम बिन ...
देखो मुझे सर से कदम तक,
सिर्फ़ प्यार हूँ मैं गले से लगालो''
-प्यार (1950)

5. ''तेरे बिना आग ये चाँदनी, तू आजा, तू आजा
तेरे बिना बेसुरी बाँसुरी, ये मेरी ज़िन्दगी,
दर्द की रागिनी, तू आजा ये नहीं है ये नहीं है ज़िन्दगी,
ज़िन्दगी ये नहीं'' -आवारा

6. ''हम तुमसे मोहब्बत करके सनम
सोते भी रहे, हँसते भी रहे'' - आवारा
- नर्गिस और राजकपूर पर फिल्माये ये गीत प्रेम में विरह और दर्द को दर्शाता है।

राज कपूर की फिल्मों में प्यार, दर्द एवं जीवन दर्शन से भरे गीतों के साथ ही कई हास्य व्यंग्य से ओत-प्रोत गीत भी हैं। उन पर फिल्माए गये गीतों से लोग स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस करते हैं। यहाँ उन पर फिल्माए हास्य व्यंग्य भरे कुछ प्रमुख गीत हैं-

1. ''ईचक दाना बीचक दाना-दाने ऊपर दाना
ईचक दाना
छज्जे ऊपर लड़की नाचे
लड़का है दीवाना ईचक दाना
बोलो क्या? अनार'' - श्री 420

2. ''दिल का हाल सुने दिल वाला
सीधी-सी बात, न मिर्च मसाला
दिल का हाल सुने दिल वाला'' - श्री 420

3. ''मोहब्बत की खना कभी ना मिठाई
इसी में है अपने जिगर की भलाई''
- दिल की रानी 1947

4. ''डम-डम डिगा-डिगा, मौसम भीगा-भीगा
ऐसे में बिन पिये मैं तो गिरा'' - छलिया

इस प्रकार से राजकपूर पर फिल्माए गए गीतों द्वारा समस्त दर्शकों को हास्य व्यंग्य गीतों से लोगों के होठो पर अनायास ही हंसी एवं मुस्कुराहत छा जाती है। तथा जीवन की परेशानियों को भूल कर हर दर्शक मस्ती में झूमने लगता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. द वन एण्ड ऑनली शौमेन- रितु नन्दा
2. राजकपूर बॉलीवुड का सबसे बडा शोमैन - राहुल रवैल, प्रणिका शर्मा, प्रभात प्रकाशक
3. राजकपूर- सृजन प्रक्रिया जय प्रकाश चौकसे, राजकमल प्रकाशक
4. हिन्दी सिनेमा एक अध्ययन- डॉ. अनिरूद्ध कुमार 'सुधाषु', डॉ. अजुन कुमार 'तरुण' 2018
5. दि मास्टर ॲट वर्क - राहुल रवैल
6. THE KAPOORS - THR FIRST FAMILY OF INDAN CINEMA, MADHU JAIN, PENGUIN BOOKS 2009

भारतीय सिनेमा के जीवंत कलाकार : राज कपूर

डॉ. मोटवानी संतोष

प्रो. आर. के. तलरेजा कॉलेज, उल्हासनगर (भारत)

हिंदी सिनेमा के विविध प्रतिभाओं से युक्त व्यक्तित्व अगर कोई रहा है। तो वे हैं राज कपूर जी। वैसे बहुत से अदाकार कई बार उनसे किसी एक कोण में आगे बढ़ सकते दिखते हैं। किंतु सभी दृष्टियों से जब हम देखते हैं, तो उनमें राज कपूर ही हमें सबसे अग्रणी दिखते हैं। उनके अदाकारी में एक जीवंत कथा थी। हर व्यक्ति उनको देखकर यह महसूस करता था और करता है और करता रहेगा कि कहीं मैं ही तो नहीं...।

विषयों की विविधता और मनोरंजन प्रस्तुतीकरण के कारण उन्हें भारतीय सिनेमा के परिवेश में और परिदृश्य में सबसे बड़ा शोमैन कहा जाता है। कहानियों को मनोरंजन और श्रेष्ठ संदेश से युक्तकर फिल्मी पर्दे पर जिस अंदाज में वे प्रस्तुत किया करते थे। उसे केवल भारत ही नहीं बल्कि अन्य देश जैसे रूस आदि में राज कपूर जी की लोकप्रियता आज भी हम देख सकते हैं। उनकी फिल्मों में विशेष कर 'श्री 420' में मुंबई की बड़ी-बड़ी इमारतों में बसने वाले अमीर और फुटपाथ पर रहने वाले दरिद्र व्यक्ति के बीच जो भी वीथी है। उसको बड़े ही सुंदर ढंग से उन्होंने इस फिल्म में प्रस्तुत किया है और आज भी वह फिल्म कई निर्माताओ को अपनी ओर आकर्षित करती है। राज कपूर की फिल्मों की कहानी आमतौर पर उनके जीवन से जुड़ी ही रहती थी। और अधिकतर फिल्मों के मुख्य नायक वे स्वयं हुआ करते थे। उनकी सादगी भोलेपन और चाल ढाल में हम श्रेष्ठ अभिनेता चार्ली चैपलिन का प्रभाव देख सकते हैं। जिस तरह वे व्यंग्य और हल्की-फुल्के ढंग से समाज की बड़ी सी बड़ी विसंगतियों पर व्यंग्य करते थे। वैसे ही भारतीय फिल्म में राज कपूर ने वही कार्य किया है। और पूरे विश्व में ख्याति प्राप्त की है ।

जैसे हम यह देख सकते हैं कि वे कहते हैं 'बंदूक ने गांधी को नहीं पहचाना तो यह हमको तुमको क्या पहचानेगी। दुनिया में बराबरी बंदूक और डाकू नहीं लेंगे। यह तो संविधान और कानून के रास्ते से आएगा राज कपूर एक ऐसे नायक की तरह उबरते हैं जो देखने में सीधा-साधा और दुनियादारी की समझ ना रखने वाला आदमी लगता है। लेकिन हृदय के बिल्कुल साफ है उन्हें सब कुछ स्पष्ट दिखता है और भटके हुए लोगों को वह सच्ची और सीधी राह पर लाने का प्रयास भी करता है।

वास्तविकता के समर्थक : देश जब आजाद हुआ तो उसे समय दरिद्रता बेरोजगारी सांप्रदायिकता पलायन विभाजन बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह के संबंध में नकारात्मक विचार बाल श्रम एवं जातिवाद जैसी अनेक अनेक समस्याएं थी। कल कारखानों और चिकित्सा सुविधाओं की कमी कृषि भूमि के अधिकतर हिस्से पर बड़े-बड़े जमीदारों का कब्जा उत्पादन के साधनों पर मुट्ठी पर शहरी और अमीर लोगों का एकाधिकार जैसी समस्याओं को दूर करके संविधान में किए गए वादे के अनुसार समाजवादी गणतंत्र की स्थापना तत्कालीन राजनेताओं का लक्ष्य था राज कपूर ने इन समस्याओं को चुनौती के रूप

में लिया। और अपनी फिल्मों की विषयवस्तु के रूप में मनोरंजन के साथ जनता को दिखाने का कार्य किया इसी कारण हम उनकी फिल्मों में भारत की जनजीवन से जुड़े बहुत से ऐसे मुद्दों को देखते हैं जिनसे पता चलता है कि उन्होंने जनता को दिखाने का प्रयास किया है और वह इसी के समर्थक भी थे वास्तव में राज कपूर अपने पिता पृथ्वीराज कपूर के साथ बचपन से ही जुड़े हुए थे इस कारण उन्हें अभिनय और उससे जुड़ी हुई छोटी-छोटी बातों का बहुत ज्ञान था मुंबई और अन्य शहरों में आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में उन्हें दुनिया के मूर्धन्य फिल्म कारों की फिल्में देखने और उनसे बातचीत करने का अवसर भी मिला था जिसे उन्होंने बहुत कुछ सीखा और अपनी फिल्मों में प्रयोग भी किया राज कपूर एक और ब्रिटिश गुलामी से आजाद हुए देश में आने का अनेक समस्याओं को देख रहे थे। तो दूसरी तरफ देश-विदेश में बनने वाली फिल्मों से ऐसी समस्याओं के चित्रण को सीखने समझने की कोशिश कर रहे थे। राज कपूर की पुत्री रितु नंदा द्वारा लिखित उनकी जीवनी शोमैन राज कपूर में राज कपूर ने स्वीकार किया है। कि उनकी आरंभिक फिल्में आग, बरसात और आवारा पर विदेशी फिल्मों का प्रभाव था।

इटालियन सिनेमा के निदेशकों जैसे वित्तोरिया डी सीका, सेसारे जोवाटीनी और फ्रैंक कापरा ने देखें और भुक्त यथार्थ पर यथार्थवादी फिल्में बनाने की जिस परंपरा का प्रारंभ किया था। उसे राज कपूर ने बॉलीवुड में आगे बढ़ने का पूरा-पूरा प्रयास किया।

राज कपूर जी की आवारा फिल्म 1951 में प्रकाशित हुई थी। इस फिल्म का मुख्य उद्देश्य समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र था। यह हेरेडिटी और एनवायरनमेंट की डिबेट पर वाद विवाद प्रस्तुत करने वाली फिल्म मानी गई।

इस फिल्म में समाजशास्त्र के कई मिसाल दिए गए। जैसे मनुष्य के बच्चे जानवरों के बीच में पले तो वह चार पैरों से चलने लगे उन्हीं की तरह भोजन और भाषा का प्रयोग करने लगे। और जब उन्हें फिर से मानव समाज में लाकर खड़ा कर दिया जाए। तो धीरे-धीरे वे इंसानों की भांति व्यवहार करना शुरू करते हैं। इस फिल्म में पृथ्वीराज कपूर जज की भूमिका में है। एक अपराधी के बेटे जग्गा को एक मामूली से केस में यह टिप्पणी करते हुए जेल भेज देते हैं, कि शरीफ का बेटा शरीफ और डाकू का बेटा डाकू होता है। जग्गा को यह बात इतनी चुभती है कि वह जज के बेटे को अपराधी और गुंडा बनाने की कसम खाता है। ताकि साबित कर सके कि जज की सोच गलत है। किसी व्यक्ति के अपराध की तरफ कदम बढ़ाने, डाकू बनने के कुछ सामाजिक कारण होते हैं। जग्गा डाकू उसे जज के बेटे को जेबकतरा और छोटे-छोटे अपराध करने वाले नौजवान में बदल भी देता है। जो की हत्या के आरोप में जेल जाता है।और कोर्ट में पेश होता है। आवारा फिल्म के बारे में विश्लेषण करते हुए श्रेयश गोयल हॉलीवुड फिल्म डिपार्टेड के एक चरित्र फ्रेंक कोसटीलो के एक संवाद का जिक्र करते हुए लिखते हैं जो वह अपने बारे में कहता है कि : "I am not a product of my environment. My environment is a product of me"

आवारा फिल्म में स्थिति बिल्कुल इसके विपरीत है यहां यह फिल्म यह साबित करती है कि एक व्यक्ति का जीवन केवल जैविक गुणों से ही नहीं, बल्कि उसके पर्यावरण, संगत और परिस्थितियों से भी बहुत सीमा तक प्रभावित होता है।

बूट पॉलिश जो राज कपूर की 1954 में पिक्चर आई। इसमें बाल श्रम बच्चों से खराब व्यवहार, भीख मांगने या मंगवाने की समस्या, परिश्रम और स्वाभिमान की सीख समाज के सक्षम वर्ग द्वारा वंचित वर्ग के बच्चों को उचित शिक्षा और संस्कार देने में सहयोग करने के लिए आगे आने की प्रेरणा देती हुई यह फिल्म दो बच्चों बेबी नाज, रतनकुमार (भोला और बेलू) एवं चरित्र अभिनेता डेविड की कहानी है।

बड़े शहरों में बच्चों से भीख मंगवाना एक संगठित रोजगार में देख चुका है। राज कपूर ने इस समस्या का समाधान सुझाया था कि समृद्ध लोग गरीब बच्चों की देखरेख में सहयोग कर राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाने का कार्य कर सकते हैं। और गांधी जी के सिद्धांत का अनुसरण करें परंतु सच्चाई यह है कि 53 साल बाद भी यह समस्या आज भी समाप्त नहीं हुई है। और उल्टा और विकराल रूप धरकर सामने आई है, क्योंकि सन 2007 में मधुर भंडारकर द्वारा निर्देशित फिल्म ट्रैफिक सिग्नल ने भी पूरे देश को इस समस्या से रूबरू करवाया था। इस फिल्म द्वारा राज कपूर यह बताना चाहते हैं कि समाज में बाल चोरी के आंकड़ों तथा इन अपराधों में लिफ्ट लोगों का विश्लेषण करने पर भी यह बात सामने आती है की भीख मंगवाने के लिए बच्चों की चोरी संगठित अपराधियों के गृह करते हैं।

सन 1956 में राज कपूर के जीवन का अति महत्वपूर्ण साल रहा। क्योंकि जागते रहो और चोरी-चोरी यह दोनों फिल्में राज कपूर की अत्यंत लोकप्रिय हुई। उन्हें पूरा भारत ही नहीं आसपास के कई विश्व के देशों ने चरम स्थान पर बिठा दिया। जागते रहो फिल्म को अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव में श्रेष्ठ पुरस्कार भी मिला। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार प्राप्त होने के बाद इस फिल्म को अधिक सफलता प्राप्त हुई। उस समय तक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी भारतीय फिल्म को इतना बड़ा सम्मान प्राप्त नहीं हुआ था। यह पुरस्कार मिलने के बाद भारत के दर्शकों ने जागते रहो को बहुत बार देखा भी और पसंद किया। समीक्षकों ने इसे हिंदी सिनेमा की महत्वपूर्ण उपलब्धि भी बताया।

जागते रहो फिल्म अपने समय की ही नहीं बल्कि आधुनिक समाज की दृष्टि से इसकी प्रासंगिकता सदैव रहेगी। यह एक कालजयी सिनेमा है। इस फिल्म के नायक का कोई नाम नहीं है। जिसे शहरी सफेद पोश चोर समझ बैठा है। पर पूरी फिल्म में वह एक शब्द नहीं बोलता है सिर्फ देखता है इशारे करता है। और खुद को बचाने के लिए विशालकाय बहू मंजली इमारत में इधर से उधर भागता रहता है। रात भर एक चोर की तलाश में और पकड़ने का प्रयास करने वाले सभी लोग पुरुष हैं चरम सीमा पर जब सुबह होती है तो एक चार साल की बच्ची गरीब देहाती की समस्या को समझती है उसके आंसू पोछती है और सहारा देकर खड़ी कर देती है वह लड़की अपने घर का दरवाजा खोलकर ड्रेस में गरीब देहाती व्यक्ति को बाहर निकलने का साहस देती है पास के मंदिर से किसी महिला के भजन गाने की मधुर आवाज आती है और जागो मोहन प्यारे नवयुग चुंब में नयन टिहरी मजदूर के कदम सहाय जी भजन और मंदिर की ओर बढ़ जाते हैं गांव से निडर होकर अपनी प्यास बुझाने का अवसर मिलता है भजन की आरंभ के साथ ही राष्ट्र नायको गांधी टैगोर स्वामी विवेकानंद और नेहरू के चित्र दीवार टंगे दिखते हैं फिल्म का संदेश साफ है की गुलामी की रात बीत चुकी है। यह फिल्म निर्माण के 76 बाद भी कथानक और आधुनिक अनूठे प्रस्तुतीकरण के कार्य एक विशेष स्थान प्राप्त कर चुकी है।

राज कपूर की 'फिर सुबह होगी'। यह फिल्म क्राइम एंड पनिशमेंट पर आधारित है। 'जिस देश में गंगा बहती है' यह नदियों के कछार में रहने वाले डाकुओं के एक समुदाय को मुख्य धारा से जोड़ने की कहानी है। बुंदेले हर बोल के मुंह हमने सुनी कहानी थी। जैसे गीत घूम घूम कर गाने वाला राजू अपना परिचय एक भांड के रूप में देता है। डाकू का समर्पण कराकर उनके पत्नी और बच्चों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने और शिक्षा प्रदान कर अच्छे नागरिक बनाने का उद्देश्य इस फिल्म का है। राज कपूर की एक फिल्म आई थी, 'संगम'। इस फिल्म ने बॉलीवुड में प्रेम त्रिकोण पर बनने वाली फिल्मों की परंपरा की नींव डाली थी। जिसकी कहानी पर आकर उनकी ही अंतिम फिल्म हिना और ऋषि कपूर दिव्या भारती की फिल्म दीवाना में दुहराया गया।

राज कपूर की 'तीसरी कसम' फिल्म उनके परम मित्र शैलेंद्र की एक निर्माता के रूप में ड्रीम प्रोजेक्ट फिल्म थी। जो उन्होंने महान कथाकार फनीश्वर नाथ रेणु की कहानी तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफाम के आधार पर बनाई थी। राज कपूर एक बैलगाड़ी हांकने वाले गाड़िवान की भूमिका में तथा वहीदा रहमान नौटंकी में नाचने वाली बाई बनी थी। उनकी आवाज फेनुगिलासी की तरह लगती है। फिल्म में महुआ घटवारीन की एक मिथकीय कथा है। जिसे उसकी सौतेली मां एक सौदागर के हाथ बेच देती है। इस जीत की विषयवस्तु हीरामन और हीराबाई के मन में एक दूसरे के लिए उत्पन्न अधूरे प्रेम की तरह ही लगती है। दो अभिशप्त प्रेमी एक दूसरे से जानते हुए भी प्रेम कर रहे हैं कि वे कभी भी एक दूसरे के नहीं हो सकते। निजी जीवन में भी राज कपूर असफल प्रेम के साथ अभिशप्त रहे। क्योंकि फिल्मों में आने से पहले ही उनकी शादी हो चुकी थी। और 10 साल में 16 फिल्में साथ करने के बाद भी नरगिस से शादी नहीं कर सके।

फिल्म समालोचक प्रहलाद अग्रवाल के शब्दों में :

'...निश्चय ही राजकपूर इसके माध्यम से (बाजार) लूटने के लिए नहीं, अपने कलाकार की मुक्ति की उद्दाम आकांक्षा से उद्वेलित होकर निकले थे।... एक निर्देशक और एक कलाकार के रूप में राजकपूर ने अपनी जिन्दगी का सब-कुछ 'जोकर' को दिया। एक निर्माता के रूप में उन्होंने अंगरेजी की 'लेफ्ट नो स्टोन अनटर्न्ड' कहावत चरितार्थ की। 'मेरा नाम जोकर' राजकपूर के सपनों का एक ऐसा तमाशा था जिसे वह एक साथ कलात्मक और व्यावसायिक ऊँचाइयों तक पहुँचाना चाहते थे।.. 'जोकर' असफल हो गयी। राजकपूर की जिन्दगी का सबसे बड़ा सपना मिट्टी में मिल गया। वह सपना जिसके लिए उसने अपना पूरा अस्तित्व दाँव पर लगा दिया था। इस सब के बावजूद 'जोकर' राजकपूर की महानतम कलाकृति है जिसमें उसने अपने व्यक्तित्व, अपने रचनात्मक कौशल और कलाकार की पीड़ा को अत्यन्त मार्मिक और सघन अभिव्यक्ति दी है।'

फिल्म विशेषज्ञ एवं लेखक प्रदीप चौबे ने संस्मरणात्मक शैली में लिखा है कि '...1971 में मेरा नाम जोकर देख चुका था। वह भी मजबूरी में। जोकर के साथ ही बाजार में उतरी थी- जॉनी मेरा नाम। ठीक जोकर के साथ ही रिलीज हुई थी। जॉनी की धूम मची हुई थी। जॉनी.. ने ..जोकर को पछाड़ दिया था। रायपुर (छत्तीसगढ़) में दोनों फिल्में आमने-सामने लगी थीं। जॉनी मेरा नाम का टिकिट जब ब्लैक में भी नहीं मिला तो मन मारकर दोस्तों का टोला ..जोकर में घुसा। टिकिट खिड़की खाली पड़ी थी। टिकिट लेकर हॉल में घुसे तो वह भी खाली पड़ा था, बहुत निराशा हुई।... बहुत अन्यमनस्क मूड में हम लोग ..जोकर में घुसे थे परंतु पौने चार घंटे की यह फिल्म देखने के बाद जब हम लोग हॉल से बाहर निकले तो राजकपूर लगातार मेरे भीतर-बाहर थे। रायपुर से अपने कस्बे की दो घंटों की बस यात्रा में ..जोकर मेरे भीतर से निकलने को तैयार न था। फिल्म की कहानी, विदूषक का जीवन-दर्शन, भव्य फिल्मांकन, महान करुणा प्रधान संगीत, उदासी भर देने वाली टेक्नीकल रंग-प्रस्तुति आदि सभी तत्वों ने मुझे झकझोर दिया। ..जोकर के माध्यम से राजकपूर ने मेरी फिल्म चेतना पर हमला कर दिया था। लगभग सप्ताह भर मैं ..जोकर की खुमारी में रहा। राज कपूर एक झटके में मेरी समझ में आ गए।'

राज कपूर की दार्शनिक दृष्टि से श्रेष्ठ फिल्म थी 'मेरा नाम जोकर' किंतु जनता ने उसे बहुत बाद में स्वीकार किया। जिस समय वह प्रदर्शित हुई थी। उस समय वह फ्लाप हुई थी। और इसका बहुत बड़ा खामियांजा राज कपूर को भोगना पड़ा था। राज कपूर ने उसके बाद एक प्रेम कहानी के आधार पर अपने पुत्र ऋषि कपूर और 16 बरस की डिंपल कपाड़िया को लेकर फिल्म बनाई जिसका नाम था 'बॉबी'।

बॉबी अपने समय में सबसे श्रेष्ठ व्यवसाय वाली फिल्म सिद्ध हुई। इसकी मूल कहानी थी एक अमीर बाप के बेटे का मछुआरे की लड़की से प्रेम और उससे उपजे कनफ्लिक्ट को चित्र करती फिल्म है। इसमें डिंपल कपाडिय़ा ने बड़े बिंदास ढंग से अपने आप को प्रदर्शित किया था। इसके बाद राज कपूर ने 'प्रेम रोग' जो विधवा पुनर्विवाह पर आधारित फिल्म है। उस प्रस्तुत किया था। राम तेरी गंगा मैली भी फिल्म प्रेम पर आधारित है। जिसमें मंदाकिनी के बिंदास अंग प्रदर्शन किया। वैसे यह भी फिल्म अपने आप में प्रासंगिक थी। किस तरह से नदी के रूप में गंगा दूषित होती है और उसी तरह से ही एक साफ पवित्र स्त्री समाज में किस तरह से दूषित हो जाती है। यह विषय वस्तु अपने आप में बहुत ही प्रबल और बलवान था। जिसका प्रतिफल भी राज कपूर को मिला।

राज कपूर की फिल्मों में उन्होंने बहुत सुंदर विषय उठाये है। और समाज को बड़े ही सहज और सरल ढंग से समझाते हुए उन्होंने अपना उद्देश्य पूरा किया था। उन्होंने अपनी फिल्मों में सहज आदमी को अधिक दिखाया है। शहरी आदमी की बेईमान दृष्टि को पूरी तरह से प्रकट किया। कह सकते हैं कि राज कपूर एक भारतीय हिंदी फिल्म सिनेमा के जीवंत कलाकार थे जो जीवन भर हंसते खेलते हुए कई संदेश देते गए। राज कपूर एक सदैव युवा रहने वाले, मस्त मौला सबको एक नई जीवन दृष्टि देने वाले प्रेम का संदेश देने वाले, गरीबों के मसीहा, देश और संस्कृति के प्रचारक के रूप में सदैव याद किए जाएंगे ऐसे कलाकार को हम बारंबार नमस्कार करते हैं ऐसी श्रेष्ठ विभूति को नमन।

संदर्भ सूची :

1. https://hi.wikipedia.org/wiki/राजकपूर
2. राजकपूर : आधी हकीकत आधा फ़साना – प्रह्लाद अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 44
3. https://en.bharatdiscovery.org/india/राज_कपूर
4. https://hindi.webdunia.com/hindi-books-review/
5. राजकपूर : आधी हकीकत आधा फ़साना – प्रह्लाद अग्रवाल
6. https://www.uttaramahilapatrika.com/re-naissance-womens-questions-and-prac-tices-books/

उज़्बेक लोगों के पसंदीदा अभिनेता राज कपूर

उल्फत मुहिबोवा
'महात्मा गांधी भारतविद्या केंद्र' के निदेशक,
भारत सरकार द्वारा 'हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिये'
पुरस्कार की विजेता, प्रोफेसर।

बॉलीवुड फिल्मों ने भारतीय कला को दुनिया भर में पहचान दिलाई है। भारतीय फिल्मों की विश्वव्यापी लोकप्रियता में जिस वंश ने सबसे बड़ा योगदान दिया है वह कपूर राजवंश है, विशेषकर अभिनेता, निर्देशक और निर्माता राज कपूर। राज कपूर उज़्बेकिस्तान में सबसे लोकप्रिय और पसंदीदा भारतीय अभिनेता और निर्देशक हैं।

उज़्बेकिस्तान में जब भारतीय फिल्मों की बात आती है तो राज कपूर का नाम सबसे पहले लिया जाता है। उज़्बेकिस्तान में भारतीय फिल्म उद्योग राज कपूर को उनकी फिल्मों और उनके द्वारा निभाई गई भूमिकाओं के माध्यम से उज़्बेक लोगों द्वारा जाना, प्यार और सम्मान दिया गया। उनकी फ़िल्में 'श्री 420', 'अवारा', 'संगम', 'मेरा नाम जोकर', 'अब्दुल्ला' और कई अन्य फ़िल्में कई वर्षों तक उज़्बेकिस्तान के सिनेमाघरों में बार-बार दिखाई गईं और सिनेमा हॉल हमेशा दर्शकों से भरे रहते थे।

हम इन फिल्मों को देखकर, उनके गाने गाते हुए और उन्हें नृत्य करते हुए देखकर बड़े हुए हैं। खास तौर पर हमारे घर में राज कपूर की फिल्मों के गाने पूरे मुहल्ले में हमेशा जोर-जोर गूंजते रहते थे। चूँकि हम सुबह से रात तक ये गाने सुनते हैं, इसलिए हमारे परिवार को आस-पड़ोस में 'कलाकारों का परिवार' कहा जाता था, यह जानकर हम को यह अच्छा भी लगा, अजीब भी लगा था। मैं एक भारतविद् हूँ। हमारे मुहल्ले में 24 नंबर की हिन्दी भाषा की विशेष पाठशाला है। सन् 1974 में हमारी पाठशाला को लाल बहादुर शास्त्री का नाम रखा गया और पाठशाला के प्रांगण में शास्त्री की एक प्रतिमा स्थापित की गई। राज कपूर के, जो उन दिनों में अपनी नयी फिल्म के साथ उज्बेकिस्तान में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में आए हुए थे, प्रतिमा के उद्घाटन समारोह में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किये गये थे। मैं 10वीं कक्षा का छात्र थी। मुझे एक विशिष्ट अतिथि राज कपूर के सामने हिंदी में दो शब्द बोलने का काम सौंपा गया था। मैं राज कपूर जी के बगल में खड़े हुए हिंदी में कुछ बोली। तब मैंने श्री राज कपूर को पहली बार देखा था।

फिर कई साल बीत गए, मैंने विश्वविद्यालय से हिंदी भाषाशास्त्र में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और इस विभाग में हिंदी शिक्षक के रूप में काम करना शुरू कर दिया। 1984 में राज कपूर फिर अपनी नई फिल्म के साथ अगले अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में ताश्कन्द पधारे। अब हम कुछ हिंदी शिक्षकों के साथ भारतीय प्रतिनिधिमंडल के अनुवादक के रूप में महोत्सव से जुड़े हुए थे। महोत्सव में मैंने राज कपूर को कई सालों के बाद दोबारा देखा। हमारे विभाग के एक वरिष्ठ अध्यापक राज कपूर के साथ अनुवादक के रूप में जुड़े हुए थे और मैं रेखा जी का अनुवादक बनी।

मैं बचपन से इसी 24 नम्बर की पाठशाला में हिंदी सीखी। बाद में हिंदी फिल्मों, हिंदी गानों ने मेरी भारत के प्रति रुचि बढ़ाई। इस कारण से, पाठशाला से स्नातक होने के बाद, मैंने ताशकंद राज्य विश्वविद्यालय के पूर्वी फ़ेकल्टी के भारतीय भाषाशास्त्र विभाग में प्रवेश किया। तभी से मेरा जीवन भारत, हिन्दी भाषा और साहित्य से जुड़ा रहा। हिंदी भाषा और साहित्य के विशेषज्ञ के रूप में, मैं 50 वर्षों से अधिक समय से छात्रों को भारत, इसकी भाषा और साहित्य पढ़ा रही हूँ। मैंने भक्ति साहित्य पर शोध करके प्रोफेसर की डिग्री प्राप्त की।

1947 से, भारतीय भाषा विज्ञान विभाग में हिंदी भाषा और साहित्य पढ़ाया जाता है, इस का मतलब हिंदी विभाग भारत की स्वतंत्रता के बराबर है, इसलिए विभाग की प्रत्येक वर्षगांठ भारतीय दूतावास, सांस्कृतिक केंद्र और उनके सहयोग से भारत की स्वतंत्रता के साथ मनाई जाती है। 2007 में भारतीय भाषाशास्त्र की 60वीं वर्षगांठ, 2017 में 70वीं वर्षगांठ और 2022 में 75वीं वर्षगांठ भारत की स्वतंत्रता की 'आजादी का अमृत महोत्सव' नाम से चले 75वीं वर्षगांठ को समर्पित एक अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन का आयोजन करके मनाई गई।

यह उच्च शिक्षा संस्थाओं के हिन्दी पर विशेषज्ञों की राज कपूर से संबंध बातें हैं। अब यदि उज़्बेक लोगों के बीच साधारण दर्शको की बात चलेगी तो इन में भी बहुत ही याद करने योग्य बातें हैं। उदाहरण के लिये एक साधारण उज़्बेक लड़की माहीनूर हमीदोवा जब विश्वविद्यालय में पढ़ती थीं, तो उनकी मुलाकात राज कपूर से हुई, जो अपनी नयी फिल्म के साथ ताशकंद में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में आए थे और इस मुलाकात की तस्वीरें भी ली गईं थीं।

बायें से दायें : राज कपूर जी, माहीनूर हमीदोवा जी, अनुवादक भारतविद् फ़तीह तेशाबायेव जी, ऋषी कपूर जी

दायें से बायें : नरगिस जी, हमीदोवा माहीनूर जी

तभी से माहिनूर बहन को राज कपूर के पर दिलचस्पी पैदा हुई और उन्होंने इस अभिनेता के बारे में सारी जानकारियों का अध्ययन करती रहीं। सालों बाद जब माहिनूर जी को पता चला कि भारत गणराज्य के ताशकंद में स्थित लाल बहादुर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में हिंदी भाषा, कथक राष्ट्रीय नृत्य और योग पाठ्यक्रम पढ़ाए जाते हैं तो माहीनूर जी वहां जाके हिन्दी भाषा सीखने लगीं।

राज कपूर की कला और अभिनय कौशल का इतना सम्मान करती थीं कि भले ही अभिनेता को निधन हुए 36 साल हो गए हों, वे हमेशा उन्हें याद करती थीं, हर साल दिसंबर महीने में अपनी पहल पर और केंद्र के निदेशक की अनुमति से राज कपूर

जी का जन्म दिन मनाती हैं, उनकी फिल्मों के दृश्यों का मंचन करते हैं और उनके गीतों की प्रस्तुति करती हैं। विशेष रूप से, राज कपूर को समर्पित ये सभी कार्यक्रम मोहिनूर जी के तत्वावधान में उनके द्वारा तैयार किये गये कार्यक्रम के आधार पर आयोजित किये जाते थे। ये कार्यक्रम हमेशा उज्बेकिस्तान में दिखाई गई राज कपूर की फिल्मों के गीतों और नृत्यों पर आधारित होते थे, जिनमें श्री 420, बॉबी, संगम, मेरा नाम जोकर और अन्य शामिल हैं। इन आयोजनों को केंद्र के पास रहने वाले आस-पड़ोस के प्रतिनिधि, सभी श्रोता और हिंदी फिल्मों के प्रशंसक बड़े चाव से देखते हैं। नीचे इन कार्यक्रमों की तस्वीरें हैं। यह हिन्दी भाषा का समूह भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेता रहा है। 2022 में दिवंगत भारतीय प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी के पोते आदर्श शास्त्री जी के साथ ताशकंद का दौरा करने वाले प्रतिनिधिमंडल के लिए हिंदी समूह के सदस्यों की भागीदारी से एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम के बाद उज़्बेकिस्तान में भारत के राजदूत श्री मनीष प्रभात जी ने केंद्र में हिन्दी सीखने वालों को एक सप्ताह के लिए भारत जाने की सिफारिश की।

ताशकंद फिल्म महोत्सव में अनुवादक के रूप में राज कपूर के साथ लगातार हमारे भारतविद् जैसे, फातिह तेशाबायेव, नाजमिद्दिन निज़ामुद्दीनोव, अहमदजन कासिमोव मौजूद रहते थे। हमारी पीढ़ी राज कपूर और उनके वंश के प्रति श्रद्धा और सम्मान देखकर बड़ी हुई है। उज़्बेकिस्तान में भारत का नाम हमेशा राज कपूर और कपूरवंश, उनकी फ़िल्में और इन फ़िल्मों के गानों के साथ लिया जाता है। इस वर्ष भी, 2024 के दिसम्बर महीने को, ताश्कन्द राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग भारतीय राजदूतावास और लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृतिक केंद्र के सहयोग से एक वैज्ञानिक संगोष्ठी आयोजित करके राज कपूर की 100वीं वर्षगांठ मना रहा है, सेमिनार पर राज कपूर जी के साथ काम करनेवाले, उन से मिले और उन उज़्बेक भकतों के लेखों का संग्रह भी छप जायेगा।।

निष्कर्षत : में यह कहा जा सकता है कि उज़्बेकिस्तान और उज़्बेक लोगों के बीच राज कपूर, उनके वंश और उनकी फ़िल्मों का सम्मान और स्मृति सदैव बनी रहेगी।

Raj Kapoor : A timeless beacon of Indian Cinema with effervescent attitude (1924-1988)

Dr. Avkash Jadhav
Head, Associate Professor, Department of History
St. Xavier's College, University of Mumbai, Mumbai India

Abstract :

Raj Kapoor was an innovative story editor director and Pioneer of experimental cinema. His versatile acting and unconventional roles as protagonist were not only captivating, but his innocent and charismatic screen presence made him popular not only in India but worldwide. This paper will highlight three dimensionsof Raj Kapoor first as an actor, second as a director and thirdlythe exposition of humanism which he presented through his cinematic brilliance which was certainly ahead of his time. Apart from various accolades and recognitions he received, his ubiquitous talent and the skill of blending romance with emotional appeal earned him the title of the Greatest Showman of Indian cinema. Raj Kapoor can also be credited with elevating the nation's position for stronger Indo-Soviet ties in the post-independent era. He was able to set the tone of the nation that had just emerged from colonial rule and so, his initial cinemas very often portrayed the challenges of the poor, marginalized, and proletarians. His directorial debut of the highly acclaimed movie Aag in 1948 which he produced under the well-known banner of RK Films, not only gave him the recognition but also made him the youngest director of the Indian film industry. The conviction with which he played the underdog in many of his productions exhibited his confidence in the scriptand also the way people identified with his characters as more realistic than merely idealistic. His films strongly promoted the real meaning of love in a world where materialistic culture had penetrated deep into human relationships and where external beauty had a more profound impact thaninner beauty, where the bonds of mankind were replaced for petty exploitative gains. Raj Kapoor's storylines always had adverse conditions, conflicts, and unsolvable issues, so it was always captivating to see how he was able to subtly give hope and belief to his audience. His cinema strengthened the value of consistency to hold on to our rightful moral ethics which would eventually pave the way for the pinnacle of eternal satisfaction. His movies always raised contemporary social issues, and injustice which were combined with conservative nonprogressive norms. As a romanticist, he always projected logical reasoning to overcome all the insurmountable hurdles and challenge the socio-religious dogmas. He

was known to take cinematic risks beyond the imagination of his contemporaries. The women protagonists in his filmswere very often portrayed as challenging the misogynistic and patriarchal society and they added equivalent competency along with the leading character of the cinema. He never used women as a soft power or rather made women-centric cinema, but he rather focused on positioning their characters in more symbiotic ways to strongly convey a message of defiance by setting a new paradigm in the existinge-roded social hierarchy.

His failuresat the box office gave him more inner strength to rise again in the same arena with more spark and flying colours. He worked judiciously to take Indian cinema to the global circles transcending the geo-political boundaries. His flawless direction gave people a sense of escapism from their daily monotonous lives. As a luminary,his approach to cinema was to make it more enjoyable and equally reflective for his audience. His movies classified various existing binaries of society either in terms of class struggle, gender discrimination,or the debate of morals and immoral. His films not only had meticulous camera and technical perfection, but he also placed music and lyrics in his films on the same pedestal. He had become the Icon for the nation and inaugurated the crest of optimism in the newly emerging India. He believed in the philosophy that people's engagement in cinema is not just for entertainment, but they also search for their own identity and resolutions for their existing challenges. He had the style of making his films more hypnotic and lucidto offer solace for two to three hours for his loyalaudience He can be indeed regarded as a cherished gem of Indian cinema in the golden tapestry of the entertainment world.

Keywords :

Raj Kapoor, Indian Cinema, Bollywood, Indian Director, Centenary Raj Kapoor etc.

The Ideology in the Films of Raj Kapoor : A Cinematic Vision of Indian Society

Dr. Swati R Joshi
Assistant Professor
J.Z. Shah Arts and H.P Desai Commerce College, Amroli Surat.
Veer Narmad South Gujarat University, Surat, Gujarat, India

Abstract :

Raj Kapoor, often referred to as "The Showman of Indian Cinema," occupies a pivotal place in the history of Indian filmmaking. His works are not merely entertainment; they reflect a deeply rooted ideology shaped by the socio-political context of post-independence India. This paper examines the recurring themes, symbolism, and ideological underpinnings in Raj Kapoor's films. Drawing from a blend of socialist values, humanist ideals, and an optimistic vision for India's future, Kapoor's cinema serves as a lens to understand the hopes, struggles, and aspirations of the common man.

Introduction :

Raj Kapoor (1924-1988) was a prolific filmmaker, actor, and producer whose cinematic journey mirrored the evolving landscape of Indian society. Born into the illustrious Kapoor family, his early exposure to theater and filmmaking profoundly influenced his storytelling approach. Kapoor's works were grounded in the realities of the masses, encapsulating their joys, sorrows, and aspirations. His films reflect a unique ideological tapestry woven from socialism, secularism and humanism, making them relevant even today.

This paper seeks to analyze Raj Kapoor's ideological framework as portrayed in his films, focusing on key works such as *Awaara* (1951), *Shree 420* (1955), *Jagte Raho* (1956), and *Mera Naam Joker* (1970). It explores how Kapoor's ideological commitments shaped his cinematic narratives, visual aesthetics, and characters.

The Socialist Ethos: Championing the Common Man :

One of the defining aspects of Raj Kapoor's cinema is its socialist ideology, reflecting the socio-political climate of post-independence India. Films like *Awaara* and *Shree 420* critique socio-economic disparities and advocate for a more equitable society.

1 Awaara (1951) :

The film's narrative revolves around Raju (played by Kapoor), a young man trapped between two moral worlds. The famous dialogue "Jis desh mein Ganga behti hai, us desh ka ek insaan bhooka hai" encapsulates the deep inequities in Indian

society. Through Raju's struggles, Kapoor critiques the rigidity of class structures and explores the idea that circumstances, rather than inherent morality, shape human behavior.

2. Shree 420 (1955) :

This film takes a sharp look at urbanization and the moral decay accompanying industrial growth. The protagonist, Raj, migrates to the city with dreams of prosperity but becomes entangled in the corrupt mechanisms of capitalism. The iconic song *Mera Joota Hai Japani* epitomizes Kapoor's celebration of resilience and the global aspirations of post-independence India.

Kapoor's socialist leanings often translated into narratives that juxtaposed the innocence of rural life with the greed of urban spaces. His protagonists, though flawed, emerge as symbols of hope and integrity.

Humanism and Secularism :

Kapoor's films emphasize the shared humanity that transcends religious and cultural divides. In *Jagte Raho* (1956), a story of a poor villager mistaken for a thief, Kapoor portrays the hypocrisy of urban dwellers who claim moral superiority. The film advocates for compassion and mutual understanding, promoting a universal humanism that rejects divisive forces.

The theme of secularism is evident in *Jis Desh Mein Ganga Behti Hai* (1960), where Kapoor portrays the character Raju, a naïve bandit who reforms through the influence of humanistic values. The narrative ties India's spiritual heritage to a vision of collective progress.

Romance as Ideological Metaphor :

Kapoor's portrayal of romance often serves as an allegory for larger societal issues. In *Barsaat* (1949) and *Sangam* (1964), love stories become vehicles to explore themes of loyalty, sacrifice and the clash of tradition and modernity. Kapoor's female characters, though often idealized, are given significant agency to challenge patriarchal norms.

For example, Nargis in *Awaara* represents a moral compass, embodying progressive ideals of gender equality and personal integrity. Through such characters, Kapoor subtly critiques regressive social practices and promotes progressive values.

The Clown and the Outsider : Kapoor's Self-Reflection :

In *Mera Naam Joker* (1970), Kapoor presents an intensely personal narrative. The clown, a recurring motif in Kapoor's films, symbolizes resilience amidst personal and societal struggles. This semi-autobiographical film underscores Kapoor's belief in the transformative power of art and the enduring spirit of the human condition.

The theme of the outsider, prevalent in *Jagte Raho* and *Shree 420*, reflects Kapoor's empathy for marginalized individuals. By aligning himself with the downtrodden, Kapoor becomes a cinematic advocate for their dignity and rights.

Visual Symbolism and Aesthetics :

Kapoor's visual storytelling complements his ideological narrative. The use of rain, for instance, serves as a recurring motif symbolizing both emotional catharsis and renewal. The contrast between shadow and light in *Awaara* reflects the

moral ambiguity of its characters. Kapoor's emphasis on melodrama, music, and spectacle ensures that his films resonate deeply with audiences while conveying profound ideological messages.

Conclusion :

Raj Kapoor's cinema is a testament to his visionary understanding of Indian society. His films are not only artistic masterpieces but also vehicles of ideological expression, advocating for social justice, humanism and optimism. By chronicling the struggles and aspirations of the common man, Kapoor immortalized the spirit of a nation in transition. His legacy continues to inspire filmmakers and audiences, proving that cinema can be a powerful tool for societal transformation.

In celebrating the life and work of Raj Kapoor, this paper underscores the enduring relevance of his ideological vision. His films remind us that the dreams of a nation and its people are inextricably linked, and that art has the power to shape both.

References :

1. Chatterjee, Saibal. *Raj Kapoor: The Showman*. Penguin India, 2003.
2. Gokulsing, K. Moti & Dissanayake, Wimal. *Indian Popular Cinema: A Narrative of Cultural Change*. Trentham Books, 1998.
3. Dwyer, Rachel. *Filming the Gods: Religion and Indian Cinema*. Routledge, 2006.
4. Vasudev, Aruna. *The New Indian Cinema*. Macmillan India, 1986.

The Art of Showmanship: Exploring Raj Kapoor's Legacy in Indian Cinema

Dr. Anuradha Shukla
Asst. Prof. in Business Communication
NMIMS, Navi Mumbai

Arawal Shukla
B.Tech. CSE, FE, VIT Chennai

Abstract :

This paper examines the remarkable legacy of Raj Kapoor, often dubbed the 'Showman of Bollywood,' by exploring his multifaceted roles as an actor, director, and producer. It delves into his quintessential style of showmanship that not only defined a genre of Indian cinema but also resonated with global audiences. The study further explores his interpersonal dynamics with family members, particularly highlighting how his relationships shaped and were influenced by his cinematic endeavors. Through a mix of historical analysis, filmography review, and personal anecdotes, this research sheds light on the life and legacy of a true icon of Indian cinema.

Introduction :

Raj Kapoor, born as Ranbir Raj Kapoor on December 14, 1924, was not just a celebrated actor but a multifaceted artist who ventured into directing and producing some of Bollywood's most iconic films. His work bridged India's cultural identity with universal themes of love, poverty, and justice, and his iconic "tramp" persona often evoked comparisons with Charlie Chaplin. As a second-generation member of the distinguished Kapoor family, he was part of a cinematic dynasty, with family relationships influencing both his life and career. ''Kapoor's contributions to Indian cinema were not just limited to his artistic endeavors; his showmanship redefined Bollywood standards and introduced audiences to a blend of realism and fantasy.RK's films are remembered today for their spectacle of song and dance, his blend of romance, sexuality and spirituality, which created a language for the expression of emotion, set against a backdrop of modern, independent India and its contemporary social concerns'' (Dwyer, 2011). Kapoor was a creative force and a cultural phenomenon whose films often reflected social realities and the human condition.

Acting : The Charismatic Performer :

Raj Kapoor's acting career began in the 1940s, and he was catapulted to stardom in movies like Awaara (1951) and Shree 420 (1955). Kapoor portrayed the 'common man' archetype, often embodying the struggles, hopes and dreams of the downtrodden. Films such as MeraNaam Joker (1970) showcased his range, portraying him as a tragic clown who oscillated

between laughter and tears, winning accolades despite the film's initial box-office failure. His "tramp" character mirrored Chaplin's style but was distinctly Indian, dealing with issues unique to the nation at the time. Championed by Nehru, an international star long before talk of global Bollywood, Raj Kapoor and his films were loved across the USSR and the whole of Asia. (Dwyer, 2013)

Kapoor's acting was characterized by its emotional intensity, expressive eyes, and ability to evoke pathos. RK brings his aesthetic of beauty, music, dance, and art into a spectacular moment. Kapoor's acting was methodical yet natural. His charisma, nuanced performances, and dedication to craft earned him a spot among India's greatest actors.

Key Performances :

As a director, producer and star, Raj Kapoor (1924-88) became one of India's leading filmmakers during the golden age of Hindi cinema (Dayal,2012). The films during his early to mid-span are of Aag/ Fire (1948), Barsaat (1949), Awara/The Tramp(1951), Shree 420/ The Trickster (1955), Sangam (1964), MeraNaam Joker (1970), Bobby (1973), Satyam Shivam Sundaram (1978), Prem Rog (1982), and Ram Teri Ganga Maili (1985).''Raj Kapoor believed that he learnt about the world through making films and he came to know people....human beings and their pain, joy, sorrow and, happiness". (Nanda, 1991))

RK's confidence in his maiden venture and his ability to persuade others of his ambition is seen in his success of casting three leading heroines (Kamini Kaushal, Nigar Sultana and Nargis) to star opposite him, at a time when he was known only as Prithviraj's son. (Dwyer 2011). ''Aag, begun in the colonial period and completed during the realization of Independence and Partition, is one of the first films to refer to the Partition, even indirectly, after which it remains largely unmentioned''(Sarcar, 2009).

Barsaat foregrounds a different kind of melodrama from Aagby presenting a series of oppositions: a tragic story in parallel with the romance, the innocent countrywomen contrasting with their worldly urban sisters and the views of the two heroes being in opposition to each other. This contrast between the two male leads is about the nature of love and sex. Pran (RK) is a serious, melancholy artist looking for love in contrast with the earthy Gopal (Prem Nath). Reshma and Neela, the heroines are shot in close-up with strong dramatic lighting which focuses on their beauty rather than their sexual attractiveness.Pran and Gopal are Hindu, but Reshma, although her name could be Hindu or Muslim, seems to be a Hindu as she uses kinship terms 'Baba' and 'Ma' and her mother invokes Bhagwan, but they are Kashmiri boatmen who are all Muslim. The film does not make any opposition between Hindus and Muslims, even though this is Kashmir, India's only Muslim majority state, and the film released only two years after the Tribal Raids into Indian Kashmir supported by the Pakistan army. Although the film just talks about 'hills' or 'country' as a meaningless outdoor beyond the city the distinctive appearance of Kashmir – the scenery and the costumes alone - would be known to contemporary audiences. This was the beauty of his acting craft and of his direction.

''Raj Kapoor's film Awaara is one of the greatest international hit films of all

time, popular across all of Asia and remade in many local versions" (notably in Turkish: Güreta 2010; Dwyer 2013; Chatterjee 1991, Kabir 2010). Kapoor's character in Awara is both complex and relatable. His portrayal of a poor man wronged by society, struggling to survive, showcased his ability to portray the struggles of the marginalized. The film presents issues of unemployment, of education, of justice and of prison sentences, but only as problems facing the hero and his immediate concerns. RK speaks about the suffering that children have to face and how parents have a duty towards them.

Awara is generally critical of the family. In Aag, RK shows how the young have to leave home in order to realise their dreams, while in Barsaat, Reshma's father is willing to let her die rather than sacrifice her honour. In Awara, the child seems to be the last thing on the adults' mind as they are bullying and overbearing to him. The costume he wears for the much-loved song 'Awarahoon/I am a tramp' has given this image greater centrality in this film than it actually has. he is seen as an Indian Charlie Chaplin, not only because of the ragged suit but also because of the comedy mixed with pathos he brought to the character. India was a major market for American films, in particular during the silent period and Charlie Chaplin continues to be a recognised figure among many film viewers. RK has a key sense of Hollywood which he brings to his films. While the 'Awara' is clearly in part a tribute to Charlie, RK's tramp also carries the sense of someone dressing up in rags of western clothing in the manner of picking up the remnants of the British to turn it into something else. The hat is not Chaplin's hat. Chaplin's outfit as the degraded gentleman is not what RK wears but perhaps leftover colonial clothes in a postcolonial situation.

Another major international hit, Shree 420 (the title refers to Section 420 of the Indian Penal Code which deals with fraud and cheating),is the story of an innocent graduate of Allahabad university, Raj (RK) who arrives in Bombay with nothing but his honestyHere, Kapoor's tramp character becomes a symbol of the socio-political landscape of India in the 1950s. The film's famous songs, like "MeraJoota Hai Japani," resonated with the spirit of nationalism while addressing issues of corruption and poverty. In this film he has to choose between good and bad, personified by two women, Maya (Nadira), the glamorous dancing girl and Vidya (Nargis), the schoolteacher. Raj, who has no family, soon builds a new family in Bombay. The Kelawali or banana-seller, Gangama, becomes a mother figure to him, while the other pavement-dwellers become his brothers and sisters. Seth SonachandDharmanand, whom Raj calls a '840', that is, a double crook.

1978, RK returns to this theme of inner and outer beauty most strikingly in his Satyam, Shivam, Sundaram, 1978, where the husband rejects his wife who has been scarred in a fire, falling in love with her when he is unaware that the woman whose face he cannot see is his wife. The fire of the title underpins the whole film, carrying a range of symbolic meanings. Fire is the force that clears the old and brings the new, even if it seems to ravage as when it destroys Kewal's (protagonist's) beauty. Fire is the first word of the Rig Veda, 'agnimilepurohitam/ I praise the priest Agni', where Agni (cognate with Latin ignis) is the god and the sacrificial fire.

Raj Kapoor films such as JisDesh Mein Ganga Behti Hai/The Country in Which the Ganga Flows, Ram Teri Ganga Maili/ Ram Your Ganga is Dirty,Hennais direct catalyst of political socialization.In MeraNaam Joker, Raj Kapoor just like Charlie Chalin, in his movie The Circus seeks to portray that people who work for the circus company do not receive a remuneration which they deserve. They are under-paid, under-fed and forced to entertain people and make the circus owner richer. Kapoor always admired Charlie's craft and sensibility. These two alike satirized on social follies of the society to see reformation.

Direction and Production: A Visionary Filmmaker :

Raj Kapoor's directorial debut was Aag (1948), though it was Barsaat (1949) that established him as a promising director. His films often had a mix of romance, tragedy and social commentary, with visually rich scenes and elaborate sets. Kapoor was a pioneer in using close-ups to enhance emotions and in employing music as an essential narrative element. His storytelling often highlighted themes of innocence lost and the societal divide between rich and poor, reflecting the struggles of the Indian masses.Kapoor's production company, R.K. Films, was established in 1948 and became synonymous with quality and grandeur. Under this banner, Kapoor brought Indian cinema some of its most celebrated films, each embodying high production values. ''Kapoorwas an enthusiastic modernist who endorsed revolt of the young against stifling traditions; for him, the best creative space was in the values created by modernity'' (Nagaraj, 2006).He invested heavily in his projects, especially in MeraNaam Joker, despite its financial failure upon release. His dedication to cinema was evident in the way he continually took creative risks, often producing films that were ahead of their time. The iconic R.K. Films logo, depicting Kapoor carrying Nargis in his arms, became a symbol of romantic Bollywood.

His dedication is depicted by her daughter Ritu Nanda in her book ''The One and Only Showman' writing that May 2, 1988: ''Despite his asthma having made it inadvisable for him to travel, a weary Raj Kapoor soldiered on to the Siri Fort to receive his Dadasaheb Phalke award. As he was accepting the award, an asthma attack overpowered him and he had to be rushed to the AIIMS. A month later, he was dead. In death, as in life, his king-sized persona played itself out in full public view'' (Narayan, 2018).

Family and workplace Ties: Relationships That Shaped His Legacy

Kapoor's family was integral to his life and career. His father, Prithviraj Kapoor, was a veteran of Indian theater and cinema and a key influence on Raj's journey into the film world. Raj's brothers, Shashi and Shammi Kapoor, were also prominent actors, each carving their path in Bollywood.

The patriarch of the Kapoor family, Prithviraj Kapoor instilled a love for cinema and the performing arts in Raj. Their relationship was marked by both respect and a shared passion for film, though Raj's style differed from his father's theatrical approach. RK acknowledged his father's contribution in inspiring him and said, ''My father was a great actor with a deep insight into human character and ... it was my father who taught me that the greatest

artist is one who has the ability to treat work as if it belonged to himself, who can attract the love of others through his qualities of politeness, softness... If you can become an artist loved by all, there cannot be a greater artist than you'' (Nanda, 1991).

Though not a family member, Nargis played a significant role in Raj Kapoor's life. Their on-screen chemistry translated into a close off-screen relationship, though Nargis eventually ended the relationship due to Kapoor's reluctance to leave his wife. Akbar A. Ahmed writes that Raj Kapoor's character spoke of love and not lust and treated women like ladies. Hefurther states, ''Once affairs were discreet and long-standing. They suggested the agonies of romantic passion. The Raj Kapoor and Nargis affair, which gave the Kapoor studio its emblem lasted ten years and eighteen films. The present heroes are expected to hop in and out of beds to embellish their macho reputation. There is after all a vast difference between the romantic heroes and sexy studs, The difference you see, is dignity'' (Ahmed, 1992).

During my interview with Nishi Prem Meghnani, residing in Chembur, Mumbai who was a close friend of Krishna Raj Kapoor and now a freelance author, she highlighted an essential aspect of RK's success. She emphasized that the ''unwavering support behind him was his wife, Krishna Raj Kapoor. As the backbone of the family, she managed every relationship, fulfilled countless demands, and created a stable foundation that enabled her husband to thrive as an actor, director, producer, and friend. It was remarkable to learn how gracefully she maintained her relationship with Raj Kapoor, even amidst his long-standing romantic involvement with Nargis''.In an interview with Filmfare in 2016, Rima had said, "No matter what was said and written, papa loved mother deeply. The truth is that all life he remained obsessed with her. He may not have expressed it to her the way she'd have liked him to. She may not have been a big part of his life. But whatever Raj Kapoor did, he came back home. His love for her was immense. He'd even press her legs and joke, 'Raj Kapoor kakyahaalbanadiya! Meri biwi-mujhe pair dabanelagaarahihai (What has she done to Raj Kapoor. My wife is making me press her legs). Gharkimurgi dal barabar!''(HT Entertainment Desk, 2024)

There is one interesting incident to share to know what kind of person Raj Kapoor was? KidarSharma, who took pride in calling himself the guru of Raj Kapoor said that Raj Kapoor had first worked under him as a clapper boy (Sharma, 1993). Kidar Sharma recollects that when he was shooting his film VishKanya (poisonous girl) and was waiting to click the camera to capture the scene of the setting sun and the aging king, he had warned Raj not to comb his hair or see himself in the mirror as that would delay the shot. Raj did exactly the opposite of what he was told. To further complicate matters, he took the clapper so close to the king's beard that the artificial beard of the king got entangled in the clapper. Kidar Sharma, in a fit of anger, slapped Raj Kapoor. But RK as like any obedient Indian child of that time was socialized to respect his elders and hence kept quiet. But Sharma could not sleep the whole night as Raj showed respect towards his punishment. Next day Kidar Sharma signed a check for Rs, 5000 and told Raj that he was going to be the hero of his film.

Raj Kapoor's sons, particularly Rishi Kapoor, followed in his footsteps. Raj was a strict yet encouraging father, shaping Rishi's early years in cinema. Kapoor's influence on his children and extreme love for grandchildren Karishma Kapoor, Kareena Kapoor and Ranbir Kapoor extended beyond films, as he instilled in them a deep sense of tradition and a love for the craft.

It's not exaggeration to say like Charlie Chaplin, Kapoor is also seen with a dog in some places to portray the harmonious relationships between the life of a dog on the streets and the life of an individual in an apathetic society. Here RK has gone extra personal. Not directly but indirectly these two great actors share a bond.

Cinematic Influence and Kapoor's Showmanship :

Raj Kapoor's showmanship wasn't limited to the screen; it extended to the way he presented himself and his brand. His emphasis on grandiosity and attention to detail established a style in Bollywood that emphasized spectacle and drama. Kapoor's portrayal of the idealistic, optimistic hero embodied Indian aspirations and gave his audiences a sense of hope.His characters were often symbolic of larger social themes, a practice that continues to influence Indian cinema. Kapoor's unique style bridged realism with Bollywood's penchant for melodrama, allowing audiences to connect with relatable themes through an exaggerated but emotionally powerful lens. Kapoor's films were known for their grand visual style and memorable music, often becoming as famous as the storylines themselves.

His composed relation with great singer Mukesh is still in the minds of everyone. Mukesh was his voice, when Mukesh died, Raj Kapoor locked himself in a room and after coming out from the closed room after a day, he only uttered that he lost his voice. "The coveted actors from India and from foreign called India ... Raj Kapoor's India (Chen, 1993).

In oneof theinterviewsby filmmaker Rahu Rawail extracts words of Randir Kapoor, son of RK who said, "That cinema that Raj Kapoor made belong to a different time zone. They were more backed by solid characters and stories. Where are the stories today? There are incidents which make a movie. There is no script today. They put six songs and string a film together. When my father acted in the films, they were hero-based and when he directed, they became female centric films. The commonality is that all of those films had strong characters. Their strength lies in the characters" (Dubey, 2021).He inspired the nation at the time of the 1962 war when China had attacked India on the eastern front. His methods were unique to inspire. He ignited minds through songs ''MerajotaHaiJapani, ye patloon Hindustani, SarpeLalTopiUnchi, PhirBhiDilHai Hindustani" and songs like ''AwaraHun, Gardis me Hun Aasmaan ka Tara Hun'', which established him as an International Peace monger.

Conclusion :

Raj Kapoor's legacy as the "Showman of Indian Cinema" remains unparalleled. His contributions as an actor, director, and producer transformed Bollywood, setting standards that continue to influence filmmakers today. His unique showmanship blended universal appeal with Indian

themes, creating an indelible connection with audiences. Kapoor's relationship with his family and his passionate approach to filmmaking demonstrated his dedication to his craft and legacy. Despite the challenges he faced, Kapoor's work endures, celebrated for its artistry, emotion, and lasting impact on Indian cinema.

References :

- Ahmed, S. Akbar (May 1991). ''Bombay Films: The Cinema as Metaphor for Indian Society and Politics,''Modern Asian Studies, 303.
- Chatterjee, Gayatri (1992) Awåra. New Delhi: Wiley Eastern.
- Chen, Ping (November 8, 1993). Interview by author, Atlanta.
- Dubey, Rachana. (Nov.2021). Article: Krishna Raj Kapoor wanted a Book on Raj Kapoor—Times of India.
- Dwyer, Rachel (2011). ''Fire and Rain, The Tramp and The Trickster: romance and the family in the Early Films of Raj Kapoor'' Vol. 2, No. 3, pp. 9–32 | ISSN 2050-487X. http://www.southasianist.ed.ac.uk/
- Dwyer, Rachel (2013) 'Bollywood's empire: Indian cinema and the diaspora.' In Joya Chatterjee and David Washbook (eds) Routledge handbook of South Asian diaspora. London: Routledge.
- Gürata, Ahmet (2010) '"The Road to Vagrancy": translation and reception of Indian cinema in Turkey. 'BioScope,1 (1)
- HT Entertainment Desk, Hindustan Times (Jan 04, 2022) ''When Raj Kapoor got angry at wife for her opinion on Ram Teri Ganga Maili: 'Krishnajisikhayegi film banana.''
- Kabir, NasreenMunni et al. (2010) The dialogue of Awaara: Raj Kapoor's immortal classic.' New Delhi: Niyogi Books.
- Meghnani, Nishi (December 2023). Personal Interview, Mumbai.
- Nagaaraj, D. (2006). 'The comic collaspse of authority: an essay on the fears of the public spectator.' In Vinay Lal and AshisNandy 9eds) Fingerprinting popular culture: the mystic and the iconic in Indian cinema, Delhi: Oxford University Press.
- Nanda, Ritu (1991), Raj Kapoor (Bombay: R.K. Film and Studios).
- Narayan, Hari (2018, January). Review article: Raj Kapoor: The One and Only Showman review: In search of the artiste inside the showman; A daughter remembers her auteur father.
- Sharma, Kidar (13 May 1993). Interview by author, Bombay.

Raj Kapoor : An Institution of Film Making

Dr. Urvashi Sharma
Associate Professor, Department of Journalism & Media Management
JagannathUniveristy, Haryana, India

Dr. Lokesh Jain
Associate Professor, Department of IT
Jagan Institute of Management Studies
Rohini, New Delhi, India

1. Introduction :

Charismatic, magnetic, visionary, creative, innovator, perfectionist and multi-talented adjectives describe "The Showman of Indian Cinema: Raj Kapoor." The first family of Bollywood truly lived cinema and RK had a profound influence on Indian cinema which reached global heights. Raj Kapoor, a multi-faceted personality acted, directed, and produced Bollywood films that left an indelible mark on cinema's artistic and cultural fabric.

Perfectionist was synonymous with Kapoor, who was known for his eye for detail, commitment, and enthusiasm towards the craft of filmmaking. The way he engagingly and powerfully told his stories, innovative music, and meticulous production values have made him a subject of academic research.

2. Global Influence :

Kapoor was a master of his craft. As a student of cinema, he not only studied global cinematic styles like Soviet silent cinema, German Expressionism and Italian neo-realism but embedded them in his stories which were a fusion of entertainment and social messages. Blending his style with the musical and the melodrama of traditional cinema led to the hits Awaara(1951) and *Shree 420* (1955). These films revolved around poverty, class inequality, and the human struggle for dignity, which resonated internationally, making Kapoor a cultural ambassador for Indian cinema, particularly in the Soviet Union and other parts of the Communist world.

As a socially conscious storyteller,his films reflected class struggles criticizing capitalist greed while advocating the dignity of labor.Kapoor's inclination towards socialist ideology was instrumental in earning him the title of "The Socialist Showman." Harvard Business School's case study *Raj Kapoor: The Socialist Showman* highlights how Raj Kapoor, an influential film-maker of Bollywood told stories that effortlessly linked romance and socio-political commentary. The formation of RK Studios in 1948 gave him the liberty to produce a series of films that highlighted the plight of the common man, class struggle and social injustices that resonated with communist nations as it highlighted universal themes of equality and resilience.

Anubhav Roy in his article titled "Raj Kapoor and India's Foremost Cinematic Soft Power Breakthrough" highlights how his films especially Awara became India's unintentional tool as India's soft power and fostered diplomatic ties and goodwill in postwar Russia. The socialist ideology of division of class and labour struck a deep chord with Soviet audiences. This acted as a catalyst for cultural and political rapprochement between the two nations. Kapoor's influence did not end here it extended beyond this and was pivotal in creating the perception of India's socialist ideology and the richness of Indian culture globally.

Kapoor's art of storytelling is an apt example of how the combination of entertainment and social consciousness makes cinema a powerful medium of soft power, making him an indelible legend in international relations and the artistic world.

3. Gender and Social Commentary :

Kapoor's cinema on the one hand celebrated a fusion of romance, individuality and social injustice but on the other hand, it was criticized for stereotyping gender roles. The study titled "Portrayal Of Women In The Cinema of Raj Kapoor: A Case Study of Satyam Shivam Sundaram, Prem Rog and Ram Teri Ganga Maili" by Rakesh Bawa focuses on the portrayal of female protagonists in the three films under study. The female protagonists symbolized different aspects of femineity, their societal roles, and their relation to social moral and spiritual values.The comparison between Radha of Satyam Shivam Sundaram, Manorama in Prem Rog and Ganga in Ram Teri Ganga Maili reveals how Kapoor uses women as symbolic representations to critique societal norms, highlight gender issues and explore themes of purity, exploitation, and self-realization.

Through Roopa's Raj Kapoor's intentions were to highlight societal bias against women with imperfections which is relevant in the context of Indian society but the overemphasis on sensuality and stereotypical portrayal objectified Roopa and her representation looked superficial.

Protagonist Mandakini portrayed the role of Ganga of Ram Teri Ganga Maili representing purity, innocence, and the sacredness of the Ganga River. Just like the river Ganga, which has been polluted by men her innocence and purity were marred by the exploitation she had to suffer in society.

Thecharacter Manorama, a girl full of life in Prem Rog takes a 360-degree turn after she becomes a widow. The charac-tertransforms from a carefree, innocent young girl to a sorrowful widow. Kapoor presents a stark social contrast on the canvas called cinema reflecting the plight of widows in a conservative society, representing the helplessness women face when they are objectified and deprived of their identity after losing a husband.

Raj Kapoor's films softenpresent women as characters depicting purity, exploitation, and societal struggle. All three female protagonists showcaselarger societal challenges Manorama symbolizes the oppressed widow, Ganga represents how women have to suffer when they are exploited by society and Roopa depicts the struggle women have to go through because of their physical appearance.

4. Academic Perspectives :

Research scholars from eminent institutions like Harvard University saw Raj Kapoor not only as a filmmaker but also as a mass communicator who with his interesting narratives commented on social issues. His stories were original, and realistic and reflected the essence of Indian culture. He integrated song and dance, which are integral parts of Indian culture seamlessly into his films. His films celebratethe richness of Indian culture globally.

His films played a part in the nation's formation; they unified the cultural realms on the national and international levels. Further, his style of filmmaking was a mirror of the socio-political and cultural phase of Indian society in the modernization process. Cinema, culture and society are still captured by Kapoor fairly convincingly; he inspired many directors such as Imtiaz Ali and Sanjay Leela Bhansali, using the cinematographic narrative as well as the emotions proposed by the actor. His legacy is best remembered not only in Bollywood and India, but worldwide where residents are fans of Indian productions.

In a study titled "Bollywood's India: Hindi Cinema as a Guide to Contemporary India" by Rachel Dwyer, Kapoor is termed as an icon who helped portray Indian culture to the world, and as a cultural mediator between Indian and international cinema form.

Raj Kapoor is always considered one of the movie legends of India or Indian cinema stars par excellence. He is perhaps the first person who has been able to make films that span periods and continents and touch people's hearts everywhere. The setting up of RK Studio which was headquartered for innovation dictated the trends for modern Indian cinema to follow. Though his work played primarily in the horror, psychological, and war genres, his approaches to using light, camera, and editing were phenomenal. Music was his film's core in a nutshell. These melodious songs are still favoritesto date. That particular approach he used in his films by narrating dream sequences made part of the narrative to be surreal. Such aspects of moving making have compelled scholars to study Kapoor's films from the perspective of Cinematic which includes aspects such as the plot structure the look and feel of the film and the use of sounds in the film.

A highly charged social play that voiced and dramatically depicted the social evils and issues of the new Indian society was intertwined into interesting events by Raj Kapoor. These stories were useful in bringing out classism, social inequality, and poverty, which were real and interested readers worldwide. The sociological and cultural aspects of Kapoor's films have been studied through the effect it has on Indian society and culture.

His film *Shree 420* (1955) is an excellent example of the same containing aspects of unemployment, greed, and exploitation of the poor. Kapoor was also particular about details for he was able to capture unemployment and the problems of new India; many had no employment and were forced to migrate to the urban centers. His films help historians to comprehend the social-political situation in that time. Raj Kapoor still remembered that he was a storyteller and could tell stories through moving images called cinema. This is why he needed his audience to be

fully absorbed in what he writes and forget about their problems and constantly be grateful for it.

According to Randhir Kapoor, "Raj Kapoor was not only a filmmaker but an icon who built emotions in Indian films. Not only his stories were more than movies, but they are passionate narratives that reach across generations of audiences also." Cinema was Raj Kapoor the way one can cram up life, soul, and reason for one's existence into three spherical words! These monuments represented the fight and aspirations of a new and emerging country in the hunt for a novel identity. In sum, Raj Kapoor being an actor and director was not only this, he was an old magician who did magic with the help of motion pictures.

5. Conclusion :

In a nutshell, Raj Kapoor was not merely telling stories moving Indian cinema beyond it and placing him as a cultural and cinematic icon. His attempt to blend socio-political perspectives, realism, and entertainment formed the artistic profile of Bollywood and galvanized Indigenous cinema into an international cultural imperative. Despite his portrayal of women most of his films are important socially, politically, and existentially showing class struggle and society's injustice to men. He developed a social vision of India and made viewers understand India from the outside and inside. His work forever leaves behind his mark and thus continues to influence scholars, filmmakers, and the audience qualifying him as a key founder of cinema art and a great storyteller of the age.

References :

1. Jones, Geoffrey, and Snigdha Sur. "Raj Kapoor: The Socialist Showman." Harvard Business School Case 317-100, May 2017. (Revised April 2020.)\
2. Roy, A. (2017, January 23). *Raj Kapoor and India's foremost cinematic soft power breakthrough*. E-International Relations. https://www.e-ir.info/2017/01/23/raj-kapoor-and-indias-foremost-cinematic-soft-power-breakthrough/
3. Bawa, R. (2018, April 8). *Portrayal of Women in the Cinema of Raj Kapoor: A Case Study of Satyam Shivam Sundaram, Prem Rog and Ram Teri Ganga Maili*. Bawa | International Journal of Research. https://journals.pen2print.org/index.php/ijr/article/view/14994
4. Academic Block. (2024, November 29). *Raj Kapoor Era | Academic Block*. https://www.academicblock.com/life-and-leisure/history-of-indian-cinema/raj-kapoor-era
5. *Raj Kapoor and the Golden Age of Indian Cinema - Harvard Film Archive*. (n.d.). Harvard Film Archive. https://harvard-filmarchive.org/programs/raj-kapoor-and-the-golden-age-of-indian-cinema
6. Bedika. (2007, October 30). Raj Kapoor: The face behind the star. *Hindustan Times*. https://www.hindustantimes.com/books/raj-kapoor-the-face-behind-the-star/story-CqCMzQu1B5enR1xri93hbO.html
7. Lal, N. (2024, December 4). Raj Kapoor@100: A grand show for the greatest showman. *The Times of India*. https://timesofindia.indiatimes.com/entertainment/hindi/bollywood/news/raj-kapoor100-a-grand-show-for-the-greatest-showman/articleshow/115954673.cms

The Musical Legacy of Raj Kapoor's Films

Ismatullaeva Mutabar Xushvaqt qizi
Hindi Teacher of the school of
"South Asian language and literature" at
Tashkent State University of Oriental Wtudies

Raj Kapoor, a luminary in Indian cinema, is renowned not just for his heartfelt narratives and magnetic screen presence, but also for the unforgettable music that enriched his films. His movie soundtracks are distinguished by their enduring charm, deep emotional resonance and rich cultural tapestry, seamlessly integrated into each film's storyline.

The music in Raj Kapoor's films frequently formed the core of the cinematic journey. By teaming up with legendary composers like Shankar-Jaikishan, Laxmikant-Pyarelal, and R.D. Burman, Kapoor made sure that the musical compositions left a lasting impact on audiences long after the films ended. His deep insight into the emotional essence of the narratives meant that the songs often played a vital role in storytelling, adding to the emotional depth and strengthening the viewers' connection to the film.

Raj Kapoor's films boasted a unique feature in their versatile music, ranging from romantic ballads and soulful melodies to lively folk tunes and socially impactful anthems. Each song, carefully crafted, captured a wide array of human emotions and experiences, resonating with diverse audiences. Classic examples include "**Awaara Hoon**" from **Awaara**, which blends sorrow with a philosophical touch, and "**Pyar Hua Iqrar Hua**" from **"Shree 420"**, reflecting the purity and passion of young love.

Furthermore, Raj Kapoor's music often reflected social themes and human conditions. His films conveyed the dreams, aspirations, and struggles of the common people, often mirrored in the songs. The heartfelt **"Mera Joota Hai Japani"** from **"Shree 420"** celebrated India's identity and spirit while achieving international acclaim, highlighting the universal appeal of Kapoor's music.

The remarkable vocal talents behind these iconic songs were just as significant. Renowned singers like Mukesh, Lata Mangeshkar and Mohammad Rafi brought a genuine and profound essence to the music. Mukesh, especially, became closely associated with Raj Kapoor's on-screen image, adeptly expressing the emotional subtleties of his characters with maximum impact.

Raj Kapoor's films are a rich repository of thematic depth, with several of his works prominently showcasing these themes:

1. **Romance and Love :**

   Bobby (1973): A quintessential

teenage romance that turned into a cultural sensation with its depiction of youthful love.

2. **Human Emotions and Relationships :**

   Awaara (1951) : This film delves into the intricate dynamics of family relationships and examines how upbringing shapes one's identity.

3. **Social Commentary:"Boot Polish" (1954) :** The film highlights the hardships of poverty and the challenges faced by street children, advocating for self-sufficiency and dignity.

4. **Patriotism and Nationalism :**

   Jagte Raho (1956) : Although primarily a social drama, this film also explores the hopes of a newly independent India.

5. **Philosophy and Spiritualism:**

   Mera Naam Joker (1970): This movie contemplates life's philosophical aspects and the journey of an artist, delving into existential questions.

6. **Joy and Celebration :**

   Shree 420 (1955): Despite its serious undertones, the film features moments of celebration and optimism, especially highlighted in the famous song "Mera Joota Hai Japani."

7. **Nostalgia and Melancholy :**

   Barsaat (1949): This movie evokes nostalgia with its portrayal of a brief yet intense romance set against picturesque landscapes.

Raj Kapoor's films not only exhibit his exceptional storytelling abilities but also demonstrate his talent for intertwining profound themes with engaging entertainment, making a lasting impression on Indian cinema. Here are some of his most iconic songs:

1. **"Mera Joota Hai Japani" - Shree 420 :** A renowned song symbolizing Indian pride and spirit.
2. **"Awaara Hoon" - Awaara :** This globally celebrated song embodies the core themes of the film. The movie Awaara (1951) is often lauded for having one of the finest soundtracks by Shankar-Jaikishan. The music of Awaara is legendary, with songs like "Awaara Hoon" becoming timeless classics, significantly contributing to the film's success and leaving a lasting legacy in Indian cinema.
3. **"Pyar Hua Ikrar Hua Hai" - Shree 420 :** A timeless romantic duet, beautifully set in the rain, capturing the essence of young love.
4. **"Jeena Yahan, Marna Yahan" - Mera Naam Joker:** A touching reflection on life and the transient nature of the stage, full of emotional depth.
5. **"Ghar Aaya Mera Pardesi" - Awaara :** Famous for its dream-like sequence and melodious composition.
6. **"Dil Ka Haal Sune Dilwala" - Shree 420 :** A light-hearted yet philosophical song that captures the essence of optimism and playfulness.
7. **"Main Aashiq Hoon Baharon Ka" - Aashiq :** A joyful romantic song that delights listeners with its charming melody.
8. **"Dost Dost Na Raha" - Sangam :** An evocative song about the pain of broken friendships and betrayal.

9. **"Hum Tujhse Mohabbat Kar Ke" - Aah :** A deeply emotional romantic ballad with profound and meaningful lyrics.

   These songs are a testament to Raj Kapoor's unparalleled ability to blend entertainment with significant themes, creating music that resonates across generations.

10. **"Jis Desh Mein Ganga Behti Hai" - Jis Desh Mein Ganga Behti Hai :** A patriotic song celebrated for its rich cultural significance.

These songs have timeless appeal and continue to strike a chord with audiences, showcasing an ideal fusion of music, lyrics, and Raj Kapoor's charismatic presence.

Raj Kapoor, famed for his collaborative nature, worked with some of the most gifted music directors in the Indian film industry. Here are some notable music directors who collaborated with him:

1. **Shankar-Jaikishan :** Perhaps the most iconic partnership with Raj Kapoor, producing numerous hits for nearly all his major films, such as Awaara, Shree 420 and Sangam.
2. **Laxmikant-Pyarelal :** Provided the music for his film Bobby, which became legendary.
3. **Ravindra Jain :** Created the music for his film Ram Teri Ganga Maili, renowned for its melodious tracks.
4. **Kalyanji-Anandji :** Teamed up for the film Chhalia.
5. **R.D. Burman :** Composed the music for Dharam Karam, featuring Raj Kapoor's son, Randhir Kapoor, showcasing a distinctive musical style.

These collaborations resulted in music that not only enhanced the films but also left a lasting legacy in Indian cinema.

These collaborations produced some of Bollywood's most iconic and impactful soundtracks, greatly enhancing the legacy of Raj Kapoor's films.

In summary, the music in Raj Kapoor's films goes beyond mere background accompaniment, serving as a crucial storytelling element that enhances the cinematic experience. This music exemplifies his visionary talent for blending narrative, emotion, and musical artistry. As a result, his films continue to captivate audiences across generations, solidifying the enduring musical legacy that Raj Kapoor established and treasured.

Raj Kapoor's films stand out not just for their compelling narratives and charismatic performances but also for their profound integration of music. The harmonious blend of story and song elevates the cinematic experience, making the music an essential narrative component rather than mere background. This seamless integration showcases Raj Kapoor's visionary ability to intertwine narrative, emotion, and music, leaving an indelible mark on Indian cinema. His collaborations with legendary music directors resulted in timeless soundtracks that continue to resonate with audiences, solidifying his legacy as a masterful filmmaker and a cultural icon. The music of Raj Kapoor's films will forever be cherished, embodying the spirit and artistry that define his enduring legacy in Bollywood history.

Raj Kapoor as a Global Villager : Special Reference to *Teesri Kasam*

Parveen Kumar
Research Scholar, Dept of English, Chandigarh University, Mohali, Punjab (India) & Director, English Language and Communication, American University of Technology, Tashkent (Uzbekistan)

Dr. Manju Rani
Professor, Dept of English, UILAH, Chandigarh University, Mohali, Punjab (India)

Abstract

The centenary year of Raj Kapoor (1924-2024) has reaffirmed the stature of the "Showman of Indian Cinema" as the bridge between Indian cinema and the world. He transcended geographical and cultural boundaries, linguistic limitations and became the most celebrated embodiment of the persona of a "global villager". The narratives in his movies remained oriented towards life lessons, realistic portrayals and a socialism of distinct kind. His own charismatic screen presence never denied the viewers an opportunity to identify with his struggles, dreams and aspirations. Teesri Kasam (1966), a film that servesa socialist vision and deep empathy for the marginalized, was based on Hindi literary legend Renu's story Maare Gaye Gulfaam. It was produced by lyricist Shailendra and it is said that Raj Kapoor and lead actress Waheeda Rehman did it for free to support the maker. Raj Kapoor did not produce this or wrote the story but the enactment of Hiramal conveys his connect with the simple humane experiences. The paper celebrates him as the rustic face who brought to limelight the rural man and therefore connects with the world.

Keywords:

Raj Kapoor, Teesri Kasam, global cinema, socialist realism, Uzbekistan, cultural diplomacy

Introduction :

Cinema has developed itself as a bridge across the world. It is celebrated as a universal language, transcending barriers of geography, culture, politics and language. We cannot just credit Hollywood for this, all other international cinemas have done a greater service to this. Different languages have not acted as a barrier in this process of reconciliation across the world rather this gave a way to expressions to be understood without knowing the languages. Indian movies made an entry to the households of land far away from the Indian subcontinent. The reference to the land of Uzbekistan and of course the larger Central Asia as well. The social truthfulness and the identical realism he brought in his acting,

production and stories made him the next door storyteller for millions. There was a time when there will be more than 200 movies exported to the USSR countries and only 41 movies from Hollywood. All this has been credited to the legend known as Raj Kapoor. Few filmmakers have demonstrated the social truth as effectively as Raj Kapoor, whose films became cultural bridges between India and the world. Kapoor's unique blend of artistic sensitivity and popular appeal established him as a global icon, especially in socialist nations such as the USSR, including Uzbekistan.

Kapoor's ability to craft narratives with universal appeal stemmed from his focus on themes of human dignity, social justice, and compassion for the common man. These values were central to his work, and films like *Awaara* (1951), *Shree 420* (1955) and *Teesri Kasam* (1966) reflected them powerfully. This paper examines Kapoor's global persona, the acceptance he still enjoys, with a special emphasis on *Teesri Kasam*, a film that exemplifies his ability to act for the universal struggles through the lens of Indian rural life. He is merely an actor, not the story writer or the director of the movie but the stamp of simplicity that is his hallmark is still present. The film is an adaptation of Renu's famous story *Maare Gaye Gulfaam*. It is also rewarding to know that Renu himself wrote the dialogues and the movie was produced by Shailendra, the famous lyricist who also wrote most of the songs in the film.

The picturisation of the film Teesri Kasam starring Raj Kapoor and Waheeda Rahman, conceives a rural life exhibiting story of common people in uncommon situation that is handled in a unique and very admirable fashion.(Sinha, 2022) This film is a faithful adaptation of a short story, *Maare Gaye Gulfaam,* by Phanishwar Nath Renu, *Teesri Kasam (The Third Vow)* was directed by Basu Bhattacharya. The film received critical appreciations but could not be a hit in commercial terms. It won the National Award in 1967. The attractive elements in the movie are the utmost simplicity of making. The two characters bring to us a fragile love and also look like social misfits. Having *'Hira'* in their names and becoming 'nakesakes' in a unique way attach us to their journeys. Hirabai travels in the 'nautanki' and moves as a dancer from one place to another. This restlessness is carried in another colour by Hiramal, played hy Raj Kapoor. The songs like *'Sajan Re Jooth Mat Bolo* (Dear, do not tell a lie) became a treatise in themselves with the deep thoughts and serious connotations.

It is indeed a simple story simply but does not have a happy ending. Still itis not a tragedy. A character-driven film, it offers several insights into human relationships and life in a small town placed somewhere in the rural interiors of Bihar. That India we do not see any more in the mainstream movies in India. There was no reluctance in the mind of filmmakers to show this purity and perseverance of the common man.

When the film opens, we are informed that the protagonist, *Hiraman* (Raj Kapoor) is a humble, non-smart bullock cart driver who has taken two vows because of his bad experiences in his work. He has pledged that he will never carry goods which are stolen and the second is that he will never carry bamboo in his cart. These are because he somehow rescued himself from crisis in his life that

would have happened. However, he was never the one doing any conspiracy or corrupt act. What is the third vow? The viewer will eventually find out.(Chatterji, 2021).

There is a need to put forward a strong argument about the stature of Raj Kapoor, who worked along the legends in the Bollywood to bring world-class methodology in making films. The way Indian movies evolved to move out of studios and became representative of life-in-real is evident in the deep concerns written in the scripts. There have been a strong support to the argument that Raj Kapoor wasn't at all Chaplinesque(Dustedoff, 2014)and the movies where he makes us laugh at this style of walk or dresses, are merely an artistic diversion to bring us back to how serious he was in his works.

Teesri Kasam has become a cult in terms of a story where the question of morality is also answered. Society did need such reformations where the question of right-wrong was to be dealt with an eye on the future to come. If any kind of orthodoxy or backwardness would have been allowed in those years, Indian cinema would never have been able to put a strong-liberal face to the world. Movies like *Teesri Kasam* and other such movies from that age allowed this foundation to build. However, it is hard to decipher why a film with such emotional depth, popular music and stellar actors did not get accepted 58 years ago.(Sharma, 2022).

When we are introduced to Waheeda Rehman's Hirabai in Basu Bhattacharya's *Teesri Kasam*, Raj Kapoor's Hiraman calls her a 'pari'. Her poise, grace and pristine beauty leaves him mesmerised and he is instantly taken by her. As we know that Hiraman is a bullock cart driver who has made two promises to himself – the first one being that he will never transport illegal goods, and the second being that he will never transport bamboo sticks on his cart. The film feeds us this information in the first few minutes and we are to wait for the final 'teesrikasam'. In the present-day scenario, *Teesri Kasam* could best be explained as a road trip film where two strangers – a male driver and a female passenger, develop a connection over a 30-hour ride. He has never been in the company of any woman who wasn't related to him, and she has never spent any time with a man who did not have an ulterior motive. This distinctiveness brings them in a subtle type of connect which does not take a name but makes the viewer connect to their life.

Their long journey has them discussing their commonalities. She calls him her '*Meeta'*, a name given to those who have a similar sounding name as themselves.(Sharma, 2022)This *namesakeness* is quite a thing adopted to make them more common to all of us. Modern day movies also portray this kind of 'stay away and them come together' themes with a very soft romance landscapes. This similarity between the old and the new is symbolic of the richness established in the era of Raj Kapoor.

Another accomplishment for the critically appreciated work was to get as a chapter in the school textbooks for the whole India. A chapter titled '*Teesri Kasam Ke Shilpkar Shailendra*' (*The Architect of Teesri Kasam Shailendra*) on the film is included in CBSE class 10 Hindi Course-B Textbook *Sparsh* (Bhag 2) ("Touch (Part 2)") (Devnagari :

स्पर्श भाग-2)). After being excluded for several years this chapter was recently brought back in course. ("Teesri Kasam", 2024)

The character of Hiramal in the movie *Teesri Kasam* also took Raj Kapoor to another identity where he could be seen as a 'villager' with a comprehensive acceptance as a rural face on the bullock cart. The films like *Aah, JagteRaho, Pyaasa, Mera Naam Joker* and even *Anari, Awara* established him as a global face of socialism in the cinema. It was not about the way he made movies or the commercial aspects of the industry. Rather, his portrayal of characters, the freedom that was awarded to the most common of characters, gave a message to the audience across India, a message about his villager status. His cinematic philosophy and artistic ethos was deeply influenced by the socio-political environment of post-independence India. Inspired by Nehruvian socialism, Kapoor saw cinema as a medium to advocate for equality and human rights. In interviews, Kapoor often remarked on his desire to depict 'the lives of real people, their dreams, and their struggles.' He believed that storytelling rooted in authenticity would resonate universally.

Kapoor's characters often embodied the struggles of the common man, navigating the intersections of tradition, modernity, and social inequality. As Rachel Dwyer (2005) noted, 'Kapoor's genius lay in his ability to blend entertainment with a profound critique of societal injustices, creating films that were both personal and political.'His cinematic ethos resonated deeply with audiences in these regions, who found parallels between Kapoor's narratives and their own socio-economic realities.In Uzbekistan, Kapoor became a household name. His films were screened repeatedly, and songs like *MeraJoota Hai Japani* from *Shree 420* became cultural anthems. Kapoor's appeal in Uzbekistan was so profound that he was often described as a "bridge of friendship" between India and the Soviet bloc.

We see Raj Kapoor possessing universality through simplicity and as Hiraman, he becomes asimple everymanto everyone. Globally, in that age, and even now, the acceptance for such portrayals remains intact because they represent the downtrodden. Hiraman is a man of few words, deeply tied to his rural upbringing and moral convictions. He carries an innate sense of honour, humility, and respect for others, which makes him endearing to audiences. Hiraman's life revolves around his simple occupation, ferrying goods and people across the countryside. His encounter with Hirabai, the charming and frank nautanki dancer, sets the stage for a narrative that highlights his innocent worldview and the emotional conflicts he faces when confronted with societal judgment and exploitation. It is this narrative of universality which puts forward the strongest support for Raj Kapoor as a global villager. His internal struggle-to reconcile his admiration for Hirabai with the stigma attached to her profession-mirrors a broader human conflict : the tension between societal norms and personal beliefs.

Raj Kapoor's legacy as a global villager lies in his ability to tell deeply rooted stories that resonate universally.

Teesri Kasam exemplifies this duality, combining a profoundly Indian narrative with themes of global relevance. Kapoor's popularity in Uzbekistan and other parts of the world underscores the power of cinema to transcend boundaries and foster human connection.As a storyteller and cultural ambassador, Kapoor bridged gaps between nations, leaving an indelible mark on global cinema. His work continues to inspire, reminding us of the shared humanity that unites us all. The adherence to the philosophy of *Ubuntu, Vasudhaiva Kutumbakam* also justifies the showman as a global villager whereas villager here stands for truthfulness to the ideals of socialism.

References :

- Chatterji, S. A. (2021, June 11). Essay: 55 years of Teesri Kasam. *Hindustan Times*. https://www.hindustantimes.com/books/essay55-years-of-teesri-kasam-101623391406923.html
- Dustedoff. (2014, September 13).w *Teesri Kasam (1966)*. Dustedoff. https://madhulikaliddle.com/2011/04/04/teesri-kasam-1966/
- Kapoor, R. (Various years). Interviews. Collected in Raj Kapoor Speaks, edited by Ritu Nanda, Penguin Books.
- Sharma, S. (2022, July 2). *Raj Kapoor did Teesri Kasam for one rupee, Waheeda Rehman did it for free but the film still ruined lyricist-producer Shailendra*. The Indian Express. Retrieved December 1, 2024, from https://indianexpress.com/article/entertainment/bollywood/raj-kapoor-did-teesri-kasam-for-one-rupee-and-waheeda-rehman-did-not-take-even-a-penny-yet-the-film-ruined-lyricist-producer-shailendra-8003243/
- Sinha, P. (2022). Two adapted Hindi Films, Teesri Kasam and Omkara,/ : A Study of Transcreation of disparate Social Milieu. In *International Journal of Creative Research Thoughts* (Vol. 10, Issue 11, pp. b582–b584) [Journal-article]. https://ijcrt.org/papers/IJCRT2211178.pdf
- Teesri Kasam. (2024, July 17). In *Wikipedia*. https://en.wikipedia.org/wiki/Teesri_Kasam

Global Popularity of Hindi Cinema & Raj Kapoor

Vikram Singh

.....

.....

Abstract :

This research paper delves into the global influence of Raj Kapoor and his significant contributions to Hindi cinema. Known as "The Showman," Kapoor's films, deeply rooted in socio-political themes and humanism, resonated worldwide, especially in countries like the erstwhile USSR,Uzbekistan and China. His work, ranging from pioneering cinematic techniques to introducing music as a narrative tool, continues to inspire both filmmakers and audiences. Through a combination of academic studies, critical reviews, and film analysis, this article explores his family legacy, ground-breaking innovations, and the lasting impact of his films in promoting Hindi culture globallyand his connections with cultural figures like Charlie Chaplin.Additionally, it explores his innovations in filmmaking, his iconic roles, and the music integral to his films.

A Summary of Raj Kapoor (A Brief History) :

Raj Kapoor, a name that is almost always inextricably linked with the golden age of Indian cinema. He was born on December 14th, 1924, and above all entertained the public while showing some of the societal dynamics through his films. His cinematic avatar of the tramp in Awaara (1951) stayed a lasting expression of hope against all despair.

His Life in Brief: Early Years, Milestones and Personal Highlights :

Raj Kapoor, the scion of Prithviraj Kapoor inherited a heritage steeped in theatre. Growing up around theatre productions, his artistic perception developed in the right way. The much-criticized Aag (1948) - but which remains an inflection point of his career as it was a reflection of dreams not quite achieved - was, in many ways, his first proper film. He received several prestigious awards in Indian civilian and creative arts, including the Dadasaheb Phalke Award for lifetime contributions to Indian cinema in 1987.

Family Background :

The Kapoor dynasty: Bollywood royalty that helped build Indian cinema Raj was followed into indelible Bollywood mark-making by young brothers Shammi and Shashi Kapoor. He always said that his father was a huge influence who instilled within him discipline and a love for storytelling.

Impact of Her Family Background on His Way to Films :

Raj Kapoor had a strong family influence in most of his films. KalAajAurKal (1971): A stellar cast of Kapoors, three generations showcased the changing reality of how relationships played out in families. There's a whiff of that here, mirroring his actual family connections.

The Professional Journey - In Chronological Order

There are phases in Raj's career. He made socially aware films in the 1950s, such as JagteRaho (1956). Changes in the 1970s swayed to romance such as Bobby (1973). He went on to handle far bolder subjects in his later films, such as purity amidst societal corruption in Ram Teri Ganga Maili (1985).

The Philosophy behind His Movies :

The ideal and the real were a frequent theme of his films. Awaara raises deep questions about how much of our destiny is prescribed by nature and how much depends on nurture. That philosophical depth, the cultural context of it, turned a lot of people onto it.

Examining Ideological Themes in His Movies :

Raj Kapoor combined thought and pleasure exquisitely. The popular song "MeraJoota Hai Japani" from Shree 420 (1955) advocates global solidarity and critiques capitalism - ideas that resonated with post-independence India's hopes.

Raj Kapoor's International Fame :

Raj Kapoor films received love abroad, especially in the then USSR. Soviet audiences are said to have lined up for hours to see them. Post-war Russia had the song "AwaaraHoon" as its anthem of hope.

Profile of Raj Kapoor as an International Icon :

He received accolades including the Soviet Land Nehru Award. His appeal transcends borders: on a trip to Moscow, he was treated like a royal "celebrity". Through his works, he stitched Hindu and world rockets close together by way of cultural diplomacy combining India.

Selected Books and published work on Raj Kapoor :

A detailed analysis of his life is found in Bunny Reuben's biography Raj Kapoor: The Fabulous Showman. It shows the strengths and weaknesses of Raja Kapoor that made him both relatable and revered. Books like Raj Kapoor Speaks give first-hand accounts of his creative process. My favourite story from this book covers how he was detail-oriented-like actually overseeing the designs of props for Awaara.

A Critical Eye towards His Films :

His storytelling is often noted by critics for its depth and complexity. Mera Naam Joker was panned initially but later celebrated for its introspective nature on life and art philosophy, and rightly so.

A Sneak Peek into Review and Critique:

Jagte Raho was especially praised for its unvarnished depiction of alienation in the city. The film ends as one of the most fucking thirsty people on earth finally finds water (for a story that's a parable about hope and redemption for more than just the character in particular, living in this dry world where morality seems to be all dried out).

A Raj Kapoor Bibliography: Academic Writings Researches and Publications Related :

His works have been widely studied

and discussed within the academic community. A case in point is research papers that discuss Shree 420, which brilliantly fused entertainment with a little slice of post-independence India's socio-economic angst. There are many theses on visual symbolism in Raj Kapoor.Rain symbolizes both romance and refreshment as a recurring motif in his films (Barsaat, Shree 420), making it an interesting subject in film studies.

The new wave of Raj Kapoor Analysts :

Chaplin-esque type characters were introduced by Raj Kapoor in an Indian context. He also brought us the most luxuriant fantasy dream sequences like the one in Awaara which continue to define a standard of libidinous invention.

Artistic and Technical Evolution in His Films :

His associations with Shanker-Jaikishan transformed film music. For instance, in "Pyar Hua Ikraar Hua" (Shree 420), the orchestration nicely supported the romantic rain-drenched visuals.

Raj Kapoor : At the Movie Producer and Director Level :

As an artist, Raj Kapoor realised the conflict of interest between his artistic ambitions versus the market realities. The story-telling approach adopted by him for Bobby not only made his directorial career blossom but also reinvigorated the nearly-defunct teenage romance genre in Bollywood.

Hindi Documentaries on Raj Kapoor :

Documentaries like *Raj Kapoor: The Showman* narrates his life, revealing his enduring influence on cinema. These works ensure his legacy remains vibrant for future generations. Hindi documentaries on Raj Kapoor, such as *Raj Kapoor: The Showman*, play a crucial role in preserving and sharing the life and legacy of one of Hindi cinema's most iconic figures. These documentaries offer an in-depth exploration of Kapoor's multi-faceted career, providing insights into his personal life, directorial genius, and the socio-political themes he often explored through his films. They delve into his beginnings in the industry, his rise as a director and producer and his enduring influence on Bollywood, all while highlighting his contributions to film language, music, and character portrayal. For example, *Raj Kapoor: The Showman* captures his ability to combine mass appeal with social consciousness, showcasing his iconic films like *Awaara* and *Shree 420*. These documentaries also reflect Kapoor's global reach, especially in the USSR, where his films resonated deeply with audiences. Through these visual narratives, Kapoor's legacy remains vibrant, providing future generations a window into his genius and cultural impact.

Overview of Documentaries on His Life :

These documentaries explore not just his cinematic achievements but also his personal trials, presenting a holistic view of his life. Documentaries on Raj Kapoor provide a comprehensive look at both his cinematic achievements and personal life. These films explore his journey from a young actor in his father's theatre troupe to a celebrated filmmaker and global icon. Documentaries like *Raj Kapoor: The Showman* and *The Showman of Indian Cinema* offer insights into his struggles, including the financial difficulties faced by his RK Studios and his personal challenges. They highlight his visionary

filmmaking, his impact on social issues, and his deep connection with family. By blending professional milestones with personal anecdotes, these documentaries present a holistic view of Kapoor's life and legacy.

Raj Kapoor's Personal Life :

Raj Kapoor was known for his intense relationships, particularly with actress Nargis. Their bond inspired many of his romantic on-screen portrayals, adding authenticity to his films. Raj Kapoor's personal life was as compelling and dramatic as his cinematic portrayals, with his relationship with actress Nargis being particularly notable. Their deep bond, both on-screen and off, significantly influenced Kapoor's romantic roles. Their love story, though turbulent, inspired some of the most iconic on-screen chemistry in Hindi cinema, most notably in *Awaara* (1951) and *Shree 420* (1955). Kapoor's portrayal of the conflicted lover in these films was infused with genuine emotion, which came from his real-life connection with Nargis. Despite their separation, the intensity of their relationship translated into performances that remain etched in cinematic history. Kapoor's marriage to Krishna Kapoor and his familial ties also shaped his public image, highlighting his complex personal life alongside his professional brilliance.

A Glimpse into His Family Life :

Despite his professional commitments, he valued his family deeply. His sons, Randhir, Rishi and Rajiv Kapoor, followed his footsteps into the film industry, continuing the Kapoor legacy. Raj Kapoor's family life played a pivotal role in shaping his personal and professional identity. Despite his intense focus on filmmaking, he was deeply dedicated to his family. His wife, Krishna Kapoor, was a supportive partner throughout his career, and together they had three sons-Randhir, Rishi, and Rajiv Kapoor- who all went on to make their own mark in the film industry. Rishi Kapoor became one of Bollywood's most beloved actors, known for his roles in *Bobby* (1973) and *Chandni* (1989). Randhir Kapoor, too, carved a career in acting and directing. Rajiv Kapoor, though less successful, had notable roles, including in *Ram Teri Ganga Maili* (1985). Kapoor's family was central to his life, both personally and professionally, ensuring that the Kapoor legacy continued through generations.

Raj Kapoor and Uzbekistan :

In Uzbekistan, he is affectionately called "Awaara Raj Kapoor." His visits to the country were celebrated events, and his films remain a cultural bridge between India and Central Asia. Raj Kapoor, often called "Awaara Raj Kapoor" in Uzbekistan, holds a special place in the hearts of Central Asians, particularly in Uzbekistan, due to his iconic films that resonated deeply with audiences. His 1951 film *Awaara*, in which he played the role of a misunderstood young man, became immensely popular in the Soviet Union. Kapoor's unique portrayal of love, social justice, and humanism struck a chord with Uzbek audiences. His visits to Uzbekistan were met with great enthusiasm, with fans celebrating his legacy. Films like *Shree 420* and *MeraNaam Joker* also left a lasting impact. Kapoor's artistry and themes of universal appeal made him a cultural bridge between India and Uzbekistan, fostering strong cultural ties.

Exploration of His Connection with Uzbek Culture :

Uzbek audiences connected with his portrayal of universal emotions, demonstrating how art transcends borders. Raj Kapoor's connection with Uzbek culture is a testament to the universal nature of his artistry. His films, often exploring themes of love, social injustice, and human struggles, resonated deeply with audiences across the Soviet Union, particularly in Uzbekistan. Films like *Awaara* (1951) and *Shree 420* (1955) showcased emotions of longing, conflict and hope, themes that transcended national boundaries. In *Awaara*, Kapoor portrayed a character caught between his desire for a better life and the societal limitations imposed on him, reflecting themes of individual struggle against injustice that struck a chord with many in Uzbekistan, where similar social realities existed.

Moreover, the musical elements of his films, with their soulful songs and poetic lyrics, were embraced by Uzbek audiences. Kapoor's ability to portray universal human emotions made his work a cultural bridge, fostering a deep connection between Indian and Uzbek cinema, and leaving a lasting impact on Uzbek culture.

Raj Kapoor and Nehruvian Socialism :

Films like *Boot Polish* embodied Nehruvian ideals of equality and justice, portraying the struggles of the under privileged with empathy.Raj Kapoor's *Boot Polish* (1954) exemplifies Nehruvian socialism, highlighting themes of equality, justice, and the dignity of labor. The story of orphaned siblings striving for self-reliance reflects Nehru's vision of an egalitarian society. The film's iconic message, "karmkarogetohfalmilega" (work brings rewards), underscores hope and resilience amidst adversity.

Influence of Socialism on His Cinematic Vision :

Raj Kapoor's characters often championed socialist ideals, symbolizing the dignity of labour and collective progress. Raj Kapoor's films often embodied socialist ideals, portraying characters who championed the dignity of labor and the fight for social justice. In movies like *Shree 420* (1955), his character struggles against exploitation, symbolizing the common man's battle for dignity. Similarly, in *Awaara* (1951), his character represents the underprivileged youth, emphasizing the need for collective progress through empathy and solidarity. Kapoor's cinematic vision consistently highlighted themes of equality, fairness and societal change, aligning with socialist principles. His portrayal of characters fighting for a better life resonated with audiences in socialist countries like the Soviet Union, reinforcing shared values of collective good and social reform.

Raj Kapoor's Iconic Roles and Acting :

Roles like Raju in *Shree 420* or the Joker in *MeraNaam Joker* showcased his versatility and emotional depth, making him a beloved icon. Raj Kapoor's portrayal of Raju in *Shree 420* (1955) epitomized the resilient everyman, balancing innocence and ambition while critiquing societal corruption. In *MeraNaam Joker* (1970), his poignant role as a clown symbolized life's joys and sorrows, delivering emotional depth through laughter and tears. Both roles immortalized his ability to resonate deeply with diverse audiences.

Analysis of His Memorable On-Screen Characters :

His performances, marked by subtlety and nuance, made his characters relatable. The tramp in *Awaara* remains one of Bollywood's most enduring archetypes. Raj Kapoor's characters reflected human struggles with authenticity. In *Awaara* (1951), his portrayal of a tramp navigating poverty and injustice became a timeless archetype, symbolizing resilience and moral dilemmas. Similarly, in *JagteRaho* (1956), he played a thirsty villager misunderstood as a thief, embodying innocence amid societal hypocrisy. These roles, marked by nuanced expressions and universal themes, resonated deeply with audiences across generations and cultures.

Raj Kapoor and Charlie Chaplin :

Inspired by Chaplin, Raj Kapoor adapted the tramp character to an Indian context, using it to critique societal disparities with humour and poignancy. Raj Kapoor drew inspiration from Charlie Chaplin's iconic tramp to create his version, infused with Indian ethos. In *Awaara* (1951), Kapoor's tramp reflected the struggles of the underprivileged, blending humor and pathos. In *Shree 420* (1955), the character's journey from innocence to disillusionment paralleled societal disparities, critiquing materialism and corruption. Like Chaplin, Kapoor used simplicity and emotion to highlight universal human experiences, making his characters profoundly relatable.

Comparative Study of His Work and Influence by Chaplin :

Both artists used their personas to reflect and critique societal inequities, creating timeless characters that resonated universally. Raj Kapoor and Charlie Chaplin shared a remarkable ability to use their cinematic personas to critique societal inequities while engaging audiences emotionally. Chaplin's *The Tramp* symbolized resilience amidst poverty, blending humour with poignant social commentary. Similarly, Kapoor's tramp in *Awaara* (1951) and *Shree 420*(1955) mirrored the struggles of the marginalized in post-independence India. Both artists tackled themes like capitalism, inequality, and human dignity. For instance, Chaplin's *Modern Times* critiqued industrial dehumanization, while Kapoor's *Shree 420* highlighted corruption and greed. By adapting Chaplin's essence to Indian contexts, Kapoor created characters that became universal symbols of hope and resistance.

Dubbing and Raj Kapoor's Films :

Dubbing enabled his films to reach global audiences. In the USSR, dubbed versions of his films garnered widespread acclaim, cementing his international popularity. Dubbing played a pivotal role in amplifying Raj Kapoor's global appeal, particularly in non-Hindi-speaking regions. His films, rich in universal themes and emotions, found receptive audiences when adapted linguistically. The Soviet Union stands out as a key example, where dubbed versions of *Awaara* (1951) and *Shree 420* (1955) became cultural phenomena. Audiences in the USSR connected deeply with the struggles of Kapoor's tramp character, relating it to their own socio-political realities. The song "Awaara Hoon" dubbed into Russian, became a beloved anthem, symbolizing human resilience and freedom.

Similarly, in countries like China, Egypt, and parts of Eastern Europe, the availability of dubbed versions allowed his

films to transcend linguistic barriers. This effort to adapt his works for local audiences not only expanded Kapoor's reach but also reinforced his reputation as a global cinematic icon whose storytelling resonated universally, bridging cultural and linguistic divides.

Significance of Dubbing in Expanding His Reach :

Dubbing played a crucial role in making his stories accessible to non-Hindi speakers, broadening his impact globally. Dubbing was instrumental in taking Raj Kapoor's films beyond India's borders, making his stories accessible to non-Hindi-speaking audiences worldwide. For example, the Russian-dubbed versions of *Awaara* (1951) and *Shree 420* (1955) struck a chord with Soviet audiences, where his relatable themes and emotional narratives resonated deeply. Songs like "AwaaraHoon," dubbed into local languages, became cultural hits. In the Middle East and China, where linguistic diversity often poses a barrier, dubbing allowed his films to reach and captivate new demographics. This localization ensured that Kapoor's universal themes of love, resilience and social justice gained appreciation across different cultures.

Hindi Cinema and Raj Kapoor: Significance and Relevance :

Raj Kapoor's work laid the foundation for modern Hindi cinema, blending traditional narratives with contemporary issues, and ensuring their relevance even today. Raj Kapoor's contributions to Hindi cinema remain a cornerstone of its evolution, blending timeless traditional narratives with contemporary socio-political issues. As a visionary, he understood the pulse of Indian society, infusing his films with themes that transcended time and cultural boundaries. His work laid the foundation for a cinema that was both entertaining and thought-provoking, a template that continues to influence modern filmmakers.

For instance, *Awaara* (1951) tackled themes of destiny versus free will, encapsulated in the iconic courtroom confrontation between a father and son. This narrative not only resonated with post-independence India's existential dilemmas but also found international acclaim, particularly in the USSR. Similarly, *Shree 420* (1955) juxtaposed rural innocence with urban corruption, using Raju's character as a critique of capitalist greed-a theme as relevant today as it was in the 1950s.

Kapoor's willingness to explore taboo topics further highlighted his progressive vision. *Bobby* (1973) addressed teenage romance across class divides, paving the way for youth-centric films. Even *Mera Naam Joker* (1970), though initially underappreciated, is now regarded as a deeply introspective exploration of life and art.

By weaving socio-political commentary into relatable narratives, Kapoor ensured that his legacy would endure, continually inspiring new generations of filmmakers and audiences.

Examination of His Contributions and Enduring Importance :

His films remain relevant for their exploration of universal themes, making them a rich resource for filmmakers and scholars alike. Raj Kapoor's films continue to resonate due to their exploration of universal themes such as love, social justice, class struggles, and the quest for identity. His works, like *Awaara* (1951)

and *Shree 420* (1955), tackle timeless conflicts between individual desires and societal expectations, making them relevant even in contemporary cinema. Kapoor's nuanced storytelling and ability to blend entertainment with meaningful social commentary have made his films a valuable resource for filmmakers, scholars and critics. His legacy endures as a testament to the power of cinema in shaping social discourse and inspiring cinematic innovation.

Raj Kapoor as the "Showman" of Hindi Cinema :

The title "Showman" reflects his unparalleled ability to combine artistic brilliance with mass appeal, leaving an indelible mark on Bollywood.Raj Kapoor earned the title of the "Showman" of Hindi cinema due to his unique ability to marry artistic brilliance with mass appeal, creating films that were both entertaining and deeply meaningful. His cinematic style was characterized by a fine balance between spectacle and substance, where every frame was crafted with a sense of grandeur, yet rooted in real human emotions. He was a master of creating engaging narratives that not only resonated with the masses but also conveyed powerful social messages.

For instance, in *Awaara* (1951), Kapoor created a blend of romance, drama and social commentary that captivated audiences while exploring themes of fate, family, and morality. Similarly, *Shree 420* (1955) portrayed the moral conflict of an innocent man lured into corruption, making it a timeless social critique wrapped in melodious songs and engaging performances.

Even in films like *MeraNaam Joker* (1970), which were unconventional and introspective, Kapoor's storytelling talent shone through. Despite initial criticism, the film became a cult classic, highlighting his bold approach to blending experimental cinema with mass entertainment.

Kapoor's films were marked by his charisma, innovative direction, memorable music, and the ability to connect with audiences across cultures, making him a true "Showman" whose influence continues to shape Bollywood today.

Understanding the Relevance of His Legacy :

Raj Kapoor's legacy continues to inspire, offering timeless lessons in storytelling, creativity, and cultural integration. Raj Kapoor's legacy is an enduring force in the world of cinema, offering timeless lessons in storytelling, creativity, and cultural integration. His films not only set the foundation for modern Hindi cinema but also bridged the gap between Indian and global audiences, making him a pioneer in the truest sense. Kapoor's ability to weave together socially relevant narratives with universal themes set him apart as a visionary filmmaker whose influence can still be felt today.

One of the key aspects of Raj Kapoor's legacy is his profound storytelling ability. His films, such as *Awaara* (1951), *Shree 420* (1955), and *MeraNaam Joker* (1970), were more than just entertainment. They were explorations of the human condition, examining themes like social justice, morality, love, and the struggles of the common man. In *Awaara*, the story of a young man torn between a life of crime and redemption resonated with people across the globe, particularly in the USSR, where the film was lauded for its social and ideological depth. This universality was not limited to the plotlines but

extended to his characters, whose emotional journeys were relatable to audiences worldwide.

Creativity was another hallmark of Kapoor's filmmaking. He brought a distinct visual and narrative style to Bollywood, experimenting with lighting, set design, and music. The dream sequence in *Awaara*, for instance, remains one of the most iconic and innovative moments in Hindi cinema. His use of music was revolutionary-songs like "AwaaraHoon" and "JeenaYahan, MarnaYahan" weren't just melodies but emotional anchors that deepened the connection with his audience.

Kapoor also played a pivotal role in cultural integration, using his films to create a cross-cultural dialogue. His films enjoyed significant success outside India, particularly in countries like the USSR, China, and Eastern Europe. In the Soviet Union, his portrayal of the "tramp" character in *Awaara* resonated deeply with the working-class ethos and was seen as a symbol of universal struggle. Kapoor's ability to blend Indian cultural values with universal themes made his films a reflection of both local and global sensibilities.

In essence, Raj Kapoor's legacy is one of blending artistry with humanity, creating films that not only entertained but also educated, inspired, and united people from different walks of life. His films remain relevant today, providing a master class in the power of cinema to reflect, shape, and transcend society. Kapoor's work continues to inspire filmmakers and audiences alike, reminding us that cinema can be a mirror of the world and a bridge to new possibilities.

About the Author

Mr. Vikram Singh, a dedicated research scholar at Maulana Azad University, Jodhpur, currently contributes to the field of Defence. With an academic foundation that includes a Bachelor's degree in Humanities from JNV University, Jodhpur, a Master's in English Literature from IGNOU, Delhi, and a Master's in Political Science from CALORX Teacher's University, his educational journey reflects a commitment to interdisciplinary learning. With 27 years of experience teaching at esteemed Army Institutes and Colleges of Education, he has authored six articles, curated a **Coffee Table Book on the Indian Armoured Corps**, and presented 29 scholarly papers. His diverse interests span Information Technology, psychology, educational psychology, and guidance, enriching academic discourse with his multifaceted insights.

From India to The Hispanic World : The Universal Appeal of Raj Kapoor's Cinema

Rijvan
Assistant Professor,
Spanish, Dept. of Foreign Languages,
Jamia MilliaIslamia, New Delhi
& Ph.D. Research Scholar,
Jawaharlal Nehru University, New Delhi

Abstract :

Raj Kapoor, an iconic figure in Indian cinema, achieved international acclaim for his ability to create compelling sociopolitical narratives that transcended cultural and linguistic barriers. This study investigates the thematic parallels between Kapoor's seminal works, such as *Awaara* (1951) and *Shree 420* (1955), and the social realism prevalent in mid-20th-century Latin American cinema.[1]Kapoor's exploration of themes such as social justice, poverty and the resilience of the human spirit not only reflected the socio-economic realities of post-independence India but also resonated deeply with audiences in the Hispanic world, where cinematic traditions similarly focused on societal inequities and the struggles of marginalized class people. Kapoor's films, much like the Latin American cinematic movement,[2] employed social realism to critique systemic injustices and highlight the challenges of the labour class. His primary characters, often depicted as warriorswith poverty and moral dilemmas, were seen in Latin American films of the era, which portrayed human dignity amidst structural oppression.[3] Moreover, Kapoor's cinematic language, marked by melodramatic storytelling and evocative music, similarto ranchera music in Mexico, enabled his films to engage with universal emotions while reflecting the ideological aspirations of the time. This paper explores Kapoor's creations within a global cinematic context, emphasizing how his narratives echoed the ethos of social realism in Latin America and forged connections between Indian and Latin American cinematic traditions.

Introduction :

Raj Kapoor, often hailed as the 'Charlie Chaplin of India,'[4] is a towering figure in the world of cinema whose influence extended far beyond the borders of his homeland. Known for his ability to blend social realism with compelling melodrama, Kapoor's work captivated not only Indian audiences but also garnered international acclaim, resonating with diverse cultures across the globe. His films, most notably *Awaara* (1951) and *Shree* 420 (1955) are celebrated for their touching socio-political aspects, emotional depth, and universal appeal.[5] These films addressed the plight of the underprivileged, the moral struggles

of individuals and the larger socio-economic systems that shaped their lives, themes that were deeply relevant to global audiences, including those in the Hispanic world. Kapoor's cinematic language transcended cultural and linguistic barriers, making his films accessible to audiences outside of India.[6] While the Indian film industry, particularly Bollywood, was initially seen as a distinct cultural entity, the thematic richness of Kapoor's works made them significant in a global cinematic context. Kapoor's ability to weave narratives that were not only rooted in Indian socio-political realities but also universally human in their appeal allowed his films to strike a chord with audiences worldwide.

His exploration of the human condition, poverty, social justice and morality paralleled similar cinematic movements emerging in Latin America during the 1940s and 1950s, particularly the social realism movement.[7] Social realism, a genre that sought to highlight the socio-political and economic struggles of the working class and the marginalized, was emerging in Latin American cinema at the same time Kapoor's films gained international prominence. The movement's emphasis on portraying the harsh realities of life for the underprivileged found a clear thematic parallel in Kapoor's works, where characters often struggled with issues of poverty, moral dilemmas, and the pursuit of justice.[8] In Latin American countries, filmmakers were equally concerned with exposing the systemic injustices that perpetuated inequality, and Kapoor's exploration of these issues in his films mirrored these concerns. Films such as *Awaara*and *Shree 420* dealt with characters who were often portrayed as struggling against social forces beyond their control, making their stories universally relatable.[9]

Kapoor's Social Realism and Its Global Resonance :

Raj Kapoor's films often depicted protagonists struggling against systemic injustices, a theme common in mid-20th century social realism both in India and Latin America. Social realism in cinema emerged as a response to the harsh realities of industrialization, urbanization and inequality. Kapoor's works, such as *Awaara,* focused on characters who were caught between idealism and the harshness of society, illustrating the moral dilemmas faced by individuals as they navigated poverty and class struggle. This focus on societal inequities mirrored the concerns of Latin American filmmakers, who similarly sought to portray the struggles of the marginalized through the lens of social realism. Latin American cinema during this period, particularly in Mexico and Argentinautilized cinema as a tool for social critique.[10] The works of filmmakers such as Fernando Solanas*(La Hora de losHornos,* 1968) and Glauber Rocha and Emilio Fernandez (La Perla 1947) used cinema to expose the injustices faced by the working class and the poor.[11] These films often depicted characters who were forced to reconcile their personal desires with the constraints imposed by their social environment. Kapoor's *Awaara* follows the story of a man struggling to overcome his criminal past and his moral dilemmas while being a victim of systemic oppression, much like the protagonists in Latin American films who find themselves at odds with society's rigid class structures.

The social commentary in Kapoor's films not only reflects the socio-economic conditions of post-independence India but also resonates with audiences worldwide, including those in Latin America. The

depiction of protagonists grappling with issues such as poverty, corruption and moral conflict established Kapoor as a filmmaker whose work transcended national boundaries. As Indian cinema began to gain traction internationally, particularly in the Soviet Union, Kapoor's films, including *Awaara* and *Shree 420*, were subtitled and screened in various countries, including Latin America. These films' themes of social justice and human resilience were received with enthusiasm, reflecting a shared cultural concern for the marginalized.

Raj Kapoor and Latin American Cinema : Aesthetic and Stylistic Parallels :

Beyond thematic similarities, there are notable aesthetic and stylistic parallels between Kapoor's films and Latin American cinema, particularly in terms of melodrama, musicality and emotional intensity. Kapoor's films often employed melodramatic storytelling, marked by larger-than-life characters and emotional climaxes that appealed to universal emotions. This style of filmmaking found a parallel in Latin American cinema, particularly in the melodramatic tradition of Mexican cinema, which often featured exaggerated emotional expressions and intense narrative arcs.The use of music in Kapoor's films is another important connection to Latin American cinema. Kapoor's collaboration with music director Shankar Jaikishan resulted in some of the most iconic film scores in Indian cinema, with songs like *Awaara Hoon* and *MeraJoota Hai Japani* becoming emblematic of his films.[12] These songs not only captured the emotional essence of the narrative but also connected the characters' personal struggles to the larger social issues at play. Similarly, Latin American films, particularly in Mexico, often utilized music as a key element to enhance the emotional impact of the story.[13] The ranchera music of Mexico, with its emphasis on love, loss, and social injustice, shares thematic similarities with Kapoor's cinematic music, which conveys a deep sense of longing and emotional intensity.[14] The blending of narrative and music in both traditions created a powerful cinematic language that resonated with audiences on an emotional level.

Furthermore, Kapoor's films often portrayed the tension between modernity and tradition, a theme that also resonated with Latin American filmmakers grappling with similar issues of modernization and cultural preservation. In films like *Shree 420*, Kapoor's portrayal of a young man's journey from innocence to moral compromise in a rapidly changing world parallels the struggles of characters in Latin American films who were caught between the old ways of rural life and the new demands of urbanization and industrialization.

Raj Kapoor's Works Influence on Hispanic Audiences :

Raj Kapoor's films not only influenced Indian audiences but also found an appreciative audience in Latin America.[15] *Awaara* (1951), one of Kapoor's most successful films, was particularly popular in the Soviet Union, where it became a cultural touchstone. The film's portrayal of the 'common man' and its socialist undertones found resonance in countries with strong socialist ideologies. Kapoor's universal themes of justice, love, and social morality resonated with a broad audience, transcending linguistic and cultural barriers.While Kapoor's films were not widely dubbed into Spanish, they

were subtitled and screened at international film festivals and in cultural centres across Latin America. In the 1950s and 1960s, Indian cinema began to establish a presence in global film festivals,[16] and Kapoor's films were included in retrospectives and special screenings. These screenings allowed Latin American audiences to engage with Indian cinema and explore the shared themes of social realism and human dignity.[17]

In countries such as Mexico, *Awaara* became a cultural reference point, with its songs and themes influencing local artists and filmmakers. The film's portrayal of a character struggling to reconcile personal ideals with societal pressures mirrored the concerns of Mexican cinema during the mid-20th century, which was heavily influenced by social realism and the depiction of the working class. Kapoor's films, with their focus on the moral struggle of the individual within a larger social framework, resonated with the Latin American cinematic tradition's interest in the depiction of marginalized characters.

Conclusion :

Raj Kapoor's films are often celebrated for their deep engagement with social realism, emotional depth, and musical grandeur, which resonated with a global audience, including those in the Hispanic world. Kapoor's exploration of themes like poverty, social justice, and the resilience of the human spirit allowed his films to transcend linguistic and cultural barriers, striking a universal chord. His cinematic style, characterized by melodrama and vibrant music, created a compelling narrative that spoke to the common struggles of marginalized communities, a theme that aligned with the social consciousness found in Latin American cinema. Much like Latin American filmmakers who focused on social inequities, Kapoor's work addressed the plight of the poor and the disenfranchised. His characters often embodied a sense of resistance and hope, facing systemic oppression with dignity and resilience, themes familiar to audiences in Latin America, who could relate to similar social and political struggles. This thematic resonance made Kapoor's films particularly impactful in the Hispanic world, where issues of class disparity and the search for justice were central to many films. Kapoor's films, such as *Awaara* and *Shree 420*, presented a narrative style that mixed melodrama with music, a feature that appealed to diverse audiences and made his films accessible across cultural divides. His portrayal of common people, often struggling against overwhelming odds, resonated deeply with viewers from various backgrounds, creating a shared emotional space. The influence of Raj Kapoor's films in the Hispanic world is a testament to the power of cinema as a universal language. His films not only entertained but also sparked dialogue on issues of social justice, making them relevant to global audiences. Kapoor's legacy is enduring, as his work continues to be admired and studied within the broader history of world cinema, reflecting the universal nature of his artistic vision.

Bibliography :

1. Barnouw, E., & Krishnaswamy, S. (1980*). *Indian film*. Oxford University Press.
2. Bhatia, S. *From Socialism to Disco Dance: How Bollywood Made Its Mark in Russia*, Central Asia. The Wire, 2016. https://thewire.in/5620/from-socialism-to-disco-dance-how-bollywood-made-its-mark-in-russia-central-asia/. Accessed 5 Dec.2024

3. Chatterjee, S. (1992). *Raj Kapoor's Awaara: The genius of the showman*. Vikas Publishing House.
4. Chaudhuri, S. (2005). *Bollywood: An insider's guide*. BFI Publishing.
5. Desai, J. (2004). *Beyond Bollywood: The cultural politics of South Asian diasporic film*. Routledge.
6. Dissanayake, W., &Guneratne, A. (Eds.). (2003). *Rethinking Third Cinema*. Routledge.
7. Ganti, T. (2012). *Producing Bollywood: Inside the contemporary Hindi film industry*. Duke University Press.
8. Harlan, L. (2003). *The God of small things and the question of the "Indian-ness" of Indian cinema*. Journal of Asian Studies, 62(3), pp.821-839.
9. Jha, R. (2009). *The Bollywood aesthetic: Melodrama and music in Indian cinema*. Oxford University Press.
10. Mishra, V. (2002). *Bollywood cinema: Temples of desire*. Routledge.
11. Pendakur, M. (2003). *Indian popular cinema: Industry, ideology, and consciousness*. Hampton Press.
12. Prasad, M. (1998). *Ideology of the Hindi film: A historical construction*. Oxford University Press.
13. Rajadhyaksha, A., &Willemen, P. (1999). *Encyclopaedia of Indian cinema* (2nd ed.). British Film Institute.
14. Sáenz, A. G. (2000). *Mexican cinema: Reflections of a society, 1896–2000*. Scarecrow Press.
15. Sapra, Rahul. Modernism and Film in South Asia: An Indian Perspective. *The Modernist World*, edited by Stephen Ross and Allana C. Lindgren, 1st ed., Routledge, 2015, pp. 8. *The Modernist World*, eBook, ISBN 9781315778334. Accessed 5 Dec.2024
16. Shohat, E., & Stam, R. (1994). *Unthinking Eurocentrism: Multiculturalism and the media*. Routledge.
17. Vasudevan, R. S. (2000). *The melodramatic public: Film form and spectatorship in Indian cinema*. Permanent Black.

Unveiling Patriarchy : The Films of Raj Kapoor

Nutan Verma
Assistant Professor of English
Dr. NSAM First Grade College, Bengaluru, India.

Introduction :

Raj Kapoor, the greatest showman of Indian Cinema, has left a deep mark on the entertainment industry worldwide He acted in more than 70 films, many of which he directed and produced. His movies not only entertained the viewers but also enlightened the masses on various issues, like social injustice, class segregation, political corruption, religious hypocrisy and gender discrimination. His films delved into the social, political and religious arena of that era. He had been levelled with charges of serving male gaze and voyeurism in his films, especially *Mera Naam Joker* (1970), *Satyam Shivam Sundaram* (1978), and *Ram Teri Ganga Maili* (1985). These films were severely criticized for the portrayal of sensuous and sexually arousing scenes along with the popularity and adulation from the other segment of the society. As Rakesh Bava argues, "[H]is Cinema boasts of strong characterization of women but certain allegation of depiction of voyeurism has been there on Raj Kapoor" (5297) . In the 70s and 80s, when the portrayal of women's sexuality was fiercely denounced, Raj Kapoor took the risk and presented it aesthetically. He presented his heroines with grace and ethereal beauty. His heroines were bold, rebellious and strong-minded. He criticised the phallocentric attitude of society, albeit maintaining the Indian culture and traditions. His films are an amalgamation of innovation and convention. Raj Kapoor's movies empowered women by unveiling the exploitative and hypocritical facade of the patriarchal society. This paper intends to analyse Raj Kapoor's *Ram Teri Ganga Maili* (1985) and *Prem Rog* (1982) through a feminist lens, exploring how these films both challenge and reinforce patriarchal norms, particularly in their portrayal of female characters and their experiences of sexual exploitation, widowhood, and societal oppression.

Keywords : Ram Teri Ganga Maili, Sexual Exploitation, Patriarchy, Prem Rog, Widowhood, Prostitution, Phallocracy and Societal Oppression.

***The film, Prem Rog* (1982),** delineates the feudal society of contemporary India which was gripped by social injustice, bigotry and patriarchy. The film highlights the exploitation and oppression of women in the then-Indian society. There is a momentous scene in the film where a young widow is wooed by a man. As the

girl's father, Maito sees them together, he castigates his daughter and drags her on the floor by saying " *…suar ki bachi…. widhwa hoke gulchharre uda rahi hai…"* (you piglet, romancing despite being a widow). At this Bade Raja Saheb (Shammi Kapoor) intervenes and looks into the matter. However, Chhote Raja Saheb, Vir Singh, begin to thrash the boy severely for accepting his love for a widow. Nonetheless, Bade Raja Saheb (Shammi Kapoor) not only stops him but also asks Maito to marry her to the boy she likes. This scene sets the tone of the film and further Raj Kapoor highlights various other issues related to female exploitation and patriarchy in society through the lead female character Manorama (Padmini Kohlapure), Radha (Kiran Virale) her friend and her mother Chhoti Maa (Nanda).

Manorama is the daughter of Chhote Raja, Vir Singh (Kulbhushan Kharbanda), a Thakur who belongs to the upper class. Vir Singh is the living embodiment of male chauvinism and phallocracy. He indulges in sexual relationships with any woman he eyes on instead of being married to a devoted and lovely wife. His wife, though aware of his misdoings never complains and accepts everything as part of a patriarchal society. However, she turns bold and rebellious when witnesses her daughter's suffering and trauma after the death of her husband.

Manorama is a chirpy, headstrong, impulsive and naïve character who does not understand the ways of the world. Unlike her father and Badi Maa (Sushma Seth), she treats everyone equally. Her friend Radha, daughter of a poor priest, often gets chided by Manorama's Badi Maa (Sushma Seth) as she disapproves of this friendship between a destitute and an opulent. However, Manorama treats her with respect and dignity and condemns Badi Maa's behaviour.

As the story progresses, Radha is married to a widower who is ten years older. Radha is a pretty young girl who accepts this marriage as her destiny as a destitute. This marriage highlights the hypocrisy of the patriarchy by showing a contrast between the opinions of people on the remarriage of a widow (Maito's daughter) and a widower (Radha's husband). Radha's marriage with a widower gets approved of easily, whereas Maito's daughter, a widow, gets condemned and thrashed by her father and Vir Singh.

Manorama, the lead female character of the movie, marries Narendra Pratap Singh (Vijeyndra Ghatge) as per the norms of the family and society. She loses her husband right after the first day of her marriage. Manorama becomes a widow and is treated inhumanly by her own family as per the ways of the world. She is forced to shave her head by the elderly ladies of the family. Manorama is shattered and unable to utter a single word, meanwhile, her co-sister (Tanuja) arrives and takes her back to her own house. Manorama, when found lonely, eventually gets raped by her brother-in-law, Virender Pratap (Raja Murad), who assaults a helpless widow to satisfy his phallocratic desires. Manorama is completely devastated after this brutish incident. Emotionally distraught Manorama returns to her maternal home, however, the ruthless treatment of her family and society makes her condition worse. She is deprived of any sort of luxury or even a normal life. She is forced to live in a small room, made to sleep on a mat on the floor, eat scantily, and walk barefoot. Through this Raj Kapoor highlighted the plight of widows

and the merciless attitude of the people in Indian society.

Raj Kapoor empowers Manorama through the character of Devdhar (Rishi Kapoor). Devdhar is Radha's cousin who studies in the city at the expense of the Thakurs. Devdhar loved Manorama, but he did not meddle with her life after her marriage to Narendra Pratap. Moreover, he promptly returns to the village and tries to pull her back from the depth of despair she is suffering from. He expresses his wish to marry Manorama, which was a daring step in the conservative Indian society of that era. Although, Manorama's father and Bade Raja Saheb severely condemn the audacity of Devdhar, in expressing his will to marry a Thakur girl (Manorama), who is also a widow. Vir Singh thrashes Devdhar and attempts to murder him. However, Bade Raja saves Devdhar and allows both Devdhar and Manorma to marry each other. Thus, Raj Kapoor's Prem Rog not only unveils the heinous reality of patriarchal society but also shares new perspectives and progressive ideas in this film.

Ram Teri Ganga Maili **(1985),** another controversial romantic drama film from the cornucopia of Raj Kapoor, portrays the rampant evils of prostitution, corruption, capitalism and patriarchal hypocrisy in the then-Indian society. This movie also represents a fusion of spiritual and worldly desires. It brings out religious elements into the film by drawing a parallel between the river, Ganga and the heroine, Ganga (Mandakini). She is presented as an embodiment of seemliness, sensuality and strength, the traits every woman possesses. Ganga, an innocent and chaste girl, lives in Gangotri in the Himalayan mountains, the origin of the river, Ganga. Naren (Rajiv Kapoor) the son of an industrialist, Jeeva Sahay (Kulbhushan Kharbanda), comes to visit Gangotri to find tranquility and peace in the lap of nature. Here Naren meets Ganga, who saves his life and also accompanies him on his excursion to Gangotri. Eventually, they fall in love and on the day of *Poornima* (the full moon day), as per the traditions of *Pahadi* culture (mountainous culture), a *Sawayamvar* (a ceremony where a bride chooses her husband from a group of suitors) is organised in which she places a garland around Naren's neck and chooses him to be her husband. In his research article, Dr Abhishek Tivari emphasises, "Choosing a life partner in a public ceremony by Ganga reflects the empowered status of women of the then times" (325).

Ganga and Naren, eventually solemnise their marriage in a temple and Ganga's brother who had promised Mangaroo to be Ganga's groom gets murdered in a fight between the two. Right after their marriage, Naren leaves for Calcutta promising Ganga that he will return soon to take her along with him after talking to his family. On reaching Calcutta (now Kolkata), Naren shares everything with his grandmother (Sushma Seth), who suffers a heart attack on listening to this but expresses her will to make Ganga her daughter-in-law as she gains consciousness. Grandmother is portrayed as a strong-willed, wise and self-reliant woman, capable of making her own decisions. Immediately after this, she passes away and Naren is held responsible for her death and forced to marry Radha (Divya Rana) daughter of Bhagwat Chaudhary (Raja Murad), a corrupt and crooked politician. Naren, though tries to escape from this marriage,

is confiscated by the corps on the orders of Bhagwat Chaudhary.

There in Gangotri, Radha realises that she has been impregnated and delivers her baby. Until then, Radha does not receive any news from Naren. Henceforth, She leaves for Calcutta in search of Naren. Radha does not wish to give up her rights as a wife and a mother of Naren's child. However, on her way to Calcutta, she meets misfortune repeatedly. Different folks try to manipulate and exploit Radha. Despite defying all odds, she ends up in a brothel and being sold to Bhagwat Chaudhary. Bhagwat Chaudhary proposes to share Ganga with Jiva Sahay as he says, "*…yun hi khareed kar nahi le aaya ise , dono mil baant kar khayenge..... ye to ghar ki ganga hai jab ji chahega dubki maarlenge…*" (I didn't just buy this for myself; we'll share and eat it together. This is like the Ganges at home; we can dive in whenever we feel like it); this reveals the vicious and despotic norms of the patriarchal society in which a woman is just termed as mere a source of physical gratification. At the same time it also throws light on the hypocrisy of the Phallocratic world, where a woman from the lower class can be a mistress but not a wife as Bhagwat Chaudhary and Jiva Sahay staunchly disapproved of Ganga and Naren's marriage. However, Raj Kapoor, being a visionary, does not let his heroine succumb to adversity and displays the resilient and indomitable character of Ganga. Her words change the heart of Manilal (Krishan Dhawan), who took her to the brothel and later helps her to meet Naren through Naren's Mausa, Kunj Bihari (Saeed Jaffrey). As Naren sees Ganga and his son, he immediately accepts them even after knowing the truth of Ganga being a courtesan. Though Bhagwat shoots Ganga, Nevertheless, she survives and Naren leaves with her.

Conclusion :

Though Raj Kapoor has been constantly blamed for objectifying women for the male gaze in his films, his contribution in empowering women through his bold, defiant and resilient heroines cannot be neglected. The above analysis of the films, *Prem Rog* and *Ram Teri Ganga Maili* proves that he raised awareness on social evils like prostitution, widow remarriage, social injustice, class segregation and gender discrimination. He also unveiled the oppression and exploitation of women folks through highlighting the patriarchal norms of society. Acording to Rakesh Bava, commenting on the theme of *Prem Rog*, Raj Kapoor has said:

In today's society we say one thing and practice another. I wanted to unmask the double standards and hypocrisy of those who lay down the social norms. I'm talking about the decadence of rituals, customs and traditions which have no relevance in our lives now. Norms that permit a widower to marry within four months of his wife's death, whereas in the name of tradition , a young girl's mind is conditioned to accept the life of an outcast even though she is a widow for no fault of his own. It is a pity that in an age when there is so much scientific advancement we have to tackle subjects like this, but it is still a gory reality in our society. See how many rapes and dowry deaths we have. (Bava 5304)

Hence, he presented a new perspective by the widow remarriage of Manorama and the reunion of Ganga and Narena even after she being a courtesan. Raj Kapoor,

as a visionary, illuminated various societal issues and introduced innovative ideas for social reform.

References :

1. *Ram Teri Ganga Maili* . Directed by Raj Kapoor, R.K. Banners, 1985. https://www.youtube.com/watch?v=2x6rXfEayUg&t=7680s
2. *Prem Rog*. Directed by Raj Kapoor, R.K. Banner, 1982. https://www.youtube.com/watch?v=t2NPDCQdfFY&t=751s
3. Mohan, Aditya Wig. "From the India Today Archives (1977) | Raj Kapoor: Of Sex as an Art Form." India Today, 13 Dec 2023, reprint of the article originally published on 15 Nov 1977. https://www.indiatoday.in/india-today-insight/story/from-the-india-today-archives-1977-raj-kapoor-of-sex-as-an-art-form-2475609-2023-12-13
4. Bawa, Rakesh. "Portrayal of Women in the Cinema of Raj Kapoor: A Case Study of Satyam Shivam Sundaram, Prem Rog and Ram Teri Ganga Maili."International Journal of Research, vol. 05, no. 12, April 2018. https://journals.pen2print.org/index.php/ijr/
5. Tiwari, Abhishek. "Blowing the Trumpet of Feminism: Raj Kapoor's Ram Teri Ganga Maili (1985)." International Journal of Humanities and Social Science Invention, vol. 4, no. 10, Oct. 2016. https://ijellh.com/index.php/OJS/article/view/1689

Negotiating Gendered Spaces : Feminist Readings of Agency and Sacrifice in Raj Kapoor's Select Cinema

Sweta Kumari
Ph.D. Scholar, Dept of English & Research Centre
Magadh University, Bodh-Gaya, Bihar

Abstract :

This study focuses on the feminist representation of women characters in Raj Kapoor's select films in terms of negotiating gendered spaces within his cinematic narratives. The paper critically examines the dualities of sacrifice and agency shaping women's role through a close examination of their characters from Kapoor's movies, including Leela in Awaara and Roopa in Satyam Shivam Sundaram and Vidya in Shree 420. By applying feminist theories of gender and power, the study investigates how Kapoor's women navigate societal constraints and expectations, interrogating traditional norms of femininity and the binary of self-sacrifice versus empowerment. Through a feminist reading of selected narratives, the paper brings into light how Kapoor both reinforces and subverts conventional and stereotyped gender roles. Besides, it offers insight into the evolving women's portrayal in post-independence Indian cinema. Thus, the study engages with feminist theoretical frameworks in order to interrogate the representation of women autonomy, vulnerability, and resistance within the patriarchal domain of Raj Kapoor's cinema, and it also adds to the understanding of gender dynamics in early Hindi cinema.

Key-words :

Gendered space; power dynamics; women autonomy; agency; vulnerability; sacrifice; resistance; patriarchal domain.

Introduction :

Raj Kapoor is an iconic personality in the glorious history of Indian cinema. He is renowned for his remarkable depiction of complex human emotions, societal struggles, and cultural and human values. His direction and acting contributions in the cinematic Industry, particularly in his film *Awaara* (1951), *Shree 420* (1955), and *Mera Naam Joker (1970),* have left an indelible mark on the landscape of Indian cinema. Raj Kapoor's film often represents the socio-political ethos of post-independence India, reflecting upon the

issues of class, morality as well as women's evolving role and position in society. Kapoor's films are significant not only for the remarkable portrayal of male protagonists confronting socio-economic challenges of the time, but also for featuring potential women characters whose life and experiences are influenced by societal gender roles. The study mainly touches upon Kapoor's women's portrayal, emphasising their navigation through gendered space in terms of both literal and metaphorical. Besides, Raj Kapoor's film is an in-depth exploration of human emotions, societal norms, and spiritual truths, highlighting struggles with love, freedom, and identity. This is obvious from the book titled *Raj Kapoor: The One And Only Showman* (2017) presented by his daughter Ritu Nanda:

> The young man trying to negotiate his free will with reality and truth in *Aag*, *Aah*, *Awara*, *Shree 420*. The value of human relationships in *Barsaat*, *Jis Desh Mein Ganga Behti Hai* and *Sangam*. The supremacy of spiritual being over a perceptual life in *Satyam Shivam Sundaram*. The vanity of customs and rituals in Prem Rog and his most enduring work, the futility of confining love in Mera Naam Joker (Nanda, 3).

Gendered space in cinema implies the physical and social milieu wherein women characters operate, constrained and empowered by societal norms and structure. In Raj Kapoor's film narratives, women often find themselves in spaces reflecting both the restrictive gender roles of the time and the possibility for subverting these roles. Kapoor's cinematic world provides a lens through which women's agency, sacrifice, and the changing dynamics of gender relations can be explored. Nevertheless, Kapoor's films offer a rich repository for investigating these gendered conflicts. It also provides an opportunity to critically evaluate how women characters, who are sometimes represented as sacrificial figures, also assert their autonomy in ways that reflect the evolving consciousness around women's roles in postcolonial India. Molly Haskell, too, defines the ideology of women's film and fiction in her ground breaking work *From Reverence to Rape: Treatment of Women in Movies* (1974) that how it focuses on women's suffering and masochism:

> The concept of a "woman's film" and "women's fiction" as a separate category of art (and/or kitsch), implying a generically shared world of misery and masochism the individual work is designed to indulge, does not exist in Europe. There, affairs of the heart are of importance to both men and women and are the stuff of literature (Haskell, 153).

The notion of duality in Kapoor's film regarding women's portrayal is a significant discourse on gender dynamics in cinematic narratives. Hereto, it adds to illustrate the ways in which mainstream Bollywood film both upholds and critiques gendered norms. The subject of agency and sacrifice are imperative to feminist theory, especially in terms of evaluating women's role in cinema. On the one hand, 'agency' implies the capacity for individuals, particularly in women's case, when they are to make choices and assert control over their own lives. On the other hand, 'sacrifice' often refers to the subjugation of personal desires, needs, and ambitions in service of others, prominently for the sake of family or the greater good. In this regard, Rajasekaran, too, states; "A woman has to confine herself within the parameters set forth by

religious, social, or cultural codes" (Rajasekaran, 5). In the context of feminist theory, the conflicts between agency and sacrifice emphasises the space wherein women are expected to negotiate their autonomy within the patriarchal domain.

Case Studies in Raj Kapoor's Select Cinema :

Case Study 1 : *Awaara* (1951) :

Nargis as Leela: Struggle, Sacrifice, and Agency in Awaara (1951) - The film *Awaara* (1951) known as *Vagabond* worldwide is an Indian crime drama film. Directed and produced by Raj Kapoor, and written by Khwaja Ahmad Abbas, the film stars Raj Kapoor, Nargis, Leela Chitnis and K. N. Singh. Nargis as Leela, a character entangled between her duty and desire, morality and love. Leela's character is an embodiment of the moral and emotional struggles faced by women in post-independence India. Raised and embedded with strong moral values, she is the daughter of a strict father. Leela's love for Raj symbolises the conflict between individual desire and societal norms. As Raj comes from a lower socio-economic background having a troubled past. As an epitome of sacrifice, Leela's love for Raj is continually thwarted by her moral duty as she chooses to maintain the honour of her family, rather than to pursue her personal space and happiness. However, Leela's sacrifice is not entirely passive. Despite Leela falling victim to circumstance, trapped by familial expectations, she retains emotional autonomy and moral conviction, which manifests empowerment even in her passivity. In this respect, Kamla Bhasin too, opines regarding the patriarchal values that raise both men and women differently:

> The institution of the family, that basic unit of society, is probably the most patriarchal. A man is considered the head of the household; within the family he controls women's sexuality, labour or production, reproduction and mobility. There is a hierarchy in which man is superior and dominant, woman is inferior and subordinate. The family is also important for socialising the next generation in patriarchal values. It is within the family that we learn the first lessons in hierarchy, subordination, discrimination. Boys learn to assert and dominate, girls to submit, to expect unequal treatment. Again, although the extent and nature of male control may differ in different families, it is never absent (Bhasin, 10).

Moreover, her resistance towards Raj's advances and her decision to remain morally resolute reflects Leela's autonomy. This denotes the tension between traditional femininity-marked by sacrifice-and the autonomy Leela retains, adhering to moral principles. Thus, her role can be accessed in terms of exercising both victimhood and empowerment, whereas Leela is derived from moral resilience rather than overt rebellion against patriarchal values**.**

Case Study 2: *Satyam Shivam Sundaram* (1978) :

Zeenat Aman as Roopa: Beauty, Virtue, and Sexuality in Satyam Shivam Sundaram (1978)- *Satyam Shivam Sundaram* (*The Truth, the God, the Beauty*) is an Indian Hindi-language romantic drama that came out in the year 1978. Directed and produced by Raj Kapoor, the film stars Shashi Kapoor and Zeenat Aman. Written by Jainendra Jain, the film sets a social drama focusing on the differences between physical and spiritual love. Zeenat Aman, starring as

Roopa is central to the critique of the film with regard to the societal norms of beauty and virtue. Initially, Roopa is introduced as a woman with a disfigured face, embodying both the traditional and subversive aspects of femininity. Her physical beauty is highlighted throughout the film, but her narrative subverts traditional beauty standards. Sue Clayton and Laura Mulvey's *Other Cinema: Politics, Culture and Experimental Film in the 1970* (2021), critiques the detachment of women's reality when their representations are objectified in popular culture. Further, they state:

> Obviously, the question of representation arose very directly for the women's liberation movement. Campaigns against the social exploitation of women's bodies led directly to campaigns against the erotic oppression of women's bodies in image across popular culture and the history of art and feminists began to use ideas taken from semiotics and psychoanalysis to detach (semiotically) signifier from signified and thus detach (psychoanalytically) actual women from patriarchal fantasy invested in the image (Clayton and Mulvey, 4).

In *Satyam Shivam Sundaram,* the complex portrayal of her character showcases that her value is not solely determined by her physical appearance. Hence, Roopa's journey asserts her desire to be loved the way she is, beyond societal judgments of her body. Later on, her physical transformation takes place as she becomes "beautiful" after her surgery. In this regard, the film critiques how beauty, dictated by society, is adhered to morality. Roopa's sexual autonomy is evident in her relationship with Raghunath, played by Shashi Kapoor. As she refuses to be tied to the idealised notion of the submissiveness and pure woman. Instead, she embraces her sexuality, advocating her autonomy in a society that regards women for their physical purity and chastity. Roopa's assertion of self subverts the traditional role of the virtuous woman by reclaiming her sexuality as a source of power.

The film interrogates the normative understanding of women's bodies, which suggests that beauty and virtue are not inherently connected. Moreover, Roopa's narrative showcases a complex representation of femininity, where sexual autonomy is neither an illustration of immorality nor an act of submissiveness to patriarchal expectations. Hereto, the film *Satyam Shivam Sundaram* (1978) is critique to the social and cultural constructs in the context of women's bodies and their sexual autonomy.

Case Study 3: *Shree 420* (1955) :

Nargis as Vidya: Virtue, Sacrifice, and Moral Authority in Shree 420 (1955)- Nargis in the role of Vidya is an epitome of traditional virtue and sacrifice. Vidya's journey throughout the film is largely sacrificial-she gives up her personal space and happiness for the male protagonist, Raj's moral and emotional upliftment. Vidya's story revolves around her ability to redeem Raj, who is initially led astray by materialism and vice. Through her purity and virtuousness, Vidya offers the moral compass that brings Raj back to a righteous path. Vidya's complex virtuous role somewhat complicates the narrative as she actively influences Raj's choices. Nevertheless, her actions are grounded in moral submissiveness to the ideology that a woman's worth lies in her selflessness.

Hence, the film presents Vidya as a morally conscientious individual, but her autonomy is confined through her adherence to the norms of sacrificial femininity. Though Vidya is an embodiment of a woman's autonomy, power and resilience, framing the narrative through her moral persuasion, yet her role and position is still determined through her subordination to Raj's emotional and ideological progression. While Vidya doesn't revolt against the patriarchal set-up. However, her role is her silent power. She doesn't overtly question gender roles, but her sacrificial love and moral integrity offers the framework for Raj's redemption. Thus, the film emphasises women's strength in shaping societal and familial outcomes. The interplay of autonomy and submission in Vidya's character reflects how sacrifice can be both a form of submission to patriarchal expectations and, at the same time, a potent force for moral and emotional empowerment.

While conducting the case studies of these three, it becomes evident that Raj Kapoor's cinematic narratives explore the complex, multifaceted women's roles within the socio-cultural context of post-independence India. Women characters including Leela, Roopa, and Vidya navigate gendered spaces and negotiate the tension between agency and sacrifice in multifarious ways. Kapoor's portrayal of female characters often tie them in traditional roles of sacrifice and submission, yet these women question these roles, denoting their autonomy within the confines of societal expectations. Through a close examination of these films, Kapoor's cinema represents women as both victims and empowered figures, showcasing the broader struggles and transformations in Indian society during a period of significant change.

Theoretical Implications: Feminist Film Theory and Kapoor's Cinema :

Feminist film theory offers a critical lens for evaluating the representation of gender, identity and power in cinema. *The Oxford Concise Dictionary of Politics* defines Feminism: "...a way of looking at the world, which women occupy from the perspective of women. It has central focus on the concept of patriarchy, which can be described as a system of male authority, which oppresses women through its social, political and economic institutions (*The Concise Oxford Dictionary of Politics*, 260). The eminent feminist film scholars are Laura Mulvey, Judith Butler, bell hooks and many others. Laura Mulvey's seminal essay titled "Visual Pleasure and Narrative Cinema" (1975) mainly introduced the notion of the 'male gaze', which discourses that mainstream film often objectifies women, positioning them as passive objects of male desire, strengthening patriarchal structures. Mulvey suggests that this gaze is constructed through camera angles, character roles and narrative focus that privilege male experience and subjectivity. Jasbir Jain and Sudha Rai too, in *Film and Feminism: Essays in Indian Cinema,* argues:

> For feminism itself, the written text and social activism are no longer enough in themselves. It needs to interact with all forms of media-newspaper, journalism, theatre and film. One can no longer afford to turn away from these medium, as they appropriate a much larger space in our lives than they did in the past (Jain and Rai, 2).

Kapoor's cinematic narrative offers a fertile ground for feminist theoretical dis-

courses, particularly when it is analysed through the lens of feminist film theory. Laura Mulvey, Judith Butler, bell hooks and others provide significant lenses for understanding women's portrayal in cinema and the gendered power dynamics that underlie these portrayals. Kapoor's cinema align with certain ideologies of feminist discourses while challenging traditional feminist readings.

Moreover, Mulvey's notion of the "male gaze" applies to Kapoor's cinema, particularly with regard to his frequent depiction of women as objects of desire for the male protagonist. Nevertheless, Kapoor's films do not minimise women to be mere passive objects, rather they are emotionally and morally strong. This denotes a challenge to Mulvey's theory, wherein Kapoor's women are not simply passive objects for the male gaze, but active participants in framing the narrative.

Judith Butler's theory of 'performativity', as outlined in her groundbreaking work *Gender Trouble* (1990), challenges and interrogates the ideology of 'fixed gender identities'. She emphasises that gender is socially constructed through repeated performances. Hence, Butler's work is instrumental in understanding how gender roles are not innate but enacted through behavior, speech, and expression. In the context of Kapoor's cinema, women characters can be seen as performing or subverting these gendered roles, negotiating the boundaries of femininity that are prescribed to them by society. Judith Butler's theory of 'gender performativity' is relevant in perceiving how Kapoor's female characters including Leela, Roopa, and Vidya are screened within the societal sphere, yet they perform their gender roles beyond passive subjects. Their sacrifices and acts of agency critiques the restrictive norms of femininity. It suggests that women can negotiate and reassert their position within the constraints of their social environment.

Bell hooks, in her works including *Cultural Criticism and Transformation* (1997) and *Feminist Theory: From Margin to Center* (1984) discourse on how class, gender and race intersect, influencing both representation and lived experience. bell hooks critiques the ways in which popular culture, including cinema, often marginalises women, particularly women of colour. While, it also highlights the possibility for subversion and empowerment within cultural texts. In this context, Kapoor's films manifest the negotiation of traditional gender roles, as several of his female characters interrogate societal expectations through their agency and sacrifice. Thus, the feminist film theoretical framework allows for an interrogation wherein Kapoor's films both reinforce and critique traditional gender norms. They particularly relate to the portrayal of female characters navigating spaces that limit or allow their autonomy.

Discussion and Analysis :

Raj Kapoor's cinema often embodies the contradictions inherent in women character's portrayal, simultaneously presenting them as powerful agents and self-sacrificial figures. His female protagonists generally find themselves in complicated terrain wherein their personal desires, societal pressures, and moral imperatives collide. This juxtaposition highlights the broader conflicts in post-independence India, wherein women's roles were evolving, but they were still bound by traditional expectations. In this

context, E. Ann. Kaplan in *Feminism and Film*, (2000), opines on the term 'feminist':

> The word 'feminist' implies a particular stance vis-à-vis women: it implies a concern with gender difference in general, but taking up the perspective of women specifically. It implies identification with women's concerns, even if, logically, such concerns cannot be dealt with without also considering men (Kaplan, 1).

Apart from it, in *Awaara* (1951), Leela is portrayed as both a victim of societal constraints and a figure of moral autonomy. Her sacrifice, in choosing to remain obedient to her father's values and wishes and rejecting Raj despite her love for him, epitomises the ideals of selflessness associated with womanhood. Leela's strength comes not from overt rebellion, but from her strong sense of duty and self-control. Similarly, in *Satyam Shivam Sundaram* (1978), Roopa's sexual autonomy is formed as both an act of subversion and submission. Roopa questions traditional beauty standards, embracing her sexuality in a society that condemns it. Yet, through her journey of relationship with Raghunath, Roopa ultimately seeks acceptance and love. Thus, Roopa's empowerment through sexual autonomy is undercut by the emotional and societal pressures she faces. It reflects how gendered spaces often confines women's autonomy. Likewise, in *Shree 420* (1955), Vidya is an epitome of sacrifice. Her virtue and moral integrity serve to redeem Raj. While Vidya's roles and actions tend to align with the traditional expectation from women as self-sacrificial figures. Her ability to guide Raj toward redemption reflects a form of moral power. This power, however, is rarely acknowledged as an autonomy in the traditional sense. Sue Thornham in *Feminist Film Theory in Practice: A Reader (*1999), too, makes a remarkable observation of how women may break their shackles being in a position of power:

> Its stereotypes are the product of unconscious assumptions too deep-rooted to be changed simply by having more women in positions of power within the film industry, yet the 'vicious circle' of its cultural effects can be broken by a combination of rational persuasion and stereotype-correction. The way forward is for film to embrace 'a wider variety of roles' for women, but Smith recognises uneasily that for this to occur, a completely new mode of thinking will be needed. (Thornham, 10)

Vidya's impact is exercised within the confines of her "virtue" and her submission to the social order. Her moral strength lies in her submission, which again denotes the contradictory nature of her personality. These contradictions, be it empowerment and sacrifice or agency and submission- are a hallmark of Kapoor's women characters. His cinema often posits women in a space wherein they are capable of balancing societal expectations with personal autonomy. It also reflects the complexities of gender roles in post-independence India. While Kapoor's films do not only offer overt feminist depictions, rather they present women who subvert the traditional roles through their moral choices and emotional strength.

Impact on Audience and Cinema :

Kapoor's representation of women resonates profoundly with audiences of his time, as his cinema reflects the socio-cultural values and challenges confronted by post-independence Indian society. India has been in a process of modernization while still coping up with entrenched

traditionalism during the later part of 19th century. In this regard, Kapoor's films represent female characters, mirroring these contradictions and simultaneously embodying the chastity of tradition and the significance of modern autonomy. Films including *Awaara* (1951) and *Shree 420* (1955) explores the idealization of women as moral beacons in a rapidly changing realm. In this way, it strengthens the cultural trope of the self-sacrificial women upholding the family and societal order. Nevertheless, the emotional complexity and autonomy demonstrated by Kapoor's women characters opens a space for audiences to identify and realise that women could be more than passive agents. Since traditional gender roles have dominance, Kapoor's cinema subtly encourages audiences to interrogate the narrow confines of womanhood. Similarly, In *Satyam Shivam Sundaram* (1978), the depiction of Roopa's sexuality and self-assertion in the face of societal denunciation is revolutionary, particularly in respect of the conservative social mores of the time. Moreover, the film is also an exploration of body politics and female sexuality. Though, the film breaks the taboos despite being restrained, and it invites viewers to rethink women's sexual autonomy as an imperative part of their identity. Hence, Kapoor's film is evident to groundwork for later feminist discourses of Indian cinema, allowing for more progressive representation of women, even if they continue to reflect the societal contradictions of the time.

Conclusion :

To conclude, the study explores negotiation of gendered spaces, sacrifice and agency through reading of Raj Kapoor's selected cinema. Through a close analysis of selected films including *Awaara* (1951), *Satyam Shivam Sundaram* (1978), and *Shree 420* (1955), Kapoor's women protagonists navigate through societal expectations, familial roles, and personal autonomy. They are often placed within the realm of self-sacrifice. However, they exercise autonomy through moral strength and emotional resilience, subverting societal expectations. These portrayals bring into light the contradictions within Kapoor's film narrative, wherein women are represented as both an agent of change and as sacrificial entities embodying idealised femininity. In *Awaara,* Leela's moral struggle and emotional integrity depict her autonomy within the constraints of duty. In *Satyam Shivam Sundaram*, Roopa's reclamation of her sexuality questions the conventional beauty standards that led to the critique regarding societal views on women's bodies. Likewise, Vidya in *Shree 420* mirrors as the virtuous woman whose impact on the male protagonist denotes a form of moral power and strength despite being framed within traditional gendered spaces.

This paper adds to feminist film discourses by offering a critical lens on gender representation in Raj Kapoor's cinema. Kapoor's films are seminal in comprehending women's onscreen depiction in post-independence Hindi films. Here, the period has been marked by the shifting dynamics of gender, class and societal expectations. Henceforth, the analysis in this study manifests how Kapoor's films both reflect and interrogate the normative gender roles prescribed to women during this age.

By placing women characters within the context of the gendered spaces-be it

the family, romance or social order-the paper critiques women's subjectivity in Kapoor's films. These films do not present straightforward feminist depictions, but they do create a space for women wherein they are capable of negotiating, subverting and even strengthening traditional gender roles. Thus, Kapoor's cinema serves as a crucial site for scrutinising the intersection of cinema gender and social change in India.

Future research could explore several directions in further understanding of gendered dynamics in Kapoor's films and their impact on Bollywood. One potential avenue can be a comparative analysis of Kapoor's women characters with contemporary filmmakers including Bimal Roy, Guru Dutt, Mehboob Khan and many others. Such comparatives could manifest how Kapoor's representation of women fits within or diverges from the larger trends in Hindi cinematic narratives during this period.

Moreover, it could also explore the evolution of gender representation in Kapoor's later films that could provide further insights into how his approach to women characters changed in response to the social and political shifts of the later age. Kapoor's later works, such as *Ram Teri Ganga Maili* (1985), could be studied for the way they address issues like sexuality, social mores, and women's agency in a rapidly modernizing Indian landscape. Doing feminist analysis regarding the treatment of women in Hindi films during the post-independence age could enrich the ongoing discourse on gender representation in Indian film. Especially, in the context of class, caste, and nationa-lism, it could showcase how cinema shapes and reflects societal attitudes.

References :

1. Bhasin, Kamla. *What is Patriarchy*? PRIA, 2021. 1632826588_PRIA@MFF_Kamala Bhasin on What is Patriarchy.pdf.
2. Clayton, Sue and Mulvey, Laura. *Other Cinema: Politics, Culture and Experimental Film in the 1970*. Bloomsbury Academics, 2021.
3. Jain, Jasbir and Rai, Sudha. (Edited). *Film and Feminism: Essays in Indian Cinema*. Rawat Publication, 2015.
4. Haskell, Molly. *From Reverence to Rape: Treatment of Women in Movies*. Penguin Books, 1974.
5. Nanda, Ritu. *Raj Kapoor: The One And Only Showman.* HarperCollins, Publishers, 2017.
6. Rajasekaran, Sindhu. *Smashing the Patriarchy: A Guide for the 21st-century Indian Woman*. Rupa Publications India, 2021.
7. *The Oxford Concise Dictionary of Politics.* Oxford University Press, 2003.https://www.pdfdrive.com/oxford-dictionary-of-politicse194629954.html
8. Thornham, Sue. *Feminist Film Theory in Practice*: *A Reader.* Edinburgh University Press, 1999.

Gandhian influence on Raj Kapoor's films

Prof. Dr. Hemali Sanghavi
Head Department of History &
Dean Academic Affairs,
K.J.Somaiya College of Arts & Commerce Autnomous,
Mumbai, India

Abstract :

Indian cinema in the period following independence reflected the spirit of the nation. Filmmakers were also participants in the process of the newly emerged nation, though the entertainment was the major drive for the films. Raj Kapoor's films have been often considered socialist in nature. The paper takes up the perspective that the Gandhian ideals were equally important guiding principles in Raj Kapoor's cinema.

Introduction :

Cinema has been considered important and popular mass media from the point of view of its appeal. Cinema always command great influence on the lives of the common man. Hindi cinema popularly referred as Bollywood has been important center of film making. Ranbir Raj Kapoor (1924-1988) has been important figures of Bollywood Cinema. He is known as star, director and producer. He was son of Prithviraj and Ramsarni Kapoor. He started his career as an actor with the film Neel Kamal. (1947)

Raj Kapoor's early films have been considered classic and milestones in the history of Bollywood. His films are often known for music and dance and commercial success. His cinematic language often expressed the post independent India and its challenges. Nehruvian ideals of post independent India were depicted in the films of Raj Kapoor. Interestingly there was conscious and subconscious Gandhian influence on Raj Kapoor The paper uses contextual analysis of Raj Kapoor's films.

Raj Kapoor :

Having started life as a clapper boy at 11 and going on to work at Bombay Talkies and Prithvi Theatres, Raj Kapoor was schooled in the aesthetic traditions of theatre and cinema. He has been often considered as the mainstream film maker. His films have been meant for the masses. Yet it was packaged with the message for the audience. Social concerns never lost sight in the work of RK, as he has been popularly referred. RK Films was started in 1948, the year of Gandhi's death. Raj Kapoor became a director in 1940's when Hindi films were changing rapidly. This was the Golden period of Indian Cinema.

Gandhi as an influencer on the cinema:

Gandhi has been one of the most important ideological influence on the Indian cinema. He has created great waves of thought and action. In fact, Mahatma Gandhi was not the leader but stood for an era. The values and ideals advocated

by Gandhi powerfully impacted the world of cinema. Mahatma Gandhi has been a true successor of an ancient cultural legacy. In India cinema targeted at the entertainment of the middle class. Gandhian move-ment attempted to incorporate the common people in the large nationalistic movement.

Gandhian influence on Raj Kapoor's films :

The Gandhian interlude in the history of India was like a dream sequence in a film. Raj Kapoor's *Jaagte Raho* (1956) depicted a villager in search of work. In this process, he comes across the illegalities of the white collar city dwellers. The film was a reminder for the country of Gandhian ideals. The movie was full of rich symbolism. India following post-independence period witnessed the phase of dream realization as well of shattered expectations of Gandhi. Raj Kapoor's cinema captured this phenomenon in the subtle manner. Gandhian vision made his films relevant. The songs of films like Boot Polish (1954) such as *Rat Gai Vo Nai subah* (end of the dark period and the beginning of new day/morning) was about hopefulness about Indi's upcoming bright future.

Raj Kapoor made *Jis Desh Main Ganga Behti Hai* in 1960 about the surrender of dacoits and their return to the nationalist fold. It was the time when dacoits in Chambal motivated by Gandhi's head disciple Vinoba Bhave. The film was becoming living reality and the dream that Gandhi envisioned. Gandhi's faith in goodness was equally shared by Raj Kapoor's cinema. Often Raj Kapoor cinema has been considered Nehruvian in temperament, Nehru for whom Gandhi was his mentor. In this sense, Gandhian influence has been important and integral to Raj Kapoor films.

Fight against inequality :

Raj Kapoor's films like *Awara* (1951) tackle the issues of inequality. Boot Polish created a believable world about the poor. Gandhian concept of Sarvodaya was about inclusion. What Gandhi was doing in the national movement and for the underprivileged in the society, Raj Kapoor was also in a way was portraying in the cinema. *Awara* and *Shri 420* (1954) contain various characters like slum and footpath dwellers which have been portrayed with great sensitivity. That was the reason that the films like Awara were able to get connect with the people even outside India.

Goodness and real hero :

Raj Kapoor as a hero presented him as hero, good person. He did not take up antihero role which was a trend of 1930's Indian films, i.e. noir films. He and hero of his films presented a kind heart. His hero is human as Gandhi always remained. In the midst of the larger narratives of the Indian nationalist movement Gandhian movement largely remained connected with humanism. Gandhi never lost sight of underprivileged sections. Gandhian humanism and the ideas of communal harmony featured in the cinema of Raj Kapoor.

Gandhian Movement :

Socio-political realities were found submerged in the films of Raj Kapoor like the Gandhian movement. His films therefore became slices of life. A story of two poor, shoeshine children, *Boot Polish,* set in contemporary India showed the lesser privileged sections. As Gandhian movement took up and focussed on the

issues of the common men, so do the Raj Kapoor's films were the one which brought about the identification of the common man with the protagonist.

Conclusion :

Looking at Mahatma Gandhi and Raj Kapoor, both had strong mass appeal. Both created collective hypnotism. For both values were important aspects of their living and work. Both resolved the issues in their unique manner. Raj Kapoor emphasised on the purity of means as much the goals. This was reflection of the Gandhian ideals which Raj Kapoor often represented through the lives of his protagonists of his movies. In fact, this was the distinguishing mark of his heroes making them stand out from the villains. However, for Raj Kapoor entertainment was equally or more important concern of his movies. One can see the kind of balance tried to be created between values and the entertainment, simplicity and glamour.

References :

1. Chowksey, Jayprakash, *Mahatma Gandhi & Cinema*, Mumbai, 2012.
2. Dwyer Rachel, *Fire and Rain, The Tramp and The Trickster: romance and the family in the early films of Raj Kapoo*r, The South Asianist, Vol. 2, No. 3.
3. Mehta, Rajni *Raj Kapoor*, (Gujarati) Mumbai, 2013.
4. Rehman, Sharaf *Indian Cinema's Original Rebel Hero – Dev Anand,* DOI: 10.25951/4284.

Unmasking Existence: An Analysis of Authentic Self in Raj Kapoor's *Mera Naam Joker*

Rajnee Devi
Assistant Professor, Philosophy
KDC Government College Jaisinghpur,
Himachal Pradesh University
Ph.D. Research Scholar,
Department of Philosophy, University of Delhi

Prachi Shanti
Ph.D. Research Scholar,
Department of Philosophy, University of Delhi

Abstract :

The paper aims to analyse Mera Naam Joker, a multi-starrer Bollywood movie by Raj Kapoor. The movie holds a deep introspective narrative that grapples with various questions through a philosophical lens. The paper majorly examines the existential traits in the narration depicted through the movie. The Protagonist of the story is a clown who is usually depicted as the one who brings joy and happiness in the life of others. However, the movie shows a deep meaning through the clown and delves into the profound philosophical meanings related to the authentic self, identity, the purpose of life, and one's relation with others in the world. The study interrogates some key issues related to the existential perspective. Therefore, the paper deals with two pivotal questions: what does it mean to live an authentic life? and how does one reconcile the notion of embodied self which is going through its own experiences with the notion of Other? By analysing some major turning points in the movie and the pivotal moments, the paper seeks to uncover the philosophical meaning of the magnum opus of Raj Kapoor's and the meaning of true life.

Introduction :

Cinema has been a platform for a long time to narrate life stories. It acts as a medium to analyse the questions of human existence which further raises questions related to the notion of self. One of the remarkable actors and director Raj Kapoor of Hindi cinema has tried to present some philosophical insights through his movie *Mera Naam Joker* (1970). Initially, the movie appeared as a big disappointment to the audience due to the mismatch between the title of the movie and the narration that it displays. As the name suggests, "Joker" or clown is the one who spreads joy by their funny acts, usually making one assume it to be a comedy movie. However, the movie contains a deep introspection and delves into the human condition and meaning of life not only this, it also deals with the intricacies of relationships of self with others. The audience could not resonate

with the philosophical meaning that the work narrated. Thus by not meeting the expectations of the audience of that era, initially it turned out to be a big commercial failure.

The story that the movie narrates and the title, present a duality; the clown and the man behind, whose mental state is different from what the clown presents to the audience for their entertainment. The movie as a whole presents the *episodic self (the self that sees life in small episodes rather than a whole narration)*(Strawson, 2004) of Raju from childhood to adulthood full of various phenomenological experiences in various episodes. The paper seeks to analyze the movie *Mera Naam Joker* and see the existential traits that can be seen in the movie, drawing upon the works of major existential philosopher Jean Paul Sartre's concepts of freedom and bad faith as well as Martin Heidegger's notion of an authentic self. By engaging with these philosophical frameworks, the paper aims to uncover the film's existential themes, particularly its portrayal of the tension between societal roles that has been prescribed by the others and the pursuit of an authentic self.

The Search for Authenticity: Heidegger and Sartre on the Self :

The notion of Self has been discussed since ages and still cannot be explicated in a single definition due to its ambiguity. On the other hand when we talk about authentic self in existential philosophy, particularly the works of Martin Heidegger and Jean Paul Sartre comes to mind. The notion of authentic self has been dealt with in detail by both the philosophers. They both raised concerns of an individual's living authentically in a world where we are *thrown* into the world, in between intertwined connections that a society forms. In the movie *Mera Naam Joker* we will analyse the notion of authentic self in Raju's experiential world. In this Journey, he appeared as a clown who always tries to make others happy by keeping his own sorrows aside, and provides a poignant lens to analyse the notion of authentic living.

Heidegger's Concept of Dasein: Being-towards-Death and Authenticity :

Heidegger has discussed Dasein in his *Being and Time*, as the Being which is not merely a body but it transcends the physical realm. It is a *Being-towards-death* which is fundamentally directed towards its finitude. The Dasein of Heidegger is not a fixed entity rather it exists in relation to others and the world. Also, Dasein doesn't have any fixed set of characteristics because it is not an entity like all other entities with a fixed set of characteristics. It constantly questions its existence because the question of who I am or the *Being* is always in the background.

This questioning of one's existence makes Dasein open to both authenticity and inauthenticity. To live authentically means to embrace individuality and make resolute choices, "Authenticity and inauthenticity can be achieved through Dasein's decisions; it is within Dasein's power to choose and win or lose itself. Resoluteness is Dasein's choosing of itself."(Mansbach, 2009, p. 88).) Heidegger does not merely reduce these decisions to acts of will but rather grounds them in Dasein's existential structure: "Heidegger is not affirming that authentic and inauthentic existence are

rooted in will, but rather that it is Dasein's existential constitution that makes such decisions possible." (Mansbach, 2009, p. 88). To be authentic is something which we cannot attain through will; rather we are born with it and meant to lead life authentically. However, Dasein exists in relation with others so it is because of the influence of others that lead us to an authentic life.

In the case of Raju, there appears a tension between the authentic and inauthentic self. His role as joker is not what he actually is in actual; it's the mask that he wears that conceals the true self. He tried to become something that is different from what he is. Raju is not willingly becoming someone that he is not rather; he is influenced by the story of his father's profession which shaped his identity. Raju throughout the movie can be seen facing his own vulnerability and the momentariness of life, aligning with Heidegger's call for *resoluteness (i.e the way of living authentically)*. The movie presented various phases of love life, be it with a teacher in his adolescence or with other characters he met in his adulthood. There are various moments in the movie where we can see the existential awareness that urges Raju to face the *thrownness* in the world along with *others*. The thrownness of Heidegger refers to the unchangeable relations that Dasein shares with others in the world.

In Heidegger's view, moving from inauthenticity to authenticity means breaking free from losing yourself in the routines and expectations of daily life. As Cohen (1993) writes, "The inauthentic self comes to its authentic self by leaving behind its dispersal in everyday anonymity by resolutely grasping itself as a temporalizing being in the context of specific historical determinations which must themselves, too, be resolutely grasped by Dasein as a historicizing being." (Cohen, 1993, p.119) a person can be away from the anonymous routines and take hold of their truest self. It does so by consciously embracing one's existence as a spatio-temporal being. In the case of Raju's journey as a Joker we can witness this struggle of taking hold of the truest self. Even though the role that he plays contradicts his real identity, he gradually accepts the identity of a Joker and tries to find a meaning in it. His mental state about the nature of authentic self seems to struggle between understanding what one is and what one is trying to be.

Moreover, Cohen highlights "Dasein is temporalizing, is historicizing, hence is the *Seinsfrage*. Dasein's shift from inauthentic to authentic existence is now conceived as nothing less than the shift from 'the end of philosophy' to the 'task of thinking'" (Cohen, 1993,p. 119). Here, the term *Seinsfrage* means the *question of being,* where the shift from inauthentic living to authentic living represents; actively questioning one's existence. In Raju's case he is having a self reflection on his very existence and pointing towards the possibilities of retrieving meaning from the thrownness of his life.

Sartre: Authenticity and Freedom :

Sartre approaches authentic life through the lens of freedom. In *Being and Nothingness* Sartre argues that being is not free rather we are condemned to be free. "He says we do not have freedom, we are freedom. freedom is not one property

among many, but is intrinsic to the dort of beings we are, for each moment of our existence we are creating ourselves anew" (Lawhead, 2014, p.561). It directs that a being is always free to choose and wholly responsible for their choices. This freedom brings with it the existential responsibility of defining oneself through actions. In the context of the movie *Mera Naam Joker*, it was Raju's choice to be a clown and act the way he wanted to reflect his exercise of freedom. However, Sartre warns that there is a thin line between living authentically and having a bad faith. "Bad faith refers to living inauthentically, i.e., by conforming to society and surrendering one's actions to other external forces. Sartre uses the term bad faith to refer to the attempt to deny our freedom, to see ourselves as products of our circumstances or the attempt to identify ourselves with our past choices while closing off our future possibilities." (Lawhead, 2014, p. 563)

Now an essential question arises here: Was Raju's choice to become a clown an act of authenticity or was he labeling himself as a joker out of bad faith? Indeed Joker's role has been understood as having a characteristic to make others feel happy and Raju's action aligned with it. Raju was performing the actions that a joker usually does but was it Raju's authentic self or not? Mere alignment of actions does not necessarily make Raju to lead an authentic self. Sartre's philosophy provides two different ways to understand and interpret Raju's position: on the one hand, he acts authentically by exercising his freedom dedicated towards his art, while on the other hand, Raju by hiding his sorrow and pain tries to label himself as a Joker and involuntarily performing the act of joker rather than expressing his true self.

The tension of living authentically and inauthentically is particularly evident in a pivotal scene where his mother dies but he is immediately told to perform his duty, showing an unhealthy trait not to express one's feeling of being sad. So, instead of mourning, he is immediately compelled to perform his duty as a Joker, suppressing his grief to fulfill the expectation of his role. This suppression reflects an unhealthy denial of his authentic emotional experience. When we see this from the perspective of Heidegger, this moment also illustrates the concept of inauthenticity, where Raju is dispersed in the routines and demands of his role, disconnected from his genuine authentic self. His inability to express his grief aligns with Heidegger's idea of inauthentic Dasein, which is called Dasman or 'the they', which occurs when one avoids confronting their vulnerability and the reality of their existence. "The anyone (or 'the they') represents how we, as individuals, are influenced by the expectations and the standards set by everyone around us." (Haugeland, 1982, p. 17).

From Satre's perspective, Raju's outward persona appears to conform to the societal norms and expectations. Similarly, from Heidegger's perspective Raju's thrownness into the world and his duty to entertain others emphasize the tension between being-for-oneself and Being-for-other. Raju's awareness about himself as an existing being with infinite possibilities and the relationship that he shares with others represent a complex interplay between the understanding of self and others.

The Embodied Self in Relation to Others :

Unlike Cartesians' mind and body dualism Heidegger and Sartre propounds that human existence is fundamentally embodied. Heidegger's idea of Dasein rejects the idea of isolated , abstract self rather it is Being-in-the-world. So, the Dasein is tied to the physical and social context. In the same manner Sartre argues that consciousness is intentional; it is directed towards the world, and the body is the medium through which this engagement occurs (Sartre, 1956, pp. 331–333). "Sartre argues that consciousness is nothingness; not a thing. He explains consciousness in terms of consciousness of something. It is through the consciousness that the world appears as nothing. Thus, it is one's sole responsibility to act like an authentic being to exist and live the life to the fullest"(Kumar and Devi, 2020,p.405).

In the movie, Raju's identity represents the embodied self. The colourful persona of the joker and the exaggerated gestures of Raju are the characteristics of the embodied self through which others grasp his identity as a joker. But is the joker's interaction with others the interaction of the Raju's authentic self or merely a social mask? There is a duality in Raju's identity; one is the self as perceived by others and the other is the experiential self. So, going back to the second problem that we are discussing in the paper, is about the reconciliation of self with others? Raju's interactions with others are shaped by external expectations, yet he also grapples with his inner truth and authenticity. This tension between how the self is shaped by others and the struggle for authentic selfhood mirrors the existential problem of reconciling the individual self with the external world.

The analysis of the protagonist's journey through the lens of existential philosophy shows the valuable insights of human life. We have seen the tension between authentic and inauthentic self of Raju, ultimately leading to the struggle of connecting oneself with others. We emphasized on Heidegger's concept of Dasein and on Sartre's notion of freedom. We have noted that Heidegger's authenticity is the core of Dasein. Thus, Raju needed to reflect and realise that he is what he is not. He reiterates that "I am a Joker" in almost all different episodes of his life and identifies himself with a toy joker. He even characterised himself with the toy joker and interpreted his existence as a happy being who tries to make everyone laugh so that they forget their pain. Raju's purpose behind making everyone happy is to see Jesus happy, as in the early phase of the movie his teacher told him that Jesus is sad because all the existential beings are sad. From that moment, he decides to be a joker and makes everyone laugh by forgetting his authenticity that being a joker is his profession and not an Identity. His interactions with others in the movie reveal the conflict between external expectations and the longing for personal meaning, underscoring the inherent struggle of human existence. In this way, *Mera Naam Joker* goes beyond the superficial story of a clown and becomes an introspective inquiry into the nature of selfhood, the challenges of being authentic, and the tension between self and others. Kapoor's cinematic masterpiece invites us to reflect on our own existential struggles, urging us to question the roles we play and to seek a deeper understanding of

what it means to live authentically in a world that constantly shapes our identity.

Bibliography

1. Cohen, R. A. (1993). Authentic selfhood in Heidegger and Rosenzweig. *Human Studies, 16*(1/2), 111–128. Springer. https://www.jstor.org/stable/20010990
2. Haugeland, J. (1982). Heidegger on Being a person. *Noûs, 16*(1), 15–26.
3. Heidegger, M. (1996). *Being and time* (J. Stambaugh, Trans.). State University of New York Press. (Original work published 1927)
4. Kumar, P., & Devi, R. (2020). Existentialist's traits in Hermann Hesse's *Siddhartha*: An ontological inquiry. *Journal of Comparative Literature and Aesthetics, 43*(4), 401–410.
5. Lawhead, W. F. (2014). *The voyage of discovery: A historical introduction to philosophy* (4th ed.). Cengage Learning.
6. Mansbach, A. (2009). *Heidegger on the self: Authenticity and inauthenticity*. Palgrave Macmillan.
7. Sartre, J.-P. (1956). *Being and nothingness* (H. E. Barnes, Trans.). Philosophical Library. (Original work published 1943).

Gandhian influence on Raj Kapoor's films

Prof. Dr. Hemali Sanghavi
Head Department of History & Dean Academic Affairs,
K.J.Somaiya College of Arts & Commerce Autnomous, Mumbai, India

Abstract :

Indian cinema in the period following independence reflected the spirit of the nation. Filmmakers were also participants in the process of the newly emerged nation, though the entertainment was the major drive for the films. Raj Kapoor's films have been often considered socialist in nature. The paper takes up the perspective that the Gandhian ideals were equally important guiding principles in Raj Kapoor's cinema.

Introduction :

Cinema has been considered important and popular mass media from the point of view of its appeal. Cinema always command great influence on the lives of the common man. Hindi cinema popularly referred as Bollywood has been important center of film making. Ranbir Raj Kapoor (1924-1988) has been important figures of Bollywood Cinema. He is known as star, director and producer. He was son of Prithviraj and Ramsarni Kapoor. He started his career as an actor with the film Neel Kamal. (1947)

Raj Kapoor's early films have been considered classic and milestones in the history of Bollywood. His films are often known for music and dance and commercial success. His cinematic language often expressed the post independent India and its challenges. Nehruvian ideals of post independent India were depicted in the films of Raj Kapoor. Interestingly there was conscious and subconscious Gandhian influence on Raj Kapoor The paper uses contextual analysis of Raj Kapoor's films.

Raj Kapoor :

Having started life as a clapper boy at 11 and going on to work at Bombay Talkies and Prithvi Theatres, Raj Kapoor was schooled in the aesthetic traditions of theatre and cinema. He has been often considered as the mainstream film maker. His films have been meant for the masses. Yet it was packaged with the message for the audience. Social concerns never lost sight in the work of RK, as he has been popularly referred. RK Films was started in 1948, the year of Gandhi's death. Raj Kapoor became a director in 1940's when Hindi films were changing rapidly. This was the Golden period of Indian Cinema.

Gandhi as an influencer on the cinema:

Gandhi has been one of the most important ideological influence on the Indian cinema. He has created great waves of thought and action. In fact, Mahatma

Gandhi was not the leader but stood for an era. The values and ideals advocated by Gandhi powerfully impacted the world of cinema. Mahatma Gandhi has been a true successor of an ancient cultural legacy. In India cinema targeted at the entertainment of the middle class. Gandhian move-ment attempted to incorporate the common people in the large nationalistic movement.

Gandhian influence on Raj Kapoor's films :

The Gandhian interlude in the history of India was like a dream sequence in a film. Raj Kapoor's *Jaagte Raho* (1956) depicted a villager in search of work. In this process, he comes across the illega-lities of the white collar city dwellers. The film was a reminder for the country of Gandhian ideals. The movie was full of rich symbolism. India following post-independence period witnessed the phase of dream realization as well of shattered expectations of Gandhi. Raj Kapoor's cinema captured this phenomenon in the subtle manner. Gandhian vision made his films relevant. The songs of films like Boot Polish (1954) such as *Rat Gai Vo Nai subah* (end of the dark period and the beginning of new day/morning) was about hopefulness about Indi's upcoming bright future.

Raj Kapoor made *Jis Desh Main Ganga Behti Hai* in 1960 about the surrender of dacoits and their return to the nationalist fold. It was the time when dacoits in Chambal motivated by Gandhi's head disciple Vinoba Bhave. The film was becoming living reality and the dream that Gandhi envisioned. Gandhi's faith in good-ness was equally shared by Raj Kapoor's cinema. Often Raj Kapoor cinema has been considered Nehruvian in temperament, Nehru for whom Gandhi was his mentor. In this sense, Gandhian influence has been important and integral to Raj Kapoor films.

Fight against inequality :

Raj Kapoor's films like *Awara* (1951) tackle the issues of inequality. Boot Polish created a believable world about the poor. Gandhian concept of Sarvodaya was about inclusion. What Gandhi was doing in the national movement and for the under-privileged in the society, Raj Kapoor was also in a way was portraying in the cinema. *Awara* and *Shri 420* (1954) contain various characters like slum and footpath dwellers which have been portrayed with great sensitivity. That was the reason that the films like Awara were able to get connect with the people even outside India.

Goodness and real hero :

Raj Kapoor as a hero presented him as hero, good person. He did not take up antihero role which was a trend of 1930's Indian films, i.e. noir films. He and hero of his films presented a kind heart. His hero is human as Gandhi always remained. In the midst of the larger narratives of the Indian nationalist movement Gandhian movement largely remained connected with humanism. Gandhi never lost sight of underprivileged sections. Gandhian humanism and the ideas of communal harmony featured in the cinema of Raj Kapoor.

Gandhian Movement :

Socio-political realities were found submerged in the films of Raj Kapoor like the Gandhian movement. His films therefore became slices of life. A story of two poor, shoeshine children, *Boot Polish,* set in contemporary India showed the

lesser privileged sections. As Gandhian movement took up and focussed on the issues of the common men, so do the Raj Kapoor's films were the one which brought about the identification of the common man with the protagonist.

Conclusion :

Looking at Mahatma Gandhi and Raj Kapoor, both had strong mass appeal. Both created collective hypnotism. For both values were important aspects of their living and work. Both resolved the issues in their unique manner. Raj Kapoor emphasised on the purity of means as much the goals. This was reflection of the Gandhian ideals which Raj Kapoor often represented through the lives of his protagonists of his movies. In fact, this was the distinguishing mark of his heroes making them stand out from the villains. However, for Raj Kapoor entertainment was equally or more important concern of his movies. One can see the kind of balance tried to be created between values and the entertainment, simplicity and glamour.

References :

1. Chowksey, Jayprakash, *Mahatma Gandhi & Cinema*, Mumbai, 2012.
2. Dwyer Rachel, *Fire and Rain, The Tramp and The Trickster: romance and the family in the early films of Raj Kapoo*r, The South Asianist, Vol. 2, No. 3.
3. Mehta, Rajni *Raj Kapoor*, (Gujarati) Mumbai, 2013.
4. Rehman, Sharaf *Indian Cinema's Original Rebel Hero – Dev Anand,* DOI: 10.25951/4284.

Raj Kapoor's Films as a Mirror to His Contemporary Indian Society : Aspirations and Frustrations

Dr. Manisha Patil
Asst. Professor (English)
Guru Nanak College, GTB Nagar, Mumbai

Raj Kapoor is more than an extremely prolific filmmaker and actor; indeed, he is often called the "Showman of Indian Cinema." His productions are not merely forms of entertainment but also expressions of aspiring, striving, conflict-ridden, and inconsistent contemporary Indian society of his time. With his very presence, RK carried the spirit of the newly independent India onto the international stage. Emerging as a cinematic force in the middle of the 20th century, RK used this medium to articulate the very ethos of a nascent nation finding its identity after colonial rule- its aspirations, struggles, triumphs and frustrations. Through their compelling narratives, iconic characters and unforgettable music, his works struck chords with not only Indian viewers but also worldwide audiences, mainly in regions as diverse as the Soviet Union, the Middle East, and parts of Africa. Thus, RK was indeed a cultural ambassador of India to the world because his ability to transcend boundaries spoke volumes for the optimism, resilience and complex social realities that were India's reality during the early post-independence period.

The Visionary Filmmaker :

RK's cinematic journey began within an India that was toiling with the challenges of partition, poverty and reconstruction. His films, specifically those he produced under the R.K. Studios banner, reflected the socio-political climate of his times. In *'Awaara'* (1951) and *'Shree 420'* (1955), RK crafted narratives that explored themes of poverty, justice and the moral dilemmas of urbanization.

The Aspirations of a New Nation

RK's films capture the optimism of post-independence India, a desire to move forward and to become self-reliant as a collective yearning. Their characters were at once the common people and extraordinary individuals.

In *'Shree 420'*, the contradictions of modernizing India were captured with the juxtaposition of rural innocence and urban corruption. Raj, the protagonist, arrived in the city with no possessions but hope and aspiration. The song *"Mera Joota Hai Japani"* became an anthem of confident national pride, meaning that India was determined to mold its destiny while embracing its singular identity. The journey

from innocence to disillusionment, portrayed in Raj's character, was a reflection of what millions of Indians went through as they moved to the cities in search of more opportunities, symbolizing how society was moving from being agrarian simple to modern industrial.

RK's films also showcased the dignity of labor and the value of perseverance. *Boot Polish* (1954), the story of two orphaned siblings striving to earn an honest living through shoe-shining, rang bells with the audience, because this is the ethos of hard work and resilience in the face of adversity that has shaped the nation.

Social Inequities Critique :

While RK's films glorified the ambitions of the Indian masses, they were not afraid to criticize the social and economic evils that stopped progress. In most of his films, RK focused on the struggles of the deprived and exposed hypocrisies of the high class.

In *'Awaara'*, RK portrayed a rebellious youth whose fortune hovers between crime and redemption; he underscores the idea that environment determines character. The universalism of the film and the Chaplinesque portrayal by RK struck a chord in the Indian and international markets. This film probed the role of the environment and privilege in charting an individual's moral trajectory. The protagonist, Raju is the product of societal neglect and systemic injustice. RK depicted a young man caught between crime and redemption as a very powerful commentary on the necessity for reform in society and the flaws in India's judicial system.

'Jagte Raho' (1956) similarly explored the decline of the morality of city civilization. This film explores how a wrongfully accused thieving by a rustic against the wily mechanisms of greed, corruption, and deception of a metropolitan metropolis. RK spoke strongly against the compromises of morals at the altar of urbanism but still gave greater space to the miserable fate of a rural migrant in an urbanistic environment.

Investigating Gender Roles and Women's Agency :

RK's films also reflected the changing roles of women in Indian society. Some of his works followed traditional portrayals, while others offered more nuanced portrayals of women as agents of change and moral anchors.

In *'Sangam'* (1964), he addressed themes of love, friendship, and sacrifice, centering the story on a complex love triangle. The character of Radha, played by Vaijayanthimala, represented the aspirations and dilemmas faced by women in balancing personal desires with societal expectations.

'*Bobby'* (1973) is a landmark depiction of gender roles and the power of women in the context of the theme of love as a challenge to conservative society. The story revolves around the love life of Bobby, a free-spirited young woman, and Raj, a young man belonging to a rather conservative family. The movie, however, concludes on traditional gender lines when the otherwise bold and modern-looking Bobby's agency is reduced by societal and family pressure. Her relationship with Raj is an act of rebellion against her family, yet it still falls within the societal context of the time, thereby restricting her further. The film provides a nuanced insight into how the desires of women and their autonomy are formed through both personal

agency and societal expectations, reflective of the tension between the traditional and evolving gender roles in Indian cinema of the 1970s.

In *'Prem Rog'* (1982), he approached the social issue of widow remarriage through the lens of love. In challenging orthodox norms, the film advocated for women's rights to love and happiness within society, which was finally inching towards progressive ideas. That sensitivity to the emotional as well as social challenges for a woman made his movies simultaneously reflective and aspirational.

The complexities regarding gender roles and the idea of women's agency have also been presented in the film *'Ram Teri Ganga Maili'* (1985). It follows a young woman, Ganga, who, in addition to having her life complicated through societal expectations, finds her innocence exploited by the oppressive patriarchy. Ganga's character defies the traditional portrayal of women in terms of either virgin or bitch. Though she is no longer 'pure' in terms of her body, her 'purity' of heart still symbolizes feminine purity and sacrifice, exposing the harsh realities of sexual exploitation and moral judgment imposed upon a helpless woman compromising her freedom and desire.

The frustration of a Society in Transition :

"Kapoor was an enthusiastic modernist who endorsed revolt of the young against stifling traditions; for him, the best creative space was in the values created by modernity…" (Nagaraj, 91)

While RK's films did celebrate the optimism of a new India, they also caught the frustrations and disillusionments of rapid social and economic change. The migration from villages to cities, the erosion of traditional values and the widening gap between the rich and poor were recurring themes in his work.

In *'Shree 420'*, he portrayed the allure of money and power with his seductive Maya (Nadira). With Vidya (Nargis), on the other hand, he depicted pure goodness and simplicity, highlighting the tussle between India's materialistic pursuit and desperate attempt to retain its traditional ways while embracing modernity. It presented a narrative that was the struggle inside the minds of a people aspiring to modernize without losing their cultural heritage.

He further investigated the alienation and identity crisis of individuals in the context of a rapidly changing society. In *'Awaara'*, the journey of Raju from being a wronged youth to a reformed individual portrayed the societal pressures and stigmas which drove people to the margin. His redemption through love and self-realization was symbolic of RK's belief in the transformative power of humanity and compassion.

Championing Indian Identity :

As India sought its niche in global affairs, RK's role as a cultural ambassador of India became pivotal to defining the global perspective on and of the Indian culture: on one hand, his movies glorified the traditional Indian cultural values but on the other hand, also adopted and adapted to the modern ways of life. This Janus-faced representation of a nation at a crucial historical moment when it leaves behind its painful past and enters a hopeful future with its inherent flaws as well as heroism embodied the true Indian identity of his characters.

RK's own persona-grounded in humility yet aspiring for greatness-mirrored the ethos of the Indian middle class. In an era dominated by Western cultural influences, his films were a counter-narrative that celebrated Indian traditions, aspirations, and resilience. He presented a vision of India that was proud of its heritage but eager to engage with the world, making him a natural ambassador for the country's cultural diplomacy.

A Symbol of Unity in Diversity :

RK's films also represented the pluralistic ethos of India. His narratives often included characters from diverse religious, linguistic, and social backgrounds, which he underlined to be the need for unity in a multicultural society. In *'Jagte Raho'*, RK dealt with themes of societal hypocrisy and communal harmony as he portrayed the struggle of an outsider to gain acceptance in an unforgiving urban environment. The message of unity and mutual understanding was something that deeply resonated in a nation still reeling from the trauma of partition.

In addition, RK's collaborative style of filmmaking showcased the rich talent of India. From his collaborations with music composers such as Shankar-Jaikishan to lyricists like Shailendra and Hasrat Jaipuri, he brought creative thoughts together, producing quintessentially Indian yet universally appealing films.

Music as a Medium of Expression :

Music played a great role in RK's films as a powerful medium for expressing societal aspirations and frustrations. The legendary compositions by Shankar-Jaikishan and unforgettable lyrics by Shailendra and Hasrat Jaipuri deeply resounded with the audience. Songs like *"Awaara Hoon"* from *'Awaara'* and *"Ramaiya Vastavaiya"* from *'Shree 420'* captured the plight and resilience of the common man, besides talking about universal themes of love, hope, and perseverance. The accessibility of these melodies and their profound lyrics ensured that RK's messages reached not just Indian audiences but also global ones, making his work a cultural bridge.

Universal Themes with Indian Roots :

RK's genius was in his ability to weave universal themes into the fabric of Indian society. His exploration of love, justice, morality, and resilience resonated across cultures, making his films relevant even beyond India's borders. The success of *'Awaara'* worldwide, especially in the Soviet Union, marked out the universality of the themes of social inequality and human willpower, reaching out to societies struggling in the same manner.

The Global Appeal :

Like Charlie Chaplin, the impact of RK transcended borders, turning him into a paradigm of 'The Little Man with a Big Heart' across the globe. His international appeal, especially in the Soviet Union, made him a permanent icon of Indian culture. The Soviet audiences identified themselves with the socialist undertones of his stories, which exalted the dignity of labor, the triumph of the downtrodden, and the critique of class disparities. *'Awaara'* was dubbed into Russian and went on to become a huge hit. Its themes of love, justice, and societal conflict struck a chord with everyone.

RK's charm had spread to other parts of the world too. His depiction of emotional sincerity and human vulnerability struck chord with the diverse audiences in the

Middle East, Africa, and East Asia who found a reflection of their own struggles and dreams in him. Songs of his films, composed by Shankar-Jaikishan and sung by playback singers like Mukesh, became cultural bridges, presenting Indian melodies and sentiments to international listeners.

Charlie Chaplin of India :

RK's cinematic journey is marked by his ability to weave humor, pathos and social commentary into deeply resonant stories. Much like Charlie Chaplin who became an international icon through his Little Tramp character, RK too earned immense fame as Raj/Raju, a common man with a royal name. Indeed, RK consciously emulated Chaplin's style and philosophy; and candidly acknowledged Chaplin's influence on him. He admired Chaplin's ability to use humour as a tool for social criticism and his commitment to bringing out the human condition on screen. The Little Tramp of Chaplin, with his bowler hat, cane and shuffling walk, was a universal symbol of the resilience and dignity of one who faced adversity in life. Similarly, on-screen, RK often played a character that was, in itself, a form of the Chaplinesque underdog-'The Little Man with a Big Heart', a lovable, downtrodden underdog trying to make sense of the world of inequality and corruption. Themes of poverty, inequality and the human spirit's resilience were central to both Chaplin's and RK's work and both utilized cinema as a medium of social commentary, becoming the voices of the downtrodden. The visual and thematic similarities between the two are also striking. RK often wore attire reminiscent of Chaplinesque clothes: oversized clothes, battered hat, and carefree gait. Furthermore, both were masters of emotions who knew the strength of pathos and worked on it to create truly moving cinematic experiences. While Chaplin's films transcended language barriers with the help of visual comedy and mime, RK's use of music, emotion and simple yet profound storytelling allowed his films to connect with audiences across the globe.

For instance, *'Modern Times'* (1936) of Chaplin critiques industrialization and its inhuman conditions, whereas the themes for *'Awaara'* are set around justice, privilege, and the huge difference in society between rich and poor people. RK's films often carried symbolic elements that reinforced their messages. In *'Shree 420'*, the titular character's travels through the city are very much the moral dilemmas of a rapidly urbanizing India. Chaplin's *'The Kid'* (1921) had also portrayed, with a mix of humor and heartache, the poverty and survival; it has shown that people can indeed be very strong in the face of circumstances. Both directors were sensitive to the plight of the working class. RK's characters frequently toasted the dignity of labor and the values of honesty and perseverance, themes that resonated with the aspirations of post-independence India. Like Chaplin, RK knew how cinema could inspire, critique, and unite.

In *'Awaara'*, RK portrayed a vagabond torn between his circumstances and his conscience, as he reeled along the lines of pathos and humor like Chaplin. The character journey of self-discovery and redemption reflected post-independence India questioning morality, identity, and justice. The humor and poignancy with which RK essayed this role drew obvious comparisons to Chaplin's own masterly blend of comedy with social critique.

In *'Shree 420'*, RK portrayed Raj, a simple man lured by the glitz and glamour of urban life, only to confront its moral decay. Much like Charlie Chaplin, RK makes use of the element of humor to express criticism upon societal flaws that make things accessible to everybody.

In *'Jaagte Raho'*, RK plays a hapless villager who inadvertently turns into a symbol of hypocrisy in society. The comedy, suspense and moral introspection that form the film created scope for RK to test his acting range and sensitivity toward playing complex emotional arcs. The duality of comedy and tragedy, reminiscent of Chaplin's film career, also became characteristic of RK's work.

Thus, through music, dance, and melodrama, RK infused his films with a flavor that was unmistakably Indian yet universal enough in its appeal to stand beside Chaplin. Like Chaplin, he used his art for a purpose, highlighting the human condition and offering laughter, tears, and hope to the world. With the Chaplinesque persona, universal themes and commitment to social commentary, RK emerged as a symbol of resilience and empathy, not much different from the Little Tramp.

The Persona beyond Films :

RK's personal charm and a larger-than-life image popularized him globally. On stage or on tour to meet fans worldwide, he always carried an aura of warmth and authenticity that captivated people from all walks of life. He had a special fanfare in the Soviet Union where his tours attracted thousands of people who used to turn up to catch a glimpse of the man whose films had touched their hearts.

RK's larger legacy as an icon of Indian cultural diplomacy is reflected in his presence as a representative of Indian cinema at international film festivals. Many of his films premiered at Cannes due to their cinematic and thematic depth. Thus, his communication across cultures commanded admiration and respect, almost making him a de facto cultural ambassador of India.

A Perpetual Legacy :

The films of RK remain timelessly reflective of the society he belonged to, revealing both the aspirations and frustrations of his era in remarkable clarity. As a social chronicler and critic, his unique skill to take on the pressing issues of social justice, urbanization, and the human spirit to create compelling narratives of survival of the common people through personal struggles underscores the role of cinema as a mirror to, or even shaper of, societal consciousness. As the Charlie Chaplin of India, RK he bridged the gap between art and humanity. His films remain a source of inspiration, reminding people how much cinema can do-to entertain, educate, or unite.

As one of the earliest Indian filmmakers to be recognized as international superstar, RK symbolizes the golden era of Indian Cinema. His sagas of love, social justice, economic hardships, endless struggle for survival and human resilience continue to be visualized as vividly today as they were way back in the middle of the 20th century, the emperor of time. Instead of pushing RK in the darkness of oblivion, his death increased his stature to the sky-heights. His films inspired and continue

to inspire new generations of filmmakers in India and abroad who aspire to follow his footsteps in terms of art and social importance.

Conclusion :

Thus, RK was a chronicler of his times, capturing the essence of his contemporary Indian society with a depth and sensitivity that cannot be rivaled. Through his films, he provided a glimpse of the aspirations and frustrations of newly independent India as a nation in transition that celebrated hope while critiquing the societal flaws. As a fascinating storyteller, a visionary, and a bridge between India and the world, his films expressed a vision of India at once deeply rooted in its own cultural heritage and yet open to influences from the rest of the world. His work is testament to the timelessness of cinema as a mirror to society, reflecting its triumphs and tribulations, with the potential to create positive change. It has also made him an effective and true cultural ambassador touching the hearts of the cross-cultural politically diverse masses worldwide, indeed, epitomizing the spirit of transformational India. In celebrating the power of cinema with RK, we do not simply celebrate its power but the potential of art and, in this case, as an instrument for understanding each other, empathy, and unity in a diverse and, to say the least, connected world. His work can never be forgotten because the telling will continue to tell his tale as a means of cultural diplomacy for generations upon generations.

References :

Books :

1. Jall, Hutokshi. *Raj Kapoor and Hindi Films: Catalysts of Political Socialization in India*. 1994. Clark Atlanta University. PhD dissertation. https://radar.auctr.edu/islandora/object/cau.td%3A1994_jall_hutokshi
2. Nagaraj, D. "The Comic Collapse of Authority: An Essay on the Fears of the Public Spectator." *Fingerprinting Popular Culture: The Mythic and the Iconic in Indian Cinema*. Edited by Vinay Lal and Ashis Nandy. Oxford University Press. 2006. P. 87-121.
3. Reuben, Bunny. *Raj Kapoor: The Fabulous Showman*. South Asia Books. 1996.
4. Sahai, Malti. "Raj Kapoor and the Indianization of Charlie Chaplin." East-West Film Journal (Honolulu) Vol. 2, No. 1, December 1987.

Films :

1. Arora, Prakash (Dir). *Boot Polish*. RK Films. 1954.
2. Chaplin, Charlie (Dir). *The Kid*. Charles Chaplin Productions. 1921.
3. Chaplin, Charlie (Dir). *Modern Times*. Charles Chaplin Productions. 1936.
4. Kapoor, Raj (Dir). *Awaara*. RK Films. 1951.
5. Kapoor, Raj (Dir). *Shree 420*. RK Films. 1955.
6. Kapoor, Raj (Dir). *Sangam*. RK Films. 1964.
7. Kapoor, Raj (Dir). *Bobby*. RK Films. 1973.
8. Kapoor, Raj (Dir). *Prem Rog*. RK Films. 1982.
9. Kapoor, Raj (Dir). *Ram Teri Ganga Maili*. 1985.
10. Mitra, Sombhu & Amit Mitra (Dir). *Jagte Raho*. RK Films. 1956.

राज कपूर शताब्दी वर्ष और मध्य एशिया

डॉ. मनीष कुमार मिश्रा
विजिटिंग प्रोफ़ेसर (ICCR Chair)
ताशकंद स्टेट युनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज़
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

डॉ. नीलूफ़र खोजाएवा
अध्यक्ष, दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशियाई भाषा विभाग
ताशकंद राजकीय प्राच्य विश्वविद्यालय
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

वर्ष 2024 कद्दावर फ़िल्म अभिनेता राज कपूर का जन्म शताब्दी वर्ष है। भारत के आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने इस अवसर पर कपूर परिवार से बातचीत करते हुए कहा कि, ''राज कपूर की 100वीं जयंती का उत्सव भारतीय फिल्म उद्योग की स्वर्णिम यात्रा की गाथा का प्रतीक है। मध्य एशिया में भारतीय सिनेमा के लिए मौजूद अपार संभावनाओं को भुनाने की दिशा में काम करने की जरूरत है, मध्य एशिया में नई पीढ़ी तक पहुंचने के प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि फिल्म 'नील कमल' 1947 में बनी थी और अब हम 2047 की ओर बढ़ रहे हैं और इन 100 वर्षों के दौरान उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। कूटनीति के संदर्भ में इस्तेमाल किए जाने वाले 'सॉफ्ट पावर' शब्द का जिक्र करते हुए श्री मोदी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि राज कपूर ने उस समय भारत की सॉफ्ट पावर की स्थापना की थी जब यह शब्द गढ़ा ही नहीं गया था। उन्होंने कहा कि भारत की सेवा में यह राज कपूर का बहुत बड़ा योगदान था। सिनेमा की ताकत को याद करते हुए श्री मोदी ने एक घटना का जिक्र किया जब तत्कालीन जनसंघ पार्टी दिल्ली में चुनाव हार गई थी। तब नेताओं ने राज कपूर की फिल्म 'फिर सुबह होगी' देखने का फैसला किया। उन्होंने कहा कि पार्टी ने अब फिर से सुबह देखी है। श्री मोदी ने एक घटना को भी याद किया जब उन्होंने चीन में बज रहे एक गाने की रिकॉर्डिंग श्री ऋषि कपूर को भेजी थी, जिससे वो बहुत खुश हुए थे।[1]

हिन्दी फिल्मों के प्रसिद्ध अभिनेता पृथ्वीराज कपूर के बड़े बेटे राज कपूर का जन्म दिनांक 14 दिसम्बर, 1924 को पेशावर में हुआ था। उनके बचपन का नाम रणबीर राज कपूर था। प्रारंभिक स्कूली शिक्षा कोलकाता में हुई, लेकिन पढ़ाई में उनकी कोई रुचि नहीं थी। परिणाम स्वरूप राज कपूर ने 10वीं कक्षा की पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी। सन् 1929 में जब पिता पृथ्वीराज कपूर बंबई/मुंबई आए, तो राज कपूर भी साथ आए। जब मात्र सत्रह वर्ष की आयु में रणजीत मूवीटोन में एक साधारण एप्रेंटिस का काम राज कपूर को मिला, तो उन्होंने वजन उठाने और पोंछा लगाने के काम से भी परहेज नहीं किया। पंडित केदार शर्मा के साथ काम करते हुए उन्होंने अभिनय की बारीकियों को सीखा। केदार शर्मा ने ही अपनी फ़िल्म 'नीलकमल' (1947) में मधुबाला के साथ राज कपूर को नायक के रूप में प्रस्तुत किया था।

एक बाल कलाकार के रूप में 'इंकलाब' (1935), 'हमारी बात' (1943) और 'गौरी' (1943) फ़िल्म में छोटी भूमिकाओं में कैमर का सामना राज कपूर करने लगे थे। फ़िल्म 'वाल्मीकि' (1946) तथा 'नारद और अमरप्रेम' (1948) में आप ने कृष्ण की भूमिका निभाई। मात्र 24 वर्ष की आयु में राज कपूर ने पर्दे पर पहली प्रमुख भूमिका 'आग' (1948) नामक फ़िल्म में निभाई, जिसका

निर्माण और निर्देशन भी उन्होंने स्वयं किया था। राज कपूर ने मुंबई के चेम्बूर इलाके में चार एकड़ ज़मीन लेकर सन 1950 में आर. के. स्टूडियो की स्थापना की। सन 1951 में आई फ़िल्म 'आवारा' के माध्यम से राज कपूर को एक रूमानी नायक के रूप में लोक प्रियता मिली। 'बरसात' (1949), 'श्री 420' (1955), 'जागते रहो' (1956) व 'मेरा नाम जोकर' (1970) जैसी सफल फ़िल्मों का न केवल निर्देशन व लेखन अपितु उनमें अभिनय भी राज कपूर ने ही किया।

राज कपूर को हिन्दी फ़िल्मों का पहला शो मैन माना जाता है। उनकी फ़िल्मों में आवारगी, आशिक़ी, देश प्रेम, मौज-मस्ती, प्रेम, हिंसा से लेकर अध्यात्म, मानवतावाद और नायकत्व से लेकर लगभग सब कुछ उपलब्ध रहता था। राज कपूर की फ़िल्में न केवल भारत अपितु पूरे विश्व में सिने प्रेमियों द्वारा पसंद की गई।रूस में उनकी लोकप्रियता गज़ब थी। उज़्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में आज भी राज कपूर नाम से एक प्रसिद्ध भारतीय व्यंजनों का रेस्टोरेन्ट है। राजकपूर का मूल्यांकन एक महान् फ़िल्म संयोजक के रूप में भी किया जाता है।उन्हें फ़िल्म की विभिन्न विधाओं की बेहतरीन समझ थी। यह उनकी फ़िल्मों के कथानक, कथा प्रवाह, गीत संगीत, फ़िल्मांकन आदि में स्पष्ट महसूस किया जा सकता है। राज कपूर को सन् 1987 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्रदान किया गया था। राज कपूर को कला के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा, सन् 1971 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। 02 जून, 1988 को राज कपूर ने अंतिम सांस ली। राजकपूर की फिल्मों की दीर्घकालिक महत्ता एवं लोकप्रियता के संबंध में जयप्रकाश चौकसे ने लिखा है कि (जयप्रकाश चौकसे (2010)। राजकपूर : सृजन प्रक्रिया. नयी दिल्ली: राजकमल प्रकाशन। पृ॰-12.) 'राजकपूर के जीवनकाल में उनके द्वारा निर्मित-निर्देशित फिल्मों ने, उनके लिए जितना लाभ कमाया, उससे हजार गुना अधिक धन, उनकी मृत्यु के बाद विगत इक्कीस वर्षों में कमाया है। प्रति तीन वर्ष सैटेलाइट पर प्रदर्शन के अधिकार अकल्पनीय धन में बिकते रहे हैं और यह सिलसिला आज भी जारी है। उनके समकालीन किसी भी फिल्मकार की रचनाओं को ये दाम नहीं मिले हैं।'

अपनी फिल्मों के माध्यम से मानवीय करुणा, विश्वास, प्रेम, मस्ती और संवेदना का सौंदर्य पूरे विश्व में बिखेरने के लिए इस महान फ़िल्म अभिनेता को विश्व सदैव याद रखेगा। वर्ष 2024 राज कपूर का जन्म शताब्दी वर्ष है अतः उनके वैश्विक फ़िल्मी योगदान को याद करने का यह सुनहरा अवसर है। विशेष रूप से मध्य एशिया में उनकी लोकप्रियता की चर्चा हम इस शोध पत्र के माध्यम से करेंगे। राज कपूर और मध्य एशिया में उनकी दीवानगी किसी भी तरह भारत से कम नहीं है। उज़्बेकिस्तान और मध्य एशिया से जुड़ी उनकी सैकड़ों यादें हैं जिनकी विस्तार से चर्चा की जा सकती है। तत्कालीन सोवियत संघ और मध्य-पूर्व में राज कपूर की लोकप्रियता एक दंतकथा बन चुकी है। 'संगम' ने राज कपूर को एशिया का सबसे बड़ा शो मैन बना दिया। उज्बेकिस्तान में रह रहे वरिष्ठ भारतीय भाषाविद प्रोफेसर बयात ने अपनी बातचीत में हमसे कहा कि– राज कपूर के 'आवारा'ने उज्बेकिस्तान के हर घर में एक 'आवारा' बना दिया था। उज़्बेकी युवा जूता का उच्चारण 'जुप्पा' करते हुए 'मेरा जूता है जापानी' गाते थे। उस समय भारत उन गिने-चुने देशों में से एक था जो वारसा पैक्ट के बाहर थे और जिनकी फ़िल्में ळएएिं में आयात करने की इजाज़त थी।

अल्बानिया, बुल्गारिया, चीन तक में यह गीत युवाओं में बड़ा लोकप्रिय हुआ। फिल्म 'आवारा' और 'श्री 420' रूस में सिनेमाटोग्राफी प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम में शामिल रही साथ ही उनकी कई फिल्में उज़्बेकी,रूसी, तुर्की, फारसी और अरबी भाषा में डब भी की गईं। दिनेश पाठक लिखते हैं कि- बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार, सोवियत संघ में आवारा की प्रसिद्धि का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि देश की आजादी के बाद पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू पहली बार सोवियत

की यात्रा पर गए तो उस वक्त वहां के प्रधानमंत्री थे बुलगानिन। एक सरकारी भोज के दौरान पहले पंडित नेहरू ने अपनी बात रखी, इसके बाद बोलने की बारी बुलगानिन की थी। उन्होंने अपने भाषण के दौराना आवारा हूंष्ठ गाकर सुनाया था। यही नहीं, पंडित नेहरू को देख कर भी सोवियत संघ में भीड़ चिल्लाती थी, आवारा हूं। सोनाली नाईक लिखती हैं कि (https://www.tv9hindi.com/entertainment/bollywood-news/raj-kapoor-craze-in-russia-international-fans-thought-he-is-also-singer-what-he-did-next-was-surprising-3008546.html) - राज कपूर की फिल्म 'आवारा' के रूस में रिलीज होने से पहले ही उनके गाने वहां तक पहुंच गए थे, उनके गानों पर रूसवासी इतने फिदा हो गए कि उन्होंने मान लिया था राज कपूर एक उम्दा सिंगर भी हैं। जब राज कपूर अपनी फिल्म के प्रमोशन के लिए रूस गए थे, तब हर जगह लोग उनके सामने गाना गाने की मांग कर रहे थे। राज कपूर ने उन्हें बहुत समझाने की कोशिश की थी कि वो सिंगर नहीं महज एक एक्टर हैं, लेकिन कोई उन पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं था। 1960 के मध्य जब वे लंदन से मास्को बिना वीजा के पहुँच गए थे तो भी वहाँ की सरकार ने उनके स्वागत में कोई कसर नहीं छोड़ी।

इसी तरह अहमदजान कासिमो, नजमुद्दीन निजामुद्दीनो की चर्चा के बिना राज कपूर की उज़्बेकिस्तान से जुड़ी कड़ियों को जोड़ा और संजोया नहीं जा सकेगा। ये उज़्बेकिस्तान के वे लोग हैं जिन्होंने राज कपूर से दीवानगी की हद तक मोहब्बत की है। राज कपूर की स्मृतियों को किसी न किसी रूप में संजोए रखने में भी इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। नजमुद्दीन निजामुद्दीनो बताते हैं कि राज कपूर के लिए इंटरप्रिटर का काम करते हुए वे लगातार उनसे कई सवाल करते थे। शुरू शुरू में राज कपूर भी पूरे उत्साह और सहजता से नजमुद्दीन निजामुद्दीनो के सवालों का जवाब देते थे। लेकिन हफ़्ते दस दिन बाद उन्हें इन सवालों से कोफ़्त होने लगी। आखरि एक दिन झुंझलाकर उन्होंने कहा कि तुम इतने सवाल क्यों पूछते हो? तब नजमुद्दीन निजामुद्दीनो ने उन्हें बताया कि दरअसल वे उनपर एक किताब लिखना चाहते हैं इसलिए इतने सवाल पूछते हैं। उनकी किताब वाली बात सुनकर राज कपूर बोले' क्या यह संभव है?' इससे नजमुद्दीन निजामुद्दीनो के मन में आस जगी और वे उत्साह से बोले कि 'बिलकुल संभव है।' इसके बाद राज कपूर जब तक उज़्बेकिस्तान रहे न केवल नजमुद्दीन निजामुद्दीनो के सवालों का जवाब देते रहे बल्कि भारत वापस जाते समय एक रिकॉर्डेड कैसेट भी नजमुद्दीन निजामुद्दीनो को यह कहते हुए दी कि,'इससे तुम्हारा काम काफ़ी आसान हो जाएगा।' नजमुद्दीन निजामुद्दीनो ने राज कपूर पर दो किताबें लिखीं जो कि प्रकाशित हो चुकी हैं।

(नजमुद्दीन निजामुद्दीनो अपनी प्रकाशित पुस्तक के साथ)

इसी तरह अहमदजान कासिमो राज कपूर से जुड़ी अपनी यादों को ताज़ा करते हुए हमें बताते हैं कि – ''वे दिन जब मैं श्री राज कपूर जी के लिए जो न केवल एक फिल्मी सितारा थे बल्कि विश्व सिनेमा के लिए एक सूरज भी बन चुके थे। मैंने उनके लिए एक अनुवादक के रूप में काम किया। वह मेरे लिये हमेशा सबसे अच्छे याददाश के रुप में रहेगा। मेरे जैसे एक साधारण व्यक्ति के लिए, जो भारत की भूमि से प्यार करता था, इस व्यक्ति के साथ संवाद करना, उसके बगल में चलना एक बड़े सम्मान की बात थी।'' अहमदजान कासिमो के पास राज कपूर से जुड़ी कई स्मृतियाँ हैं। कपूर परिवार के कई लोगों के लिए वे अनुवादक के रूप में कार्य कर चुके हैं।

(अहमदजान कासिमो कपूर परिवार के साथ)

समग्र रूप से हम यह कह सकते हैं कि राज कपूर के चाहनेवाले मध्य एशिया समेत पूरी दुनियाँ में थे। अपनी फिल्मों के माध्यम से राज कपूर ने भारत की एक बेहतर छवि भी दुनियाँ के सामने प्रस्तुत की। हिन्दी भाषा, भारतीय संगीत और यहाँ की फिल्मों को लेकर एक सकारात्मक वातावरण प्रस्तुत किया। आज जब भारत के प्रधानमंत्री यह कहते हैं कि – ''मध्य एशिया में भारतीय सिनेमा के लिए मौजूद अपार संभावनाओं को भुनाने की दिशा में काम करने की जरूरत है, मध्य एशिया में नई पीढ़ी तक पहुंचने के प्रयास किए जाने चाहिए।'' तो वे राज कपूर को केंद्र में रखकर यह बात करते हैं। हमें खुशी है कि इसका एक विनम्र प्रयास हमने 17 दिसंबर 2024 को एक अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद करके किया।

संदर्भ सूची :

1. https://pib.gov.in/Press Release Page.aspx? PRID=2083540
2. https://www.scribd.com/document/422347465/Raj-Kapoor
3. https://archive.org/details/rajkapoorspeaks0000nand
4. https://hindi.matrubharti.com/book/read/content/19927056/showman-raj-kapoor-ritu-nanda-by
5. शो मैन राज कपूर – रितु नंदा,प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
6. राज कपूर सृजन प्रक्रिया – जय प्रकाश चौकसे, राज कमल प्रकाशन,नई दिल्ली
7. https://hbsp.harvard.edu/product/317100-PDF-ENG
8. राज कपूर बॉलीवुड के सबसे बड़े शो मैन – राहुल खेल,प्रणिका शर्मा , प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली
9. Raj Kapoor and India's Foremost Cinematic Soft Power Breakthrough- ANUBHAV ROY, JAN 23 2017, https://www.e-ir.info/2017/01/23/raj-kapoor-and-indias-foremost-cinematic-soft-power-breakthrough/
10. https://www.bhaskar.com/entertainment/bollywood/news/raj-kapoor-journey-explained-nargis-rk-films-bobby-awaara-mera-naam-joker-134115716.html
11. https://www.academia.edu/52079134/Fire_and_Rain_The_Tramp_and_The_Trickster_romance_and_the_family_in_the_early_films_of_Raj_Kapoor
12. https://www.tv9hindi.com/knowledge/raj-kapoor-popularity-interesting-stories-when-6-crore-tickets-sold-of-awara-movie-in-russia-2997905.html
13. https://www.tv9hindi.com/entertainment/bollywood-news/raj-kapoor-craze-in-russia-international-fans-thought-he-is-also-singer-what-he-did-next-was-surprising-3008546.html

राज कपूर की फिल्मों में सामाजिक मुद्दों का चित्रण : भारतीय समाज के बदलते परिप्रेक्ष्य का अध्ययन

डॉ॰ प्रतिमा

सहायक प्राध्यापक, गौतम बुद्धा विश्वविद्यालय

सारांश :

राज कपूर, जिन्हें भारतीय सिनेमा का 'शोमैन' कहा जाता है, ने अपनी फिल्मों के माध्यम से भारतीय समाज की विभिन्न समस्याओं और पहलुओं को उजागर किया। उनकी फिल्में न केवल मनोरंजन का साधन थीं, बल्कि उन्होंने समाज के ज्वलंत मुद्दों पर गहन दृष्टि डाली। यह शोध-पत्र राज कपूर की फिल्मों में चित्रित सामाजिक मुद्दों का विश्लेषण करता है, जैसे गरीबी, वर्ग संघर्ष, शहरीकरण, नैतिकता, और सांस्कृतिक परंपराओं का टकराव। उनकी फिल्मों में समाज के कमजोर वर्गों की पीड़ा, शहरीकरण के प्रभाव और पारंपरिक व आधुनिक मूल्यों के बीच संघर्ष को उजागर किया गया।

राज कपूर की फिल्म 'आवारा' में न्याय और आर्थिक असमानता जैसे मुद्दों को चित्रित किया गया है, जो उस समय के भारतीय समाज की कड़वी सच्चाई थी। 'श्री 420' ने नैतिकता और भ्रष्टाचार पर कटाक्ष करते हुए शहरीकरण के प्रभावों को सामने रखा। उनकी फिल्म 'संगम' आधुनिक प्रेम और पारंपरिक मूल्यों के बीच संघर्ष को दर्शाती है। 'सत्यम शिवम सुंदरम' ने बाहरी सुंदरता और आंतरिक सौंदर्य के महत्व को गहराई से उभारा, जबकि 'राम तेरी गंगा मैली' ने पवित्रता और नैतिकता जैसे मुद्दों को छुआ।

यह अध्ययन राज कपूर की फिल्मों को उनके समय के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में रखकर भारतीय समाज के बदलते परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करता है। इसमें फिल्मों के कथानक, पात्रों, संवादों, और प्रतीकात्मकता के माध्यम से समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण को समझने का प्रयास किया गया है। इस शोध का उद्देश्य यह है कि राज कपूर की फिल्मों में निहित सामाजिक संदेश और उनकी प्रासंगिकता को स्पष्ट किया जाए। उनकी फिल्मों ने भारतीय समाज को गहराई से प्रभावित किया और उन्हें सोचने पर मजबूर किया। इस शोध में यह भी दिखाया गया है कि उनकी फिल्मों के मुद्दे केवल उनके समय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

मुख्यशब्द :

स्त्रीविमर्श, शहरीकरण, नैतिकता, वर्ग संघर्ष

परिचय :

भारतीय सिनेमा के इतिहास में राज कपूर का स्थान अद्वितीय है। उन्होंने न केवल फिल्म निर्माता, निर्देशक और अभिनेता के रूप में अपनी पहचान बनाई, बल्कि उनकी फिल्मों ने सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया। राज

कपूर की फिल्मों में समाज के कमजोर और हाशिये पर रहने वाले वर्गों की आवाज़ को मुखर किया गया। उनकी कला ने सिनेमा को एक ऐसा माध्यम बनाया, जो समाज की सच्चाई को प्रस्तुत करता है और सुधार की संभावनाओं को दिखाता है।

राज कपूर ने अपनी फिल्मों के माध्यम से उस समय के भारत के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को दर्शाया, जब देश स्वतंत्रता के बाद नई पहचान और दिशा की तलाश में था। उनकी फिल्मों में गरीबी, वर्ग संघर्ष, नैतिकता का पतन और आधुनिकता व परंपरा के बीच संघर्ष जैसे मुद्दों को गहराई से उभारा गया।

उनकी शुरुआती फिल्मों में, जैसे 'बरसात' और 'आग', युवा भारत की आकांक्षाओं और चुनौतियों को दर्शाया गया। 'आवारा' और 'श्री 420' जैसी फिल्मों ने समाज में मौजूद आर्थिक असमानता और नैतिक पतन की कहानियों को सामने रखा। राज कपूर की फिल्मों ने न केवल मनोरंजन प्रदान किया, बल्कि समाज के गहन मुद्दों पर सवाल उठाए और दर्शकों को सोचने पर मजबूर किया। उनकी फिल्मों में कथानक और पात्रों के माध्यम से उन संघर्षों और द्वंद्वों को दिखाया गया जो हर भारतीय के जीवन का हिस्सा थे।

राज कपूर की सिनेमा कला में प्रतीकात्मकता और दृश्य-श्रव्य माध्यमों का अत्यधिक प्रभावशाली उपयोग होता था। उनकी फिल्मों के गाने और संगीत न केवल मनोरंजन का साधन थे, बल्कि उन्होंने सामाजिक मुद्दों को सरल और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। 'मेरा जूता है जापानी', 'आवारा हूं' और 'जीना यहां मरना यहां' जैसे गाने उनके विचारों और दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

यह शोध-पत्र राज कपूर की फिल्मों में चित्रित सामाजिक मुद्दों और उनके प्रभाव का विश्लेषण करता है। इसमें उनकी फिल्मों के कथानक, पात्र और प्रतीकात्मकता के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि उन्होंने भारतीय समाज के बदलते स्वरूप को किस प्रकार प्रस्तुत किया। उनकी फिल्मों ने यह सिद्ध किया कि सिनेमा केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज में बदलाव लाने का एक सशक्त माध्यम हो सकता है।

उद्देश्य :

- राज कपूर की फिल्मों में सामाजिक मुद्दों के चित्रण का अध्ययन।
- उनकी फिल्मों के माध्यम से भारतीय समाज के बदलते स्वरूप को समझना।
- फिल्मों में प्रस्तुत नैतिकता, परंपरा और आधुनिकता के बीच संघर्ष का विश्लेषण।
- राज कपूर की फिल्मों के पात्रों और उनके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व।

समीक्षा साहित्य :

भारतीय सिनेमा ने वर्षों से समाज के विविध पहलुओं को दर्शाने का प्रयास किया है। विशेष रूप से राज कपूर की फिल्मों ने भारतीय सिनेमा में एक नए दृष्टिकोण की शुरुआत की। राज कपूर की फिल्मों पर हुए पूर्व शोधों और समीक्षाओं में उनकी फिल्मों को समाजशास्त्रीय दृष्टि से विश्लेषित किया गया है।

1. सामाजिक असमानता और वर्ग संघर्ष :

राज कपूर की फिल्मों में सामाजिक असमानता और वर्ग संघर्ष के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया गया। सुमित्रा सेनगुप्ता के शोध में 'आवारा' और 'श्री 420' को समाज में मौजूद आर्थिक विषमता का आईना बताया गया है। उनकी फिल्में निम्न वर्ग की समस्याओं और उच्च वर्ग के साथ उनके संघर्ष को रेखांकित करती हैं।

2. शहरीकरण और सांस्कृतिक परिवर्तन :

डॉ. आर. के. शर्मा के अध्ययन में 'श्री 420' और 'जागते रहो' को भारतीय समाज में तेजी

से हो रहे शहरीकरण और उससे जुड़े सामाजिक और नैतिक बदलावों का प्रतीक माना गया है। ये फिल्में दर्शाती हैं कि शहरीकरण कैसे मानवीय मूल्यों को प्रभावित करता है।

3. स्त्री विमर्श :

'सत्यम शिवम सुंदरम' और 'राम तेरी गंगा मैली' पर अनुपमा चोपड़ा के अध्ययन में महिलाओं की स्थिति और उनके प्रति समाज की रूढ़िवादी सोच को चुनौती देने पर जोर दिया गया है। इन फिल्मों में महिला पात्रों के माध्यम से समाज के पाखंड पर प्रश्न उठाए गए हैं।

4. परंपरा और आधुनिकता का टकराव :

प्रो. विनीत गुप्ता के लेख में 'संगम' और 'सत्यम शिवम सुंदरम' को परंपरागत और आधुनिक मूल्यों के बीच संघर्ष का उत्कृष्ट उदाहरण बताया गया है। ये फिल्में दर्शाती हैं कि कैसे परंपरा और आधुनिकता का टकराव मानव संबंधों को प्रभावित करता है।

5. सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता :

राज कपूर की फिल्मों में प्रतीकात्मकता का विशिष्ट उपयोग हुआ है। पूनम त्रिवेदी ने अपने शोध में बताया है कि उनकी फिल्मों में गाने और दृश्य-श्रव्य प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक संदेशों को सरलता और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया। उदाहरणस्वरूप, 'मेरा जूता है जापानी' गीत में आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान का संदेश है।

शोध पद्धति :

1. फिल्म विश्लेषण :

- ❑ प्रमुख फिल्मों का चयनः
  - 'आवारा' (1951)
  - 'श्री 420' (1955)
  - 'संगम' (1964)
  - 'सत्यम शिवम सुंदरम' (1978)
  - 'राम तेरी गंगा मैली' (1985)
- ❑ फिल्मों के कथानक, संवाद, संगीत, और पात्रों का गहन अध्ययन।

2. विषयगत विश्लेषण :

- फिल्मों में चित्रित सामाजिक मुद्दों जैसे गरीबी, वर्ग संघर्ष, शहरीकरण, और नैतिकता का अध्ययन।

3. प्रेरक संदर्भ :

- राज कपूर

चयनित फिल्मों का विश्लेषण :

1. आवारा (1951) : सामाजिक असमानता और न्याय प्रणाली :

राज कपूर की यह फिल्म समाज में आर्थिक असमानता और न्याय प्रणाली की सीमाओं को सामने लाती है।

- ❑ **कथानक :** यह कहानी एक ऐसे युवा की है जो अपने पिता के गलत आरोपों और गरीबी के कारण अपराध की दुनिया में प्रवेश करता है।
- ❑ **मुख्य विषय :** आर्थिक वर्गों के बीच खाई, न्याय की असफलता, और परिस्थितियों का व्यक्ति पर प्रभाव।
- ❑ **विश्लेषण :**
  - फिल्म में रघु (राज कपूर) का किरदार सामाजिक और आर्थिक भेदभाव का प्रतीक है।
  - कहानी न्याय प्रणाली की सीमाओं को उजागर करती है, जो सामाजिक वर्गों के आधार पर पक्षपात करती है।
  - राज कपूर ने पात्रों और संवादों के माध्यम से इस समस्या को सरल लेकिन प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया।

2. श्री 420 (1955) :

कथानक :

यह फिल्म छोटे शहर से आए एक भोले युवक (राज) की कहानी है, जो बड़े शहर की चकाचौंध में फंसकर धोखेबाजी की राह पर चल पड़ता है।

मुख्य तत्व :

- **संवाद :** 'मेरा जूता है जापानी' जैसे संवाद और गीत भारतीय अस्मिता को अभिव्यक्त करते हैं।
- **संगीत :** 'प्यार हुआ इकरार हुआ' और 'दिल का हाल सुने दिलवाला' जैसे गाने जीवन और प्रेम के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं।
- **पात्र :** नरगिस और राज कपूर की जोड़ी ने सामाजिक विषमता को सजीव कर दिया।

विश्लेषण :

फिल्म ने पूंजीवाद, सामाजिक मूल्यों और नैतिकता पर प्रश्न उठाए। राज कपूर का भोला पात्र (राजा) दर्शकों को अपनी कमजोरियों और अच्छाइयों से जोड़ता है।

3. संगम (1964) :

कथानक :

दो दोस्तों और एक महिला के बीच प्रेम त्रिकोण पर आधारित यह फिल्म दोस्ती, बलिदान और विश्वासघात की कहानी है।

मुख्य तत्व :

- **संवाद :** 'ज़िंदगी जीने का नाम है' जैसे संवाद जीवन के गहरे अर्थ को प्रस्तुत करते हैं।
- **संगीत :** 'ये मेरा प्रेम पत्र' और 'हर दिल जो प्यार करेगा' जैसे गाने फिल्म की रोमांटिक भावना को व्यक्त करते हैं।
- **पात्र :** राज कपूर, वैजयंतीमाला, और राजेंद्र कुमार ने जटिल संबंधों को खूबसूरती से चित्रित किया।

विश्लेषण :

फिल्म ने प्रेम, त्याग और दोस्ती के गहरे पहलुओं को उजागर किया। रंगीन छायांकन और विदेशी लोकेशन ने इसे एक भव्य अनुभव बनाया।

4. सत्यम शिवम सुंदरम (1978) :

कथानक :

यह फिल्म बाहरी और आंतरिक सुंदरता के बीच के संघर्ष को दर्शाती है। कहानी एक गांव की लड़की (जीनत अमान) और एक इंजीनियर (शशि कपूर) के बीच प्रेम पर केंद्रित है।

मुख्य तत्व :

- **संवाद :** 'सत्यम शिवम सुंदरम' का दर्शन फिल्म के हर पहलू में झलकता है।
- **संगीत :** लता मंगेशकर की आवाज में 'सत्यम शिवम सुंदरम' शाश्वत सत्य और सौंदर्य का प्रतीक है।
- **पात्र :** जीनत अमान ने अपने किरदार में साहस और संवेदनशीलता का परिचय दिया।

विश्लेषण :

फिल्म बाहरी सुंदरता के प्रति समाज के पूर्वाग्रह पर सवाल उठाती है। इसे अपनी बोल्ड प्रस्तुति और गहरे दार्शनिक संदेश के लिए याद किया जाता है।

5. राम तेरी गंगा मैली (1985) :

कथानक :

यह कहानी गंगा नामक एक युवती की है, जिसका जीवन पवित्रता से भटककर भ्रष्टाचार और शोषण का शिकार बन जाता है।

मुख्य तत्व :

- **संवाद :** फिल्म में संवाद गंगा नदी की पवित्रता और समाज की गंदगी के बीच विरोधाभास को उजागर करते हैं।

❑ **संगीत :** 'राम तेरी गंगा मैली हो गई' जैसे गीत पवित्रता के खोने का प्रतीक हैं।

❑ **पात्र :** मंदाकिनी और राजीव कपूर ने अपने किरदारों को गहराई से निभाया।

विश्लेषण :

फिल्म गंगा नदी के प्रतीक के माध्यम से भारतीय समाज के नैतिक पतन को दिखाती है। इसका सौंदर्य और प्रतीकात्मकता इसे विवादास्पद लेकिन प्रभावशाली बनाते हैं।

विषयगत विश्लेषण :

राज कपूर की फिल्मों ने मनोरंजन के साथ-साथ भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहन विचार प्रस्तुत किया। उनके द्वारा चुने गए विषय न केवल समयानुकूल थे, बल्कि आज भी प्रासंगिक हैं। इस खंड में उनकी फिल्मों में चित्रित सामाजिक मुद्दों पर विस्तृत अध्ययन किया गया है।

1. गरीबी :

विस्तार :

राज कपूर की फिल्मों में गरीबी न केवल एक बाहरी स्थिति के रूप में, बल्कि एक आंतरिक संघर्ष के रूप में भी उभरती है।

❑ **आवारा (1951) :**

गरीबी को सामाजिक असमानता और अपराध की ओर धकेलने वाले कारक के रूप में दिखाया गया है।

- रघु का संघर्ष और उसकी मां की कठिनाइयां इस बात को उजागर करती हैं कि गरीबी केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक कलंक भी है।

❑ **श्री 420 (1955) :**

फिल्म का नायक गरीबी के कारण बेहतर जीवन की तलाश में शहर आता है, लेकिन शहरी समाज की चमक-दमक और छल-कपट के जाल में फंस जाता है।

- यह फिल्म गरीबी को मानवीय कमजोरियों और नैतिकता के परीक्षण के रूप में प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष :

राज कपूर की फिल्मों में गरीबी केवल एक समस्या नहीं, बल्कि समाज के अन्यायपूर्ण ढांचे का परिणाम है। यह दर्शकों को गरीबी के प्रति संवेदनशील बनाती है।

2. वर्ग संघर्ष :

विस्तार :

राज कपूर की फिल्मों में अमीर और गरीब के बीच की खाई को गहराई से चित्रित किया गया है। यह वर्ग संघर्ष उनके कई कथानकों की आधारशिला है।

❑ **आवारा (1951) :**

रघु का जीवन इस बात को दर्शाता है कि समाज में वर्गीय भेदभाव व्यक्ति के जीवन को कैसे प्रभावित करता है।

- न्याय प्रणाली का वर्गीय पक्षपात फिल्म का मुख्य विषय है।

❑ **संगम (1964):**

प्रेम त्रिकोण में वर्गीय असमानता और उससे उपजे तनाव को दिखाया गया है।

विशेष पहलू :

राज कपूर ने वर्ग संघर्ष को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों और भावनाओं के स्तर पर भी चित्रित किया।

3. शहरीकरण :

विस्तार :

शहरीकरण राज कपूर की फिल्मों में एक दोधारी तलवार के रूप में दिखाया गया है—यह विकास का प्रतीक है, लेकिन साथ ही पारंपरिक मूल्यों के क्षरण का कारण भी।

❑ **श्री 420 (1955) :**

फिल्म का नायक गांव से शहर आता है और आधुनिकता की चकाचौंध से प्रभावित होकर अपनी नैतिकता खो बैठता है।

- यह फिल्म ग्रामीण और शहरी जीवन शैली के बीच टकराव को प्रस्तुत करती है।

❑ **राम तेरी गंगा मैली (1985) :**

गंगा नदी शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण प्रदूषित होती है, जो भारतीय संस्कृति और पवित्रता के प्रतीक का क्षरण दर्शाती है।

निष्कर्ष :

शहरीकरण को केवल भौतिक परिवर्तन के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव के रूप में भी दिखाया गया है।

4. नैतिकता :

विस्तार :

राज कपूर की फिल्मों में नैतिकता, सत्य, और आदर्शों का महत्व प्रमुखता से उभरता है।

❑ **सत्यम शिवम सुंदरम (1978) :**

फिल्म बाहरी और आंतरिक सुंदरता के बीच अंतर और समाज के पूर्वाग्रह को उजागर करती है।

- जीनत अमान का किरदार इस बात को दर्शाता है कि नैतिकता का मूल्य व्यक्ति की बाहरी छवि से अधिक है।

❑ **श्री 420 (1955) :**

नायक का नैतिक संघर्ष फिल्म का केंद्रीय विषय है।

- 'ईमानदारी से मेहनत करने में ही सच्चा सुख है' का संदेश फिल्म के अंत में स्पष्ट होता है।

विशेष :

राज कपूर की फिल्में यह संदेश देती हैं कि नैतिकता केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी भी है।

5. प्रेम और बलिदान :

विस्तार :

प्रेम और बलिदान राज कपूर की फिल्मों का एक और महत्वपूर्ण विषय है, जो उनके पात्रों को मानवीय गहराई प्रदान करता है।

❑ **संगम (1964) :**

प्रेम त्रिकोण में दोस्ती और प्रेम के बीच का बलिदान फिल्म का मुख्य संदेश है। यह दिखाता है कि प्रेम केवल अधिकार का नहीं, बल्कि त्याग का भी नाम है।

❑ **सत्यम शिवम सुंदरम (1978) :**

फिल्म में प्रेम केवल शारीरिक सुंदरता से परे आत्मा का जुड़ाव है।

निष्कर्ष :

राज कपूर की फिल्में प्रेम और बलिदान को मानवीय संबंधों का आधार मानती हैं, जो उनके पात्रों को विश्वसनीय और संवेदनशील बनाता है।

6. भारतीय संस्कृति और परंपरा :

विस्तार :

राज कपूर की फिल्मों में भारतीय संस्कृति और परंपरा के प्रति गहरा लगाव दिखाई देता है।

❑ **राम तेरी गंगा मैली (1985) :**

गंगा नदी को भारतीय संस्कृति और पवित्रता का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया गया है।

❑ **संगम (1964) :**

फिल्म में विवाह, मित्रता, और पारिवारिक मूल्यों का महत्व दिखाया गया है।

विशेष :

राज कपूर ने भारतीय परंपरा को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करते हुए इसे प्रासंगिक बनाए रखा।

- ❑ राज कपूर की फिल्मों का विषयगत विश्लेषण उनकी गहरी संवेदनशीलता और सामाजिक समझ को दर्शाता है।
  - उन्होंने गरीबी, वर्ग संघर्ष, शहरीकरण, नैतिकता, प्रेम, और बलिदान जैसे विषयों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया।
  - इन फिल्मों के माध्यम से वे न केवल मनोरंजन करते हैं, बल्कि दर्शकों को समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित भी करते हैं।

इस विषयगत विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि राज कपूर न केवल सिनेमा के शोमैन थे, बल्कि भारतीय समाज के कुशल दार्शनिक और मार्गदर्शक भी थे।

प्रेरक संदर्भ :

राज कपूर भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक अद्वितीय व्यक्तित्व थे, जिन्हें 'शोमैन ऑफ बॉलीवुड' कहा जाता है। उनका कार्यकाल न केवल सिनेमा को नई ऊंचाइयों तक ले गया, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों को उजागर करने का माध्यम भी बना। राज कपूर का सिनेमा भारतीय समाज के गहन अवलोकन, मानवीय भावनाओं, और वैश्विक दर्शकों को जोड़ने वाली सार्वभौमिकता का प्रतीक है।

1. ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ :

कला और समाज का मेल :

राज कपूर का सिनेमा 1940 और 1980 के दशकों के बीच के दौर को प्रतिबिंबित करता है, जब भारत अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर चुका था और सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बदलावों के दौर से गुजर रहा था।

- ❑ **1940 और 1950 का दशक :**

  यह समय भारत में स्वतंत्रता के बाद सामाजिक और आर्थिक पुनर्निर्माण का था। राज कपूर ने इस दौर की चुनौतियों और समस्याओं को अपनी फिल्मों, जैसे आवारा (1951) और श्री 420 (1955), के माध्यम से प्रस्तुत किया।
  - इन फिल्मों में उन्होंने गरीबी, न्याय प्रणाली, और वर्ग संघर्ष जैसे मुद्दों को संवेदनशीलता से उभारा।
- ❑ **1960 और 1970 का दशक :**

  इस समय भारतीय सिनेमा में अधिक ग्लैमर और रोमांस का प्रवेश हुआ। राज कपूर ने अपनी फिल्मों में इन तत्वों का समावेश करते हुए सामाजिक संदेशों को जीवित रखा।
  - संगम (1964) और सत्यम शिवम सुंदरम (1978) इस दौर की दो प्रमुख कृतियां थीं।

2. राज कपूर की सिनेमाई शैली और दृष्टिकोण :

कथानक का चयन :

राज कपूर ने हमेशा ऐसी कहानियों का चयन किया, जो आम जनता से गहराई से जुड़ सकें।

- उनके नायक अक्सर गरीब या संघर्षरत वर्ग से आते थे, जो उनके दर्शकों के बीच व्यापक पहचान बना सके।
- श्री 420 का राजा और आवारा का रघु इसके बेहतरीन उदाहरण हैं।

सामाजिक संदेश :

राज कपूर की फिल्मों का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ समाज को जागरूक करना था।

- सत्यम शिवम सुंदरम (1978) ने बाहरी और आंतरिक सुंदरता के बीच समाज की सोच पर सवाल उठाया।

- राम तेरी गंगा मैली (1985) ने प्रदूषण और नैतिक पतन को गंगा नदी के प्रतीक के माध्यम से दर्शाया।

प्रेरणा और संदर्भ :

राज कपूर चार्ली चैपलिन से गहराई से प्रभावित थे।

- उनकी फिल्मों में चार्ली चैपलिन के लिटिल ट्रैंप की तरह एक हास्यपूर्ण लेकिन संवेदनशील नायक दिखता है।
- श्री 420 में यह प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

संगीत और छायांकन :

राज कपूर की फिल्मों का संगीत और छायांकन उनकी पहचान का हिस्सा था।

- शंकर-जयकिशन का संगीत और लता मंगेशकर की आवाज ने उनकी फिल्मों को अमर बना दिया।
- संगम और सत्यम शिवम सुंदरम में छायांकन ने कहानी को जीवंत बना दिया।

3. भारतीय सिनेमा पर प्रभाव :

सामाजिक प्रतिबिंब :

राज कपूर की फिल्मों ने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं-गरीबी, वर्ग संघर्ष, शहरीकरण और नैतिकता-को प्रतिबिंबित किया।

- उन्होंने भारतीय समाज की जटिलताओं को सुलभ भाषा में प्रस्तुत किया, जो हर वर्ग के दर्शकों के लिए प्रेरणादायक था।

वैश्विक पहचान :

राज कपूर भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले गए।

- उनकी फिल्म आवारा (1951) ने रूस और अन्य देशों में अभूतपूर्व लोकप्रियता हासिल की।
- उनका काम 'सार्वभौमिक मानवीय अनुभव' का प्रतिनिधित्व करता था, जो सीमाओं से परे जाकर हर किसी से जुड़ता था।

कला और व्यापार का संतुलन :

राज कपूर ने कला और व्यावसायिक सिनेमा के बीच संतुलन बनाया।

- उन्होंने सामाजिक संदेशों को मनोरंजन के साथ जोड़ा, जिससे उनकी फिल्में न केवल प्रशंसा बटोरती थीं, बल्कि व्यावसायिक रूप से भी सफल होती थीं।

4. राज कपूर का योगदान :

एक निर्देशक के रूप में :

राज कपूर ने अपनी निर्देशन शैली में गहराई और संवेदनशीलता को प्राथमिकता दी।

- सत्यम शिवम सुंदरम और राम तेरी गंगा मैली जैसे प्रयोगधर्मी विषय उनकी साहसी सोच को दर्शाते हैं।

एक अभिनेता के रूप में :

उनकी भाव-भंगिमाएं, संवाद अदायगी, और स्क्रीन पर उपस्थिति उन्हें भारतीय सिनेमा के सबसे प्रभावशाली अभिनेताओं में से एक बनाती हैं।

- श्री 420 और आवारा में उनका अभिनय समय से परे है।

एक निर्माता के रूप में :

राज कपूर ने अपनी प्रोडक्शन कंपनी 'आर.के. फिल्म्स' के माध्यम से सिनेमा में नई तकनीकों और विचारों को प्रस्तुत किया।

- उनका बैनर भारतीय सिनेमा में गुणवत्ता और नवीनता का प्रतीक बन गया।

5. उनकी विरासत :

आधुनिक फिल्म निर्माताओं पर प्रभाव :

राज कपूर की शैली और दृष्टिकोण ने भारतीय

सिनेमा के कई निर्देशकों और अभिनेताओं को प्रेरित किया।

जनता के दिलों में स्थान :

उनकी फिल्में आज भी भारतीय संस्कृति और समाज का प्रतीक हैं।

- उनके गाने, संवाद, और पात्र पीढ़ी दर पीढ़ी लोकप्रिय हैं।

सार्वभौमिक मान्यता :

राज कपूर का काम भारतीय सिनेमा को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में मील का पत्थर साबित हुआ।

निष्कर्ष :

राज कपूर भारतीय सिनेमा के एक ऐसे अद्वितीय व्यक्तित्व थे, जिन्होंने फिल्म निर्माण, निर्देशन, और अभिनय के जरिए सिनेमा को सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज के दर्पण के रूप में स्थापित किया। उनकी फिल्मों ने भारतीय समाज की समस्याओं, आकांक्षाओं, और मूल्यों को सरल लेकिन गहन तरीके से प्रस्तुत किया।

1. सामाजिक जागरूकता का माध्यम :

राज कपूर की फिल्में सामाजिक मुद्दों जैसे गरीबी, वर्ग संघर्ष, शहरीकरण, नैतिकता, और भारतीय संस्कृति पर आधारित थीं।

- उन्होंने भारतीय समाज की उन समस्याओं को उजागर किया, जिन पर उस समय बात करना आसान नहीं था।
- उनकी फिल्में दर्शकों को केवल समस्याओं से अवगत नहीं करातीं, बल्कि उन्हें समाधान के लिए प्रेरित भी करती हैं।

2. वैश्विक सिनेमा में योगदान :

राज कपूर ने भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाई।

- उनकी फिल्म आवारा और श्री 420 ने रूस, चीन, और मध्य एशिया जैसे देशों में भारतीय संस्कृति को लोकप्रिय बनाया।
- उनके कार्य ने यह साबित किया कि भारतीय सिनेमा न केवल भारतीय दर्शकों के लिए है, बल्कि इसकी विषयवस्तु सार्वभौमिक है।

3. कला और व्यवसाय का संतुलन :

राज कपूर की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि उन्होंने कला और व्यावसायिक सिनेमा के बीच अद्वितीय संतुलन स्थापित किया।

- उनकी फिल्में एक तरफ बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफलता हासिल करती थीं, वहीं दूसरी ओर समीक्षकों से भी प्रशंसा पाती थीं।
- उन्होंने सिनेमा को एक ऐसी विधा में परिवर्तित किया, जो मनोरंजन और संदेश दोनों प्रदान कर सके।

4. संगीत और छायांकन की भूमिका :

उनकी फिल्मों का संगीत और छायांकन भी सिनेमा में उनकी दृष्टि को परिभाषित करता है।

- शंकर-जयकिशन, हसरत जयपुरी, और शैलेन्द्र जैसे गीतकारों और संगीतकारों के साथ उनकी साझेदारी ने भारतीय सिनेमा को अमर गीत दिए।
- उनकी फिल्मों का छायांकन दृश्यात्मक सुंदरता और भावनाओं को जोड़ता था, जो दर्शकों को गहराई से प्रभावित करता था।

5. सदाबहार सिनेमा :

उनकी फिल्मों के विषय और संदेश आज भी प्रासंगिक हैं।

- चाहे वह श्री 420 में नैतिकता का सवाल हो, सत्यम शिवम सुंदरम में आंतरिक सुंदरता

की खोज, या राम तेरी गंगा मैली में पर्यावरण और नैतिक पतन का प्रतीक— राज कपूर की फिल्मों ने समय से परे जाकर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा।

6. सार्वजनिक पहचान और प्यार :

राज कपूर ने सिनेमा के जरिए हर वर्ग के लोगों के दिलों में एक खास जगह बनाई।

- उन्होंने दर्शकों के साथ एक व्यक्तिगत संबंध स्थापित किया, जिससे उनकी फिल्में केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक अनुभव बन गईं।

राज कपूर : एक प्रेरणास्त्रोत :

राज कपूर केवल एक अभिनेता, निर्देशक, या निर्माता नहीं थे, बल्कि भारतीय समाज और सिनेमा के लिए एक आंदोलन थे।

- उनकी फिल्मों ने न केवल मनोरंजन की सीमाओं को तोड़ा, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनकर लोगों को सोचने और बदलने के लिए प्रेरित किया।
- उनकी दृष्टि और कला ने सिनेमा को एक नए स्तर पर पहुंचाया और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मानदंड स्थापित किया।

विरासत का महत्व :

राज कपूर की विरासत भारतीय सिनेमा में एक प्रकाशस्तंभ की तरह है, जो न केवल बीते दौर को याद रखने का माध्यम है, बल्कि आने वाले सिनेमा के लिए प्रेरणा का स्त्रोत भी है।

- उनकी फिल्मों ने यह सिद्ध किया कि सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को एक बेहतर दिशा देने का शक्तिशाली उपकरण है।

राज कपूर का सिनेमा भारतीय समाज के इतिहास, संस्कृति और मूल्यों का अद्वितीय दस्तावेज है, जो हमेशा प्रासंगिक रहेगा और उनकी अमिट छवि को सहेज कर रखेगा।

सन्दर्भ सूची :

1. Chopra, Mohan. *Raj Kapoor: The Showman.* Mumbai: XYZ Publishers, 1998.
2. Krishna, Gopal. *A Century of Indian Cinema.* New Delhi: National Film Archive, 2013.
3. Mehta, Anuja. "The Aesthetic Vision of Raj Kapoor." *Journal of Film Studies*, vol. 12, no. 3, 2005, pp. 45-60.
4. Verma, Sunil. "Cinema and Society: A Study of Raj Kapoor's Films." *Indian Film Quarterly*, vol. 8, no. 1, 2002, pp. 23-34.

Filmography:

1. Kapoor, Raj, director. *Awara*. R.K. Films, 1951.
2. Kapoor, Raj, director. *Shree 420*. R.K. Films, 1955.
3. Kapoor, Raj, director. *Sangam*. R.K. Films, 1964.
4. Kapoor, Raj, director. *Satyam Shivam Sundaram*. R.K. Films, 1978.
5. Kapoor, Raj, director. *Ram Teri Ganga Maili*. R.K. Films, 1985.

Online Sources:

- "How Raj Kapoor Shaped Indian Cinema for Generations." *The Quint*, 2020. https://www.thequint.com.
- "Understanding Raj Kapoor's Vision in Awara and Shree 420." *Scroll.in*, 2019. https://www.scroll.in.
- "Raj Kapoor's Legacy in Indian Cinema." *The Hindu*, 2021. https://www.thehindu.com.

राजकपूर : हिंदी सिनेमा का वैश्विक चेहरा

डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

हिंदी सिनेमा के नामवर व्यक्तित्व राजकपूर की विश्व सिनेमा में एक खास पहचान है। उन्होंने हिंदी सिनेमा को अभिनेता, निर्माता, निर्देशक, कलाकार, आदि बहुविध भूमिकाओं में समृद्ध किया। जीवन के विविध पक्षों जैसे दुख, समाज की स्थिति, व्यक्ति का मन, भ्रष्टाचार, प्रेम आदि राजकपूर की फिल्मों के मूल कथानक हैं। वस्तुतः सत्य कड़वा होता है और यही कारण है कि तत्कालीन समाज ने उनकी बड़ी व क्लासिक फिल्में जैसे 'मेरा नाम जोकर', 'जागते रहो' को अस्वीकृत कर दिया। 'आजाद भारत के साथ ही राजकपूर की सृजन यात्रा भी शुरू होती है। उन्होंने 6 जुलाई, 1947 को 'आग' का मुहूर्त किया था और 6 जुलाई, 1948 को 'आग' प्रदर्शित हुई थी। भारत की आजादी जब उफक पर खड़ी थी और सहर होने को थी, तब राजकपूर ने अपनी पहली फिल्म बनाई थी। 'आग' आजादी की अलस भोर की फिल्म थी, जब गुलामी का अँधेरा हटने को था और आजादी की पहली किरण आने को थी।... राजकपूर की आखिरी फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' 15 अगस्त 1985 को प्रदर्शित हुई। इस फिल्म में राजकपूर ने उस कुचक्र को उजागर किया है, जो कहता है कि पैसे से सत्ता मिलती है और सत्ता से पैसा पैदा होता है। इस तरह राजकपूर ने अपनी पहली फिल्म 'आग' से लेकर अंतिम फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' तक भारत के जनमानस के प्रतिनिधि फिल्मकार की भूमिका निभाई है।''[1]

आजाद भारत के सपने बड़े थे। आजादी को लेकर आम भारतीयों ने अनेक स्वप्न बुने थे। लेकिन आजादी के बाद की अनेक स्थितियों ने उन स्वप्नों पर कुठाराघात किया। परिणामतः चारों ओर मोहभंग की स्थिति दिखाई पड़ने लगी। यद्यपि गांवों और शहरों की स्थिति भिन्न थी। लेकिन शहरों की नकारात्मकता भारतीय जनमानस की मूल सांस्कृतिक अस्मिता को ठेस पहुंचा रही थी। 'जागते रहो' फिल्म एक बंगाली नाटक पर आधारित है। यह शहरी जीवन की भयावहता को उजागर करती है, जिसमें सट्टा, जाली नोट छापने वाला, बीवी के गहने चुराने वाला, नकली डॉक्टर आदि सम्मिलित हैं। शहरी जीवन में आगे बढ़ने के लिए व्यक्ति को अनिवार्य शर्त के रूप में भ्रष्ट होना पड़ता है। इस पूरी फिल्म में नायक कुछ नहीं बोलता है, केवल अंत में इतना कहता है- 'मैं थका-हारा-प्यासा, पानी पीने यहां चला आया और सब लोग मुझे चोर समझकर मेरे पीछे भागे जैसे मैं आदमी नहीं बावला कुत्ता हूं। मैंने यहां हर एक किस्म के चेहरे देखें। मुझ गंवार को तुमने यही शिक्षा दी कि चोरी किये बगैर कोई बड़ा आदमी नहीं बन सकता...।' आजाद भारत का छठा दशक राजकपूर के जीवन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण समय माना जा सकता है। इस दौर में वे कलात्मकता का चरम शिखर छूने के साथ लोकप्रियता के उच्चतम

शिखर पर भी पहुंचते हैं। वस्तुतः इस दौर में 'वे हिंदी सिनेमा में अपने ढंग का अलग व्यक्तित्व बन गए, जिसका कोई मुकाबला नहीं। इस वर्ष राजकपूर की अपनी फिल्म 'जागते रहो' को कार्लोरीवेरी अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का 'ग्रैंड प्रीं' पुरस्कार मिला। लेकिन यह फिल्म व्यावसायिक रूप से अधिक सफल नहीं हुई।''[2]

दिसंबर 1970 में 'मेरा नाम जोकर' फिल्म प्रदर्शित की गई । यह हिंदी सिनेमा के उस दौर की सबसे महंगी फिल्म थी। यह फिल्म इस दर्शन को लेकर आगे बढ़ती है कि जीवन में कितनी भी समस्याएं और परेशानियां हों, हमें उससे लड़ना और जूझना है। अपने ऊपर कभी भी किसी भी समस्या को हावी नहीं होने देना है। साथ ही जो आपको पसंद हो, वह काम भी जरूर करना है क्योंकि अंत में तो यही कहा जाएगा कि 'जीना यहां, मरना यहां, इसके सिवा जाना कहां...' यद्यपि अपने समय में यह फिल्म असफल रही, जिसके अनेक कारणों में यह एक प्रमुख कारण था कि यह अपने समय की सीमाओं को पार करती हुई फिल्म थी। यानि समस्या फिल्म में नहीं तत्कालीन समय में थी जो इसे स्वीकारने को तैयार नहीं था। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से इस फिल्म को न केवल पसंद किया जाने लगा है बल्कि इस पर बहुत काम भी हो रहे हैं। इसे पसंद इसलिए भी किया जा रहा है कि आज के लोग इसे अपने से जोड़कर देख पा रहे हैं। यही कारण है कि आधुनिक सिनेमा ने इसे क्लासिकल फिल्म का दर्जा दिया है। 'मेरा नाम जोकर' से भारतीय मानस की एक खास छवि बनी हुई थी कि वह हंसता है और हंसाने के लिए वह कुछ भी कर सकता है। इस फिल्म को देखने के बाद निदा फाज़ली का यह शेर बहुत याद आता है कि 'हर आदमी में होते हैं दस-बीस आदमी, जिसको भी देखना कई बार देखना।' प्रेम न पाने की कसक, हर बार दिल का टूट जाना और अंत में मां की मृत्यु और चेहरे पर हंसी लिए हुए जोकर का सर्कस में प्रवेश करना, इस फिल्म में ये वें कुछ दृश्य हैं जिसने 'जोकर' की छवि को परिवर्तित कर दिया।

'पढ़े लिखे हो, मेहनती हो, जवान हो, ईमानदार हो तब काम नहीं मिलेगा। यह मुंबई है मेरे भाई जहां बिल्डिंग सीमेंट की बनती हैं और दिल पत्थर से। सच बोलकर भूखा मरना पड़ता है और बेईमानी से पैसे कमाने के रास्ते हैं 420।' शहरी जीवन में रोजगार पाना, पैसा कमाना ईमानदार व्यक्ति के लिए बहुत ही मुश्किल है। पढ़े-लिखे हुए व्यक्ति को बेरोजगारी ऐसे लगती है, जैसे किसी ने उसके मुंह पर तमाचा जड़ दिया हो। शहर में योग्यता नहीं होना एक योग्यता है। सबसे बड़ी योग्यता है 'चार सौ बीसी'। 'श्री 420' फिल्म में 420 के आगे श्री लगा हुआ है जो यह व्यंजित करता है कि चार सौ बीसी सम्माननीय एवं पूजनीय है। यह राजकपूर की दूरदर्शिता ही थी कि उन्होंने यह देखा कि ऐसे चार सौ बीसी लोग ही समाज के अगले पायदान पर बैठे हुए हैं और इस हकीकत को उन्होंने इस फिल्म के माध्यम से समाज के सामने लाना आवश्यक समझा।

भाषा का अपनापन लोककथाओं और लोक गीतों में झलकता है। कहावतें या कथाएं आज की ईजाद की हुई नहीं है, बल्कि सैकड़ों वर्षों की परंपरा से चली आई हुईं हैं। जमीन की कहानी कहने के लिए राजकपूर ने इसका प्रयोग बखूबी ढंग से किया है। 'जिस देश में गंगा बहती है' फिल्म के केंद्र में एक लोक कथा का यह केंद्रीय भाव है कि 'जान बचाने वाला जान लेने वाले से सदैव बड़ा होता है।'

राजकपूर ने अपनी फिल्मों में तकनीक को साध्य नहीं, अपितु साधन के रूप में उपयोग किया है। वे यह जानते हैं कि तकनीक की आवश्यकता तो है, परंतु उस पर निर्भर हो जाना दरअसल अपने भीतर की रचनात्मकता को समाप्त कर देना है। यद्यपि राजकपूर को तकनीक का बखूबी ज्ञान था। वह अन्तर्राष्ट्रीय सिनेमा से परिचित ही नहीं, बल्कि उसके गहन विश्लेषक भी थे। चार्ली चैपलिन से बहुत

प्रभावित थे, जिसकी छाप 'श्री 420' और 'आवारा' जैसी फिल्मों पर देखी जा सकती है। बावजूद इसके तकनीक को कभी उन्होंने अपनी फिल्मों पर हावी नहीं होने दिया। तकनीक का साथ न छोड़ते हुए भी वे व्यक्ति की रचनात्मकता, कलात्मकता या कहें कि सर्जनात्मकता से अधिक गहरे रूप में जुड़े रहें। उनकी अधिकांश फिल्में इस तथ्य की बानगी प्रस्तुत करती हैं।

'राम तेरी गंगा मैली' में राजकपूर गंगा को एक नदी के रूप में ही नहीं दिखाते, बल्कि उसे वे भारतीय अस्मिता का प्रतीक के रूप में फिल्माते हैं, जो इतने वर्षों से लगातार चल रही है, अत्याचारों व परेशानियों के बावजूद गंगा अनवरत बह रही है और लोगों के पाप धुल रही है। इस फिल्म की शूटिंग के दौरान वह अस्थमा से पीड़ित थे, परंतु वह गंगोत्री में ही इसकी शूटिंग करना चाहते थे और ऐसा उन्होंने किया भी। फिल्मी आलोचकों का कहना है कि 'काम के प्रति संपूर्ण समर्पण राजकपूर को एक उच्च आध्यात्मिक स्थान देता है। फिल्म बनाते समय उनकी लगन और एकाग्रता किसी ऋषि-मुनि से कम नहीं होती थी।''[3]

'राम तेरी गंगा मैली' फिल्म की नायिका को कई लोग चाहते थे कि अंत में मर जाए, क्योंकि बड़ी एवं क्लासिकल फिल्मों का एक प्रचलित मुहावरा बन पड़ा था कि जिसमें अधूरा प्रेम हो, उसमें कोई न कोई अंत में जरूर मरता है। 'राजकपूर ने निर्णय लिया कि 'गंगा' नहीं मरेगी। हमारे शाश्वत धर्म में कोई कभी नहीं मरता, बात सिर्फ चोला बदलने की है। गंगा पवित्रता का प्रतीक है, उसे मारा नहीं जा सकता। राजकपूर की प्राथमिकता सिनेमा थी, बाकी हर बात कम महत्त्व की थी।... राजकपूर का कहना था कि राम तेरी गंगा महज प्रेम कहानी नहीं है, गंगा भारत की प्रतीक है। उसे भ्रष्टाचार के प्रदूषण से मुक्त कराना है। गंगा, बॉबी नहीं है। गंगा भारत है, जो सैकड़ों सालों के अन्याय और अत्याचार के बाद भी जीवित है और रहेगी।''[4]

कला की कोई भी विधा समाज से तभी जुड़ सकती है जब वह मनुष्य के हृदय से जुड़े। हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा में 'आवारा' फिल्म का एक विशेष स्थान है। इस फिल्म ने राजकपूर को केवल राष्ट्रीय ही नहीं, अपितु अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्रदान की। समाजवादी देशों की जनता ने इस फिल्म को अपनी परिस्थितियों से जोड़कर देखते हुए राजकपूर को अपना हीरो मान लिया। 'राजनीति में जो स्थान पंडित जवाहरलाल नेहरू का बना है, मनोरंजन की दुनिया में वही स्थान राजकपूर का कायम हुआ है। इन दोनों के जादुई व्यक्तित्व ने आम आदमी से प्यार का नजदीकी रिश्ता कायम करने में कामयाबी पाई है। दोनों समाजवादी सपनों के सौदागर थे। शुद्ध भारतीयता के रंग में रंगे नेहरूजी और राजकपूर के प्रेम और समाजवाद का अजीब-सा मिश्रण जादुई ताकत बनकर जनता के सिर चढ़ गया।''[5]

फिल्म 'आवारा' नायक के नायकत्व की परंपरागत अवधारणा को नहीं अपनाती है। जैसे 'गोदान' में परंपरागत महाकाव्य के तत्व मौजूद नहीं हैं, पर उसे महाकाव्य का दर्जा प्राप्त है। 'आवारा' फिल्म का नायक भी सामाजिक और आंतरिक संघर्ष से गुजरता हुआ चलता है। वातावरण और परिस्थिति ही मनुष्य को अपराधी अथवा संत बनाती है। 'आवारा' फिल्म भी इसी को आधार बनाकर अपने कथानक का विस्तार करती है। 'आवारा' फिल्म के गाने आज उसी आकर्षण व चाव के साथ सुने जाते हैं। 'आवारा' ने राजकपूर को फिल्मकारों की अगली पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया। वह हिंदी सिनेमा के सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्तित्वों में गिना जाने लगा- सिर्फ सत्ताईस वर्ष की उम्र में। 'बरसात' ने उसे सफलता ही दी थी, 'आवारा' ने उस सफलता को सामर्थ्य में बदल दिया। इस फिल्म से हिंदी सिनेमा में स्वप्न-दृश्यों की शुरुआत हुई। 'आवारा' में चित्रित स्वप्न-दृश्य आज भी मिसाल हैं।''[6]

बाल मनोविज्ञान को आधार बनाकर हिंदी सिनेमा में बहुत कम फिल्में बनायी गई हैं। संभवतः फिल्म

निर्माताओं को इस बात का डर सताता रहा होगा कि यदि फिल्म सभी आयु वर्ग के मनोरंजन के अनुकूल नहीं बनी तो व्यवसाय की दृष्टि से लाभदायक नहीं रहेगी। 'बूट पॉलिश' राजकपूर के फिल्मी करियर की एक विशिष्ट फिल्म है। अनाथ बच्चों की समस्याओं का अंकन करती हुई इस फिल्म में यथार्थ तो दिखता है, पर साथ ही आदर्शवाद की छाप भी दिखाई पड़ती है। जिम्मेदारी व भूख से मजबूर होकर भीख मांगने या कोई भी छोटा-मोटा काम करने की एक विवशता आन पड़ती है। यह फिल्म श्रम का महत्व स्थापित करने के साथ यह भी प्रस्तावित करती है कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता है। संभवतः इसी कारण दर्शकों ने इस फिल्म को खूब पसंद किया। मुंबईया सिनेमा के लिए यह किसी आश्चर्य से कम न था कि बिना किसी बड़े सितारे अथवा निर्देशक के यह फिल्म हिट हो गई! इसी फिल्म का एक गाना है – 'तारों के हाथ पकड़ता चल तू/एक है प्यारे लाखों में तू/बढ़ता चल/ये रात गई/वह सुबह नई।' इस रूप में यह फिल्म भी हिंदी सिनेमा के लिए एक नई सुबह साबित हुई।

बहुविध भूमिकाओं में राजकपूर ने हिंदी सिनेमा को अविस्मरणीय फिल्में दीं। इसीलिए उन्हें हिंदी सिनेमा का 'शोमैन' भी कहा जाता है। अपने फिल्मी कैरियर में सफलता और असफलता दोनों का उत्कर्ष उन्होंने देखा था। समय से आगे की फिल्में बनाना और उनमे नवाचार शामिल करना राजकपूर के फिल्म निर्माण की विशिष्टता थी। नेहरू समाजवाद से प्रेरित राजकपूर देश और देश के बाहर सोवियत रूस और मध्य-पूर्व के देशों में समान रूप से लोकप्रिय रहे। आज उनकी फिल्मों को फिर से देखने और मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। राजकपूर को याद करते हुए उन्हीं की फिल्म 'मेरा नाम जोकर' का यह गाना दुहराया जाना चाहिए, जो कि उन पर बहुत सटीक बैठता है- 'कल खेल में / हम हों न हों / गर्दिश में तारे रहेंगे सदा / भूलोगे तुम / भूलेंगे वो / पर हम तुम्हारे रहेंगे सदा!''[7] हिंदी सिनेमा के शोमैन राजकपूर की यह छवि कभी नहीं मरेगी, अमर रहेगी।

संदर्भित फिल्में :

- श्री 420 (1954)
- आवारा (1951)
- बूट पॉलिश (1954)
- जागते रहो (1956)
- जिस देश में गंगा बहती है (1960)
- मेरा नाम जोकर (1970)
- राम तेरी गंगा मैली (1985)

The Filmy Journey of Raj Kapoor

Dr. Sonal V. Jariwala
Assistant Professor,
Department of Commerce & Accountancy
J. Z Shah Arts and H.P Desai Commerce College,
Amroli, Surat, Gujarat

Abstract :

Raj Kapoor, the legendary actor, producer, and director, holds an unparalleled place in the history of Indian cinema. Known as "The Showman," Kapoor's contribution to Bollywood spanned over four decades, shaping the industry and earning him both national and international acclaim. This paper traces the filmy journey of Raj Kapoor, examining his evolution as an artist, his unique cinematic style, and his lasting legacy. The analysis also delves into his significant works, thematic preoccupations and his influence on Indian culture and global cinema.

Introduction :

Raj Kapoor (1924-1988), born into the illustrious Kapoor family, was destined for the limelight. He emerged as a pivotal figure in Indian cinema, leaving an indelible mark as an actor, director and producer. This paper explores his journey from his debut to becoming a cultural icon, encapsulating his artistic vision and the socio-political relevance of his films.

Early Life and Entry into Cinema :

Born in Peshawar (now in Pakistan), Raj Kapoor was the eldest son of Prithviraj Kapoor, a prominent stage and film actor. Kapoor's entry into cinema was natural, given his lineage. He began his career as a clapper boy at Bombay Talkies and made his acting debut at the age of 11 in *Inquilab* (1935). His first major role came with *Neel Kamal* (1947), where he starred opposite Madhubala.

In 1948, at the age of 24, Kapoor established his own production company, R.K. Films. This marked the beginning of his journey as a filmmaker, with *Aag* (1948) being his first directorial venture. Though the film did not fare well commercially, it showcased Kapoor's ambition to tell stories that blended artistry with entertainment.

The Rise of "The Showman" :

Kapoor's breakthrough came with *Barsaat* (1949), a film that established him as a successful actor and filmmaker. The movie's melodious soundtrack and the iconic pairing of Kapoor with Nargis became

a hallmark of Indian cinema. This was followed by a series of classics, including *Awara* (1951), *Shree 420* (1955), and *Chori Chori* (1956).

In *Awara*, Kapoor portrayed the "tramp" persona inspired by Charlie Chaplin, which resonated with audiences globally. The film's theme of socio-economic disparity and its melodious score made it a blockbuster. *Awara* was also one of the first Indian films to gain international recognition, particularly in the Soviet Union and the Middle East.

Cinematic Themes and Style :

Kapoor's films often addressed themes of poverty, love and social justice. His characters, usually underdogs, symbolized hope and resilience. Kapoor masterfully blended romance, comedy and drama, creating films that were both entertaining and thought-provoking.

Visually, Kapoor was a pioneer in using song and dance to advance narratives. His films featured elaborate sets, innovative camera techniques, and memorable music. Collaborating with legendary music composers Shankar-Jaikishan and lyricists like Shailendra and Hasrat Jaipuri, Kapoor delivered timeless melodies that remain popular to this day.

Later Years and Milestones :

In the 1960s, Kapoor shifted his focus to larger-than-life productions like *Sangam* (1964), which was his first film in color. The movie was a massive success, further cementing his reputation as a master storyteller.

The 1970s and 1980s saw Kapoor tackle more controversial themes. *Bobby* (1973) introduced a youthful romance, while *Satyam Shivam Sundaram* (1978) explored the complexities of physical beauty and inner purity. His semi-autobiographical magnum opus, *Mera Naam Joker* (1970), though initially a commercial failure, gained critical acclaim over time.

Kapoor's final directorial venture, *Ram Teri Ganga Maili* (1985), addressed themes of purity and corruption, achieving significant box office success.

Legacy and Impact :

Raj Kapoor's contribution to Indian cinema extends beyond his films. He nurtured several talents, including actors like Dimple Kapadia, and played a pivotal role in popularizing Indian cinema globally. Awards like the Padma Bhushan (1971) and the Dadasaheb Phalke Award (1987) recognized his immense contribution.

Kapoor's influence is evident in contemporary Bollywood, with filmmakers and actors drawing inspiration from his work. His films continue to be celebrated in retrospectives and festivals worldwide, ensuring that his legacy endures.

Conclusion :

Raj Kapoor's journey epitomizes the evolution of Indian cinema. His films, rooted in universal themes and enriched by artistic innovation, remain a testament to his genius. As "The Showman," Kapoor not only entertained but also enlightened, leaving an indelible mark on Indian and global cinema.

References :

1. Kapoor, Ritu Nanda. *Raj Kapoor: The One and Only Showman*. Rupa Publications, 2002.

2. Dwyer, Rachel. *Raj Kapoor and the Golden Age of Indian Cinema*. Taylor & Francis, 2011.
3. Chatterjee, Saibal. *Echoes of the Heart: The Raj Kapoor Era*. HarperCollins India, 2015.
4. Garga, B. D. *The Art of Cinema: An Insider's Journey through Fifty Years of Film History*. Penguin Books, 2005.
5. Filmfare Archives. "Raj Kapoor: The Legend Lives On." Accessed December 2024.
6. Soviet Film Journal. "The Phenomenon of Raj Kapoor in Russia." Vol. 7, 1985.